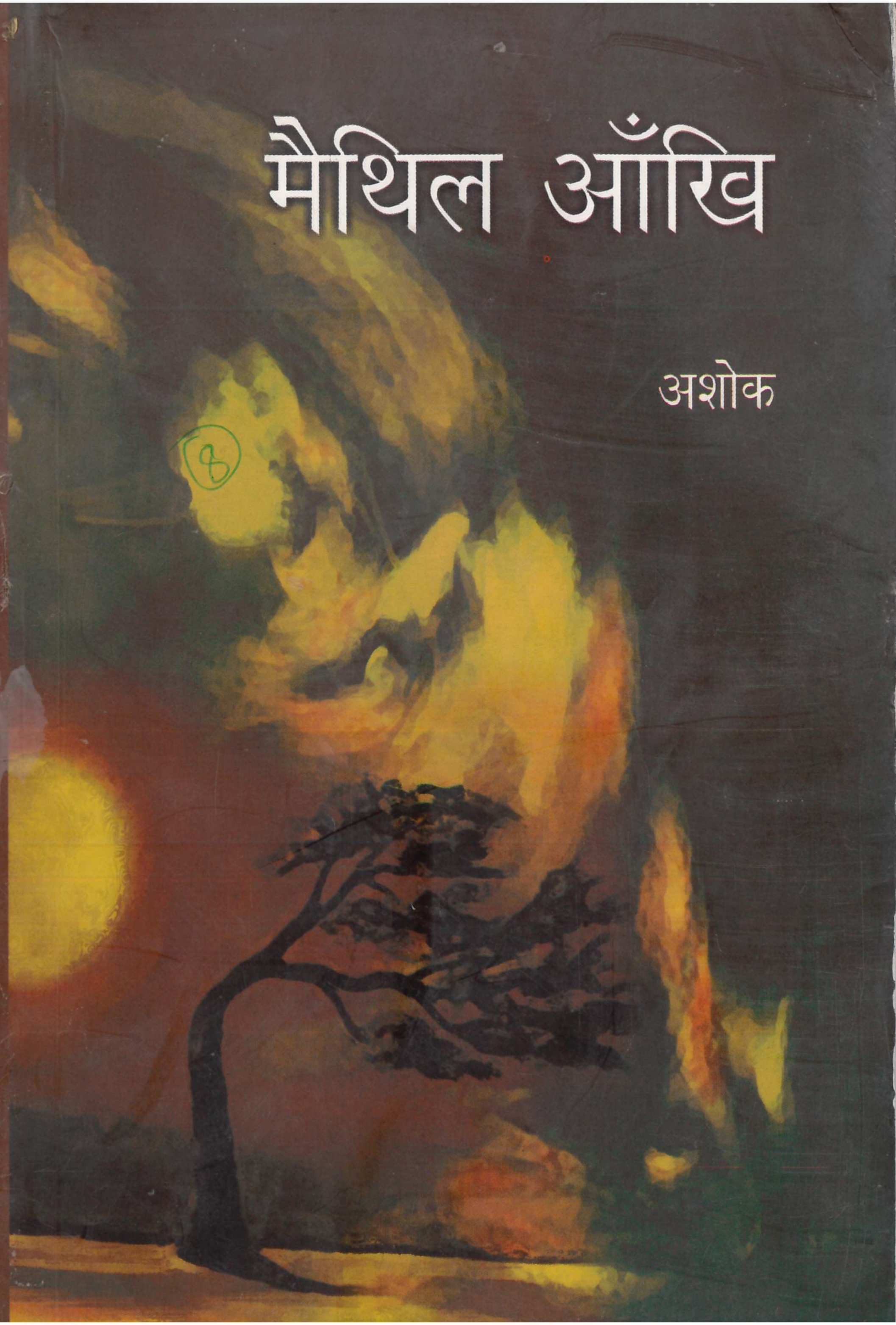
मैथिल आँखि

अशोक



मैथिल आँखि

अशोक

मैथिली अकादमी, पटना

Published with financial assistance from the central institute of Indian Languages (Ministry of Human Resources Development. Department of Secondary and Higher Education. Govt. of India) Manasagangotri, Mysore-570006 Vide Sanction Letter No. F-51-20(12)/2004-05/MAI/GRNT dated 30th October, 2006 Under the Scheme of Grant in Aid.

मैथिली अकादमी प्रकाशन-179

प्रकाशक : **मैथिली अकादमी, पटना**
पटना-800023

प्रथम संस्करण : 2007

प्रति : 500

मूल्य : उनहत्तरि टाका
69/- टाका

मुद्रक : कम्प्यूटेक सिस्टम
1/11829, पंचशील गार्डेन
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MAITHIL ĀNKHI : A Collection of literary essays in Maithili by Ashok

ISBN : 81-85763-30-5

प्रकाशकीय

मैथिल आँखि अशोक द्वारा लिखित निबन्ध-संग्रह थिक। निबन्ध सामाजिक आ साहित्यिक विषय पर केन्द्रित अछि।

अशोक मैथिलीक दृष्टिसम्पन्न रचनाकार छथि। एहि पोथीमे हुनक मूल स्थापना ई अछि जे भाषा आ साहित्यक विकास सामाजिक प्रगतिक देन थिक। तेँ मैथिली भाषा तथा साहित्यक विकास मूलतः सामाजिक समस्या अछि। एहि दृष्टिकोणसँ अशोक प्रस्तुत पुस्तकमे मैथिली समाजक समस्यामूलक विषय सभ पर विस्तार आ गहनतासँ विचार कयलनि अछि। एकरा बादे ओ साहित्यसँ सम्बद्ध प्रसंग पर विमर्श करब उचित आ आवश्यक बुझलनि अछि। समाजसँ साहित्य धरिक विषयकेँ एकसंग सूत्रबद्ध करब आ ओहि पर गंभीरतासँ चिन्तन करैत मिथिलांचलक सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक-भौतिक एवं भाषिक-साहित्यिक विकास-पथकेँ संकेतित करब रचनाकारक अभीष्ट अछि।

आजुक लोक भूमण्डलीकरणक दंश भोगि रहल अछि। विश्वग्राम आ बाजारवादक दशानन सभ्यता एवं संस्कृति, भाषा एवं साहित्यकेँ भक्ष्य बनयबाक हेतु उताहुल अछि। एहन स्थितिमे क्षेत्रीय निजताक रक्षा करब जतबे आवश्यक अछि ततबे कठिन। अशोकक ई कृति भूमण्डलीकरणक एहि सर्वग्रासी अभियानमे क्षेत्रीय निजताकेँ सुरक्षित रखबाक आग्रह थिक। यैह थिक मैथिल आँखि। मैथिल समाज वैश्विक विकासधारामे सम्मिलित हो से आवश्यक, किन्तु अपन सामाजिक-सांस्कृतिक गरिमाकेँ अक्षुण्ण रखैत। निजत्वक लोप अस्तित्वक संहार थिक। यैह कहैत छथि अशोक एहि पोथीमे। ई पोथी चेतौनी थिक।

एहि पुस्तकक प्रकाशन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक आर्थिक अनुदानसँ भ' रहल अछि। अकादमी संस्थानक, विशेषतः ओकर विद्वान निदेशक डॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क, आभारी अछि। विश्वास अछि, मैथिली अकादमीक प्रकाशन-कार्यमे तथा अन्य क्षेत्रमे सेहो भारतीय भाषा संस्थान एहिना सहयोग करैत रहत।

पुस्तकमे मुद्रणजन्य त्रुटि यदि देखबामे आबय तँ ताहि लेल क्षमा याचित अछि।

रघुवीर मोची

(रघुवीर मोची)

5 जून, 2007

निदेशक मैथिली अकादमी, पटना

खगता संवादक

हमरा होइत अछि जे भाइसाहेब राजमोहन झा जँ तगादा क' हमरासँ निबन्ध नहि लिखबितथितँ हम एना निबन्ध-लेखनमे प्रवृत्त नहि भेल रहितहुँ। ई वर्ष 1995 क घटना थिक जहिया ओ 'आरम्भ' पत्रिका लेल किसुनजीक कविता पर लिखबाक लेल कहने रहथि। हम डेराइते-डेराइत हुनक आदेश पालन केने रही।

हमरा इहो होइत अछि जे जँ भाइ मोहन भारद्वाजक संग नहि होइतय तँ एहि तरहक लेखन दिस बढ़बाक हम हिम्मति नहि करितहुँ। हुनकर सहयोग ओ मार्गदर्शनसँ नहि केवल हमरामे आत्मविश्वास उत्पन्न भेल अपितु ई बोध सेहो जागल जे कथा-कविताक संग निबंध लिखब एक जरूरी काज थिक। जीवन आ साहित्य दूनूक लेल। ई बोध अहाँमे जे परिवर्त्तन अनैत अछि से अहाँक व्यक्तित्व गठन लेल त' आवश्यक अछिए ओहि उद्देश्यकेँ सेहो प्रकट करैत अछि जे साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक-सांस्कृतिक विकासके चिन्हब ऐतिहासिक दायित्व थिक। फलतः साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक-सांस्कृतिक विकास-प्रक्रिया मे हस्तक्षेपक दिशा मे अहाँ स्वतः अग्रसर भ' जाइत छी।

हमरा त' इहो लगैत अछि जे यदि अहाँ लग कहबाक लेल बात-विचार अछि आ अहाँ दोसरासँ संवादक खगता अनुभव करैत छी त' जे विधा उपयुक्त लागत ताहि विधाक माध्यमे संवाद करबे करब। अहाँके कखनो ईहो लागि सकैत अछि जे विधा महत्त्वपूर्ण नहि थिक, महत्त्वपूर्ण थिक रचना। रचनाक माध्यमसँ पाठक संग संवाद। अहाँ कविता लिखी कि निबन्ध, कथा लिखी कि उपन्यास, नाटक लिखी कि आलोचना, अहाँक प्रत्येक रचना एक सांस्कृतिक प्रक्रिया थिक। रचनाकार, पाठक आ आलोचक ओही प्रक्रियाक एक अनिवार्य कड़ी छथि।

ओना एहि निबंध सभकेँ प्रस्तुत करैत ई नहि लागि रहल अछि जे कोनो तेहेन दायित्व हम पूरा केलहुँ अछि। ई निबन्ध सभ त' कोनो पत्रिका लेल, कोनो विचार गोष्ठी लेल, कोनो अभिनन्दन ग्रन्थ लेल फराक-फराक समय मे सम्पादक-संयोजकक माँग पर लिखल गेल अछि। किछु त' सन्धान, घर-बाहर वा चेतना समितिक स्मारिकाक

सम्पादकीय रूपमे सेहो लिखल गेल अछि। ओहि सभ रूपमे लिखल रचनाकेँ बीछि क' एकठाम पोथीक रूपमे प्रस्तुत करबाक पाछू उद्देश्य अछि—एक तागमे गाँथल अपन बात-विचारकेँ ल' क' प्रस्तुत होयब। ओहि बात-विचारक माध्यमसँ संवादक अभिलाषा।

एहि पोथीमे वर्ष 1995 सँ 2004 धरि लिखल दस वर्षक निबन्ध सभ संकलित कयल गेल अछि। एहि रचना सभकेँ निबन्ध कहब मात्र एक औपचारिकता थिक। वस्तुतः ई सभ त' विभिन्न रूपमे लिखल गद्य रचनामात्र थिक। हँ, एकटा बात अवश्य, ई हमर कथासँ फराक गद्य रचना अवश्य थिक। एहि पोथीमे गद्य लिखब सिखबाक हमर कोशिशकेँ लरे-लरेसँ डेगा-डेगी चलबाक कोशिशक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

एहि पोथीमे व्यक्त बात-विचारक प्रति हम फूटसँ किछु कहब आवश्यक नहि बुझैत छी। मात्र अपन एहि अनुभवमे साझीदार बनब' चाहैत छी जे विश्वक कि भारतक नागरिक कहेबासँ पूर्व मैथिल कहायब हमरा बेसी पसिन्न अछि। मैथिल कहेबामे हमरा ने ग्लानि होइत अछि आ ने उच्चता-हीनता बोध। हमरा मैथिलत्व आ भारतीयत्व मे कोनो विरोधाभासो नहि लगैत अछि। हमरा त' एतबे लगैत अछि जे भारतीय बनबाक लेल पहिने मैथिल बनब जरूरी थिक। ई बात हम कोनो जिद्दी बच्चा जकाँ नहि कहि रहल छी। हमरा एहि बातक बोध अछि जे कोनो मैथिल आइ भारत कि विश्वक नागरिक सेहो छथि। मिथिलेमे घसमोड़ि क' पड़ल रहलासँ हुनकर गुजर नहि चलतनि। ई एक बाध्यता भ' सकैत अछि, मुदा एहि बाध्यतामे हम मिथिलाक विकासक स्वप्न देखब छोड़ि दी से कतहुसँ जायज नहि अछि। जँ स्वप्ने देखब छोड़ि देब त' परिवर्त्तन कोना घटित हैत?

हमरा एहि बातक चर्च करब आवश्यक लगैत अछि जे अपन जीवन, लेखन ओ सक्रियताक विभिन्न क्षेत्रमे बहुतो मित्र-बन्धुलोकनिक सहयोग, सद्भावना हमरा भेटैत रहल अछि। ओहि सभ मित्र-बन्धुलोकनिक नाम ल' क' चर्च करब सर्वज्ञात तथ्यकेँ फेरसँ मात्र दोहरायब होयत। मुदा ई बात अवश्य कह' चाहब जे आब केवल भाइ, भाइ कहबेटा नहि चलि रहल अछि, भैयारी कायमो भ' रहल अछि। हँ, एहि पोथीक प्रकाशन मे मैथिली अकादमी पटना, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर आ बन्धु देवशंकर नवीनक योगदान, सहयोग लेल आभार अवश्य प्रकट कर' चाहब।

अन्तमे ई कहब सेहो हमरा आवश्यक लगैत अछि जे निबन्ध सभकेँ पोथीक रूप मे प्रस्तुत करैतकाल ओहिमे किछु परिवर्त्तन कयल गेल अछि। किछु सूचना सभकेँ अद्यतन करबाक कोशिश सेहो केलहुँ अछि। यात्रीक उपन्यास पारो आ उषाकिरण खानक उपन्यास हसीना मंजिलक पूर्व शीर्षक सेहो बदलल अछि। बस...।

—अशोक

25 मार्च 2007 पटना

अनुक्रम

मिथिलाक खोज

हमरा सभ सनक लोक जे मिथिलामे जन्म लेलक, मिथिलाक प्रति आकर्षण उपजलैक, आइ मिथिलाके ठीकसँ जनबाक लेल बेकल अछि। की थिक मिथिला? जे आइ धरि इतिहास, साहित्य आदि द्वारा कहल गेल अछिं? अथवा किछु आन जे एखनधरि नहि कहल गेल अछि। हमरा सभक कानमे मैथिली, मैथिल आ मिथिला शब्द पड़ैत रहल। देखलहुँ किछु गोटे एहि पाछू बेहाल छथि। जाहि किछु लोक के बेहाल देखलहुँ ओहिमे किछु ब्राह्मणत्वक हड्डी पर मैथिलत्वक चाम चढ़बैत भेटला। किछु लोक अपन पतक्का ऊँच करबाक लेल मैथिलीक ढोल पीटैत भेटला। किछु के अपन सर्वस्व मैथिलीक पाछू स्वाहा करबाक उन्मादमे सेहो देखलहुँ। एतेक प्रताड़ना, पराभव, गिंजनक बाबजूदो कतेक आँखिमे आशा या विश्वासक दीप ओहिना निरन्तर जरैत देखलहुँ। मुदा अधिकांश मैथिली आ मैथिलक नाम पर अपन मुँह नुकबैत भेटला। हीनताबोधसँ किछुके पतनुकान लेने त' उच्चताबोधमे गौरवे आन्हर सेहो देखलहुँ। मोटामोटी ई सभटा बात मैथिली समाजक क्रीमीलेयरसँ सम्बन्ध रखैत अछि। विशिष्ट वर्गसँ सम्बन्धित अछि। मैथिली समाजक सामान्यजन खास क' निरक्षर, अर्द्धसाक्षर, निम्नवर्गक आ निम्नमध्यमवर्गक लोक (जे संख्यामे अत्यन्त विशाल अछि) एहि हलचलसँ एकदम फराक, निरासक्त, निरपेक्ष रहल अछि। ओकरा धरि एहि विषयक कोनो चेतना नहि पहुँचि सकल।

की मिथिला माने गंगा, गण्डिकी तथा कौशिकी एहि तीनू नदीक तट पर स्थित भू भाग मात्र थिक? की मिथिला माने खाली गौरवमयी सांस्कृतिक परम्परासँ मण्डित एक उज्ज्वल अतीत मात्र थिक? की मैथिलीक भजन करैत अपनहुँ पाग पहीरि अनको पहिरा क' अपनामे मिलेबाक भ्रम पसारैत मंचीय परम्पराक इतिहास, मिथिलाक इतिहासके प्रतिविम्बित करैत अछि? की एहि सांस्कृतिक परम्परा पर गौरव बोध करबाक अधिकार मात्र मैथिली समाजक ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ के छनि? की एहि गौरव बोधक जयघोष आन जाति वर्गमे हीनताबोध भरैत अछि से सोचबा-विचारबाक पलखति विशिष्टवर्ग के भेटल अछि? की वर्तमानमे मैथिली समाजक स्थिति एकदम दयनीय

आ सोचनीय नहि भ' गेल अछि? की एहू स्थितिमे जीवनक प्रति आसक्ति, संघर्षशीलता, उत्सवधर्मिता, अतिथिस्नेह, सामाजिक-साम्प्रदायिक सद्भाव सनक मूल्य कोन संजीवनीक बलें मैथिली समाजमे बचल अछि से तकबाक वेगरता नहि होइत अछि? वर्तमानमे मैथिली समाजक आर्थिक, सांस्कृतिक उन्नति आ विकास लेल सोचैत-विचारैत की ई नहि लागि रहल अछि जे मिथिलाक खोज नवछोरसँ प्रारम्भ कर' पड़त। एकांगी दृष्टिक पटाक्षेप क' सर्वांगी दृष्टि आ एकात्म भावक संग वैज्ञानिक पद्धति ऐहि लेल जरूरी नहि बुझाइत अछि?

पं. जवाहरलाल नेहरू भारतक खोजमे सभ उपलब्ध पोथी पढ़लनि। हजारो कि. मी. क यात्रा केलनि। विभिन्न जाति, वर्ग, क्षेत्र भाषाक लोक सभसँ भेंट केलनि। महलसँ खोपड़ी धरि गेला तखन हुनका ज्ञात भेलनि जे भारत अपन विशाल जन सामान्य, जन समुदायमे बसैत अछि। एही सन्दर्भक संग कोनो स्वतंत्रता सेनानी आ विचारकक लिखल किछु पंक्ति मोन पड़ि रहल अछि। 'हमारा सभके अगस्त 1947मे स्वराज्य भेटल। केवल एहि दुआरे नहि भेटल जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल उच्च, मध्यमवर्ग स्वराज्य के लड़ाइमे सम्मिलित भेल। एहि दुआरे भेटल जे गांधीजीकेँ नेतृत्वमे जतेक व्यापक सहयोग भरिसक भगवान बुद्ध के समयमे ओहि जन आन्दोलन, ओहि सुधारवादी आन्दोलन के भेटल छलैक ताहूसँ बेसी व्यापक सहयोग भरिसक गांधीजी के भेटलनि। गांधीजी एकरा कोना सुलभ केलनि? गांधीजी अंग्रेजी पढ़ल-लिखल विशेष वर्गकेँ एहि प्रकारें सुशिक्षित केलनि जे ओ वर्ग जनसामान्य, अपन भूमि, अपन भूमिजन, अपन परम्परासँ पीठ नहि फेरलक। कोनो नदीक द्वीप सन लोक कटल-कटल नहि रहल। स्वराज्य लेल जनसामान्य सापेक्ष होयब जरूरी छल आ जनसामान्य सापेक्ष लेल ओ अनेक रचनात्मक कार्यक्रम चलौलनि। ओ हमरा सभके एक सोझ-साझ मन्त्र देलनि जकरा चरखा कहल जाइत अछि। जे एक प्रतीक रूपमे सभकेँ जनसामान्य लग पहुँचा देलक। गांधीजी जे चरखाके यन्त्र बना देलनि ओ यन्त्र प्रतीक छल ओहि मन्त्रके जे ओ देलनि कि अपन विशेषताक उपयोग हमरालोकनि जनसामान्यक सेवा लेल करब—सामाजिक विकास लेल करब। भेष आ भाषा दूनूसँ।'

मुदा मिथिलाक प्रसिद्ध समाजशास्त्री डा. हेतुकर झा मिथिलाक सन्दर्भमे विशिष्ट जन आ जनसामान्यक सम्बन्ध पर टिप्पणी करैत एक निबन्धमे दूनूक बीच विरोधाभासक चर्चा करैत छथि। ओ कहैत छथि जे मैथिली समाजक विशिष्ट जाति आ जनसामान्यक विरोधाभासमे अनेक ऐतिहासिक ओ संस्थागत कारण विद्यमान अछि। ओ इहो कहैत छथि जे मैथिलीक उन्नति बिना मिथिलाक उन्नतिसँ असम्भव अछि। संगहि मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल आवश्यक अछि विशाल जनसमूहक विकास जकरा उच्चवर्गसँ बहुतो पुश्तसँ विरोधाभासक सम्बन्ध रहलैक अछि। अन्ततः डा. झाक कहब छनि जे निम्नवर्गक विशाल जनसमूहक जागरणसँ मिथिलाक पुनर्जागरण संभव। आइ एहि सभ कथन-चिन्तन पर विचार करैत ई आवश्यक बुझना जाइत अछि

जे पढ़ल-लिखल विशेष वर्गकेँ जनसामान्यक पीड़ा जानब जरूरी अछि। जनसामान्यक दुख, कष्टसँ एकाकार होयब जरूरी अछि। तखनहि अपन विशेषताक उपयोग हमरा लोकनि जनसामान्यक सेवा लेल क' सकब-सामाजिक विकास लेल क' सकब। वास्तवमे जनसामान्यक पीड़ा जानब मिथिलाक पीड़ा जानब थिक।

एकटा पौराणिक प्रसंग मोन पड़ैत अछि। नारदकेँ सनत कुमार एक महान मेधावी मनोवैज्ञानिक विद्यालय शिक्षकजकाँ शिक्षित क' रहल छलथिन। ऋषि नारद क प्रश्न सभहक अंतिम रूपसँ उत्तर दैत ओ कहलथिन जे हमरालोकनि किछुओ नहि जानि सकैत छी यदि हमरालोकनिकें सभ किछुक जानकारी नहि अछि। जेना एक नीक चिकित्सक शरीरक कोनो भागक पीड़ा ताबत तक नहि जानि सकैत अछि जाबत तक ओ शरीरक भौतिक, संरचनात्मक आ दैहिक सम्पूर्ण जानकारी नहि रखैत हो। तैं मिथिलाक पीड़ा जनबाक लेल, किछु अनकहल कहबाक लेल मिथिलाक खोज जरूरी अछि पहिने। मिथिलाक खोज अर्थात सभ किछुक जानकारी, सम्पूर्ण जानकारी। की मिथिलाक पैघ-पैघ विद्वान, समाजशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, दार्शनिक, भाषाशास्त्री, वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ, न्यायविद्, धर्मशास्त्री आदि एहि दिशामे डेग उठेबाक लेल प्रस्तुत छथि? की जाहि माटि-पानिसँ ई देह पोसाएल अछि जाहि परिवेशमे विभिन्न संस्कारक वीजारोपण भेल अछि तकरा प्रति, ताहि समाजक प्रति अपन विकसित दिमागक उपयोग करब बहुत लज्जाजनक अछि? मिथिलाक सेहो हमरा सभ किछु धारने छियैक से चुकेबाक विकलता किएक नहि भ' रहल अछि?

सन्धान-1, जनवरी, 97

अस्मिताक बात

अस्मिता संकटक बात एखन रहरहाँ कहल जा रहल अछि। खासक' मैथिल अस्मिताक सन्दर्भ मे। ओना अस्मिताक संकट एहीठाम टा उपस्थित नहि भेल अछि। आनो क्षेत्र, प्रान्त आ देशमे उठि रहल अछि। उठाओल जा रहल अछि। ई राजनीतिक प्रश्न बनि गेल अछि। सांस्कृतिक प्रश्नसँ बेशी। आब एहि आधार पर राज्य आ प्रान्त बँटि रहल अछि। आर्थिक विकास के सांस्कृतिक विकासक संग जोड़ि क' देखल जा रहल अछि। ध्यान देला पर ज्ञात होइत अछि जे अस्मिताक सम्बन्ध क्षेत्र विशेषसँ जुड़ल अछि। ओहि क्षेत्र विशेषक अस्मिता ओहिठामक मूल निवासी, आदिवासीक जीवन-शैली आ जीवनक प्रति ओकर दृष्टिकोण पर आधारित अछि। मुदा ई क्षेत्रीय अस्मिताक प्रति जागरण सए-दू-सए वर्षसँ लगातार चलैत रहल अछि। कतोक ठाम अहूसँ बेसी दिन सँ। एहि आधार पर ओहि क्षेत्रक सभ जाति-वर्ग आ धर्मक लोक एकजुट होइत रहल अछि। मुदा मैथिल अस्मिताक संग से बात नहि अछि। तैं एकैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ बुद्धिजीवी किछु किंकर्तव्यविमूढ़ सन भ' गेल छथि।

अस्मिता संकटक एक दोसर सन्दर्भ सेहो अछि। ई सन्दर्भ अछि भूमण्डलीकरणक। भूमण्डलीकरणक बिहाड़िसँ सेहो परिचिति उधियाइत सन बुझाइये। विश्वबाजार आ विश्वग्रामक बढ़ैत थाप परिचितिक केबाड़ पर स्पष्टतया सुनल जा सकैये। लगैये जेना केबाड़ चरमराके टूटि जायत। व्यक्ति, घर, परिवार, समाज सभ के लगातार खण्डित करबाक साजिश चलैत रहलए। सभमे सहस्त्रो छेद भ' चुकल अछि। वास्तवमे ई साजिश मनुक्खकेँ ओकर सम्पूर्ण परिवेशसँ काटि क' ओकरा मात्र हाड़-मांसक यन्त्र बनब' चाहैत अछि। मनुक्खके भविष्यमे सुखी बनेबाक नाम पर आइ ओकर सौन्दर्य-प्रेम के कोनो ने कोनो बहाने थकुचि देब' चाहैत अछि। किएक त' ई स्थिति भूमण्डलीकरणक अनुकूल होयत। मनुक्ख बजारक समक्ष आत्मसमर्पण क' देत।

भूमण्डलीकरणक आक्टोपससँ पूर्व उपनिवेशवादक डायनासोर सेहो अस्मिताक संकट उपस्थित केने छल। वास्तवमे ई अस्मिताक संकट ओकरे देन थिक। उपनिवेशवाद मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिताकेँ विस्मृतिक अन्धकारमे ढकेलि देबाक पूरा प्रयत्न

केलक। बहुत अंशमे ओ सफलो भ' गेल। उपनिवेशवाद के एहिमे सहयोग केलक ओकर देशी एजेंट—सामन्तवाद। ई दूनू मीलि लोकक पराभव के आर बढ़ौलक। दयनीय आर्थिक स्थिति आ अनवरत बढ़ैत शोषणसँ ध्यान हटेबाक लेल 'पूर्व जन्मक पापक भोग' के उपस्थित केलक। ई अकारण नहि अछि जे जाहि मैथिली साहित्यमे पाँच सए वर्ष धरि 'राम' छिटफुट एकाधठाम छोड़ि कत्तहु नहि दृष्टिगोचर होइत छथि से महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक आदेशसँ कवीश्वर चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण'मे अवतरित भेला। ई वैह महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह छथि जे मैथिलीके कान पकड़ि अपन राज-काजसँ हटा देने छला। जिनकर शिक्षा-दीक्षा 1860 ई.मे कोरट लागि गेलाक कारणे अंग्रेज प्रभुक द्वारा सम्पन्न भेल छल।

मिथिलाक आधुनिक इतिहास लिखल जेबाक खगता सेहो एखन नीक जकाँ अनुभव कयल जा रहल अछि। अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक मिथिलाक इतिहास दृष्टि सम्पन्नताक संग जँ लिखल जाय त' स्पष्ट भ' सकत जे गड़बड़ी कत' भेल। गड़बड़ी एहि पछिला बीसम शताब्दीमे सेहो भेल अछि। कने बेसिए भेल अछि। मुदा से गड़बड़ी अट्ठारहम-उन्नैसम शताब्दीक नींव पर ठाढ़ छल। ओकर सभ दुर्गुण ओ कमजोरी के लदने। ई बात आब क्रमशः निर्विवाद भेल जा रहल अछि जे जाहिकालमे आनठाम (अपन सटले बंगाल मे) अंग्रेजीक प्रभावें पुनर्जागरण भ' रहल छल, बंगाली के अपन अस्मितासँ जोडि क' देखब प्रारम्भ भ' गेल छल, अपन-अपन मातृभाषामे शिक्षाक व्यवस्था भ' रहल छल, आधुनिक बोधक रूपमे समानताक बात कयल जा रहल छल, हमरा सभ आर बेसी कूपमण्डूक आ रूढ़िवादी बनौल जा रहल छलहुँ। परम्परानिष्ठ बनबाक अहंकारमे संस्कृतके आर चिहुटि क' पकड़ि रहल छलहुँ। एतबे नहि, राष्ट्रीयताक नाम पर कृत्रिम हिन्दुस्तानी भाषा सेहो हमरा सभ पर लादल जा रहल छल। ई शिक्षेक प्रति वितृष्णा उत्पन्न क' रहल छल। जखन सभठाम मातृभाषामे शिक्षाक अनिवार्यता के बूझल जा रहल छल, व्यक्तित्व निर्माणमे मातृभाषाक महत्व अकानल जा रहल रहए, मातृभाषाक माध्यमे अपन संस्कृति, अपन अस्मिता लोक के फरीछ भ' रहल छल, हमरा सभकेँ आत्म-विस्मृति के गर्त्तमे धकेलल जा रहल रहय। एक सए वर्ष पाछू ठेलल जा रहल छल। ओहीकालमे व्यक्तित्व पर अन्हरजाली लगाओल जा रहल छल। जे क्रमशः व्यक्तित्वहीनतामे पहुँचि गेल। ई व्यक्तित्वहीनते सामूहिक अस्मिता बोधसँ विछिन्न केलक।

मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिता कथी ल' के छल? एहि विषय पर अध्ययन होयब जरूरी अछि। कर्म पर आधारित जीवन कोना केवल शास्त्र केन्द्रित होइत गेल सेहो विचारब जरूरी अछि। संस्कृतिक समग्रता क्रमशः कोना कृतिक महत्वमे छिन्न-भिन्न भ' गेल? अन्ततः से कृति केन्द्रितसँ कृतिकार केन्द्रित कोना भेल? भाषा-टीका कयनिहारक नाम मोन राखल गेल आ समस्त विश्वमे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखनिहार मिथिलाक कलात्मक औद्योगिक परम्पराके बिसरि देल गेल। एहन विस्मृति कियैक आ कोना भेल?

की हमरालोकनिक अस्मिता क्रियाशील जीवनसँ जुड़ल नहि छल? हाथ आ दिमागक समन्वयक परम्परा मैथिली समाजमे नहि रहल अछि? कृषि कर्म आ हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा जीविकाक साधन छल। समाजबन्ध एहन मजबूत छल जे कतेको आततायी आएल-गेल। मैथिली समाजक किछु नहि बिगाड़ि सकल। अपन विभिन्न नदीक माध्यमे व्यापार-व्यवसाय चलैत रहल। विशिष्ट आर्थिक सोंगरेक आधार पर न्याय आ मीमांसा, आध्यात्मिक चिन्तनक पताका फहराइत रहल। महाकवि विद्यापतिक गीत, सलहेश, लोरिक, दीनाभद्री, नैकाबनिजाराक गाथा गबैत, अपन तमाम लोकगीतमे जीवनक प्रति, जीवनमे शृंगारक प्रति, प्रेमक प्रति, गुणक प्रति आदर-उल्लास व्यक्त करैत मैथिली समाज अपन संघर्षशील जीवनी शक्तिके बचाक' रखलक। कतेक रास वस्तुके ग्रहण केलक कतेक वस्तुक त्याग करैत रहल। मैथिली समाजमे त' कृष्ण-राधा, शिव-पार्वती, दुर्गा-काली-तारा सभ सर-सम्बन्धिक जकाँ भाए-बहीन, माए जकाँ रहल छथि। सीताके कहियो मैथिली समाज देवी नहि मानलक। अपन गामक सुआसीन मानैत रहल। रामके जमाय बुझैत रहल। शिव-पार्वती एकदम पारिवारिक-सामाजिक बनल रहला। जीवनमे प्रेम आ शृंगारक अभिव्यक्ति लेल कृष्ण आ राधा मात्र एक माध्यम रहथि। ई सभ एहि कारणे छल जे मैथिली समाज सार्थक श्रम पर आधारित जीवन के अंगेजने छल। मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भ होयबासँ पूर्वहिं सभ किछु टूटि-फूटि गेलैक। अपन परिचिति पर मैथिली समाज श्रम आ फूसिक ओहार लगा लेलक। ई एहि दुआरे भेल जे विवेक आ उदारता पर आधारित जीवन दर्शनमे अविवेक आ क्षुद्रताक प्रवेश भ' गेल। मैथिली समाजक (खासक' के मिथिलाक संभ्रान्तवर्ग मे) व्यक्तित्वमे क्षुद्रता आ संकुचन अपन स्थान बनबैत चल गेल। ई सभ भोगवादी दृष्टिसँ उपजल छल जे समाजक मुँहपुरुषलोकनिक राजसत्तासँ जुड़बाक कारणे भेल। धनक प्रति बढ़ैत लिप्साक कारणे भेल। सामुदायिक, सामूहिक जीवन टुटबाक कारणे भेल। क्रमशः मुँहपुरुष विवेकान्ध होइत गेला। सुविधा आ भोगवाद जे जमीन्दारी आ सामंती जीवनक कारणे उत्पन्न भेल, समाज के बाँटिक' राखि देलक। जमीनक स्थायी बन्दोवस्ती एकर जड़िमे छल जे समाज के वर्गमे विभाजित क' देलक। जमीन्दार, जेठ रैयत, रैयत, किसान-मजूरमे बँटल समाजमे कमजोर वर्ग पर पराभवक पहाड़ टूटि पड़ल। धार्मिक आ आर्थिक शोषणक चक्र चलैत रहल। धनीक आर धनीक आ गरीब आर गरीब होइत गेल। जमीन से अन्ततः खण्ड-खण्डमे बँटि गेल। अनुत्पादक होइत गेल। हुनर पर आधारित उद्योग-धन्धा नष्ट क' देल गेल। असमानता आ विषमता बढ़ैत गेल। स्वतंत्रताक बादो एहि सभमे कोनो कमी नहि आयल। कोनो परिवर्तन नहि भेल। मैथिली समाजमे वैमनस्य आर बढ़िते गेल अछि। एहीमे मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिता कतहु हेरा-भोतिया गेल।

एहि परिप्रेक्ष्यमे मिथिला आ मैथिलीक बात बहुत विलम्बसँ आयल। अयबो कयल त' विकलांग भ' क' आयल। सामन्ती जीवनसँ जुड़ल जातिक माध्यमसँ आयल। जकरा समाजमे बाबू-भैया कहल जाइत छल। जकरा प्रति समाजमे कोनो आदर-भाव नहि रहि गेल छल। जकरा लोक अपन पराभव लेल उत्तरदायी मानैत छल। जिनकर जीवनमे विलासिता आ सुविधा-परस्ती, व्यक्तित्वहीनता जड़ि जमा चुकल छल तिनकर मुँहसँ मिथिला-मैथिलीक गप्प सामान्य लोकमे कोनो सुगबुगी नहि अनलक। ई फराक बात अछि जे मिथिला-मैथिलीक आन्दोलनमे किछु विवेकशील आ उदार लोक सभ सेहो छला। जिनका यथार्थक सम्यक ज्ञान छलनि। मुदा बहुलांशमे एहने लोक छला जे मिथिला-मैथिलीक उपयोग अपन हितक लेल करय चाहैत छला। राजा, जमीन्दार के प्रसन्न रखबाक लेल करैत छला। हुनकालोकनिक अविवेक आ क्षुद्रतासँ मिथिला-मैथिलीक सार्थक आन्दोलन मिथिलाक सम्पूर्ण समाज के जोड़ि नहि सकल। ओकरा संग सामान्य लोक अपन तादात्म्य स्थापित नहि क' सकल। सामान्य लोकक अस्मितासँ नहि जुड़ि सकबाक यथार्थ मिथिला-मैथिली आन्दोलनक सभसँ त्रासद यथार्थ थिक। मैथिली भाषिक आन्दोलनक स्वर जखन विद्यापति पर्वक माध्यमसँ अभिव्यक्त होयब प्रारम्भ भेल आ संस्थागत रूप पकड़लक त' यैह संकुचित, अविवेकी, क्षुद्र लोकनिक कारणे ओ फेर भोतिया गेल। एक जाति विशेषक संग ओकर भाग्य-दुर्भाग्य जुड़ि गेल। तैं आइ मिथिला-मैथिलीक गप्प खाली ब्राह्मणक गप्प बुझाइत अछि।

भूमण्डलीकरणक आक्टोपससँ युद्ध लेल बुद्धिजीवीके विस्मृतिके अन्धकारसँ बाहर निकल' पड़त। मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिताक तत्व सभके ताकि–हेरि के निकाल' पड़त। आवश्यकतानुसार ओकरा झाड़ि-पोछि के चमकाब' पड़त। जाहिसँ मैथिली समाजक संघर्षक शक्ति आर मजगूत हुअय। समाजक भीतर सुन्दर जीवनक यथार्थ उतरि जाय। मैथिली समाजक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक परम्परा पैघ आ उदार रहल अछि। एहिमे मैथिली समाजक सभ जाति-धर्म-वर्गक योगदान रहल अछि। एहिमे श्रमजीवीलोकनिक पसीनाक सुगन्धि मिलल अछि। जे नित्य सभ विकार आ विकृतिके धो देबाक क्षमता रखैत अछि। क्रियाशील जीवनक यैह सौन्दर्य-बोध आ मनुक्खक शुद्ध जीजीविषा भूमण्डलीकारणक मुखौटा धारण कयने पुनः चल अबैत उपनिवेशवादीक कुत्सित षड्यन्त्रसँ संघर्ष क' सकत। ओकरा पछाड़ि सकत। एहि काज लेल हम पुनः मैथिली समाजक सभ दृष्टिसम्पन्न, उदार आ इमानदार बुद्धिजीवी, इतिहासज्ञक, अर्थशास्त्री, लेखक-रचनाकारक, समाजशास्त्री-मानववैज्ञानिकक आह्वान करैत छी।

सन्धान-2, दिसम्बर, 98

स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला पर विचारबाक क्रममे

स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला पर विचारबाक क्रममे सभसँ पहिने दूनू शब्द ध्यान आकर्षित करैत अछि। स्वातन्त्र्योत्तर अर्थात् स्वतन्त्रताक बाद। कथीक स्वतन्त्रताक बाद त' भारतक स्वतन्त्रताक बाद। भारत की थिक? भारत हमर सभक देश थिक। जे सम्प्रभुता सम्पन्न अछि। मिथिला की थिक? मिथिला तँ कोनो देश नहि थिक। कोनो राज्य नहि थिक। प्रमण्डल नहि थिक। जिलो नहि छी। तखन की थिक मिथिला? कतय छैक ओकर अस्तित्व? पोथी सभमे अथवा मैथिली समाजक मोनमे। हम सभ कहैत छी जे जतय मैथिली भाषी रहैत छथि से थिक मिथिला। जकर नाम राजा 'मिथि'क नाम पर पड़ल रहय। जतय जनक, सीता रहथि। जकर प्रथम ऐतिहासिक नरेश नान्यदेव छला। जकर दुलारू कवि विद्यापति छथि। ई मिथिला तँ भारतेटामे नहि अछि। नेपालोमे अछि। मुदा नेपालोमे ओकर फूटसँ संवैधानिक अस्तित्व नहि छैक। मिथिला नामसँ कोनो क्षेत्र नहि छैक। ओतहु ई लोकक मोनेमे अछि। तें एहि कानूनन अजन्मा मिथिलाक स्वातन्त्र्योत्तर गप्प की? जकर भौतिक अस्तित्वे नहि तकर स्वतन्त्रता आ परतन्त्रता की?

स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला अर्थात् भारतक स्वतन्त्रताक बाद मैथिलीभाषी लोकनिक क्षेत्र विशेष। जेकर नक्शा जौर्ज ग्रियर्सन साहेब बना गेला। जे भारतक स्वतन्त्रतासँ बहुत पूर्वक घटना थिक। वेह दस्तावेज बनौलनि जे मैथिली भाषा की थिक? ओकर केहेन रूप-गुण छैक। जखन मैथिली भाषा आधुनिक कालमे भूमि पर आयल तखन फेरसँ आधुनिक सन्दर्भमे भाषाक आधार पर मिथिलाक चर्च भेल। फराक प्रान्त बनेबाक आन्दोलन भेल। कहि सकैत छी जे आइ मिथिला, मैथिली भाषे ल' क' अछि। मैथिली भाषा नहि तँ मिथिला नहि। मुदा की मिथिलाकेँ मैथिली भाषे तक सीमिति रहय देय जाय? अथवा ओकर आधारमे परिवर्तन करबाक प्रयोजन उपस्थित भ' गेल अछि।

जतय धरि वर्तमान कालमे स्वतन्त्रताक बाद मिथिला शब्दकेँ प्रयोगक गप्प अछि से मिथिला विश्वविद्यालयसँ ल' कए मिथिला कालेज, मिथिला क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, मिथिला क्षेत्रीय दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, मिथिलामोटर, मिथिला सैलून आदि

धरि सीमित अछि। ओहूमे जे संस्था मिथिलाक बुद्धिजीवीलोकनिक योगदानसँ बनाओल गेल अछि ओहिमे मिथिला स्वतन्त्र नहि अछि। कतहु ललित नारायण त' कतहु चन्द्रधारी लगले अछि। श्रमजीविये लोकनि, उद्यमिये लोकनि स्वतन्त्र रूपसँ मिथिलाक नाम अपन संस्था/प्रतिष्ठानमे रहय देने छथि। ओहीठाम मिथिला के स्वायत्तता प्राप्त छैक। मुदा इहो मिथिला शब्द दरभंगे प्रमण्डल धरि सीमित अछि। दरभंगे प्रमण्डलमे मिथिला क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक। सहरसामे नहि। सहरसामे ओ कोशी क्षेत्रीय, मुजफ्फरपुरमे तिरहुत क्षेत्रीय तहिना मुंगेर आ भागलपुरमे फराक-फराक भ' जाइये।

मैथिली भाषाक आधारकेँ सेहो छिन्न-भिन्न करबाक प्रयास स्वातन्त्र्योत्तर मिथिलामे चलि रहल अछि। अंगिका, बज्जिका आदि भाषाक झण्डा पताका उठल अछि। जकरा मैथिलीसँ फुटकाओल जाइये। फराक-फराक संस्कृतिक संग अपन अस्मिता फराक ताकल जाइये। मिथिलाक संग ओ लोकनि अपन अस्मिता नहि जोड़ि पबैत छथि। अपन फराक अस्मिता तकबाक प्रयोजन हिनकालोकनिकेँ किएक भेलनि? की एकर जड़िमे जातिवादी, वर्णवादी सोच तँ नहि अछि? अथवा मिथिलाक झण्डा उठौनिहार लोकक जातिवादी, वर्णवादी सोचक एक अन्य कुपरिणाम तँ ने थिक ई? एहि पर कारण आ परिणामक दृष्टिसँ विचार होयब जरूरी अछि।

स्वतन्त्रतासँ पूर्व मिथिलाक विस्तृत भू-भाग नेपालमे चल गेल। मिथिला बंटि गेल। नेपाली मिथिला आ' हिन्दुस्तानी मिथिला। एहि विभाजनकेँ हम सभ कोन रुपें ल' रहल छी? अथवा कोन रुपें लेने रही। की एहि बंटवाराक विरुद्ध कोनो प्रतिरोधक स्वर कहियो उठल छल? मैथिली साहित्यमे एकर अनुगूँज कतहु सुनाइ पड़ैत अछि की नहि? क्षेत्रक विभाजन भ' गेल आ कोनो सुख-दुख नहि भेल? की ई संभव अछि? साहित्यमे कोनो रूपमे ई किएक नहि आयल? मिथिला पर विचार करबासँ पूर्व की एहि बिन्दु सभ पर विचार करब, शोध करब, परीक्षण करब जरूरी नहि अछि। भारतक स्वतन्त्रताक बाद मैथिलीभाषी लोकनिक क्षेत्र विशेष अर्थात् मिथिला पर विचार करबाक लेल पहिने 'आँखिक' स्पष्टता आवश्यक अछि की नहि? कोन दृष्टिसँ विचार कएल जाय? कोन प्रक्रियासँ विचारल जाय? एहि अवधिमे मिथिलामे की सभ भेल अछि? की सभ नहि भेल अछि? कतेक आगू बढ़ल कतेक पाछू हटल। एकर आगू-पाछू की सभ कारण अछि? एहि आकलन लेल विभिन्न विशेषज्ञ लोकनिक आवश्यकता अछि। अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, राजनीतिविज्ञानी, मानवशास्त्री, इतिहासज्ञ सभक दृष्टि आ प्रक्रियासँ विचार कयल जाय। एहि अवधिक आकलन लेल हमरा जनैत कमसँ कम पचास वर्ष अथवा एक सय वर्ष पाछू जा कय विचार करब जरूरी अछि। तखने अगिला पचास-सय बरखक लेल ओ सार्थक भ' सकैत अछि। उपयोगी भ' सकैए। भूत आ वर्तमानक आकलनसँ जँ भविष्यक आधार तैयार नहि भेल तँ विचारबाक कोन प्रयोजन?

जखन हम स्वातन्त्र्योत्तर कहैत छी तँ ओहिमे स्वतन्त्रता निहित अछि। स्वतन्त्रता

अछि तँ स्वतन्त्रता संग्रामसँ गप्प शुरू करय पड़त। ओही संग्रामक फलस्वरूप स्वतन्त्रता भेटल अछि। ओहिसँ निरपेक्ष भ' क' हम ने कोनो आकलन क' सकैत छी ने विचार क' सकैत छी। एहू दिशामे एखन धरि बहुत काज नहि भेल अछि। मोटा-मोटी एखन धरिक जे धारणा रहल अछि ताहि हिसाबें मैथिली-मिथिलाक दृष्टिसँ स्वतन्त्रता संग्राममे समाजक योगदान सीमित बुझाइत अछि। साहित्यक स्वर मिरहिन्नी लगैत अछि। जखन की से बात अछि नहि। ई धारणा एहि दुआरे बनल अछि जे कोनो पैघ नेता नहि देखाइत छथि आ ने पैघ साहित्यकारे जे स्वतन्त्रता-संग्रामक उपजा होथि। संग्राममे तपि क' जरि क' राजनीतिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक क्षेत्रमे बड़का नाम भेल होथि। तें योगदान सीमित लगैये। की एहि दृष्टिमे सेहो परिवर्त्तनक अपेक्षा नहि अछि जे पैघ लोकहिंकें हमरालोकनि ताकी। जे हजारक हजार लोक स्वतंत्रता-संग्राममे भाग लेलक, मूइल, जहल गेल से कोनो कम महत्त्वपूर्ण बात थिकैक? ओकर पराभव, संघर्षशीलता, सुख-दुखक आकलन किएक नहि कयल जेबाक चाही? कहल जाइत अछि जे मैथिलीमे कियो मैथिली शरण गुप्त नहि भेला। ई केहेन बात अछि? की मैथिली स्वतन्त्रता संग्रामक भाषा रहय? की मैथिली राष्ट्रभाषा अछि? एकटा क्षेत्रीय भाषा जेकर वर्चस्वशाली वर्ग, साधन सम्पन्न वर्ग उपेक्षा क' रहल छल ताहि भाषामे लिखनिहार कवि कोना मैथिली शरण होइतथि अथवा इकबाल होइतथि? सुब्रमन्यम भारती होइतथि? मुदा मैथिली चेतनासँ लैस कविलोकनि जँ अपन थोड़बो कविता, गीतक माध्यमसँ स्वातन्त्र्यस्वर भरबाक, मनोबल बढ़ेबाक प्रयास केलनि तँ ई कोन कम थिक? ओहि कविते गीतक गुणवत्ताक कतेक आकलन भेल अछि? कतेक खोज भेल अछि? की ई हमरालोकनिक दृष्टि-दोष नहि थिक?

बहुत विनम्रतापूर्वक ई बात हम राख' चाहब जे की बुद्धिजीवीलोकनिक दृष्टि एखन धरि सामान्यजन सापेक्ष नहि भ' क' 'विशिष्ट-भद्रजन सापेक्षे' बनल नहि अछि? सामान्य लोकक, सामान्य लोकक कविक योगदानक कोनो मोजर किए नहि? अपन बाड़ीक पटुआके कहिया धरि तीत कहैत रहब? स्वतन्त्रता-संग्राम पर विचार करैत इहो देखब की आवश्यक नहि अछि जे ओ संग्राम मैथिलीक चेतनासँ लैस भ'क' कतेक लड़ल गेल? स्वतन्त्रता-संग्राम ओ मैथिली भाषिक चेतना पर काज की नहि हेबाक चाही? महात्मा गान्धीक नेतृत्वमे लड़ल गेल संग्राम जाहिमे हिन्दीक बोलवाला छल की मैथिलीक चेतनासँ एकदम निरपेक्ष रहल? की आइ धरि बुद्धिजीवीलोकनि स्वतन्त्रता-संग्राममे सामान्यजनक भाषिक चेतनाक लेखा जोखा केलनि अछि? ई सत्य जे नेतृवर्गमे हिन्दीदां व्यक्ति छला तेँ समान्योजनमे संग्रामक भाषा हिन्दी भ' जायब स्वाभाविक। मुदा स्थानीय स्तर पर मैथिलीक तँ खूब प्रयोग होइत छल। की मैथिलीक बिना मिथिला क्षेत्रमे स्वतन्त्रता-संग्राम लड़ल जा सकैत छल? जतय लाख-लाख सभ वर्गक लोक संग्राममे भाग लेलक ओतय मैथिलीक बिना कोना काज चलि सकैये? मैथिली कविता, मैथिलीमे लिखल गीत, पम्पलेट आदिक प्रभावकेँ कोना नकारल जा

सकैये? की एकर कोनो प्रभाव नहि पड़ल रहय? की मैथिलीमे लिखनिहार हमर कवि, रचनाकार जे स्वतन्त्रता-संग्रामी छला से हमर मुख्यधारामे नहि छथि? की हुनका जानि-बूझि क' कतिया देल गेल अछि? हमरा जनैत वैह हमर पूर्वज भ' सकैत छथि। हुनकेटा ई योग्यता प्राप्त छनि। ओहि युगमे मैथिल बुद्धिजीवी अधिकांश राज्याश्रित छला। ओ लोकनि संग्रामसँ या त' निरपेक्ष छला उदासीन छला अथवा अंग्रेजी राजक समर्थक छला। संग्राममे छलाहो तँ अपन आश्रयदाता राजा अथवा जमींदार जेकाँ चतुराइयेमे। संग्रामियोंकेँ प्रसन्न राखी आ अंग्रेजोंकेँ। ई कोना सम्भव छल जे दरभंगराजक समर्थक रही आ स्वतन्त्रता-संग्राममे सेहो भाग ली? राजभक्ति आ संग्राम कोना सम्भव भ' सकैत छल? ई तथ्य केहेन विडम्बनापूर्ण अछि जे महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह जिनकर राष्ट्रभक्तिक प्रशंसा करैत बुद्धिजीवी नहि थकैत छथि ओ मैथिलीक उपेक्षा केलनि। अपन कार्यालयसँ मैथिलीकेँ हटा देलनि। दरभंगाक महराजलोकनि राजकाजमे हिन्दी आ शिक्षामे संस्कृतक स्थापना केलनि। ओहि वातावरणमे संस्कृत, फारसी, हिन्दीक प्रभावसँ मुक्त भ' मैथिलीक चेतनासँ सम्पन्न भ' क' साहित्य सृजन करब आ मैथिलीक माध्यमे (जे सामान्यजनक भाषा छल) लोकमे स्वतन्त्रता-आन्दोलनक चेतना जगायब की एकदम टटका आ अद्यतन, आधुनिक सोच नहि छल? की एहि सोच ओ परम्पराक उपेक्षा बुद्धिजीवी नहि कयलनि अछि? अद्यतन ओ आधुनिक सोचके अंग्रेजिया चालि कहि उपहास नहि भेल अछि? ओहि चेतना आ सोचक संग संग्राममे भाग लेनिहार आ साहित्य सृजन केनिहार की मैथिली समाजक वास्तविक बुद्धिजीवी नहि छथि? मिथिलाक सामान्यजन सापेक्ष सोच आ मैथिलीक भाषिक चेतनासँ सम्पृक्त वैह बुद्धिजीवीलोकनि समाजक वास्तविक द्रष्टा छथि वैह समाजक लेल पैघ आ महान व्यक्तित्व।

स्वतन्त्रता-संग्रामक संग समाज व्यवस्थामे आधारभूत सुधार ओ परिवर्तनक कार्यक्रम सेहो चलैत छल। मिथिलामे सेहो एहि दिशामे काज भेल? एहि नवजागरण ओ स्वतन्त्रता-संग्रामक के सभ अग्रदूत छला? के सभ एहेन छला जे राजनीतिक स्वतंत्रता ओ सामाजिक परिवर्तन दुनू उद्देश्यक प्रति प्रतिबद्ध ओ समर्पित रहथि? की ओ मैथिली चेतनासँ सेहो सम्पृक्त छला? यदि नहि छला तँ किएक नहि छला? ओना मोटी-मोटी ई बात कहल जाइत अछि जे भारतमे भाषिक चेतना अथवा सांस्कृतिक जागरणसँ प्रतिबद्ध लोक सामाजिक परिवर्तनक मानसिकता बनेबामे सहायक नहि भेला। मुदा एहि दृष्टिसँ तथा एहि दिशामे सेहो काज करब की मिथिला-मैथिलीक सन्दर्भमे जरूरी नहि अछि?

की ई एकटा विडम्बना नहि लगैत अछि जे स्वतन्त्रता-संग्राममे सामान्यजन धरि पहुँचबाक लेल ओकर जागरण लेल लोकभाषा ओ लोकसंस्कृतिकेँ माध्यम नहि बनाओल गेल? की अहूठाम विशिष्टजन आ सामान्यजनक विरोधाभास उपस्थित अछिये। बुद्धिजीवीलोकनि बंगाल जकाँ 'जात्रा' किएक नहि ठाढ़ क' सकला? बंगालसँ

एतेक सटल रहितो, सम्बन्ध रहितो एहि तरहक प्रभाव अथवा चेतना बुद्धिजीवीमे किएक नहि आयल? की दरभंगाराजक 'चौअन्नी' आ संरक्षण चेतनाकेँ भोथ नहि करैत छल? की दरभंगाराज सेहो चेतनाके भोथ करबाक कैक प्रकारक ओरिआओन नहि कयने रहय? एतेक प्रतिभा सम्पन्न मैथिलबुद्धिजीवी की सिंहासनसँ बन्हले रहि गेला? भाइमे कियो दादा भेला की नहि? एहि सभ दृष्टिसँ विचारबाक आ काज करबाक, खोज करबाक आवश्यकता अछि। स्वतन्त्रता संग्राममे बौद्धिक सम्पदाक विश्लेषण-मनन की स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला पर विचारवाक लेल जरूरी नहि अछि? यदि नहि अछि तँ हमरालोकनि आइ स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला पर विचारबाक लेल किएक बैसलहुँ अछि? स्वातन्त्र्योत्तर उत्तर बिहार पर किएक नहि विचार करैत छी? ई मिथिला मोह किएक? कोन काजक?

स्वातन्त्र्योत्तर मिथिला ओ भाषा साहित्य, चेतना समिति, 1999

विकास-सन्दर्भ

किछु मास पूर्व एकटा मैथिल भेटला। बैंकमे अधिकारी छथि। गप्पक क्रममे कहलनि जे मैथिलीमे एखनो पचास वर्ष पहिलुके साहित्य लिखल जाइत अछि। ओहिठाम चारि समाङे रही। बुझू त' लूझि लेलियनि। हुनका पानि पियाब' पर विर्त्त। ओ कहैत रहला जे दुनिया कत'सँ कत' चल गेल अछि। सूचना तकनीक-इंटरनेट, बेबसाइटके जमाना अछि। मुदा मैथिलीमे ई सभ कतहु नहि भेटत। हमरासभ हुनका एहि बात पर गोलियौने रही जे पछिला तीन वर्षमे कोन-कोन मैथिलीक पोथी अहाँ पढ़लहुँ अछि। ओ माटि पकड़ैबला नहि रहथि। कहलनि जे पढ़बाक काज कोन अछि। सभा-सोसाइटीमे जाइत छी। गोष्ठी सभमे भाग लैत छी। लोक सभक गप्प सुनैत छी। हमरा बूझल अछि जे मैथिलीमे पढ़बा जोगर किछु नहि अछि। अन्ततः ओ भेंट एकटा तनाओमे समाप्त भेल रहय।

ओ भेंट मुदा मोनके एखनो छेकने अछि। होइए जे ओहि मैथिलकेँ मैथिलीक पाठक बनाबी। देखा सकी जे मैथिलीमे पचास वर्ष पहिलुक साहित्य नहि लिखल जाइत अछि। किछु मित्र कहैत छथि जे व्यर्थ चिन्तामे पड़ल छी। ओहि मैथिलकेँ मैथिलीक पाठक नहि बना सकैत छी। कहुना बनाइयो लेब त' ओ टिकता नहि। कोनो ने कोनो लाथ लगाक' फेर हाथ झाड़ि लेता। किछु आर नव गप्प सभ कह' लगता। ई मृगतृष्णा छोड़ू। दोसर दुआरि देखू।

एहि बातक खोज सेहो अछि जे मैथिल पाठककेँ सभसँ प्रिय कोन रस छनि। पाठकक विकास केहेन भ' रहल अछि। कोन रसमे लटपटा क' हुनका राखल जा सकैये। किछु गोटा कहैत छथि जे शृंगार रसमे। मैथिललोकनि अदौसँ शृंगारिक छथि। किछु गोटा कहैत छथि जे हास्य रसमे। प्रो. हरिमोहन झाकेँ प्रमाण रूपमे उपस्थित करैत छथि। मुदा किछु गोटे एहनो छथि जे मैथिलकेँ सभसँ प्रिय रसमे निन्दा रसकेँ मानैत छथि। ताहूमे अपन निन्दा हो त' महोमहो। एहि अपनक परिधिमे अपन लोक, अपन समाज, क्षेत्र अर्थात् जत' कतहु मिथिला आ मैथिली हो। मैथिल हो। तकर जते विन्याससँ निन्दा करब, जत्ते मसल्ला-तेल-आमिल-मेरचाइ द' क' परसब मैथिल

पाठक के तत्ते पसिन्न पड़तनि। ओ अही रसमे अहाँक सृजनात्मकता-कलात्मकताक लोहा मानि सकैत छथि। एताबता निन्दा जँ तेलमे चपचप अँचार जकाँ परसल जाय त' मैथिल पाठकक़ें अहाँ तृप्त क' सकैत छी।

किछु गोटे दोसरे बात कहैत छथि। ओ कहैत छथि जे निन्दा असगर किछु नहि क' सकैये। ओहि से झगड़ा-रगड़ाक तीत-कसाय स्वाद मिज्झर करब जरूरी अछि। नीम-भाँटा, पटुआ साग, करैला आ मेथी-मंगरैल खयनिहार मैथिलक चटकारमे झगड़ाहु व्यसन के नहि अनठा सकैत छी। तैं साहित्यमे झगड़ादन के गप्प, रगड़ा-रगड़ीक वर्णन हरबे-हथियारक संग अवश्य रहय। हथियार मानै बम-गोली नहि। बम-गोलीवला साहित्यके त' मैथिल पाठक लगले बम बजा देता। एहिठाम त' बोलीमे गोली हेबाक चाही। साप मारल हुअय वा नहि मुदा लाठीसँ ठकठक अवश्य करैत रहू। नहि त' थोपड़ी बजबैत त' बाट पर जरूरे चलू। साप-कीड़ा ओहिना पड़ा जायत। मुदा सापो-कीड़ी आब गमि लेलक अछि। थोपड़ीसँ नहि पड़ाइये। मनुक्खक कथे कोन। एताबता झगड़ो-रगड़ाक गप्प खाली गप्पे रहय। खड़ त' अहाँ खड़खड़ा सकैत छी। ओहिसँ आगू बढ़बामे कने धैर्य राखू। मतलब झगड़ो-रगड़ाक स्वाद मोने-मोन। वाह, खूब लड़ै जाइत छथि। खूब लड़थु। हम त' बाँचल छी। हम त' तमशगीर छी। तमाशा देखब। हमरे भिड़ा देब एहन साहित्यसँ हम बाज अबैत छी बाबू।

किछु गोटे कहैत छथि जे पहिलुका रस सभसँ आब काज चल' बला नहि अछि। मैथिललोकनि बदलि गेल छथि। जे पाठक हेता से दुनिया देखने छथि। गाम छूटल छनि। स्वाद बदलल छनि। आब मेथी-मंगरैल, पटुआ साग नहि खाइत छथि। रेडीमेड चलानी मसल्ला खाइत छथि। मेथियो खाइत छथि त' काश्मीरी। तरकारियो खाइत छथि त' मिक्स्ड भेजीटेबुल। सोहारीक बदला तन्दूरी। मैगी आ चाउमिन। बटाटा बड़ा। उपमा उत्तपम। पाव भाजी। इटालियन सलाद, कोफ्ता, इंटर कान्टीनेन्टल डिशेज। हिनकालोकनिक जीह बदलि गेल छनि। तैं हिनका ओहने साहित्य चाही ओहने कथा चाही। जाहिमे आर सभ किछु हो मुदा मिथिला नहि हो। बांगक गाछ, तनूफक फूलक कथे कोन तीरा-तग्गड़, अड़हुल धरि नहि हो। हुनका त' डेफोडिल, लिली, गोल्डमोहर, यूक्लिप्टस चाही जाहिमे सुन्दरता त' हो मुदा सुगन्धि नहि हो। सुगन्धिसँ हिनका एलर्जी भ' गेल छनि। हिनका लेल कथामे बजार सजा दिअनु मुदा धोखोसँ कोनो विचारक प्रवेश नहि हुअय। जीवन ओहिना जंजाल भ' गेल छनि। विचार सुनितहिं भड़कि जाइत छथि जेना लाल कपड़ा देखिक' साँढ़ भड़कैये।

किछु गोटे कहैत छथि जे अजुका पाठक नामक प्राणी लेल एहन साहित्यक निर्माण करू जाहिसँ हुनकर स्टेटस बढ़नि। दस गोटाके देखा सकथि जे देखू हम एहन चीज पढ़ै छी। एकदम इम्पोर्टेड माल। अपन सम्पूर्ण इतिहाससँ छुटकारा पाबि लिअ' अपन संस्कृति के' यूज एण्ड थ्रो' बना लिअ'। अपन भूगोल के भूमण्डलमे बोरि लिअ'। सभटा आकार खतम क' दियौ। हवा-हवाइ भ' जाउ। हवा-हवाइ...।

एहि पाठक सभसँ भेंटक बाद फेरमे पड़ि जायत कियो। ई हवा-हवाइ कोना भ' जायत। तखन रहि की जायत? किछु बाँचलो रहि जायत की? किछु बाँचल रहबाक की कोनो प्रयोजन नहि अछि? ई त' आब अस्तित्वक प्रश्न भ' गेल। अस्मितासँ लड़ाइ अस्तित्व पर आबि गेल। अस्तित्व रहत तखन ने अस्मिता। बाँचब तखन ने पहिचान-परिचिति। माटि रहत तखन ने मुरुत बनायब। तैं एहि वर्ग विशेषक हवा-हवाइ पाठकक मोह आब निर्ममतापूर्वक त्यागक चाही। सैह लगैये। जँ त्याग क' दैत छी त' एकटा वृहत्तर वर्गसँ जुड़ि जेबाक सम्भावना बनैत अछि। ओहि वृहत्तरवर्गसँ जे अस्तित्वक लड़ाइ लड़ि रहल अछि। ओकर अस्तित्वक लड़ाइ संग अपन अस्तित्वके एकाकार करबाक चेष्टा करी। एहिसँ लड़ाइ धरगर हेबाक सम्भावना बनि सकैत अछि। मुदा की ई एकाकार होयब सहज अछि? अस्तित्व लेल संघर्षरत वर्ग के मैथिलीक पाठक बनायब सहज अछि? बूझैत छी जे एहि वर्गकें मैथिलीक पाठक बनौने बिना आब मैथिलीक अस्तित्व सेहो संकटग्रस्त अछि। तैं मैथिलीक अस्तित्व लेल सेहो एहि वर्गसँ जुड़ब जरूरी। वृहत्तरवर्गक अस्तित्व संघर्ष आ मैथिलीक अस्तित्व संघर्ष एकमेत होयब जरूरी। ई होयत कोना? मैथिली ओकरा अपन लागक चाही। ई लागक चाही जे मैथिली ओकर संघर्ष के बोल द' सकैत अछि। मैथिलीमे ओ ताप ओ उष्मा आबक चाही। वृहत्तरवर्गक संवेदनासँ मैथिली साहित्यकें जुड़क चाही। की वर्चस्ववादी संस्कृति-साहित्यसँ से सम्भव अछि? की लोक-संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण अवदान के अनठौने से सम्भव होयत? की लोकतान्त्रिक भेने बिना ओहि वर्गसँ अपनाकें जोड़ि सकैत छी? अर्थशास्त्रक शब्दावलीमे कही त' सकल घाटाक कारणे जमापूँजी खतम भ' रहल अछि। जमापूँजीक क्षरण भ' रहल अछि। या त' एहि संस्थाके बन्द क' देबाक चाही जाहिसँ घाटा आर नहि बढ़य अथवा एहिमे नवपूँजी जमा हेबाक चाही। नव-नव निवेश ताकल जेबाक चाही। जाहिसँ संस्थामे नव रक्तक संचार हो। नव लोकक संग जुड़ाव-लगाओ हो। लोक एकरा अपन घाटा-नफाक सौदा मानय।

जनैत छी जे किछु गोटे एहि घाटा-नफाक शब्दावलीसँ भड़कि सकैत छथि। सांस्कृतिक क्षेत्रमे अनधिकार प्रवेश मानि अपन ठोर बिजका सकैत छथि। मुदा एहन लोक ओहि वृहत्तरवर्ग के जोड़बाक बातसँ सेहो परहेज करैत छथि। घाटा के घाटा नहि मानैत छथि। जमापूंजीक क्षरण पर सेहो प्रश्नचिह्न लगा सकैत छथि। मैथिली ओकरा अपन लगाय तकरो प्रयास पर टंटा ठाढ़ क' सकैत छथि। हुनकालोकनिक लेल मैथिलीक प्रश्न अस्तित्वक प्रश्न नहि अछि। अस्मिताक प्रश्न दोकानक साइनवोर्ड सन अछि। माटिसँ जुड़ल रहबाक भ्रम पसारैत एहन लोक वास्तवमे हवा-हवाइ छथि। हमरा अथवा हमर सहकर्मी-सहधर्मीकें हिनकालोकनिकें चीन्हि लेबाक चाही। सामूहिक उत्तरदायित्वक यैह तकाजा अछि।

सामूहिक दायित्व इहो अछि जे अपन कथा-कविता-उपन्यासक भाषामे लोक-संस्कारकें जगजियार करी। ओकरा सरल-सुबोध, पारदर्शी बनाबी। अलंकरणक

नाम पर ओहिमे विशिष्ट वर्गक सौन्दर्य-बोध के हॉवी नहि हुअ' दी। वृहत्तरवर्गक सौन्दर्य-बोधसँ भाषाके नव संस्कार दी। वृहत्तरवर्गक संघर्ष चेतनासँ ओहिमे उष्मा आ ताप आनी। माटि-पानिसँ जुड़बाक अर्थ भुरभुरी माटि आ जमकल-गन्हायल पानिसँ जुड़ब नहि होइ छै। जिनका एहि भुरभुरी माटिसँ महादेव बनेबाक छनि, एहि जमकल पानिके गंगाजल मानि बोतलमे बन्द करबाक छनि, से करथु अपन काज मुदा से हमर अहाँक सहकर्मी-सहधर्मी नहि छथि। ई बात हमरा सभके फरीछ भ' जेबाक चाही।

ई वृहत्तरवर्ग मैथिली समाजमे बसैत अछि। हमर माटि मिथिलेक माटि थिक। मुदा ई माटि आनोठामक माटिसँ जुड़ल अछि। हमर पानिमे आनो क्षेत्रक पानि आबि रहल अछि। हमर लोक आनोठाम रहि रहल छथि। ई सम्पूर्ण भारत की सम्पूर्ण विश्वसँ हम जुड़ल छी। मैथिली समाज जुड़ल अछि। हम आब अपन फराक द्वीप बनाक' नहि रहि सकैत छी। आनठामसँ बीया-बालि आनि सकैत छी। नव तकनीक आनि सकैत छी। नव आ उपयोगी विचार आनि सकैत छी। दृष्टि आनि सकैत छी। ई सभ बात उचित अछि। सार्थक अछि। मुदा आनल बिया-बालि के पहिने मिथिलाक माटिमे छीटि क' देख' पड़त। एहिठामक माटिमे जनमैत अछि की नहि? जनमैत अछि त' उपयोगी अछि की नहि? पर्यावरण के संतुलित रखबामे समर्थ अछि कि नहि? लोकक विकास लेल उपयुक्त अछि कि नहि? वृहत्तरवर्गक एहिमे हित अछि कि नहि? सामाजिक यथार्थक परिप्रेक्ष्यमे मनुक्खक विकास एहिसँ सम्भव अछि की नहि? शोषित-दलित वर्ग के ई सबल बनबैत अछि की नहि? जीवन एहिसँ सार्थक ओ सुन्दर बनैत अछि की नहि? मैथिली समाजक एहिसँ विकास होइत अछि की नहि? आखिर ई विकास थिक की? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भ' रहल के अस्त भ' रहलक जगह लेबहि के विकास कहल जाइत अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे नव, पुरानके पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहिमे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि। वस्तुतः ओ श्रेष्ठतम के कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि। ओकरा एक नव उच्चतर स्तर पर सेहो उठबैत अछि।

कहि सकैत छी जे ई सभटा बात बिया-बालि अनबाक काल कोना बूझि जेबैक? तकनीक आ विचार आयात करैत काल कोना अनुमान क' सकब जे ई हमरा लेल उपयोगी अछि की नहि? वृहत्तरवर्गक हितमे अछि की नहि? एहिसँ समाजक विकास हैत की नहि? एहि सभ प्रश्न पर एतबे टा कहि सकैत छी जे प्रथमतः अहाँ केवल आयात लेल उत्सुक छी। आनठामक चीज अहाँके चकविदोर लगौने अछि। अपनाके जनने बिना अपन माटि के चिन्हने बिना अहाँ विकासक लौल क' रहल छी। अहाँ अपन इतिहास के नहि जानि रहल छी अथवा इतिहासक सम्बन्धमे एकटा निरर्थक भ्रम पोसने छी। अहाँके अपन समाजक आंशिक ज्ञान अछि। अहाँ जँ बजारक चकचकीमे पड़ि गेल छी त' किछु नहि कहबाक अछि। मुदा जँ अहाँ अपन खगता

जनैत छी आ अपन डाँड़क सम्बन्धमे अहाँके कोनो भ्रम नहि अछि त' अहाँ अपना लेल उपयोगीये चीज बेसाहब। अपन घर के कबाड़खाना नहि बना लेब। अपन माटिक उर्वरता नष्ट नहि क' लेब। विकासक नाम पर विनाश दिस नहि बढ़ब।

हमरालोकनिकेँ एकटा आर सुविधा अछि। पछुआयल इलाकाक लोक होयबाक कारणे आर्थिक कारणसँ दुनियामे पसरल छी। दुनिया के देखि रहल छी। सभठामक विकास आ ओकर परिणाम के आकलन क' सकैत छी। विकसित क्षेत्रक अन्तर्द्वन्द्व, ओकर दुष्परिणाम, दुर्गति, मानवीयताक ह्रास, समाजक ताना-बानाके छिन्न-भिन्न होयब, व्यक्तिवादिताक पैशाचिक लीला सभके देखि-परखि सकैत छी। मुदा एहि सभके देखबाक लेल मैथिली समाजक यथार्थ के, वृहत्तरवर्गक कष्ट-दुखके ध्यानमे राख' पड़त। उचित विकास लेल मानदण्ड निर्धारणकाल मिथिलाके विशेषतः आ भारत वा विश्व के सामान्यतः दृष्टिमे त' राखहि पड़त। त' सहजहिं हमरालोकनि मैथिली समाजक आर्थिक-सामाजिक आ सांस्कृतिक विकास लेल उपयुक्त प्रविधि-चिन्तन जोहि सकैत छी। कार्य-योजना बना सकैत छी। प्रारूप प्रस्तुत क' सकैत छी। ई सभ संकुचित नहि व्यापक दृष्टिसँ सम्भव अछि। मुदा एहि लेल अपना भीतर परिवर्तन सेहो आनहि पड़त। सभसँ पहिने त' सैह जरूरी अछि।

ई सभटा बात कहबाक अर्थ ई नहि लगाओल जेबाक चाही जे एखन धरि सभ किछु ऋणात्मके अछि। कोनो क्षेत्रमे धनात्मक स्थिति त' भेटिये सकैत अछि। ठाम-ठीम प्रकाश, प्रयास आ विकास त' स्पष्ट अछिये। ई बात सांस्कृतिक क्षेत्रमे सेहो देखल जा सकैत अछि। तत्काल सन्दर्भ त' सांस्कृतिके अछि। आक्रमणो सांस्कृतिके क्षेत्र पर समधानि क' चलि रहल अछि। गदौस सेहो एही क्षेत्रमे भरल अछि।

सन्धान-4, जुलाई 2000

मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक स्थिति आ पत्र-पत्रिका

बीसम शताब्दीक आरम्भमे मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय छल। समाजमे आर्थिक ओ धार्मिक शोषण पराकाष्ठा पर रहय। शोषण केनिहार 'धर्मरत्नाकर'*क उपाधिसँ विभूषित भ' रहल छला। लोकक स्थिति एहन दयनीय छल जे स्थितिमे सुधारोक लेल शोषणक उद्गमे स्थल पर टकटकी लगौने रहय। भीषण शोषणयुक्त कर-प्रणालीक कारणे जीवन-निर्वाहक साधन खेती उजड़ि रहल छल। समाजक किछुये लोक सुखी सम्पन्न छला। मिथिलाक उद्योग सभ पतन दिस अग्रसर छल। परम्परागत कुटीर आ शिल्प उद्योग नष्टप्राय भ' गेल रहय। नगदी फसिल नील पर आधारित उद्योग बीसम शताब्दीक दोसर दशक धरि अबैत-अबैत एकदम समाप्त भ' गेल। शीशा, चूड़ी, ईंटा, खपड़ा, चक्कू, बिस्कुट एवं दुग्ध उत्पाद, गुड़, हस्तकरघा, पथिया एवं बाँससँ निर्मित बस्तु इत्यादिक जे किछु उद्योग चलि रहल छल से पूंजी एवं बाजारक अभावमे समाप्त भ' रहल छल। जेहो किछु उद्योग रहय से समाजक नगण्य जनसंख्या के जीविका द' पाबि रहल छल। समाजक उच्चवर्गमे स्त्रीक स्थिति एकदम भयावह भ' गेल रहय। बहु-विवाह बिकौआ प्रथाक बाद पर्दा-प्रथा, तिलक-दहेज, विधवा-जीवन स्त्रीक जीवन के मूक पशुवत् बनाक' राखि देने छल। पुरुष ओ स्त्री बच्चाक बीच भेदभाव अपन चरम पर रहय। एहिमे शास्त्र ओ कर्मकाण्ड सेहो सहयोग द' रहल छल। बाल विवाह आ धार्मिक अन्धविश्वास समाजक हरेक वर्गमे व्याप्त रहय। विवाह आ श्राद्ध आदिमे आडम्बरपूर्ण खर्चसँ उच्चवर्ग विशेष रूपेँ तबाह छल। एहि सभहक संग समाजमे विभिन्न जातिक बीच फराक-फराक जातीय चेतना सेहो जागि रहल रहय। जातिक संगठन बनब प्रारम्भ भ' गेल रहय। एहने सामाजिक-आर्थिक परिवेशमे बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक दशकमे मैथिली पत्र-पत्रिका जन्म लेलक।

* काञ्चीनाथ झा 'किरण' क कथा 'धर्मरत्नाकर' मोन पाड़ू।

आरम्भमे विद्यापति-गीतक भाषा विवाद मिथिलाक बुद्धिजीवी के मैथिली दिस तकबाक लेल उसकौलक। मैथिली-भाषाक अस्तित्वरक्षा चिन्तासँ सक्रियता आयल। भाषाक अस्मिता खोजमे संस्कृति दिस ध्यान गेल। संस्कृति के तकैत काल समाज मोन पड़ल। समाजक स्थिति आ समस्या के सुधारबाक आवश्यकता अनुभव भेल।[1] मुदा ई समाज अभिजन वर्चस्वक समाज रहय। जे अपन गौरव प्राप्तिक चेष्टामे जागृत भेल। मिथिला मोदमे काली प्रसाद चौधरी तहिया लिखलनि, 'जखन सभ जातिक लोक अपन-अपन जातीय सुधार, समाज संस्कारक चेष्टा कै रहल अछि तखन मिथिला शिथिला भेलि रहथि से की युक्त? जखन चतुर्दिशिसँ सुधार-सुधारक दुन्दुभी सुनि पड़ैत अछि तखन मैथिल-भातृगणक अपन आदि गौरवक प्राप्तिक चेष्टा (जे एखन लुप्तप्राय भै गेल अछि वा मृतप्राय होमै लेल अछि) की अनुचित? ...ई परम आनन्दक विषय थिक जे मिथिलाभक्त लोकनिक हृदयमे देश-सुधार वा समाज संस्कारक अङ्कुर उगै लगलन्हि, ओ ई हमरा देशक भाग्य थिक।[2] गौरव प्राप्तिक चेष्टाक संग तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक स्थिति सेहो मैथिल अभिजनकेँ सामाजिक एकजुटता लेल प्रेरित कयलक। मैथिल अभिजनक मुकुट छला महराज रमेश्वर सिंह। लोक हुनका मिथिलेश कहैत छल। मिथिलाक संग सम्पूर्ण देश हुनका सनातन धर्मक रक्षक रूपमे चीन्हि रहल रहय। अपन जेठ भाइक विपरीत हुनकामे धार्मिक कट्टरता बेसी छल। महराज लक्ष्मीश्वर सिंह थोड़ेक उदार छला। ओ मिथिलासँ ऊपर उठिक' राष्ट्रीय समस्या सभ दिस ध्यान देब' लागल रहथि। अपन राजनैतिक चेतना आ सामाजिक-सुधारमे योगदानसँ प्रतिष्ठा अर्जित केने रहथि। कांग्रेसक स्थापना कालमे ओकरा सहायता देने रहथिन।

एम्हर ओहिसँ पूर्व 1857 क क्रान्ति के बाद ब्रिटिश शासन लोक के मिलाब' पर लागल छल। एक दिस जमीन्दार सभके मिला रहल छल त' दोसर दिस किसान सभ पर जमीन्दारक प्रभावकेँ कम करबा पर लागल रहय। एहि क्रममे ओ एहन सामान्य भाषाक प्रसार चाहैत छल जाहिसँ देशी लोकक दिमाग के बूझल जा सकय। आन प्रदेशमे त' ओ एहि क्रममे ओहि भाषा के शिक्षाक माध्यम बनौलक जे बहुसंख्यक द्वारा बाजल जाइत छल मुदा मिथिलामे पहिने उर्दू अथवा हिन्दुस्तानी तकरबाद हिन्दी के माध्यम बनौल गेल। महराज लक्ष्मीश्वर सिंह हिन्दीक पक्षमे अपन प्रभावक उपयोग केलनि।[3] एहि प्रकारेँ मिथिलाक भाषा मैथिली ओहिकालमे शिक्षाक माध्यम नहि बनि सकल। एहि बातक टीस किछु मैथिल बुद्धिजीवीक मोनमे असंतोष भरि रहल छलनि। ओ लोकनि भाषा चेतनासँ अनुप्राणित भ' एक मैथिल संस्था बनेबाक सूरसारमे छला। मुदा ईहो काज दरभंगा महराजक बिना जेना सम्भव नहि रहय। महराज रमेश्वर सिंह एक धार्मिक लोक त' छलाहे ओ व्यापारी मानसिकताक सेहो रहथि। राज दरभंगामे सूदि पर रुपैया लगाओल जाइत रहय।[4] कतेको कारणसँ महराजो एक संस्थाक अभिलाषी भेला। ई हुनकर बाध्यता आ आवश्यकता सेहो भ' गेल रहनि। एही वातावरणमे 1910 ई.मे मैथिल महासभाक जन्म भेल।

मैथिल महासभाक जन्मकालक स्थितिक विश्लेषण करैत युवा इतिहासकार पंकज कुमार झा कहैत छथि, 'बुद्धिजीवी वर्गमे मानसिक विभाजनक संग असंतोषक भावना सेहो व्याप्त छल। मिथिला तत्व विमर्शणी सभाक मुख्य उद्देश्य मिथिलाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के उजागर करब छलैक। ई अंचलक बुद्धिजीवी वर्गक एक स्वप्रेरित सांस्कृतिक संस्था छल जाहिमे महराजक कोनहु सक्रिय भूमिका वांछनीय नहि छल। परन्तु राजदरबारसँ सम्बन्धित रूढ़िवादी लोकनि एहि संस्थाक कार्यकलापसँ कथमपि सन्तुष्ट नहि छला आ तेँ ओ लोकनि ई प्रचार शुरू करय लगला कि संस्थाक कार्य-कलापसँ महराज प्रसन्न नहि छथि। एहि तरहक वातवारणमे एहि संस्थाके जीवित रहनाइ असम्भव भ' गेल आ धीरे-धीरे ई संस्था एतेक अक्षम भ' गेल जे एकर नाम 'मुर्दा-क्लब' पड़ि गेल। ...दरबारक वातावरण प्रगतिशील बुद्धिजीवीक लेल श्वसावरोधक भ' गेल छल। ...महराज व्याप्त असंतोषसँ अनभिज्ञ नहि छला ओ ईहो जनैत छला जे बुद्धिजीवी वर्गमे व्याप्त असंतोष दरभंगा राजक काम-काजमे बाधा उत्पन्न कय सकैत अछि। तें महाराज लेल बुद्धिजीवी वर्गक आहत भावना के समाप्त करब आवश्यक छल।[5]

एहि पृष्ठभूमिमे महराज रमेश्वर सिंहक सभापतित्वमे जे संस्था बनल से स्वाभाविक रूपें धार्मिक आ जातीय कट्टरताक संग स्थापित भेल। मुदा ओहिमे कृषि, वाणिज्यक उन्नति, मितव्यय, मैथिली स्वत्वरक्षा एवं मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित साधन के सेहो स्थान देल गेल। 26 मार्च 1910 के मधुवनीमे ओहि संस्थाक पहिल अधिवेशन भेल। सभापति पदसँ भाषण दैत महराज ओहि संस्थाकेँ 'मैथिल धर्म-महासभा' कहलनि। 'मिथिला मोद' हुनकर वक्तृता के 'श्री मैथिल धर्म-महासभामध्य श्रीमान मिथिलेश सभापति महोदयक वक्तृता कहि छपलक।[6] मुदा मिथिला-मिहिर 'श्री मैथिल जातीय महासभा' कहि क' हुनकर भाषण छपलक। महाराजक अध्यक्षीय भाषणमे व्यक्त विचार महासभाक नीति बनल। महराज कहलनि जे, 'अपनालोकनि काँ सनातन धर्म तथा सामाजिक उन्नति करबाक निमित्त एतादृशी महती सभाक परम आवश्यकता अछि।. ..प्रत्येक ग्राम मध्य जहाँ-जहाँ मैथिल ब्राह्मणक निवास अछि, एहि महासभाक शाखा स्थापित कयल जाय।...हमरा अपना जाति गौरव रक्षाक हेतु सर्वप्रथम आवश्यकता सदाचार ओ सनातन धर्महि अछि।...एहि विषयक अत्यन्त आवश्यकता अछि जे हमरा सबहिक धर्मक एक अंग राजभक्ति थिक तस्मात् राजभक्ति काँ एक अपन अवश्य कर्त्तव्य मानि कदाचितहुँ राजशासन प्रणालीक विरुद्ध आचरण नहि करी, जाहिसँ परिणाममध्य सीदित नहि हौमैक पड़ै, राजभक्तिक पालन काँ एक विशेष उन्नतिक साधन मानैत अपन उन्नतिक यत्न कर्तव्य थिक। ...विवाह सम्बन्धी नाना कुरीति यथा-बहु विवाह, अयोग्य विवाह इत्यादि शास्त्र ओ लोक मर्यादाक विरुद्ध अछि।[7]

स्वाभाविक रूपें एहिमे मैथिल अभिजन अर्थात् राजसँ लागल-भिड़ल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ प्रमुखतासँ सक्रिय भेला। एहि दूनू जातिक सक्रियताक एक दोसरो कारण छल। वस्तुतः यैह दूनू जाति कर्णाट आ ओइनिबार बंशक राज-काजमे सेहो प्रमुखतासँ

लागल-भिड़ल रहथि। एही दूनू जातिमे पंजी व्यवस्था सेहो विद्यमान छल। तेँ मिथिला-मैथिल चेतना हिनकामे परम्परासँ प्राप्त रहनि।

एही क्रममे ईहो कहब अप्रासंगिक नहि होयत जे ओहीकालमे फराक-फराक जातीय चेतना सेहो मिथिलामे जड़ि जमाब' लागल छल। भूमिहार, राजपूत ओ कायस्थ बहुत दिनसँ जातीय 'कान्फ्रेन्स' क' रहल रहथि।[8] गोआर, गोढ़ि, क्योट, धानुक इत्यादि सेहो अपन-अपन जातिक उन्नति करबा लेल तत्पर भ' गेल रहथि।[9] मुदा हिनका लोकनिकेँ मैथिल महासभासँ नहि जोड़ल गेल। एहि प्रकारेँ ओ सभ मैथिली भाषा चेतनासँ उपजल सामाजिक चेतनासँ नहि जुड़ि सकला। मैथिली आ मिथिलाक वृहत्तर समाजक बीच प्रारम्भहिमे एक खाधिक निर्माण भ' गेल। मिथिलामे एकर अतिरिक्त मुसलमान, सिक्ख, जैन, बौद्ध क्रिश्चियन धर्मावलम्बी सेहो रहथि। एखनो छथि। विभिन्न धर्म ओ पंथक लोक जाहिमे कबीरपंथी सेहो छथि, मिथिलाक विभिन्न इलाकामे बहुत दिनसँ विद्यमान छथि। बंगाली, उड़िया राजस्थानी भाषा-भाषी समाज सेहो अछि। जातिक आधार पर 1931 क बाद जनगणना नहि भेल अछि। मुदा 1931क जनगणनाक आधार पर जँ विश्लेषण करी त' निम्न तथ्य प्रकट होइत अछि—

(क) मिथिलाक हरेक क्षेत्रक जातीय संरचना फराक-फराक छैक।
(ख) मुख्य जातिमे क्षेत्रवार अन्तर अछि।
(ग) यादव छोड़ि आन कोनो जाति सभ क्षेत्रमे एक समान प्रमुखता मे नहि छथि।
(घ) मिथिलाक मुख्य जातिमे गोआर, दुसाध, कोइरी, धानुक, ब्राह्मण, भूमिहार, चमार, मुसहर, मलाह, केयोट आदि छथि।

धर्म आ धार्मिक विश्वासक आधार पर जँ विचार कएल जाय त' सभ क्षेत्रमे मुसलमान हिन्दूक बाद दोसर प्रमुख धर्मावलम्बी छथि। एकर अतिरिक्त क्रिश्चियन, बौद्ध, सिक्ख, जैन, कबीरपंथी सेहो छथि। पुरना पूर्णिया जिला एहन क्षेत्र अछि जत' निम्न जातिक हिन्दू आ मुसलमानमे धार्मिक विश्वास आ आचारणमे बहुत कम अन्तर अछि। हिन्दू आ मुसलमानक बीच सम्बन्ध ब्रिटिश कालसँ पहिनहिसँ रहल अछि। फारसी आ उर्दू शब्दक प्रभाव मैथिली पर अछि। आचरण तकमे मुसलमानक प्रभाव ऊँच जातिक हिन्दू पर पड़ल देखाइत अछि। सभ क्षेत्रमे विभिन्न लोकदेवताक पूजा होइत अछि। सभ क्षेत्रमे गाछ-वृक्ष के पुजबाक परम्परा अछि। कबीरक प्रभाव निम्न जातिक हिन्दू-मुसलमानक अतिरिक्त उँच जातिक हिन्दू पर सेहो अछि। एहि सभ बहुलता के देखैत सनातन धर्मक पताका ऊँच केनिहार समाजक बीच खाधि के आर गंहीर केलनि। मैथिलीक तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे सेहो ब्राह्मण, कायस्थ आ अल्प मात्रामे राजपूत, भूमिहारक अतिरिक्त आन जातिक लोकक रचना नहि भेटैत अछि। स्थितिमे आइयो कोनो बेसी अन्तर नहि आयल अछि। एहि प्रकारेँ मैथिल बुद्धिजीवीक भाषा चेतना जाति आ धर्मक कट्टरताक कारणे मिथिलाक वृहत्तर समाजमे अपन जड़ि नहि जमा सकल।

बादमे समाजक आनो जाति के एहि भाषा चेतनासँ जोड़बाक आवश्यकता अनुभव कयल गेल मुदा विलम्ब भ' गेल छल। मैथिली भाषी समाजक रूपमे अभिजन वर्चस्वक समाज स्थापित भ' गेल। एहि समाजक संग आन समाजक लोक के सामाजिक-आर्थिक अन्तर्विरोध छलैक। ई अन्तर्विरोध कालान्तरमे आर बढ़िते गेलैक। पत्र-पत्रिकामे सेहो ओही अभिजन वर्चस्वक समाज के सम्बोधित कयल जा रहल छल। श्री मैथिली जे 1925मे निकलल रहय आ पूर्णतः मैथिलीक पहिल पत्रिका छल अपन सम्पादकीयमे समाज शीर्षकसँ सम्पादकीय लिखलक, 'मिथिला भाषी हमर भाषा बजनिहार जे केओ व्यक्ति अछि कोनो जातिक कियैक ने रहौ ओकर उन्नतिकेँ अपन उन्नति मानक थीक, ओकर अवनतिके अपन अवनति बुझक थीक। यदि एहि तरहक उदार भाव हमरा लोकनि मध्य भै जाओ तौं मैथिल समाज पुनः एक बलशाली समाज भ' जायत।'[10]

एहि प्रकारेँ भाषा चेतना एतबा उदारता अनलक जे भले ही चिन्तनमे, मैथिली भाषाक परिधिमे मिथिलाक सभ जातिक लोकक मादे सोचल गेल। मुदा से व्यवहारमे परिणत नहि भेल। बादमे 'मिथिला मोद' आ 'मिथिला' समाज चिन्तनमे आर विस्तृत भेल। तत्कालीन राष्ट्रीय चेतनासँ अनुप्राणित भ' जनार्दन झा 'जनसीदन', जीवनाथ राय, भोला लाल दास, कांचीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, सूर्य नारायण सिंह आदिक चेतना समाजक भीतर जा क' ओकर पतनक कारण तकलक। कारणमे स्त्री जातिक अनादर, पर्दा प्रथा, गरीबी, पारस्परिक वर्ण भेद के मानलक। मूल मंत्र-स्वतंत्रता, समानता आ भातृत्व घोषित कयल गेल।[11] एहि सभ विषय पर निबंध तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे भेटैत अछि। एहि सभ विषयक अतिरिक्त शारदा एक्ट पारित हेबाक कारणे बाल विवाहक संग तिलक प्रथा, पंजी प्रथा, किसान आंदोलन, भयानक बेकारीक कारण खद्दर पहिरबाक-किनबाक अपील सेहो तत्कालीन मैथिली पत्रिकामे स्थान पौलक। बाल-विवाह पर बहुत घमर्थन भेल। एकटा बरियातीक चिट्ठी[12]मे कहल गेल जे 'शारदा बिल पास हेबाक कारणे मिथिलामे विवाहक बिहाड़ि उड़ि गेल। शारदा बिल नामधारी हौआक अबितहिं मैथिल समाज हड़कम्प काँपे लागल। मैथिल समाज हौआक डरें अबोध बालिकाक-बहुतठाम स्तनपायी कन्याक पर्यन्त पाणि ग्रहण कराय कृत कृत्य भेल।' मुदा समयानुकूल नियम पालन करबाक लेल शारदा बिलक समर्थन करबाक बात सेहो सोंझा आयल।[13] जमीन्दार-किसान समस्या पर लिखैत दूनूक बीच सामंजस्ये पर बल देल गेल। संगहि इहो कहल गेल जे जमीन्दार वर्गमे पारस्परिक पृथकत्वक कारणे संगठनक चेष्टा और दौड़-धूप सामयिक समस्याक कोनो समाधान नहि क' सकत।[14] पंजी-प्रथा ओ तिलक प्रथाक विरुद्ध सेहो निबन्ध आयल। मैथिल समाजक समयोचित कर्तव्य नामक निबन्धमे कहल गेल जे, 'बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह, पर्दा प्रथा, पंजी प्रथा इत्यादि समाजक भिन्न-भिन्न अंगमे प्राणनाशक कीड़ा लागि गेल अछि। आइ बाल-विवाह, वृद्ध विवाहक समूल नाश तथा पर्दा-प्रथा और पंजी-प्रथामे उचित संशोधनक आवश्यकता अछि।....मिथिलाक विद्वन्मण्डली अछूतोद्धार, विदेश यात्रा, खान-पानक प्रश्न, वर्णाश्रम धर्ममे घृणाक प्रश्न, भिन्न-भिन्न वर्णक

जीविकार्थ भिन्न-भिन्न कर्मक प्रश्न तथा स्त्री समाजक प्रश्न पर विचार कय अपन प्राचीन आदर्शक स्तम्भ पर समयानुकूल संशोधन करता।[15] एकरे संग नवीन आपद् धर्मक रूपमे सनातन वैदिक धर्म पर विधर्मीक आक्रमणक कारणे स्वतंत्रताक वलवेदी पर लाखो जीवन बलिदानक आवश्यकता के सेहो स्वीकार कयल गेल।[16] भोला लाल दास अपन संपादकीयमे 'युवक आन्दोलन' पर सेहो जोर देलनि। युवक आंदोलन के सामाजिक क्रान्ति (Socialistic Revolution) क रूपमे परिभाषित केलनि। संगे ईहो कहलनि जे 'हम जहिना अपना रूढ़ि प्रथाक अन्धअनुकरण करबाक विरोधी छी तहिना रूस अथवा अमरीकाक नवीन आदर्श अन्ध भ' क' ग्रहण करबाक घोर विरोधी छी।'[17] तहिना खद्दर पहिरबाक कीनबाक लेल अपील करैत वैद्यनाथ वर्मा कहलनि जे औसत भारतवासीक आमदनी डेढ़ आना प्रतिदिन अछि। जखन कि अमेरिकामे लोकक औसत आमदनी तीन टाका प्रतिदिन अछि। ओ आमदनी बढ़ेबाक हेतु उद्यमशील बनबाक हेतु कहलनि। कहलनि जे, 'सरकारसँ एहि भयानक बेकारीक प्रति कोनो सहानुभूतिक आशा राखब सर्वथा दुराशा मात्र थिक। कियै नहि, ई बेकारियो त' सरकारहिक उत्पन्न कैल थिकन्हि तथा एकरहि वृद्धिमे विलायतक भलाइ छैक।' ओ लोक के खद्दर पहिरबाक लेल कहलथिन। कहलथिन जे खद्दर खरीदबामे अपने जे खर्च करब से पैसा-पैसा लोकक बेकारी ओ विपत्तिमे सहायक हैतैक। जें कि ई सभ कार्य गरीबे करैत अछि तैं एहिसँ ओकर आमदनी बढ़तैक। ओ लोकमे बिलासिता बढ़बाक, चरित्रहीनता बढ़वाक कारणे प्राचीन कलाक सर्वनाश हेबाक बात सेहो कहलनि। कहलनि जे बिलासिता मानसिक बलकेँ नष्ट क' दैत छैक।[18]

तत्कालीन भारतीय राष्ट्रीय चेतना मिथिलाक लोककेँ दोसर तरहे सेहो प्रभावित केलक। मिथिलाक पर्व-त्यौहार दुर्गापूजा, शक्ति आराधना आदि पर मैथिली पत्रिका 'विभूति'मे बहुत निबन्ध सभ आयल। भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' भारतीय राष्ट्रीय धारासँ प्रभावित भ' धार्मिक पर्व के मिथिलाक जातीय (राष्ट्रीय) पर्वक रूपमे मनेबाक बात अपन पत्रिकामे रखलनि। जानकी नवमी के राष्ट्रीय पर्वक रूपमे मनेबाक बात सेहो शुरू भेल। मुदा एकरे संग भुवनजी ब्रिटिश महाराज, महारानी, राजकुमारी सभहक प्रति सेहो अपन अनुराग प्रकट केलनि। हुनका सभसँ बहुत किछु सिखबाक लेल प्रेरित केलनि। ई राजदरभंगाक प्रभुता आगू पैघ प्रभुताक डाँरि खींचब छल। एही संग मुदा कने हटल धारा कुमार गंगानन्दक सिंह सेहो छल। ओ 'हिन्दू संगठन रूपी क्रान्ति' शीर्षक निबन्धमे लिखलनि, 'हिन्दू जातिमे जहिया क्रान्ति भेल छैक से धार्मिक भित्ति पर। एहि जातिक तथा एहि धर्मक यैह विचित्रता छैक जे एहिसँ अनैक्यमे ऐक्य निरूपित होइत अछि। साधारण तरहेँ जकरा हम भिन्न बुझैत छी, परस्पर विरोधी बुझैत छी ओकरे जँ तात्विक दृष्टिसँ देखब त' अभिन्न बुझय लागब विरोध भावकेँ ऐक्यमे परिणत पायब।....हिन्दू धर्मसँ हमर तात्पर्य हिन्दू संस्कृति सभ्यता तथा विनिमय द्वारा हिन्दू जातिक आत्मरक्षा प्रणालीक बोध करायब अछि।....हम आइ बिसरि गेल छी जे धर्म्मक एकमात्र लक्ष्य लोक रक्षा करब थिकैक।[19] ई धारा निश्चित रूपसँ हिन्दू

महासभाक धारा छल। जकर बादमे ओ प्रांतीय नेतृत्त्व सेहो ग्रहण केलनि।[20] एहि प्रकारेँ ई कहल जा सकैत अछि जे महाराज रमेश्वर सिंहक सनातन धर्मक विकास कुमार गंगानन्द सिंहक व्यापक हिन्दू धर्ममे भेल। मैथिली भाषी चेतनाक विकास धर्म, जातिक बाद राष्ट्रक रूपमे सेहो समक्ष आयल। 'मैथिल राष्ट्रसभा ओ मिथिलाक संगठन' शीर्षक निबन्धमे सुर्य नारायण सिंह लिखलनि जे मैथिल राष्ट्रसभा सम्प्रति राजनैतिक दलबन्दीसँ फराक गठित हो। कालान्तरमे यदि ई संस्था राजनैतिक संस्था बनि मिथिलाक नेतृत्त्व करय तइयो कोनो हर्ज नहि। ओ महाराज दरभंगासँ अपील केलनि जे ओ मैथिल राष्ट्रपति बनि शीघ्र मिथिलाक अभ्युदयक प्रयास करथु।[21]

मैथिल राष्ट्रीयताक यैह चेतना विकसित भ' स्वतंत्रताक बाद मिथिला राज्यक निर्माण लेल आन्दोलनक रूपमे समक्ष आयल। जाहिमे डॉ. लक्ष्मण झा, जानकीनन्दन सिंह आदि विशेष रूपेँ भाग लेलनि। डॉ. लक्ष्मण झा मिथिला राज्य आन्दोलनक असफलतासँ विक्षुब्ध भ' राज्यक संग-संग मिथिला गणतंत्रक सेहो प्रारूप प्रस्तुत केलनि। यद्यपि मिथिला राज्य निर्माणक आन्दोलन विद्यापतिक भाषा सम्बन्धी विवादक कोखिसँ जनमल तथापि मिथिलावासीमे शनैः शनै ई धारणा व्याप्त भ' गेल कि मिथिलाक समस्त समस्याक समाधान तखनहि होयत जखन एकरा एक अलग राज्यक दर्जा भेटत। एहि प्रकारेँ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलाक राजनैतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के पुनः स्थापित करबाक प्रयासक परिणति मिथिला राज्य आन्दोलनक रूपमे भेल। परन्तु ई मिथिला आन्दोलन कोनो नव राज्यक स्थापनाक लेल नहि बल्कि मिथिलाक पुरान राजनीतिक स्थिति के पुनः स्थापित करबाक प्रयास छल।[22] वस्तुतः ई राज्य अभिजनक आदि गौरव अर्थात् अंग्रेजी राजसँ पहिनेक एक संप्रभुराज मिथिला छल। जकर उद्‌गम विदेह ओ तिरहुत राज्यमे निहित रहय। जेकरा लेल म. म. मुरलीधर झा लिखने रहथि, 'विश्वविख्यात मिथिला देश तिरहुत ओ विदेह नहि कहाय बिहार भ' गेल। एतदर्थ धन्यवाद हमरालोकनि शास्त्र मर्मज्ञ अपन श्रीमान् महाराजधिराजकेँ नहि कोना देबनि, ज़ाहि करूणागारकेँ 'मिथिलेश' रूचिकर किन्तु मैथिली भाषाक उन्नति हेतु कनेको उत्साह नहि। यदि दैवात् कनेक उनमुनी होइतहुँ छन्हि तँ तेहन-तेहन राज प्रधान मिथिला लवण भक्त हाउ लोकनि छथि जे मैथिल कलकत्ता युनिभरसिटीमे सफल मनोरथ परन्तु बिहारमे दुर-दुर छी-छी।[23] मिथिलेश एहि लेल एसगरे उत्तरदायी रहथु वा नहि। ई सम्पूर्ण आंदोलन मिथिलाक वृहत्तर समाज के अपना संग अनबामे असफले टा नहि रहल अपितु अभिजन वर्चस्वक समाज-ब्राह्मण ओ कायस्थक संग आन-आन जातिक बीच दूरी के आर बढ़ाइये देलक। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हल्ला बहुलांशक कानमे झड़ पाड़' लागल।

एकर पाछू सेहो आर्थिक कारण विद्यमान छल। वर्त्तमानमे ऐहिासिक दृष्टिसँ एकर विश्लेषण भेल अछि। विश्लेषण-अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे, 'मिथिला नव विचार के पचेबामे असमर्थ छल, ईहो स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक सामाजिक संरचना अर्थ व्यवस्थाक

व्यापारीकरणक अभावक कारण सेहो छल। खेत मालिकक रैयतक संग शोषणकारी कटु सम्बन्ध तथा अतिरिक्त उत्पादनक उपभोगक भयंकर सामंती प्रवृत्ति कृषि क्षेत्रक अतिरिक्त उत्पादनकेँ पूंजीक औद्योगिक निवेशक दिशामे बाधक भेल। सुव्यवस्थित योजनाक अभाव तथा आधारभूत सुविधाक कमीसँ कृषि आधारित उद्योगक विकास मार्गो खुजि नहि सकल। एकर परिणाम स्वरूप एकटा एहन बुद्धिवादी अभिजनवर्गक निर्माण भेल जे स्वभावतः मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना लोकक समूहमे बिखण्डित छल आ ओकरा लेल ई सम्भव नहि छलैक जे ओ मिथिला जनपदक सामान्य लोक के राज्य निर्माणक प्रक्रियासँ जोड़ि सकय अथवा ओहि कार्य लेल ओकर समर्थन प्राप्त क' सकय। एहि तरहें आर्थिक स्तर पर मैथिल समाजक उग्र वर्गीय विभाजन तथा सामन्ती मानसिकताक कट्टरपना एहिठाम राष्ट्र निर्माणक आधारभूत उपागमक निर्माण नहि क' सकल।[24]

मिथिला राज्य निर्माण आन्दोलनक मांग 1951सँ जोर पकड़लक आ 1954 धरि पुरजोर रूपें रहल। एहि मांग लेल चेतना निर्माणमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक उल्लेखनीय योगदान अछि। मुदा जेना मिथिला राज्य आन्दोलनक सामाजिक-आर्थिक आधार कमजोर छल तहिना पत्र-पत्रिकाक। मिथिला राज्य आन्दोलनक असफलता एक दिस रहल त' नव-नव पत्र-पत्रिकाक आरम्भ आ अन्त दोसर दिस रहल। मुदा पत्रिका अबैत रहल। छपैत रहल। विभिन्न शहरकअतिरिक्त गामोसँ निकलल। छापाखानासँ नहि त' हाथोसँ लिखल आयल। 1950मे 'वैदेही' आयल। 1960सँ मिथिला-मिहिर दोसर खेप शुरू भेल। एहिकाल तक अबैत-अबैत मिथिला राज्यक आन्दोलन त' समाप्त भ' गेल मुदा मिथिलाक पुरान समस्या सभक संग अन्य नव-नव सामाजिक-आर्थिक समस्या सभ उत्पन्न होइत गेल। भाषाक स्तर पर अनेक उपलब्धि भेल त' एहि कारणे नव समस्या उत्पन्न सेहो भेल। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे एकर सभहक क्रमबद्ध वर्णन केलनि अछि। वैदेहीक प्रसंगमे कहैत ओ लिखैत छथि, 'एहि प्रकारें मिथिला विश्वविद्यालय, शिक्षाक माध्यम, जनगणना, मिथिलाक भविष्य, वैवाहिक प्रथा, मैथिल महासभा, आवश्यकता, जिज्ञासा आदि अनेक शीर्षकसँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक चतुर्मुखी समस्या सब पर ई पत्र समाजकेँ सचेत करबाक चेष्टामे छल।[25] मिथिला-मिहिर संग अनेक लघुजीवी लघु पत्रिका अबैत जाइत रहल। 1986मे मिथिला-मिहिर बन्द भ' गेल। एकटा धुरी टूटि गेल। प्रबन्धनक दोष, विक्रीमे कमी, मैथिल समाजक उदासीनता मिहिरक बन्द हेबाक कारणमे मुख्य रूपसँ रहय। संगहि वृहत्तर समाज के नहि जोड़ पयबाक कारण सभसँ जबर्दस्त छल। जखन कि एहिमे सवैतनिक सम्पादक कार्यरत छला। जे आन कोनो पत्रिका के आइ धरि उपलब्ध नहि भेलैक अछि। मिथिला-मिहिर मुख्य रूपसँ साहित्यिक पत्रिका रहय। साहित्यक विकासक संग ओ एकटा महत्त्वपूर्ण काज क' गेल। ओ वर्तनी निर्धारणक प्रयास केलक, बहुत अंशमे सफलो भेल। अपन वर्तनीक कारण मिथिला-मिहिर सामाजिक दृष्टिसँ आगू बढ़ल।

एकर संग पूरैत अन्य पत्रिका सभ सेहो भाषा-साहित्य प्रधान रहल। मोटा-मोटी ई कहल जा सकैत अछि जे मिथिला राज्य आन्दोलनक बाद मैथिली समाज प्रत्यक्षसँ बेसी अप्रत्यक्ष रूपें साहित्यिक माध्यमसँ पत्र-पत्रिकामे आयल। पछिला पचास वर्षक सामाजिक-आर्थिक स्थितिकेँ मैथिलीक कथा, कविता आ उपन्यास, नाटकक माध्यमे नीक जकाँ देखल जा सकैये। एहि साहित्यमे कृषि जीवनसँ नोकरी जीवनमे अयबाक, गामसँ शहर जेबाक, मिथिलाक बदलैत समाज, बदलैत अर्थतंत्रक यथार्थ संग कतहु ने कतहु गामक प्रति पीड़ा उभरैत भेटि सकैत अछि। जें कि मिथिला गाममे आइयो बसैत अछि तैं ई पीड़ा मिथिलाक पीड़ा कहल जा सकैत अछि। ओना एहि पीड़ाकेँ आधुनिक किछु समीक्षक लोकनि दुरदुरा रहल छथि। लेकिन हमरा जनैत यैह पीड़ा मैथिली साहित्यकारकेँ मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक यथार्थसँ सेहो बान्हि क' रखने अछि। भले ही एक दोसराक गामक यथार्थमे कम वा बेसी भिन्नता हो मुदा भूमि अभिन्न होइत छैक। अपन भूमिक लोकक प्रति मोह भ' सकैत छै। स्वाभाविक छैक जे मोहसँ ममता उपजैत छैक। यदि लोकसँ ममते नहि रहतै त' स्थितिमे परिवर्त्तनक आकांक्षा कोना जन्म लेतैक? ई भूमि मैथिली समाजक सामान्य जनक भूमि थिक तैँ आब प्रश्न ममताक धरातल पर विषमता हटेबाक आकांक्षाक रहि गेल अछि। सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनक चेतनासँ लैस साहित्यक रहि गेल अछि।

साहित्यसँ फराक हटि जँ पटनाक मिथिला-मिहिर पर ध्यान दैत छी त' सामाजिक-आर्थिक विषय पर कुल प्रकाशित निबन्धक एक चौथाइ निबन्ध भेटैत अछि। जे एहि तालिका[26]सँ स्पष्ट होयत–

''मिथिला मिहिर (1960-84 तक) कुल प्रकाशित निबन्ध-5786

क्रम संख्या	आर्थिक विषयक निबन्ध	कुल संख्या	क्रम संख्या	सामाजिक विषयक निबंध	कुल संख्या
1	आर्थिक	321	1	धार्मिक	140
2	सहकारिता	46	2	सांस्कृतिक	293
3	कृषि	62	3	राजनीतिक	337
4	उद्योग	16	4	सामाजिक	373
			5	शिक्षा	50
	कुल	455		कुल	1193

मिथिला-मिहिरमे त' सामाजिक-आर्थिक विषय के कमसँ कम एक चौथाइ स्थान देल गेल परन्तु अधिकांश पत्रिका एतबो स्थान नहि देलक। एकर कारणमे पत्रिकाक सम्पादकलोकनिक मूलतः साहित्यकार होयब थिक। साहित्यकारसँ फराक कियो भेला

अछि त' विनोद कुमार झा आ शरदिन्दु चौधरी जे समाचार-विचारक पत्रिका देस कोस आ समय-साल निकाललनि अछि। एहि सम्बन्धमे त्रैमासिक पत्रिका 'अंतिका' क अप्रील-जून 2001 एक निबन्धमे कुणाल लिखने छथि, 'मैथिली पत्रिकाक बहुलांश साहित्य केन्द्रित अछि। कला आ संस्कृतिसँ धुरबा जकाँ सेहो छूति भ' जाइ छै कखनो क'। ओ एही संग ईहो लिखैत छथि जे, 'मैथिली पत्रकारिताक ह्यूमन फैक्टर छै पार्ट टाइमर आ आनरेरी भेनाइ। एकरा फुल टाइमर आ फ्रुटफुल (सवैतनिक) करक लेल की आवश्यक छै? पत्रकारिता रहत तखन ने ओ अपन कोनो वा प्रत्येक दायित्वक पालन क' सकत।' ओहि अंकमे तारानन्द वियोगी लिखने छथि, 'मैथिलीमे एखन मोटा-मोटी दू प्रकारक पत्रिका बहार भ' रहल अछि-समाचार विचारक पत्रिका आ साहित्यिक पत्रिका। एहि मामिलामे समाचार विचारक पत्रिका सभ हमरा बेसी ठीक बुझाइत अछि जे ओ मैथिलीक, मिथिलाक मुद्दा सभक सकारात्मक हल प्रस्तावित करबाक उत्साहमे अछि। साहित्यिक पत्रिका सभ अधिककाल अकच्छ देखार पड़ैत अछि। अकच्छ भ' क' एक दोसराकेँ कटैत, कठघरामे ठाढ़ करैत, ध्वस्त करैत। प्रश्न अछि जे ध्वस्त करब किए जरूरी अछि? नव दुनियाँ बनेबाक लेल किने?' कुणाल आ तारानन्द वियोगीक कथनसँ कैकटा तथ्य स्पष्ट होइत अछि। से ई जे एखन धरि पत्रिका लेल सवैतनिक सम्पादक सम्भव नहि भेल अछि। सम्पादन जीबिकासँ नहि जुड़लैक अछि। अर्थात् पत्र-पत्रिका आर्थिक दृष्टिसँ आत्मनिर्भर नहि भेल अछि। संगहि पत्रिका नहि चलला पर सम्पादकक नोकरी जेबाक खतरा नहि छैक। (तैयो किछु लोक जेबीक पाइ गमाइयो क' पत्रिका निकालैत छथि। यशक संग एकटा उद्देश्य अछि जे एहन लोकके प्रेरित करैत रहल अछि।) संगहि बहुलांशमे साहित्यिक पत्रिका उकटापैंची बेसी क' रहल अछि। एकर कारण किछु लोकक गुटबन्दी अछि। ई गुटबन्दी साहित्यसँ प्राप्त आर्थिक संसाधनक झीना-झपटीक कारणे अछि। मैथिलीक नाम पर जे किछु पाइ कतहुसँ भेटि रहल अछि तकरा हथियेबाक चेष्टा आ ओहिमे दोसरक हस्तक्षेप उकटा-पैचीक कारण अछि। एकर जड़ि तकबाक लेल पाछू घुरि क' 'विभूति' पत्रिकाक एक सम्पादकीय पर दृष्टि जाइत अछि, 'चूड़ा-दही' पर ईमान बेचनिहार ई जाति एवं 'महासभा' 'कुक कान्फ्रेन्स' त' एखनहुँ बुझले जाइछ'।[27] स्थितिमे एखनो कोनो विशेष अन्तर नहि आयल अछि। एतबे अन्तर भेल अछि जे चूड़ा दहीसँ माछ-भात पर चल आयल छी। ई बात सतर्क करैत अछि। आइ जखन कि भूमण्डलीकरणक कारण बाजार बढ़ि रहल अछि आ बाजारक झुकाव सांस्कृतिक क्षेत्रमे भेल अछि, तखन ईमान बेचनिहार बचल-खुचल सभ धरोहरि के बेचि देता। तैं सामाजिक आ आर्थिक रूपसँ पिछड़ल इलाकाक संस्कृति एहि पूंजीवादी-उपभोक्तावादी युगमे आर बेसी त्रासद आ संकटापन्न भ' गेल अछि। एहिसँ मुक्तिक लेल सामूहिक प्रयासक जरूरति भ' गेल अछि। ई सामूहिक प्रयास मिथिलाक वृहत्तरवर्गक हस्तक्षेप पर निर्भर करैत अछि। वृहत्तर वर्गे मिथिला समाजक पुनर्निमाण करता। ई धरोहरो मुख्यतः हुनके थिकनि।

मैथिल अभिजनक नहि।

मुदा ई हस्तक्षेप तखनहिं सम्भव अछि जखन मिथिलाक जे किछु सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक धरोहरि अछि ओकर ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टिसँ विश्लेषणक प्रयास पत्र-पत्रिका करय। एहि दिशामे प्रयासो नवम दशकसँ प्रारम्भ भेल अछि। अतीतक मानसिकतासँ बाहर निकलि आधुनिक दृष्टिबोधक संग मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक स्थितिक गम्भीर विश्लेषण-मनन प्रारम्भ भेल अछि। बीसम शताब्दीक अंतिम दू दशकमे आयल पत्रिका सभ एहि दिस बेसी सचेष्ट देखाइत अछि। एकर विस्तृत वर्णन आ आकलन त' एत' सम्भव नहि अछि। मुदा बनगी स्वरूप हम किछु निबन्धक शीर्षक उपस्थित करैत छी। मात्र उदाहरण लेल एहि समाचार-विचारक निबन्ध सभके देखल जा सकैत अछि। मिथिला-लोक कलाक व्यवसाय-सम्बन्धक आरम्भिक चरण[28], मिथिलाक सामाजिक स्थितिमे मैथिलीक रूप[29], पिछड़ल मिथिलाक पछुआयल शिक्षा[30], ओह मिथिला[31], हम आ हमर माटि पानिक संस्कृति[32], किसान आन्दोलनक सिंहावलोकन[33], मिथिलांचलक औद्योगिक विकास जरूरी छै[34], मिथिलाक सिसकैत बन्धुआ बच्चाक नाम[35], मिथिलांचल प्रदूषण मुक्त कोना हो[36], मिथिलाक लोकचित्रकला : परम्परा ओ प्रगति[37], राम भरोसे खेतीबारी[38], पोखरि[39], मिथिलामे गामे-गाम डहि रहल अछि रूपकुंवर[40], मिथिलाक कृषि श्रमिक[41], मिथिलामे औद्योगीकरणक सम्भावना[42] मैथिल अस्मिता : किछु विचारणीय बात[43], पुरान संरचना ओ नब परिवेश : बदलैत अन्तरजातीय सम्बन्ध[44], मिथिलाक परम्परागत उद्योग[45]। एकर अतिरिक्त 1987मे आयल भयंकर बाढ़ि पर अनेक लेख ओहिकालक विभिन्न पत्रिकामे आयल अछि। विभिन्न स्मारिका सभक माध्यमे सेहो आर्थिक विषय पर गम्भीर विश्लेषणात्मक निबन्ध प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई निबन्ध सभ ओहि विषयक विशेषज्ञ सभक द्वारा लिखल गेल अछि। जमशेदपुरमे एकटा सेमिनार सेहो आयोजित भेल अछि। मिथिलाक कतिपय राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकारक झुकाव सेहो एहि दिस भेल अछि। एहि सभक अध्ययन-अवलोकनसँ ई स्पष्ट होइत होइत अछि जे नव मैथिल बुद्धिजीवीक समक्ष आब सम्पूर्ण मिथिलाक सम्पूर्ण वर्तमान आबि रहल छनि। वर्तमान स्थितिक विश्लेषण ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टिसँ परिवर्त्तनक प्रक्रिया के देखैत भ' रहल अछि। मैथिलीमे 'मिथिलाक आर्थिक विकास' पर नरेन्द्र झाक पोथी सेहो हेबनिमे आयल।* जे अध्ययनक बहुत सामग्री दैत अछि।

आइ मिथिलाक चित्रकला विदेशहुमे बिका रहल अछि। ओकर परम्परा ओ प्रगति पर आर्थिक दृष्टिसँ विचार करैत मोहनाथ मिश्र लिखैत छथि, 'मिथिला चित्रकलाक एहि तरहक विकास वस्तुतः एहने परिस्थितिमे सम्भव छल। एकर विशिष्टता एतुक्का सामाजिक-आर्थिक संरचनाक विशिष्टताक उपजा थिक। एहि मे आश्चर्यक कोनो विषय

* हुनकर आर दू टा पोथी एम्हर आयल अछि। मिथिलाक जनपदीय विकास ओ मिथिलामे जल संसाधन ओ प्रवंधन।

नहि अछि। आश्चर्यक बात ई अछि जे व्यवसायीकरणक मात्र दू दशकमे मिथिला चित्रकलाक मूलस्वरूप, संरचना ओ परम्परागत रीति-रिवाजसँ ओकर तालमेल ओतेक तेजीसँ नष्ट कोना भ' रहल अछि।' श्री मिश्र एहि लेल अन्तमे ईहो सुझाव दैत छथि जे, 'सर्वप्रथम लोकचित्रकला के स्तरीय बनौने रखबाक संग-संग कलाकारलोकनिक आर्थिक आधार के सम्पुष्ट करबाक हेतु कलाकार लोकनिक एकटा 'निबन्धन पूल' होयबाक चाही। निबन्धित कलाकार के देल जायबला सुविधाक विस्तार होयबाक चाही। संगहि हुनकालोकनिक द्वारा बनाओल चित्रकेँ 'समर्थन मूल्य' पर खरीद क' देशी-विदेशी मांगक आपूर्त्ति हेतु, मधुबनी, पटना ओ दिल्लीमे अलगसँ भण्डारणक (डिपो) आवश्यकता छैक।' मिथिला चित्रकला के सरकार द्वारा 'समर्थन मूल्य' पर खरीदबाक प्रस्ताव बहुत समीचीन अछि। मुदा जत' गहूम चाउर, धान 'समर्थन मूल्य'* पर खरीदबाक कोनो उचित ओरिआओन सरकार नहि क' पाबि रहल अछि तत' लोक चित्रकला के, के पूछैये? मुदा कोनो चेतनाक विकास त' सेहो खास प्रक्रियेमे होइत छैक।

तहिना महेन्द्र नारायण कर्ण मैथिली समाजमे बदलैत अन्तरजातीय सम्बन्ध पर विस्तारसँ लिखैत अन्तमे कहैत छथि 'गामघरक परिवेशमे जे समीकरण बदललैक अछि तकर सोझे-सोझ प्रभाव अन्तरजातीय सम्बन्ध पर पड़लैक अछि। आइ चारुकात असंतोष ओ निराशा व्याप्त छैक ओएह अन्तरजातीय द्वन्द्वक रूपमे प्रकट भ' रहल छैक। वस्तुतः ई द्वन्द्व कोनो कानून-व्यवस्थाक प्रश्न नहि, व्यापक सामाजिक परिवर्तनक लक्षण थिक। जातीय तनाव ओ संघर्षमे उठैत घटनाक्रम मूलतः वर्गहितक अन्तर्विरोध पर ठाढ़ छैक। आइ जाति हित ओ वर्गहित दूनू एक दोसरासँ घनिष्ठ भ' गेलैक अछि। एहन परिस्थितिमे परम्परागत मूल्य, संस्कार ओ सौहार्दक स्वरूपमे गुणात्मक परिवर्तन स्वाभाविक थिक। एक दिस पूर्वसँ सेबल उँच जातिक अधिकार ओ शक्ति समाप्त भ' रहल छैक त' दोसर दिस मध्य ओ दलित जाति एकरा समक्ष ठाढ़ हेबामे सक्षम भ' रहल छैक। एकटा समूह अपन शक्तिक हाससँ तमसायल अछि त' दोसर नव प्राप्त सामाजिक सत्तासँ चमकि रहल अछि। एहेन परिबेशसे आपसी स्नेह ओ सौहार्द पुनः तखने स्थापित भ' सकैछ जखन बड़का उदार हेता आ छोटका प्रतापी बनि ओहेन समाजक पुनर्निर्माणमे लागि जेता जतय ने हेतैक जातीय उत्पीड़न आने वंश पर आधारित पक्षपात।'

एहि प्रकारेँ पछिला लगभग एक सए बरखक दरभंगा राजसँ लालू राज धरिक यथार्थ हमरालोकनि समक्ष आबि चुकल अछि। एहिमे दिल्ली राजसँ ल' क' 'ग्लोबल भिलेज'क मुखिया बनल अमेरिका के सेहो बिसरल नहि जा सकैये। एहि सभ के देखैत भोगेन्द्र झाक विचार 'मिथिलाक औद्योगिक विकास जरूरी छै', मौन पड़ैत अछि।

* एम्हर सरकार एहि दिस ध्यान देलक अछि।

ओ कहैत छथि, 'आइ समस्त मिथिला श्रम बेचनिहारक बड़का भण्डार बनि गेल। पाइ दिऔ, श्रम लिऔ। पढ़ल के श्रम, बिन पढ़ल के श्रम। असह्य हाल छै। मगर छै। एकर एकमात्र इलाज छै औद्योगीकरण। राजकीय क्षेत्रमे बड़का उद्योग। व्यक्तिगत आ सहकारी क्षेत्रमे गृह व लघु उद्योग। कोशी पर बाराह क्षेत्रमे बहुउद्देशीय डैम जे तैंतीस लाख किलोवाट बिजली पैदा करत। संगहि बाढ़ि रौदीक अन्त आ रेल, सड़क यातायातक सेहो सुविधा हैत। कमला पर शीशापानी, बागमती पर नूनथरमे एहन डैम। तखन मिथिला आगू बढ़त।'

पछिला शताब्दीक वर्ष 1960सँ पूर्व आ वर्ष 1960क बादक पत्रिकामे सामाजिक-आर्थिक निबन्ध सभक माध्यमे पढ़ल-गुनल विचारक बाद कविवर यात्रीक शब्दमे कहल जाय त' कहि सकैत छी जे, 'बूढ़ि मिथिलाक अधमरू सन्तान भै रहने की फल?[46] यात्रीक ई शब्द जेना ओ कहलनि, 'राष्ट्रीय वातावरण मे श्वास-प्रश्वास लेनिहार कर्मठ मैथिलक थिक।' आइ मैथिललोकनिक स्वप्नमे प्राचीन मिथिला नहि नब मिथिला छनि। सामाजिक-आर्थिक दृष्टिसँ उन्नत अगिला एक सय वर्षक प्रारूप-नब मिथिला। ओ नब मिथिला जकर सन्तान अधमरू बनि कय नहि जीयत। अपन खेत-खरिहान, उद्योग-प्रतिष्ठानमे काज करत। ओकर अपन विकसित खेत-खरिहान, उद्योग-प्रतिष्ठान हेतै। मुदा से हैत कोना? मैथिली पत्र-पत्रिकाक अगिला एक सय वर्षक इतिहास तकरे साक्षी हैत।

घर-बाहर, अक्टूबर-दिसम्बर, 2002

सन्दर्भ संकेत

1. *मोहन भारद्वाज, दास नवीन समाजी, एकल पाठ*
2. *मैथिल कान्फ्रेन्स—अहोभाग्य, मिथिला, मोद, उद्गार-39 सन् 1317*
3. *डॉ. के. के. दंता, दी कम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, पृ. 215*
4. *दरभंगा गजेटियर, पृ. 274*
5. *प्रो. पंकज कुमार झा, मैथिल महासभाक उत्पत्तिक पृष्ठभूमि एवं स्वरूप, चेतना समिति स्मारिका, 1998*
6. *मिथिला मोद, उद्गार-42, सन् 1317 साल*
7. *वैह*
8. *मिथिला मोद उद्गार-41*
9. *मिथिला मोद, उद्गार-10, सन् 1321 साल*
10. *चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, पृ. 102*
11. *मिथिला, सम्पादकीय, वर्ष-1, अंक-3*
12. *बरियातीक चिट्ठी, मिथिला वर्ष-1, अंक-7*
13. *जर्नादन झा 'जनसीदन' समयानुकूल नियमक पालन, मिथिला वर्ष-1*
14. *सूर्यनारायण सिंह (अध्यापक) जमीन्दार किसान समस्या, विभूति, वर्ष-1, अंक-6*
15. *देव नारायण झा, मैथिल समाजक समयोचित कर्तव्य, मिथिला वर्ष-1, अंक-3*

16. *वैह*
17. *मिथिला, सम्पादकीय, अंक-6, वर्ष-1*
18. *बैद्यनाथ वर्मा, हम धनी कोना हैब, मिथिला वर्ष-1*
19. *कुमार गंगानन्द सिंह, हिन्दू संगठन रूपी क्रान्ति, मिथिला वर्ष-1, अंक-6*
20. *कमल नारायण झा 'कमलेश', भारतीय स्वातंत्र्य संग्राममे मिथिलाक योगदान, चेतना समिति स्मारिका 1998*
21. *सम्पा. भोलालाल दास, भारती, अप्रील 1937*
22. *मिथिला-मिहिर, 29 मई 1954*
23. *मिथिला अंक-1, पृष्ठ-12-13*
24. *प्रो. पंकज कुमार झा, मैथिल राष्ट्रीयताक आर्थिक आधार, चेतना समिति स्मारिका 2001*
25. *चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, पृ. 203*
26. *प्रो. सत्य नारायण मेहताक शोध पर आधारित*
27. *विभूति, वर्ष-1, अंक-12*
28. *ललित कुमुद, देस कोस, जून-1982*
29. *देस-कोस, जून 1982*
30. *लक्ष्मीकान्त सजल, देस कोस, दिसंबर-93*
31. *विकास कुमार झा, देसकोस, दिसंबर 93*
32. *गोविन्द झा, माटिपानि, अक्टूबर 1987*
33. *विजयकान्त ठाकुर, चिनगी, फरवरी-मार्च 87*
34. *भोगेन्द्र झा, भाखा, अप्रील 87*
35. *देसकोस, फरवरी 94*
36. *किशोर कुमार ठाकुर, भाखा, अप्रील 89*
37. *मोहनाथ मिश्र, भाखा, अप्रील 89*
38. *शिवशंकर श्रीनिवास, भाखा, अक्टूबर-नवंबर 89*
39. *गोविन्द झा, वैह*
40. *पंचानन मिश्र, माटि पानि*
41. *मोहनाथ मिश्र, भाखा, नवम्बर 88*
42. *बीरेन्द्र झा, मिथिला-मिहिर, 5 जनवरी 1980*
43. *हेतुकर झा, सन्धान-1 जनवरी 97*
44. *महेन्द्र नारायण कर्ण, सन्धान-1, जनवरी 97*
45. *शैलेन्द्र कुमार झा, सन्धान-2, दिसंबर 98*
46. *यात्री विभूति, वर्ष-1 अंक-12*

धरती आर ऊपर उठत

वर्ष 2004 कतेको कारणे महत्त्वपूर्ण बनि गेल अछि। पहिल, एही वर्ष मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित करबाक लेल संविधान संशोधन संबंधी गजट भारत सरकार द्वारा प्रकाशित कयल गेल। दोसर, मैथिली पत्रिका अपन यात्राक सय वर्ष पूरा क' रहल अछि। तेसर, मैथिलीभाषी लोकनिक अग्रणी संस्था चेतना समिति अपन स्थापनाक पचास वर्ष पूरा क' लेलक। चारिम, स्वस्ति फाउण्डेशन द्वारा मैथिली साहित्य ओ भाषाक विकासलेल प्रतिवर्ष कोनो साहित्यकारकेँ 'प्रबोध साहित्य सम्मान' सँ सम्मानित करबाक निर्णय संग एक लाख टाका देबाक घोषणा कयल गेल। आ पाँचम ई सम्मान सर्वप्रथम मैथिलीक प्रख्यात लेखिका लिली रेकेँ देबाक निर्णय भेल।

वस्तुतः मैथिलीकेँ आठम अनुसूचीमे स्थान भेटबाक लेल मैथिली पत्रिका ओ मैथिलीभाषी लोकनिक संस्था सभक योगदान रहल अछि। पत्रिका ओ संस्था सभक माध्यमसँ मैथिलीभाषी अपन अधिकार लेल सचेष्ट ओ संघर्षरत रहला। अपन सय वर्षक इतिहासमे मैथिली पत्रिका मैथिल, मिथिला ओ मैथिलीक उत्थान लेल जन जागरणक काज केलक। तहिना चेतना समिति अन्य मैथिलीभाषी संस्था सभक अग्रणी संस्था रूपमे संस्कृति ओ भाषाक सबर्द्धन लेल काज करैत भारत सरकार ओ बिहार सरकारक समक्ष अपन जन्मकालहिसँ मैथिलीक प्रश्न पर संघर्षरत रहल। 'प्रबोध साहित्य सम्मान' जाहि प्रबोध नारायण सिंहक नाम पर प्रारंभ कयल गेल अछि से कलकत्तासँ (1953) 'मिथिला दर्शन' नामक मासिक पत्रिकाक संपादन केलनि। ओहि पत्रिकाक उद्देश्य मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक लेल संघर्ष करब छल। एहि पत्रिकामे हुनक पत्नी अणिमा सिंह आ पुत्री इलारानी सिंह सेहो संपादक रूपमे अपन योगदान देलनि। हुनक पुत्र उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' 1968मे 'मैथिली कविता' नामक विशुद्ध कविता त्रैमासिक अपन संपादनमे निकाललनि। प्रबोध नारायण सिंह मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे पहिल संपादक भेला जे ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थसँ अतिरिक्त जातिक रहथि। एहि परिवारक मैथिली सेवा अनुकरणीय अछि। आब एही परिवार द्वारा पहिले पहिल एक लाख टाकाक पुरस्कार गैर सरकारी स्तर पर प्रारंभ कयल गेल अछि।

ई पुरस्कार सर्वप्रथम लिली रे केँ भेटब एहि कारणे महत्त्वपूर्ण अछि जे मैथिली पत्रिका अपन सय वर्षक इतिहासमे भाषा, क्षेत्रक अतिरिक्त समाजक जाहि अंग दिस सभसँ बेसी ध्यान देलक से मिथिलाक नारी थिक आ मिथिलाक नारी के जाहि गुण-अपन संस्कृतिक प्रति ममत्व ओ युगानुकूल नवताक समन्वय-लेल मैथिली पत्रिकाक माध्यमसँ मैथिल बुद्धिजीवी अपन अभीष्ट प्रकट केलनि से गुण लिली रेमे खूब प्रबलता ओ मधुरताक संग विद्यमान छनि। लिली रेक स्वर आधुनिक मैथिली लेखनक पहिल नारी स्वर थिक। एहन नारी स्वर जे विशेषतः मिथिला ओ संपूर्णतः भारत के दृष्टिमे राखि मुखरित भेल अछि। आइ जखन आठम अनुसूचीमे सम्मिलित हेबाक कारणे मैथिलीकेँ अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य भेटलैक अछि त' लिली रे सन भारतीय मैथिली लेखिकाक सम्मान बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। एहि परिघटना लेल मैथिलीकेँ एक सय वर्षक प्रतीक्षा कर पड़लैक। एक सय वर्ष बादो ई संभव भ' सकल ताहि लेल मैथिली पत्रिकाक यात्राकेँ मोन राखब जरूरी अछि। मोन पाड़ब त' आर जरूरी।

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अपन पत्रकारिताक इतिहासमे कहलनि अछि जे मैथिली पत्रकारिताक आइ धरिक उपलब्धि एतबे कहल जा सकैत अछि जे ओ पत्रकारिताक विकासक संभावनाकेँ आइ धरि जिऔने रहल अछि। संगहि ओ ईहो कहलनि अछि जे हमरालोकनिक पत्रकारिता कमसँ कम सय वर्ष अवश्य पछुआयल अछि। वस्तुतः आन उन्नत भारतीय भाषामे पत्रकारिता आब करीब दू सय वर्षक भ' गेल अछि। 1818मे प्रकाशित 'बंगाल गजट' भारतीय भाषाक प्रथम पत्र थिक जे राजा राममोहन रायक नेतृत्वमे निकलल रहय। मैथिलीमे पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन' 1905मे राजस्थानक जयपुरसँ निकलल, जकर संपादक रहथि विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा। तकर बादसँ एहि सय वर्षमे एक सय तीससँ बेसी पत्रिका विभिन्न ठामसँ निकलल अछि। एहन कोनो अवधि नहि रहल अछि जखन कतहु ने कतहुसँ कोनो ने कोनो पत्रिका प्रकाशित नहि होइत रहल हो। मैथिल हित लेल प्रारभ भेल ई यात्रा मिथिलाक स्वरूप ठाढ़ करबाक कोशिश करैत मैथिलीक विकासमे अपन महत्त्वपूर्ण योगदान देलक अछि। एहि यात्राक बहुतो सकारात्मक पक्ष अछि त' नकारात्मक पक्षो कम नहि अछि। नकारात्मक पक्षमे सभसँ प्रमुख अछि मैथिलीक पत्रकारिताकेँ एकवर्गीय होयब। एक वर्गीय अर्थात् ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ धरि सीमित हेबाक कारणे मैथिलीकेँ क्षति उठाब' पड़लैक अछि। एहि जाति आधारित समाजमे मैथिली बहुत धौजनि सहलक। ओकरा पर बाहरे नहि भीतरोसँ प्रहार होइत रहल। मैथिली भाषी लोकनिक क्षेत्रकेँ संकुचित करबाक षडयंत्र कयल गेल आ से लगैये बहुत अंशमे सफलो भ' गेल। आइ मिथिलाक भूगोल एहि कारणे सीमित भ' गेल अछि। एहि सभक जड़िमे समाज ओ संस्कृतिकेँ सीमित-संकुचित करबाक चालि रहल अछि। प्रकट रूपसँ कही त' एहिमे मैथिल महासभाक सभसँ बेसी योगदान अछि। तैं मैथिल हित साधन, मिथिला मोद, श्री मैथिली ओ मिथिला पत्रिकाक प्रयत्नक बावजूद कोनो प्रभावी असरि नहि

पड़ि सकल। एहि पत्रिका सभक प्रयत्न बीच्चहि ठाम चतरि क' बैसल सनातन धर्म ओ रूढ़िवादी मैथिल ब्राह्मण यथास्थितिक मानसिकताक कारणे सफल नहि भ' सकल।

1960 क बाद आयल पत्रिका सभमे साहित्य दिस बेसी ध्यान देल गेल। एहिसँ मैथिली गद्य ओ पद्यक युगानुकूल विकास सम्भव भ' सकल। प्रमुख रूपसँ मिथिला-मिहिर ओ वैदेहीक साहित्य क्षेत्रमे बहुत योगदान रहल। एकरे संग अभिव्यंजना, आखर, सोनामाटि आदि पत्रिका साहित्यिक क्षेत्रमे अपन स्वरूपसँ वातावरणमे नव उत्साह अनलक। अस्सीक दशक मैथिली पत्रकारितामे तीक्ख तेवर वला लघु पत्रिका सभक प्रकाशन लेल विशेष उल्लेखनीय अछि। एहि पत्रिका सभक माध्यमे वैचारिक जड़ताकेँ तोड़बाक प्रयास कयल गेल। सन्निपात, अग्निपत्र, शिखा, फराकक संग आर कतेको पत्रिका एहि दिशामे हस्तक्षेप केलक। नब्बेक दशकमे देस कोस, माटि-पानि ओ भाखा समाचार प्रधानता ओ स्वरूपक नवीनता ल क' मोन रखबा जोगर अछि। समाचार-विचार लेल देसकोस त' सांस्कृतिक पक्षमे माटि-पानि ओ भाखा पत्रिका ईहो संभावना जगौलक जे मैथिली पत्रिका व्यावसायिक रूपें सफल भ' सकैत अछि। शताब्दीक अंतिम दशकमे आरंभ, जिज्ञासा, सन्धान, समय-साल, भारती-मण्डनक संग दिल्लीसँ प्रकाशित अंतिका मैथिली पत्रकारितामे विभिन्न कारणे हिलकोर अनलक।

मैथिलीक कवि-कथाकार ओ हिन्दीक पत्रकार सुकान्त सोमक कहब छनि जे पहिलुक पत्रिका बेसी समाज सचेतन छल आ आब पत्रकारिता नहि, सहित्यकारिता भ' रहल अछि। हुनक ई कथन बीस वर्षसँ बेसी भेलाक बाद आइयो सत्य बनल अछि मुदा एतबा अवश्य भेल अछि जे एहि साहित्यकारितासँ एक जातीय-एक वर्गीय हेबाक आरोपसँ पत्रिका सभ मानसिक ओ भौतिक रूपसँ मुक्त हेबाक दिस उन्मुख भेल। आब मिथिलाक संस्कृति ओ परंपरामे केवल अभिजनेक नहि, शोषित ओ दलितक देयकेँ सेहो स्वीकारल जा रहल अछि। एहि क्रममे विखण्डन ओ संकुचनक रस्ता त्यागि समाज के जोड़बाक ओ दृष्टिमे व्यापकता अनबाक प्रयत्न शुरू भ' गेल अछि। समाजक विभिन्न क्षेत्रक, जाति-वर्गक बुद्धिजीवीलोकनि मैथिली ओ मिथिलाक विकास लेल लेखन-सम्पादनमे आगू आब' लगला अछि। मैथिली पत्रिकाक सय वर्षक इतिहासकेँ देखैत एहि संदर्भमे देशज पत्रिकाक संपादक तारानन्द वियोगी ओ सूत्रधारक संपादक मोहन यादवक स्वागत कयल जेबाक चाही।

एक सय वर्ष पूर्व विद्यापतिक भाषा विवादसँ मैथिलीक अस्मिताक संघर्ष प्रारंभ भेल छल। सय वर्षक यात्रामे संकुचित दृष्टिक कारणे अंततः विद्यापति मैथिल ब्राह्मणक झंडा बनि क' रहि गेला। हुनकामे मिथिलाक झंडा बनबाक संभावना एखनहुँ बाँचल अछि। ताहि लेल विद्यापतिकेँ जन-जनक कंठहार रूपमे स्थापित करबाक प्रयत्न फेरसँ नव ढंगे कर' पड़तैक। ई काज आब अभिजन समाजक नेतृत्वसँ हुअ' बला नहि अछि। एहि लेल मैथिली समाजक शोषित ओ दलितकेँ नेतृत्व कर' पड़तनि।

राजनीतिक नेतृत्व मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक ओ आर्थिक विकासमे

असफल सिद्ध भेल अछि। एहि लेल संस्कृति सम्पन्न ओ नव सोचसँ लैस नेतृत्वक खगता आब खूब बढ़ि गेल अछि जे मिथिलाक जन-जनक पीड़ाकेँ अखिल भारतीय स्वर द' सकय। विकासक गाड़ी के आगू बढ़ा सकय। ई केवल स्वप्न नहि रहि जाय एहि लेल सार्थक ओ जमीनी प्रयत्न जरूरी अछि। मैथिली पत्रकारिताक भूमिकाकेँ एहीठाम आइ देखल जेबाक चाही। एहि दिशामे प्रयत्न हो। बुद्धिजीवी ओ संपादक लोकनिक सम्मेलन हो। विभिन्न क्षेत्रक विशेषज्ञलोकनि ओहिमे भाग लेथि। एक कार्य योजना बनय। नब मिथिलाक निर्माण लेल रस्ताक खोज कयल जाय। मैथिलीक वर्त्तमान ओ भविष्यक पत्रिका सभ एहिमे अपन योगदान दिअय। मैथिली पत्रकारिताक विकास वस्तुतः मिथिलाक विकाससँ जुड़ल अछि।

घर-बाहर, जुलाई-दिसम्बर 2004

मैथिल संस्कृति आ मैथिली आन्दोलन

काञ्चीनाथ झा 'किरण' लिखैत छथि ''1931 ई.मे आबि कए आदरणीय श्री भोलालाल दास, आदरणीय शशिनाथ चौधरी लोकनि मैथिली साहित्य परिषद्‌क स्थापना क' बिहारमे मैथिलीकें स्वीकृत करयबाक यत्न कयलनि। अर्थात् आन प्रान्तीय भाषाक स्वीकृतिक सत्तरि वर्षक बाद किछु मैथिलक ध्यान अपन भाषाक दिस गेल।'' कहि सकैत छी जे मैथिली भाषा आन्दोलनक इतिहास आइ सत्तरि वर्षक भ' गेल अछि। मुदा आन भाषासँ सत्तरि वर्ष पाछू सेहो चलि रहल अछि।

सत्तरि वर्षक एहि आन्दोलनक उपलब्धि की सभ अछि? विश्वविद्यालयमे मैथिली साहित्यक पढ़ाइ। अनेक शोध। लोकसेवा आयोगमे एक वैकल्पिक विषयक रूपमे स्वीकृति। साहित्य अकादेमीमे स्वीकृति। मैथिली अकादेमीक स्थापना। पटनाक चेतना समितिसँ ल' कय बिहारमे विभिन्न स्थानपर तथा आन प्रान्तहुमे मैथिली भाषा-भाषीक संगठन। विभिन्न समयमे अनेक पत्रिकाक प्रकाशन। मैथिली भाषामे साहित्यिक गद्य आ पद्यक विकास। भाषाक व्याकरण। क्रमशः वर्त्तनीक निर्धारण होइत जायब। मैथिली चेतना बनल रहब। अनेक प्रतिकूल परिस्थितिक बाबजूदो भाषा आ संस्कृतिक लेल लोकक मोनमे ममता बनल रहब।*

मुदा एहि आन्दोलनसँ एखन धरि की सभ उपलब्ध नहि भ' सकल अछि? मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा। उच्चतर शिक्षा। बिहारमे सरकारी भाषाक रूपमे स्वीकृति। मिथिलाक सम्पूर्ण समाजकें भाषिक चेतनासँ जोड़ब। एही संग मैथिलीमे दैनिक अखबार, व्यावसायिक स्तरपर पोथीक प्रकाशन आ वितरण। साहित्यसँ अतिरिक्त विषयक पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन। गंभीर विचारक लेल मैथिली गद्यक सामर्थ्य विकसित होयब। प्रौद्योगिकीमे मैथिलीक प्रवेश आ विकास।

कहल जा सकैत अछि जे कोनो भाषाक समुचित विकास लेल सत्तरि वर्षक समय बेसी नहि होइत अछि। शुरूहेमे पछुआ गेल छी त' समय लगबे करत एहि तर्ककें नकारल नहि जा सकैत अछि। मुदा की एहि सभ लेल आर सत्तरि वर्ष लागत?

---

* अन्ततः 2003 मे भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक स्थान भेटिगेल अछि।

यदि सत्तरि वर्ष लागत त' की जे सभ उपलब्ध अछि तकरा बचाक' राखि सकब? पछिला बीस वर्षक गतिविधि पर जँ दृष्टिपात करी तँ ई स्पष्ट होयत जे विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पढ़ाइ कमजोर भेल अछि। छात्रक संख्या अत्यन्त कम भ' गेल अछि। मैथिलीक अध्ययन कोनो रोजगार नहि द' पाबि रहल अछि। बी. पी. एस. सी.सँ हटि* गेलाक कारणें मैथिली प्रतियोगीक लेल उपकारक नहि भ' पाबि रहल अछि। मैथिली अकादेमीक गतिविधिमे कमी आयल अछि।+ मैथिलीमे नियमित पत्रिकाक अभाव भ' गेल अछि। मैथिली संस्था सभमे उत्साहक कमी अछि। अभाव-अभियोग बढ़ल अछि। मैथिललोकनिक दैनिक व्यवहारमे मैथिली भाषाक प्रयोग घटल अछि। पिछड़ा आ दलितवादक जोर आ भूमण्डलीकरणक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषा ओ साहित्य अपन प्रयोजनीयता सिद्ध नहि क' पाबि रहल अछि। ओकर सार्थकता स्पष्ट नहि भ' रहल अछि। स्पष्ट अछि जे मैथिली भाषा पर आइ खतरा अत्यन्त व्यापक आ गहीर भेल अछि। एहनामे मैथिलीक मरि जयबाक सम्भावना के खाली किछु लोकक जोश आ भावनासँ नहि रोकल आ सकैत अछि।

स्वाभाविक अछि जे एहेन विषम परिस्थितिमे मैथिली भाषाके आर्थिक आधारक जरूरति छैक। अर्थ सर्वोपरि थिक। जावत् भाषा के अर्थसँ जोड़ल नहि जायत तावत एकर विकास संभव नहि अछि। अर्थसँ जोड़बाक लेल सत्ताक झुकाब जरूरी अछि। सत्तासँ किछु प्राप्तिक लेल राजनीति जरूरी अछि। राजनीति लेल समाजक समर्थन आवश्यक अछि। समाजमे भाषिक चेतना होयब जरूरी अछि। मुदा ई चेतना हो कोना?

आन प्रान्तमे ई चेतना अंग्रेजक आगमनक बाद सामाजिक जागरणसँ उत्पन्न भेल। भाषाक क्षेत्रमे आधुनिकताक अर्थ अपन मातृभाषाकें पवित्र मानब आ समस्त भाव विचारक माध्यम बनायब भेल। अपन भूमिक स्वाधीनताक लेल जीवन अर्पित करबाक भावना के प्रज्वलित करब भेल। समाजमे पसरल कुसंस्कार आ परम्पराक रूढ़ि सभसँ मुक्तिक प्रयास कयल गेल। समाज गतिशील भेल आ से सभ मातृभाषाक माध्यमे कयल गेल। लोक अपन भाषासँ जुड़ल। ओहिसँ अपन अस्मिता के जोड़लक मुदा दुर्भाग्यवश मिथिलामे से सभ नहि भ' सकल। समाजक जे सभ अगुआ रहथि से अधिकांश परिवर्तनक विरोधी बनल रहला। अंग्रेज द्वारा आनल आधुनिकताकें परंपराक विरोधी माननलि। हाल-साल धरि परम्परा बनाम आधुनिकताक ओझरा मैथिलीमे बनल रहल अछि। परम्परावादी आ आधुनिकतावादीक द्वन्द्व होइत रहल अछि। अपन अतीतक प्रति अपन सांस्कृतिक धरोहरिक प्रति संकुचित दृष्टि हाॅवी रहल अछि। सांस्कृतिक क्षेत्रमे आयल एहि संकुचनक परिणाम मैथिली के चुकाब' पड़ि रहल छैक। आन्दोलन व्यापक नहि भ' पाबि रहल अछि।

---

* एम्हर मैथिली वी.पी. एस. सीमे फेर आबि गेल अछि।

\+ एम्हर आबि फेर बढ़' लागल अछि।

मैथिल संस्कृति की अछि? मिथिलाक संस्कृति सेहो भारतेक संस्कृति जकाँ एहिठामक अनेक जाति-धर्म-वर्गक संस्कृतिक मेलसँ तैयार भेल अछि। आब ई पता लगायब बहुत मुश्किल अछि जे एकर भीतर कोन जातिके संस्कृतिक कतेक अंश अछि। जें कि ब्राह्मणलोकनि एहि सभक विवेचन, संग्रह, चिन्तन करैत रहला अछि तें एहि पर ब्राह्मणेक बौद्धिक लेबुल पढ़ल जाइत अछि। मिथिला अपन आध्यात्मिक चिन्तन ल' क' प्रसिद्ध रहल अछि। एक समय ई क्षेत्र भारतक मार्ग-निर्देशन करैत छल। मुदा प्रथम ऐतिहासिक नरेश कर्णाटवंशी नान्यदेवक कालसँ एकर संस्कृति पर आक्रमण होयब प्रारंभ भेल। मैथिल संस्कृति तकर बादेसँ छहोछित्त होइत गेल अछि। मिथिलाक पछिला दू सय वर्षक इतिहास मैथिलक आध्यात्मिक चेतनामे भूर क' देलक। जकर बीज हरिसिंहदेवक पंजी व्यवस्थामे ताकल जा सकैत अछि। जकर प्रभावमे विद्यापति सन युगचेता कविक चेतना सेहो अन्हार घरमे टौआइत रहल। जँ हुनकर गीतकें मिथिलाक ललना अपन कंठमे जोगा क' नहि रखितथि अथवा बंगाल आ नेपाल सहायता नहि करितय त' मैथिली चेतना आर भोतिआयल रहितय। आध्यात्मिक चेतनामे भेल भूर एकटा आर काज केलक। मैथिली समाजमे ऐहेन कियो नहि भेला जे उन्नैसम सदीमे मैथिली चेतनासँ सम्पन्न भ' समाजक सांस्कृतिक नेतृत्व करितथि। हिन्दी आ मैथिली दूनू दिस रहबाक मानसिकता बनले रहल, जे आइ धरि चलि रहल अछि। ई ओहिना अछि जेना अंग्रेज सरकारक समर्थनो करब आ कांग्रेस के चोरा क' मदति देब।

आन प्रान्तमे जे बात 1860 ई. क लग-पास शुरू भ' गेल छल से मिथिलामे 1930 ई. क बादहि प्रारंभ भ' सकल। मुदा एहि अन्तरालक दंश आ प्रभाव आइयो धरि मैथिली आन्दोलन भोगि रहल अछि। मैथिल मानसिकताक एहि दूचित्तापनसँ मुक्ति मैथिली आन्दोलन लेल एकदम जरूरी अछि। जाहि हिन्दी साम्राज्यवादक विरोध मैथिल बुद्धिजीवीक क्रांतिकारी धारा करैत रहल अछि, तकर आक्रमण एम्हर आर मेही भेल अछि। पहिने हिन्दी साम्राज्यवादक आक्रमण सभकें देखार पड़ैत छल मुदा आइ ई काज ओ भीतरे-भीतर करब प्रारंभ क' देलक अछि। ओकर प्रयास अन्ततः मैथिली चेतनाकें खखरी बनाक' छोड़ि देब थिक। दुर्भाग्यवश मैथिलीक अनेक सामर्थ्यवान साहित्य-संस्कृति-कर्मीकें हिन्दी साम्राज्यवाद अपन शिकार बना चुकल अछि। जे मैथिली चेतना के भीतरसँ उघड़ा-भाँड़ करबामे लागल छथि। मैथिली आन्दोलन के एहि तरहक लोककें चिन्हबाक छैक।

जहाँ तक मिथिलाक प्रश्न अछि, मैथिली आन्दोलन ने 'परमप्रिय पावन तिरहुत देश' क भावना समाजमे पसरि सकल आ ने 'मिथिला एक लघु भारत थिक' सैह लोककें बुझा सकल अछि। मैथिली साहित्य सेहो मिथिलाक मामिलामे कमजोरे बनल अछि। मिथिलाक दृष्टिसँ मैथिली साहित्य ने तिरहुत देश के परम प्रिय बना सकल आ ने एक लघु भारतक रूपमे चित्रित क' सकल। भाषा आन्दोलन आ साहित्य सृजनक ई सीमा हमरा सभ के बड़ महग पड़ि रहल अछि।

महग पड़य वा सस्त, इतिहासक चक्का के फेरसँ पाछू नहि घुमाओल जा सकैत अछि। मुदा इतिहाससँ सबक ल' अपन दृष्टि साफ क' आगू बढ़वाक प्रयोजन मैथिली आन्दोलन के छैक। कोनो आन्दोलन लेल समाज चाहबे करियैक। समाजक संलग्नताक बिना आन्दोलन अमरलत्ती सन चतरैत रहत। ताहिसँ की फायदा? ककरा फायदा? एहि पर विचार करब जरूरी अछि। सर्वप्रथम समाजक दृष्टि सम्पन्न आ सामर्थ्यवान लोकक सहभागिता मैथिली आन्दोलन लेल जरूरी अछि। जे यथार्थसँ जुड़ल चेतनाक संग सामाजिक विकास के दृष्टिमे राखि मैथिली आन्दोलनक नेतृत्व करथि। अपन ध्वजा फहरेबाक लेल नहि....। भले ही लक्ष्य प्राप्तिमे जे समय लागय।

चेतना समिति स्मारिका, 2000

भारत सरकार भाषा-नीति बनाबय

मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित हेबामे जे सभसँ बेसी बाधक रहलैक से अछि—मैथिलीक तथाकथित हिन्दी प्रदेशक भाषा होयब। एकर पाछू ई डर व्याप्त छल जे मैथिलीकेँ भाषा रूपमे मान्यतासँ हिन्दीक जनसंख्या घटि जायत। एकर संग इहो मानसिकता लगातार काज करैत रहल जे मैथिली कोनो भाषा नहि अपितु एकटा बोली मात्र अछि। मैथिलीक नियति हिन्दीमे विलीन भ' जयबहिमे छैक। एहि सोच ओ मानसिकताक प्रतिध्वनि संसदक दूनू सदनमे सेहो सुनाइ देलक जखन चारिभाषा—बोडो, संताली, डोगरी आ मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित करबाक लेल भाजपा सरकार द्वारा संविधानमे संशोधनक प्रस्ताव आनल गेल। मुदा ई सोच ओ मानसिकता कमे सदस्यक छल। बेसी त' प्रस्तावक समर्थन आ अपन क्षेत्रक भाषाकेँ आठम अनुसूचीमे स्थान लेल मात्र सरकारकेँ अनुरोध क' रहल छला। तमिलभाषी सांसद लोकनि अवश्य तमिल के क्लासिकल भाषा घोषित क' ओकरा केन्द्रीय राजभाषा बनेबाक प्रस्ताव रखलनि। किछु गोटे अंग्रेजीक आधिपत्य हटेबाक लेल कहलनि। एक दू सदस्य एहि बातक स्मरण सरकार के दिऔलनि जे सभा भाषाक विकास लेल सरकार प्रयास करय आ एहि लेल एकटा स्पष्ट भाषा-नीति बनय, किएक त' भाषा एक संवेदनशील मुद्दा अछि। वस्तुतः आब खाली आठम अनुसूचीमे स्थान द' देलासँ भाषा सभक स्वतः विकास सम्भव नहि अछि। आठम अनुसूचीक सँवैधानिक प्रयोजन लगभग समाप्त भ' गेल छैक। मुदा भाषाक अस्मिताक दबाव बढ़ि रहल छैक। तैं सँवैधानिक मान्यताक लेल नीतिक संग विभिन्न भाषा-साहित्यक विकास ओ संरक्षणक दायित्व सरकारकेँ उठाबहि पड़तैक। एहि कारणे भाषा-नीति बनायब सरकारकेँ सभसँ बेसी जरूरी भ' गेलैक अछि। उपप्रधानमंत्री श्री आडवाणी अंग्रेजीक बाध्यताक अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यकेँ देखैत ई बात बजला जे एकर समय आब नहि रहल जे अंग्रेजीकेँ ओकर स्थानसँ हटा देल जाय। ओ पैंतीसटा अन्य भाषा-बोलीक आठम अनुसूचीमे मान्यताक प्रश्नकेँ विशेषज्ञलोकनिक सुझावसँ निर्णयक बात सेहो कहलनि।

तथाकथित हिन्दी प्रदेशक भाषा सभमे राजस्थानी, भोजपुरी, व्रजभाषा ओ बुन्देलखण्डीक लेल सेहो आवाज संसदमे उठल। संसदक चर्चासँ जेना प्रकट होइत

अछि जे वोडो भाषा त' वोडो आन्दोलन आ केन्द्र सरकार, राज्यसरकारक त्रिपक्षीय समझौताक कारणे ओ डोगरी जम्मूक विशेष स्थिति तथा डॉ. कर्ण सिंहक लगातार प्रयासक कारणे संविधानमे सम्मिलित कयल गेल। मुदा मैथिली जें कि तथाकथित हिन्दी प्रदेशक भाषा छल आ एकर सुनियोजित विरोधक एक इतिहास सेहो रहल अछि तैं एकर एक भिन्न स्थिति रहल। मैथिलीभाषीक बीच एही कारणे ई सन्देह बनल रहल जे प्रधानमंत्री ओ उपप्रधानमंत्रीक आश्वासन ओ डॉ. सी. पी. ठाकुरक प्रयासक बावजूद एकरा मान्यता भेटब कठिन छैक। संतालीक लेल आदिवासी सांसद लोकनि प्रयासरत छला आ आदिवासीक भाषाकेँ मान्यता देब राजनीतिक दृष्टिसँ सरकारकेँ बहुत कठिन नहि छलैक। संगहि जेँ कि संताली भाषा-साहित्यक विकास आदिवासीलोकनिक भाषाक बीच प्रमुख रूपेँ होइत रहल तैं संतालीक एक विशेष स्थिति सेहो बनि गेल छल। भाषाक रूपमे मान्यताक बाद आब ओकरा साहित्य अकादेमीक मान्यता सहज भ' गेल छैक।*

मैथिलि समाज अपन साहित्यक विकास आधुनिक समयमे लगातार करैत रहल अछि। प्राचीन परम्पराक संग आधुनिक समयक उपलब्धि सेहो एक पैघ पूंजीक रूपमे ओकरा संग रहलैक अछि संगहि मैथिलीभाषी लोकनि स्वतंत्रताक बादेसँ ई माँग कर' लागल छला जे संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ सम्मिलित कयल जाय। दरभंगामे 1952मे ओ कलकत्तामे 1953मे जोरदार ढंगसँ एकर माँग उठल छल। अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा कलकत्तामे जुलूस निकलल, प्रदर्शन कयल गेल ओ गिरीशपार्कमे सभा भेल जाहिमे पन्द्रह हजारसँ बेसी मैथिली समाजक लोक जुटल छला। बादमे 4 नवम्बर 1979केँ एक छात्रसंगठन (निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ) पटनामे लम्बा जुलुस निकालने रहय। ओहि जुलूसक नेतृत्व बाबू साहेब चौधरी, बालेन्दु अरुण, मोहम्मद नाजिम रिजवी, वीणा कर्ण ओ जस्टिन रिचार्ड केने रहथि। जुलूस विभिन्न नारा सभ लगबैत पटनाक मुख्य सड़क पर निकलल रहय। नारा सभमे प्रमुख छल—'हिन्दू मुस्लिम वीर जवान, हम सभ छी मिथिला सन्तान ओ चाही अपन माइक बोल, दोसराक भाषा दूरक ढोल।' मुदा तत्कालीन सरकार विशेष रुपें कांग्रेस मैथिलीक प्रश्न पर मुख्यतया पं. नेहरूक नीति पर चलैत रहल। पं. नेहरूक नीति रहनि जे मैथिलीमे साहित्य सर्जना हो, नीक-नीक किताब सभ छपय। मोटामोटी सैह नीति राज्यक कांग्रेसी सरकारक सेहो रहलैक। ओ छोट-छोट माँगक पूर्त्ति करैत रहल। पं. नेहरूक ओहि सोचक पाछू कारण छल हुनकर ओ नीति जे धर्मनिरपेक्षता ओ विस्तृत दृष्टिकोणसँ हिन्दीक समर्थनक आधार तैयार करबामे निहित रहय।

मुदा हुनकर एहि प्रकारक ध्रुवीकरणक नीति हुनका अपनहि समयमे एक असम्भव सपना बनि क' रहि गेल।

* मान्यता आब भेटि गेल छैक।

ई एक अजीब बात अछि जे पं. नेहरूक सोचक विस्तार एहि रूपें भेल, जे काँग्रेस आ हिन्दीक बुद्धिजीवीलोकनि स्वतंत्रतापूर्वक अंग्रेज सरकारक ओहि नीति के आगू बढ़ब' लगला जे अपन साम्राज्यवादी हित लेल अंग्रेजीकेँ माध्यम बनौने छल। दूनूमे अन्तर एतबे भेल जे अंग्रेजीक स्थान हिन्दी ल' लेलक। नेहरूजीक नीतिकेँ हुनकर सुपुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सेहो कने आगुए बढ़ि क' अपनौलनि। ओ मानैत छली जे अपन समृद्धिक कारण मैथिली आठम अनुसूचीमे सम्मिलित हेबाक योग्य अछि। मुदा एहिसँ राष्ट्रीय एकता ओ भावनात्मक संगठन के क्षति होयत। श्रीमती इन्दिरा गांधीयोक धारणामे मैथिली हिन्दीक बोलिए छल। एम्हर हिन्दीक बुद्धिजीवीलोकनि सेहो एहि धारणा के आगू बढ़बैत रहला। हिन्दीक प्रसिद्ध आलोचक डॉ. राम विलास शर्मा 1954मे एकटा लेख प्रकाशित करौने छला जाहिमे ओ कहने रहथि जे हिन्दीक सामने मैथिलीक महत्व बोलीक छै आ मिथिलामे सामन्ती अवशेष खतम भेला पर, ओत' उद्योग धंधाक उन्नति भेला पर मैथिलीक बोली मात्र होयब आरो स्पष्ट भ' जायत। मैथिलीक जातीय भाषा हिन्दी आरो दृढ़ताक संग प्रतिष्ठित होयत।

डॉ. शर्माक ओहि लेखक विरोधमे यात्रीजीक ऐतिहासिक निबन्ध छपल छल जाहिमे ओ हुनकर मतक सांगोपांग खण्डन केने रहथि। यात्रीजी कहने रहथि जे सामन्ती अवशेष खत्म भेला पर, उद्योग-धंधाक उन्नति भेला पर मैथिली अधिकाधिक पुष्ट भ' जायत। एही लेखमे ओ स्टालिनक ओहि मन्तव्यकेँ रखने छला जाहिमे ओ कहने रहथि जे राष्ट्रीयताक समस्या आ भाषाक समस्या किसान हल करत-किएक जे किसान जमीन धेने अछि ओ देशसँ सम्पृक्त अछि, ओ देशक अधिवासी अछि। अर्थात् भाषा-समस्याक समाधानमे श्रमिक, किसान अगुआइ करत। यात्रीजी ईहो कहने छला जे हम ई नहि कहैत छी जे हिन्दी ओ मैथिलीक बीच ओते दूरी अछि जतेक हिन्दी आ तमिल क बीच, किन्तु ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आ बुन्देलखण्डीक अपेक्षा हमर मैथिली हिन्दीसँ कतहु दूर पड़ैत अछि। ओ ई बात स्वीकार केने रहथि जे सभ रूपेँ मिथिलामे मैथिली भाषाक अपन स्वतंत्र अस्तित्व छैक मुदा ईहो यथार्थ अछि जे हिन्दी मिथिलाक भीतर घुसिया गेल अछि। मैथिलीक वर्तमान शब्दशक्तिसँ नितान्त अपरिचित व्यक्तिकेँ ओकरा बोलीमात्र कहि देब जेना छुच्छ प्रलाप अछि तहिना मिथिलाक भीतर पसरैत हिन्दीक अस्तित्वकेँ एकदम्मसँ नहि मानब आँखि मुनि क' माछी घोंटब थिक।

एहन नहि अछि जे हिन्दीक लेखक-आलोचकलोकनिमे सभ डॉ. राम विलास शर्माक मतक समर्थके छथि। अनेको विद्वान छथि जे हिन्दीक विकास लेल मैथिली वा कोनो क्षेत्रीय भाषाक विकासकेँ बाधक नहि मानैत छथि। हिन्दीक प्रसिद्ध चिन्तक शिवदान सिंह चौहान 'आलोचना' पत्रिकाक सम्पादकीयमे बहुत पूर्वहि एहि विषयमे अपन विचार व्यक्त क' चुकल छथि। ओ लिखने रहथि जे भाषा आ भारतीय एकताक प्रश्नपर एहि जनतांत्रिक भावना और विवेककेँ जगेबाक जरूरति अछि कि पंजाबी,

राजस्थानी, मैथिली, अवधी, ब्रज, संताली, डोंगरी वा अन्य क्षेत्र सभमे भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठनक मांग उठैत अछि त' से न्यायोचित थिक, जनतांत्रिक थिक ओ स्वाभाविक थिक। ओ अपन-अपन भाषाके मान्यताक लेल आन्दोलनकेँ नाजायज नहि मानैत छला। ओ मानैत छला जे भाषा-प्रश्नक समाधान बहुमतसँ नहि, सहमतिसँ संभव अछि। यैह जनतांत्रिक तरीका थिक।

जेना कहलहुँ मैथिली भाषाक मान्यता लेल जेना आन्दोलन विभिन्न रुपे होइत रहल तेना एकर विरोधो अनेक रूपमे सोंझा आयल अछि। मैथिली आन्दोलन जँ विभिन्न संस्था ओ व्यक्तिक द्वारा जुलूस, धरना, शिष्टमंडल, विशाल सभा, गोष्ठीमे पारित प्रस्ताव, विद्यापति समारोह, विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक माध्यमे लगातार चलैत रहल त' एकर विरोधो खुलि क' वा तरे-तरे होइत रहल अछि। विरोधक गतिविधि राष्ट्रीय स्तरसँ स्थानीय स्तर धरि पसरल रहल अछि। राष्ट्रीय स्तरक अपेक्षा स्थानीय स्तरक विरोध व्यापक ओ गहीर होइत गेल अछि। उदाहरण लेल भेटल उपलब्धिसँ वंचित करब, आकाशवाणीमे कार्यक्रमक अवधिकेँ कतरब, लापरवाहीसँ कार्यक्रम संचालित करब, टेक्स्ट बुक कारपोरेशन द्वारा प्रयोजनीय सभ किताब नहि छापब, जे छपेबो करब तकर समुचित रीतिएँ वितरण व्यवस्था नहि करब आदि प्रमुख अछि।

मैथिली विरोधक एहि वैचारिक ओ ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक कारणे मैथिली समाजक ई सन्देह स्वाभाविक छल जे केन्द्र सरकार मैथिलीकेँ मान्यता द' सकत वा नहि। मुदा भाजपा सरकार अपन आश्वासन पूरा केलक आ तीन भाषाक संग मैथिलीकेँ सेहो संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित कयलक। भाषाक आधार पर राजनीति होइत रहल अछि, से एक तथ्य थिक। भाजपा एक राजनीतिक पार्टी थिक तैं ओकर मैथिली समर्थनक राजनीतिक निहितार्थ होइक से स्वाभाविके। वस्तुतः भाजपाक समर्थन मैथिलीभाषीलोकनिक आन्दोलनसँ बेसी मैथिली भाषाक विरोध पर आधारित अछि। कखनहुकेँ अहाँक तीव्र विरोध अहाँके फायदा द' दैत अछि। मुदा कारण जे हो, भाजपा सरकार एहि लेल धन्यवादक पात्र त' अछिए, खास क' कए अहू कारण जे ओकर भाषा-सम्बन्धी पूर्व दृष्टिकोण हिन्दीक समर्थनक रहलैक अछि। तैयो अपन दृष्टिकोणमे भाजपा व्यावहारिक रूपें परिवर्तन केलक अछि। ई परिवर्तन ओकरामे सत्ताक कारणे अयलैक अछि। सत्ता लेल ओ अपन पारम्परिक सोच ओ कार्यक्रम सभकेँ पाछू दिस ठेलि क' नव ओ अद्यतन सोचकेँ आबू बढ़ाब' चाहैत अछि। जरूरत पड़ला पर राममंदिरक गाड़ी के तत्काल पछिला टीशन पर रोकि क' विकासक ट्रेनकेँ हरियर झंडी द' सकैत अछि। मैथिलीक मान्यता भाजपा सरकारक एही अद्यतन सोचक परिणाम थिक।

भाजपा सरकारक अपन राजनीति जे रहौ, मुदा हमरालोकनिक राजनीति की अछि? भाषा आन्दोलन ओ ओकर नेतृत्व कयनिहारक सेहो एकटा सुविचारित नीति

होइ छै। कोनो आन्दोलन ओहि सैद्धान्तिक ओ सुविचारित व्यावहारिक नीतिक बिना आगू नहि बढ़ि सकैत अछि। तैं एहिठाम कने ठमकि क' सभ गोटे विचार करी। जँ विचार करब त' ज्ञात होयत जे आब दुइएटा प्रमुख माँग बाँकी रहि गेलए- पहिल, बिहार सरकार द्वारा बिहारक सरकारी भाषाक रूपमे मान्यता आ दोसर, मिथिलाक स्वतंत्र राज्य। जे माँग सभ पूरा भेल अछि तकर वर्तमान स्थितिक जँ विश्लेषण करी त' स्थिति निराशाजनक कहल जा सकैत अछि। एहि निराशाजनक स्थितिक लेल जँ मैथिली विरोधी उत्तरदायी छथि त' समर्थको कम उत्तरदायी नहि छथि। बहुत विस्तारमे नहि जा क' हम एतबे कह' चाहब जे अपनाकेँ सकुंचित करबाक मनोवृत्ति हमरा सभकेँ बदलबाक चाही। क्षुद्रता सेहो एक पैघ समस्या अछि। व्यापक हितक आगू अपन न्यस्त स्वार्थकेँ हमरालोकनिकेँ त्याग कर' पड़त। वस्तुतः ई एक ऐतिहासिक घड़ी थिक जखन हमरालोकनि मैथिली समाजक समस्याकेँ चारित्रिक संकटक रूपमे देखी। यैह ओ बिन्दु अछि जत'सँ नेतृत्वक अभाव सेहो दृष्टिगोचर हुअ' लगैत अछि। जे नेतृत्व अछि, जे काज क' रहल अछि से पता नहि किए मोजर लेल बड़ भूखल अछि। कथी के अगुताइ छनि हुनका? की कोनो इतर लाभ अपन योगदानसँ लिअ' चाहैत छथि? जँ से लिअ' चाहैत छथि त' हमरा किछु कहबाक नहि अछि। हमरा त' बहुत विनम्रतापूर्वक ई बात रखबाक अछि जे नेतृत्व आगू आब'वला दिनमे बहुत महत्त्वपूर्ण हुअ' जा रहल अछि। अमरलत्ती नेतृत्वसँ आब आगू काज नहि चलि सकैए। नेतृत्वकेँ आब तृणमुलिया बन' पड़तैक। तृणमूल स्तर पर काज कर' पड़तैक। नहि त' भेटलो उपलब्धि सभ एहिना बिन पेनीक लोटा तरें बिलाइत रहत।

बहुतो गोटे आठम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक बाद ओहिसँ की फायदा होयत तकर खोजमे अपस्याँत छथि। ओलोकनि अपस्याँत रहथु। एहिठाम हम ओकर चर्चा नहि कर' चाहैत छी। जे फायदा होयत से त' देखबे करब। मुदा एकटा बात जरूर लागि रहल अछि जे स्वतः किछु भेट'वला नहि अछि। ओहि लेल गम्भीर प्रयास ओ संघर्ष कर' पड़त। आब छोट-छोट नहि, पैघ-पैघ शत्रुओसँ पाला पड़त। पैघ-पैघ शत्रुक मतलब पैघ-पैघ दिमागवला, ओहदावला, विद्वान-पण्डित, ख्यातिलब्ध।

हमर राजनीतिक-सांस्कृतिक नेतृत्वकेँ ताहि जोगर बन' पड़तनि। एक-एकटा मोर्चा पर लड़' पड़तनि। एहि लेल तैयारी प्रारम्भ क' देबाक चाही। जनमत आ जनसहयोगक बिना ई सम्भव नहि अछि। तैं मैथिलीक विकासकेँ आम जनताक उन्नतिसँ जोड़ि क' देखबाक आवश्यकता अछि।

मिथिलाक आर्थिक विकासक संग साक्षरताक प्रचार-प्रसार पहिल आवश्यकता अछि। ई काज स्थानीय स्तर पर मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षासँ संभव अछि। मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा लेल मैथिलीक पहिल पत्रिका 'मैथिल हित साधन'क सम्पादक मधुसूदन झासँ डॉ. जयकान्त मिश्र धरि लगातार कहैत रहला अछि। ओहि

काजकेँ बढ़ायब सभसँ बेसी जरूरी अछि।

दोसर जे महत्त्वपूर्ण बात अछि से भारत सरकारसँ एक सुस्पष्ट भाषा-नीति बनेबाक माँग करब थिक। ई माँग एहि कारणे आवश्यक अछि जे भारतीय भाषा सभक विकास लेल की सभ कार्य केन्द्र ओ राज्य सरकार करय चाहैत अछि ताहि मादे ओ अपन नीति स्पष्ट करय। स्पष्ट नीति रहलासँ भेद-भावक सम्भावना समाप्त भ' जायत, संगहि कोनो भाषा-भाषीकेँ दोसर भाषा-भाषीक प्रति आक्रोश नहि रहत।

घर-बाहर, जनवरी-मार्च 2004

विकासक फल

मैथिलीक चर्चित कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक एक कथा अछि। कथामे मेही कामति एक छोट कृषक छथि। खाली रहला पर ओ मजदूरी सेहो क' लैत छथि। खेतीमे हुनकर सभ प्रशंसा करैत छनि। खेतसँ ओ प्रेम करैत छथि। एही खेतियाहा मोनक कारणे हुनका भीतरसँ सामुदायिक सोच उपजलनि अछि। जकर पाछू सम्पूर्ण कृषि संस्कृति अछि। कृषि कर्मसँ उपजल जीवन शैली छैक। ओ एहि बातसँ चिन्ताग्रस्त छथि जे लोक गामसँ भागि रहल अछि। खेती बन्द भ' रहल छैक। मेहीक बेटा झगड़ि क' शहर चल गेलनि अछि। बहुत लोकक बेटा गाम छोड़ि देलकैक अछि। आब खेत सभक की हेतैक? की खेत एहिना परती पड़ल रहत? एही चिन्तामे एक राति ओ सपना देखैत छथि जे चाउर आ गहूम आब खेतमे नहि फैक्ट्रीमे बनैत अछि। डॉक्टर रोगी के दबाइ दैत अछि त' ओकर कोनो असरि नहि भ' रहल छैक। डॉक्टर कहैत छै जे रोगीक मुँहमे खेतसँ उपजल अन्नक दाना देल जाय तखने ओकरापर दबाइयोक असरि हेतैक। मेही सोचैत रहैत छथि जे हुनकर बेटा घूमि क' फेर गाम आओत आ खेती करत।

श्रीनिवासक ई कथा जत' कृषि कर्मसँ लोकक पलायन के रेखांकित करैत अछि ओतहि भविष्यमे अन्नक कमीक प्रति चिन्ता सेहो प्रकट करैत अछि। अन्नक ओहेन कमीक प्रति जँ मेहीक चिन्ता के एक बूढ़ खेतियाहा मोनक प्रलाप मानि क' संतोष क' ली तैयो मेहीक बेटाक पुनः गाम घुरि आयब सभसँ पैघ चुनौती अछि। यदि ओ घुरियो आओत त' की खेतीसँ ओकर गुजर बसर भ' सकतैक? मेहीए सन लाखो-हजारो मिथिलावासीक बेटाक बोझ की एहिठामक खेती सम्हारि सकत? वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे एहि प्रश्नक जवाब नकारात्मक अछि।

मुदा विडम्बना ई अछि जे एहिठामक आर्थिक संरचना मुख्यतः कृषि पर आधारित छैक। करीब अस्सी प्रतिशत लोक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपसँ खेती पर अपन जीवन निर्वाह लेल आश्रित छथि। नदी, पोखरि, उपजाउ माटि आ मेहनती कृषक-मजदूरक बावजूद मैथिली समाज पिछड़ल अछि। पिछड़ल खेतीक सोझ सम्बन्ध औद्योगिक

विकासक सुस्त रफ्तारसँ अछि। उद्योग वांछित रोजगार नहि द' पाबि रहल अछि त' खेती सेहो अतिरेकक समायोजन नहि क' पबैये। सैह कारण अछि जे लोक राज्यसँ पलायनक लेल विवश भ' गेल अछि।

खेती पिछड़ल किएक अछि? कम उपज दर, खेती योग्य भूमिक घटैत रकबा, सुनिश्चित सिचाइ व्यवस्थाक अभाव, उन्नत बीज-खाद ओ भण्डारणक असुविधा, लागत खर्चक अधिकताक संग बाढ़ि आ अकाल एकर जड़िमे अछि। मुदा जँ खेती विकसित भ' जायत त' मेहीक बेटा घुरि आओत? चिन्तामुक्त भ' क' अपन गाममे गुजर-बसर क' सकत'? आन्ध्र-प्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्रमे त' खेती विकसित अछि। तखन किये छोट आ मध्यम कृषक आत्महत्या क' रहल छथि? आन्ध्रपदेशमे हजारो कृषक आत्महत्या केलनि अछि। संप्रग सरकार कृषक सभ लेल विशेष हेल्पलाइन चलौलक अछि। आत्महत्याक मुख्य कारण ऋणग्रस्तता अछि। खेतीक लागत खर्च आ आमदनीक बीचक पैघ खाधि अछि। उँच दर पर ऋण ल' क' अपन खेतमे नव तकनीकसँ खेती करैत छथि। अधिक नगदी फसल उपजेबाक लेल आ अधिक लाभ कमेबाक लेल ओ अधिक व्यय करैत छथि। कोनो कारणसँ फसल वर्वाद भ' जाइत अछि। ओकर मुआवजा नहि भेटि पबैत अछि। उचित मूल्य पर फसिलक विक्री नहि भ' पबैत अछि। बेसी दिन सुरक्षित रखबाक लेल समुचित व्यवस्था नहि छनि। भयंकर घाटा भ' जाइत अछि। खेतीसँ भेल हानिसँ ऋणग्रस्तता बढ़ले जाइत अछि। अन्ततः हुनका अपन सम्पत्तिसँ हाथ धोअ' पड़ैत छनि। एहि हताशा के वरदास्त नहि क' पयबाक कारणे ओ आत्महत्या करबा लेल मजबूर भ' जाइत छथि। कृषि विकासक ई एक कारी पक्ष थिक।

की एहि बातक आशंका नहि अछि जे मेहीक बेटा गाम घुरि क' विकसित ढंगसँ खेती कर' लागय त' किछु दिनमे ओकर स्थिति आन्ध्रप्रदेशक कृषकलोकनिक जकाँ भ' सकैत छै? वस्तुतः सम्पूर्ण मामिला बहुत सोझ नहि अछि। एहि बाजार चालित व्यवस्थामे कृषि एकटा उद्योग भ' गेल अछि। जँ खेतीसँ अहाँ लाभ प्राप्त नहि क' रहल छी त' से बेसी दिन चल' बला नहि अछि। केवल अपना लेल अपन परिवार लेल अन्न उपजेबाक मानसिकता ओ व्यवस्था अतिरिक्त श्रोतसँ नकदी आमदनीक सोङर बिना नहि चलि सकैये। मुदा एक समांग नोकरी आ एक समांग खेती असफल भ' गेल अछि। नोकरी करैत खेती त' वरनी किछु सैह। वस्तुतः कोनो एकेटा काज नीक जकाँ आइ कयल जा सकैत अछि। खेती करु नोकरी करु वा व्यवसाय करु। जँ खेती करैत छी त' ओकरा उद्योग बूझू। उद्योग जेना चलैये तेना चलब' पड़त ओकरा। एहिमे मेही अथवा मेहीक बेटाक गुंजाइश कत' छैक? केवल हुनर आ खेतसँ प्रेम पर उद्योग नहि चलाओल जा सकैये। ओहि लेल पूंजी, लाभकर जोत, बाजारमे टिकबाक सामर्थ चाही। मेही कृषको अछि आ खाली रहला पर मजदूरियो क' लैत अछि। जीवन निर्वाह भ' जाइत छैक। खेतीक नबका चलनिमे मेही सनक कृषक मजदूर

भ' जायत। मजदूरिये टा ओकर हाथमे रहि जेतैक। गाममे बाप मजदूर आ शहरमे बेटा मजदूर।

खेती बदलि रहल अछि। खेती उद्योग भ' रहल अछि। एक्केटा बड़का फार्ममे उपजसँ ल' ओकर कटाइ-छटाइ, डिब्बा-बोराबन्दी सभटा होइत अछि। कारपोरेट फार्मिंगक जमाना आबि रहल अछि। ताहिमे छोट-छोट कृषकक गुंजाइश नहि छैक। ई तहिना अछि जेना आइ छोट-छोट उद्योगक गुंजाइश नहि छैक। सभ किछु बड़का-भारी व्यवस्था दिस क्रमशः टघरि रहल अछि। ई प्रवाह के कोना बदलल जा सकैये। सामूहिक वा संयुक्त कृषि एकर समानान्तर एक निदान छल। मुदा से आइ पाछू पड़ि गेल अछि।

मिथिलामे पोखरि, नदी आदिक कारण माछ ओ मखानक कारोबार बहुत दिनसँ चलि रहलए। लोक पोखरि जोतैत रहला अछि। मुदा उत्पादक के लाभक मात्रा बहुत कम। पोखरिक विकास नहि। उपजक वृद्धि नहि। ताहि परसँ लम्पट तंत्रक कब्जा। एक दिस जँ खेती अलाभकर हेबाक कारणे कमजोर लोक ओहिसँ भागि रहल अछि त' माछ आ मखान बेसीए लाभकर हेबाक कारणे मजबूत लोक ओहि पर कब्जा क' रहल अछि। कमजोर आ गरीबक त्रासदी दूनू ठाम छैक।

स्पष्ट अछि एहि प्रकारक विकासमे गरीब, कमजोर लोक बाहर दिस ठेलल जा रहल अछि। विकासक फल गरीब ओ कमजोर के नहि भेटि रहल छैक। जे सुविधा-संरक्षण सरकार द्वारा गरीब ओ पिछड़ल लोक के एखनि धरि भेटल छैक तकर वास्तविक लाभ धनीक ओ समर्थ के होइत रहलैक अछि। माछ-मखानक सरकारी जलकरक बन्दोबस्तीमे मत्स्यजीवी कोआपरेटिव सभ के प्राथमिकता प्राप्त छैक। बहुत कम राशिमे खाली सुरक्षित जमा पर कोऑपरेटिव के बन्दोबस्ती भेटि जाइत छैक।

वस्तुतः ई कोआपरेटिवक व्यवस्था कमजोर लोक लेल छै। मुदा एहिसँ लाभ गरीब मछुआ के नहि भ' कय आन के होइत छैक। आन बहुत प्रकारक लोक तेँ एहिमे आकर्षित भेला अछि। माछ आ मखानक उत्पादन, बिक्रीमे सुधार हो। वैज्ञानिक शोध हो एकर विकास हो से अपेक्षित अछि। एहिसँ मिथिलाक लोक के आर्थिक सबलता प्राप्त हेतैक। मुदा ई सबलता दुर्बल के भेटैक ताहू लेल विशेष ध्यान देबाक छैक। किएक त' पचासो वर्षसँ भेटल सुविधाक उपयोग गरीब लोक नहि क' सकल अछि। गरीब लोकक नाम पर समर्थ समृद्ध लोक एकर लाभ ल' रहल अछि।

'विकासकफल गरीब ओ कमजोर लोक के भेटय।' पिछला लोकसभा चुनाव जनमानसक अहू मनोदशा के अभिव्यक्त केलक अछि। केन्द्रमे शासन बदलि गेल अछि। सरकारक घोषणा अछि जे ओ कृषि आ बेरोजगारी के प्राथमिकता देत। ई स्वागतयोग्य बात थिक। सरकारकेँ एहन उद्यम सभकेँ संरक्षित करबाक चाही जाहिमे

बेसीसँ बेसी लोककेँ जीविका भेटि सकै। बेरोजगारी दूर भ' सकै। रोजगारमूलक उद्यम सभकेँ विकसित-संरक्षित करबाक जिम्मेदारी सरकारकेँ छैक। खासक' जाहिमे गरीब ओ पिछड़ल लोककेँ बेसी जीविका, रोजगार भेटि सकै। ताहि लेल व्यवस्था, कानूनमे जे परिवर्तन सरकार के करबाक होइ से करय। वस्तुतः विकासक फल जाबत धरि गरीब, बेरोजगार लोककेँ नहि भेटतैक ताबत धरि विकास अपंग बनल रहत। मुदा ओहि स्वस्थ विकास लेल समाजोक जिम्मेदारी कम नहि छैक। जाबत मैथिली समाज नहि बदलत विकासक फल मेहीक बेटा के कोना भेटि सकतैक? ओ मिथिला कोना घूरत?

घर-बाहर, अप्रैल-जून 2004

वर्तमान समाज आ मैथिली साहित्य

साहित्य सेवा समाज सेवा थिक। साहित्यिक कर्म सामाजिक कर्म। जँ समाजमे साहित्यक कोनो भूमिका नहि अछि त' ओकर कोनो जरूरतो नहि अछि। साहित्य समाजसँ कटि क' नहि रहि सकैये आ ने भ' सकैये। एही कारणे समाज आ साहित्यक संबंधमे एम्हर विशेष चिन्तन आ मनन कयल जा रहल अछि। एहि चिन्तनक आधार समाजमे साहित्य आ साहित्यकारक भौतिक सत्ता थिक। ई फूट बात अछि जे किछु लोक साहित्यक स्वायत्तताक प्रश्न उठबैत रहैत छथि। हुनकर मोन स्वायत्त साहित्य-संसारमे रमैत छनि। ई महानुभाव लोकनि प्रायशः ओहि परम्पराक विकास थिका जे धुपकाठी लेसि, गोबरसँ नीपि, आसन पर बैसि साहित्य साधना करैत छल। जिनकर चित्तमे साहित्यक मूल उद्देश्य स्वांतः सुखाय रहय। एहि साहित्य-लोकक निवासी लोकनिकेँ ई नहि सोहाइत छनि जे कियो हुनकर कर्म के उत्पादन कहय आ कृति के वस्तु। मुदा एहि महानुभावलोकनिक कल्पित प्रभामण्डल के हटा क' समाजमे साहित्यक स्थितिक विश्लेषण हेबाक चाही।

एहि दृष्टिसँ कहल जा सकैत अछि जे वर्तमान समाजमे साहित्यक स्थिति नीक नहि अछि। समाज के जँ भूगोलमे बाँटि क' देखल जाय त' अहूमे क्षेत्रीय असमानता अछि। जाहि क्षेत्रक सामाजिक-आर्थिक विकास बेसी अछि ओत' समाजमे साहित्यक स्थिति अपेक्षाकृत नीक अछि। मुदा जे क्षेत्र विकासक गतिमे पिछड़ि गेल ओतुका स्थिति अधलाह अछि। एहि संदर्भमे ईहो एक विडम्बना रहल जे जाहि प्रशासनिक राज्यक राजभाषा हिन्दी अछि, ओतुक्का समाजमे साहित्यक स्थिति नीक नहि अछि। दुर्भाग्यवश मिथिला सेहो एही ऐतिहासिक दुर्घटनामे फँसि गेल अछि। बहुत सहजतासँ अंग्रेजलोकनि मिथिलाकेँ बंगालसँ काटि क' मगधक संग जोड़ि देलनि। तहिना जनकपुर सहित मिथिलाक विस्तृत भूभाग के काटि क' पूर्वमे नेपाल संग मिला देल गेल। 1816सँ 1912 धरिक इतिहास एहिप्रकारें तोड़-जोड़क इतिहास अछि। लेकिन एहि ऐतिहासिक दुर्घटना लेल केवल अंग्रेजलोकनि जिम्मेदार नहि रहथि। अपन मुँहपुरुष लोकनि सेहो जिम्मेदार छला। ई केवल भूगोलक तोड़-जोड़ नहि रहय। भाषा आ इतिहासक सेहो

तोड़-जोड़ छल। जाहिमे अतीतोन्मुखी मानसिकता हारल आ आधुनिकता जीतल। हारबाक जड़िमे दमनकारी कमजोर अर्थतंत्र आ कोला-कोलामे बँटल समाजक जड़ता छल। यैह जड़ता मिथिला के शिथिला आ अचेत केलक। वर्त्तमान समाजमे साहित्यिक स्थिति नीक नहि रहबाक जड़िमे एहि ऐतिहासिक संदर्भ के ध्यानमे राखब जरूरी अछि।

आइ कहल जा रहल अछि जे टी.भी. कारणे लिखित शब्द अनावश्यक भ' रहल अछि। तेँ वर्त्तमान समाजमे साहित्य पर जरब पड़ि रहलैये। एहि बात के नकारब कठिन अछि जे टी.भी. आइ लोकक बेसी समय छेकि लेलक अछि। पोथी-पत्रिका लेल समय कम बचैत अछि। मुदा एहनो बहुत लोक वर्त्तमान समाजमे छथि जे पोथी-पत्रिका बिना नहि रहि सकैत छथि। यदि साहित्य नहि पढ़ता त' अपनाकेँ जीवंत अनुभव नहि करता। हुनकर मनोरंजन टी. भी. नहि क' पाबि रहलए। पोथी-पत्रिका प्रकाशन आ ओकर विक्रय संख्या के जँ आधार बनाओल जाय त' अहूमे क्षेत्रीय असमानता स्पष्ट भ' जायत। केरल, बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरातमे एहन लोक बेसी छथि जे साहित्यक बिना नहि रहि सकैत छथि। साहित्य पढ़ने बिना हुनका चैन नहि छनि। साहित्य के ग्रहणशीलताक स्तर सेहो एहि प्रदेश सभमे बढ़ैत गेल अछि। परिणामस्वरूप साहित्यक अनेक विधाक विकास भेल अछि। स्तरीय विकास। साहित्यिक पत्रिकाक खपत ओत' हजारोमे अछि। तहिना पोथी सेहो हजारो प्रति बिका जाइये। स्वाभाविक रूपसँ शिक्षाक स्थिति सेहो एहि प्रदेश सभमे हिन्दी प्रदेशक तुलनामे उच्चतर अछि। तैं समाज आ साहित्यक संबंधमे सोचैत-बिचारैत काल शिक्षा के सेहो ध्यानमे राखब आवश्यक अछि।

साहित्यक संदर्भमे जँ देखल जाय त' ई शिक्षा साहित्यक शिक्षासँ संबंध रखैत अछि। साहित्यमे अभिरूचि उत्पन्न करब साहित्यक शिक्षकलोकनिक काज थिकनि। अहू दृष्टियें देखला पर प्रादेशिक भिन्नता स्पष्ट भ' जाइत अछि। केरलमे कोनो विश्वविद्यालयक मलयालम विभागमे चल जाउ। लागत जेना विभाग आ साहित्यमे जीवंत संबंध अछि। ओहि सभ बात पर चर्चा सुनब जे साहित्यमे अद्यतन चलि रहल अछि। एकदम अद्यतन लेखक आ हुनकर साहित्य पर विमर्श होइत देखब-सुनब। ओहि पर सहमति-असहमति वैचारिक टिप्पणी सुनब। मुदा यैह जँ कोनो हिन्दी प्रदेशक कोनो विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे चलि जाइ तँ ओहिठाम एखनो निराला आ महादेवी, पंतसँ आगूक गप्प नहि भेटत। जाबत धरि कोनो रचना आ रचनाकार इतिहास आ परंपरा नहि बनि जाइत अछि ताबत ओकरा हिदी विभागमे जगह नहि भेटैत छैक। एही संग जँ हम मैथिली विभागक चर्च करी तँ? ओहिठाम त' जे कुर्सी पर बैसल छथि सैह इतिहास आ परम्पराक निर्माता छथि। ओ जे चाहता से परंपरा बनि जायत आ जकरा चाहता इतिहास बना देता।

साहित्यकेँ समाजक संग जोड़बाक काज सांस्कृतिक संस्था सभ करैत अछि। सांस्कृतिक गतिविधिसँ साहित्यक प्रति लोकक धारणा साफ करब ओकर रुचि के

परिष्कृत करब, विकसित करब एहि संस्था सभक मूल उद्देश्य अछि। मुदा यथार्थमे भ' की रहल अछि? ई संस्था सभ साहित्यक साहित्यिकता सुस्थापित/विकसित करबाक बदला ओकरा विस्थापित करबामे लागल अछि। ओहिठाम सभसँ बेसी कौचर्ज साहित्य आ साहित्यकारेक होइत अछि। समाजक बीचसँ साहित्य के हाशिया पर ठेलबाक जे सभ यत्न भ' सकैत छैक से ई संस्था सभ क' रहल अछि। एताबता वर्त्तमान समाज संग साहित्यक संबंध बिगाड़बामे एहि सांस्कृतिक संस्था सभक बेसी रुचि भ' गेल छैक। संबंध जोड़बा-बनेबामे कम।

साहित्यक विकास के प्रभावित करबामे सरकारी संचार माध्यमक भूमिका सेहो क्रमशः ऋणात्मक भेल जा रहल अछि। जहाँ तक मैथिली साहित्यक प्रश्न अछि, टी. भी पर त' ई एखन धरि नहिएँ जकाँ गेल अछि। रेडियो पर अलबत्ता बहुत दिनसँ डेगाडेगी चलि रहल अछि। रेडियो पर मैथिली साहित्यक प्रसारणक संबंधमे बहुतरास मनोरंजक गप्प सभ परसल अछि। ताहिमे दरभंगा आ पटना रेडियो त' वर्त्तमानमे बहुत ख्याति अर्जित केने अछि। दरभंगा रेडियोक अधिकारी एहि लेल बहुत दुखी रहथि जे मणिपद्मजी आ किरणजीकेँ बहुत दिनसँ नहि बजाओल गेल अछि। अपना मोने ओ अपन पूर्ववर्त्ती अधिकारी पर दोषारोपण क' रहल छला। हुनकर भाषामे आक्रोश छल। क्षोभ छल। मुदा जिनका लग व्यक्त भ' रहल छला हुनका हँसी लागि रहल छलनि। हुनका बूझल छलनि जे मणिपद्मजी आ किरणजी आब जीबित नहि छथि। कहिया ने मरि गेला। ओ कहलथिन, हुनकालोकनिकेँ स्वर्गमे कान्ट्रेक्ट पठा दिअनु। आबि जेता। रेडियो अधिकारीक मुँह देखबा जोगर रहय। पटना रेडियो अपन एकटा फूट साहित्यकारक लिस्ट बना लेने अछि। अधिकारीसँ जे सम्पर्क करैये से साहित्यकार भ' जाइये। पटनाक ओहि समस्त साहित्यकार के अहाँ पुछियनु जिनका एक रचनाकारक रूपमे अहाँ जनैत छियनि, हुनकर कोनो पोथी पढ़ने छी, ओ कहता जे कतेको वर्षसँ ओ रेडियो नहि गेला अछि। परन्तु ई साहस रेडियोक अधिकारीकेँ जनमलनि कोना? एकर उद्भव कथेमे वर्त्तमान समाज आ साहित्यक अंतःसंबंधक 'घोघा-सितुआ' भेटि सकैत अछि। एहीठाम साहित्यक भौतिक सत्ताक विरोधाभास अछि। एकरे विश्लेषणसँ साहित्यक सामाजिक अस्तित्व आ वर्त्तमान समाजमे लेखकक भौतिक स्थिति स्पष्ट होयत। एहीठाम ओ फूटल आँखि सेहो भेटत जे राजमोहन झा आ फल्लां-चिल्लां झाक कथामे कोनो अन्तर नहि बूझैत अछि। जखन कथेमे कोनो अन्तर नहि त' कथाकारमे किए होयत, जेहने ओ तेहने ई। ई कने बेसिये नीक कियेक त' एहिमे अधिकारी के अवान्तर सुख भेटैत छनि। हुनका साहित्यक विकाससँ की लेना-देना छनि? की ई बात केरलमे भ' सकैये? बंगाल आ महाराष्ट्रमे भ' सकैये? यदि नहि भ' सकैये त' किये नहि भ' सकैये से विचारणीय बात थिक।

किछु विद्वानक कहब छनि जे लेखक, पोथी आ पाठकक अंतःसंबंधक जानकारीसँ समाजमे साहित्य आ साहित्यकारक वास्तविक स्थितिक पता चलि सकैये। मैथिली

क्षेत्रमे ई बात रहरहाँ कहल जाइत अछि जे एत' जे लेखक छथि सैह प्रकाशक छथि, वैह पाठको छथि। लेखक आ प्रकाशकक मामिलामे त' ई कथन सत्यक बहुत नजदीक अछि। मुदा पाठकक मामिलामे ठीक नहि अछि। एहिमे स्थिति बदलल अछि। पाठकक विकास भेल अछि। आ से केवल संख्यात्मके नहि गुणात्मको। मुदा एकटा दारुण स्थिति ई उभरि क' आयल अछि जे एक लेखक दोसर लेखकक पोथी नहि पढ़ैत छथि। ओहनो लेखकक पोथी नहि पढ़ैत छथि जे प्रकटतः हुनकर समानधर्मा छथिन अथवा समकालीन छथि। चारि-पाँच वर्ष पूर्व जखन कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास ई तथ्य कोनो 'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रममे रखने रहथि त' हम सहमत नहि भेल रही। मुदा आइ शिवशंकरसँ सहमत छी। मैथिली लेखकमे आत्ममुग्धताक स्थिति वर्त्तमान समाज आ साहित्यक बीच विरोधाभासक एक उल्लेखनीय तथ्य अछि। एकर कारणो विद्यमान अछि। पहिल थिक पाठकक कोनो दबाब नहि होयब। दोसर आलोचनाक अपंगता। पाठक धरि पहुँचबाक लेल पोथी प्रकाशन और वितरणक संग आलोचनाक निकती परसँ गुजरैत अछि। पाठकक रुचि परिष्कृत करबामे, पाठकक प्रशिक्षणमे सेहो आलोचनाक महत्वपूर्ण योगदान होइत अछि। आलोचना पोथीक चयनमे साधक वा बाधक बनैत अछि। मुदा मैथिलीक संदर्भमे ई निकती नहि धर्मकाँटा बनल अछि। रहरहां रचनाकारे के तराजू पर चढ़ा दैये। एहिसँ पोथीक सत्ता अर्थात् वस्तुक गुण-अवगुण कोना बूझल-गमल जा सकैये? ई ठीक अछि जे पोथी कोनो लक्स साबुन वा पेप्सोडेंट टुथपेस्ट नहि थिक। ओहि पर रचनाकारक व्यक्तित्वक छाप होइत अछि। मुदा बाजारमे गेला पर ओ अपन कृतिकारसँ फराक भ' जाइत अछि। पाठकसँ ओकर वस्तुगत संबंध भ' जाइत छैक। सैह कारण थिक जे आइ-काल्हि कृतिसँ पाठकक संबंध के विशेष महत्व देल जा रहल छैक।

ओना कृतिसँ पाठकक संबंधक एक फराक आयाम सेहो अछि। कोनो रचना रचनाकारक मात्र चेतनाक उपज नहि होइत अछि ओ चेतना उत्पन्न सेहो करैत अछि। तात्पर्य जे रचना अपन पाठक स्वयं बनबैत अछि। मैथिलीमे ई हरिमोहन झाक कृतिक संग भेल। तहिना चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' अथवा मणिपद्मक कृतिसँ भेल। लिली रे, प्रभास, जीवकान्त आ राजमोहन झा अपन कृतिसँ पाठक बनौलनि। ललित, राजकमल, सोमदेव पाठकक एक वर्ग तैयार केलनि त' मायानंद पाठकक दोसर वर्ग बनौलनि। मुदा कृति संग पाठकक होइत विकासक बावजूद मैथिलीक बजार नहि बनि सकल। एकर जड़ि कोनो सुव्यवस्थित वितरण-प्रणालीक अभावमे निहित रहल। बजार के सुदृढ़ अथवा विस्तारित करबाक लेल व्यावसायिक प्रकाशक, वितरक नहि आबि सकला। एहि प्रकारेँ लेखक आ पाठकक बीच प्रकाशकक अनुपस्थिति बजारक निर्माण नहि हुअ' देलक। बजार नहि बनबाक सोझा-सोझी संबंध अर्थ-तंत्रसँ अछि। पूंजी निवेशक मानसिकतासँ अछि। जेँ लेखके सभ मुख्यतया प्रकाशक होइत रहला तेँ व्यवसाय रूपमे पूंजी निर्माणक दृष्टिएँ मैथिली पोथीक बजार नहि बनि सकल।

पूंजीक निर्माण नहि भेल त' लाभ कमेबाक लेल पूंजीक निवेश कोना होइतय?

एकटा भ्रम सेहो एहि बीच पसरल रहल जे मैथिली पत्रिका-पोथी नहि बिकाइत अछि। कदाचित एहि भ्रम के पसारबामे मैथिलीक लेखक आ संपादकक सेहो हाथ अछि। अपन अक्षमता अथवा व्यावसायिक अकुशलताकेँ नुकबाक लेल ओ एहि भ्रमक सहारा लेलनि। ओना लेखक अथवा सम्पादककेँ व्यावसायिक अकुशलता लेल दोषी नहि ठहराओल जा सकैत अछि। वस्तुतः व्यवसायिक प्रकाशकेक अनुपस्थिति एहि सभ भ्रमक कारण रहल अछि। भ्रम एहि कारणे जे विक्रीक लेल सुनियोजित-व्यावसायिक प्रयासे नहि कयल गेल अछि। आइ हिन्दीक राजकमल प्रकाशन मैथिली पोथीक चारि सेट (पाँच-पाँचटा) प्रकाशित कर' जा रहल अछि।* ओ किये हिन्दीक संग मैथिली दिस आकृष्ट भेल? पहिल कारण छल जे ओकरा ज्ञात भेलै जे दिल्लीसँ प्रकाशित पत्रिका 'अंतिका' क प्रसार संख्या लाभक दृष्टिसँ यथेष्ट छैक। दोसर हिन्दीक अन्तरंग आ बहिरंग सेहो ओकरा बाध्य केलक। आनो हिन्दी पत्रिका-पोथी प्रकाशककेँ बाध्य क' रहल अछि। तै एम्हर हिन्दी दुनियाक झुकाओ मैथिली संसार दिस भेल अछि। राजकमल प्रकाशनक मैथिली बाजारमे प्रवेशसँ आन प्रकाशकलोकनि सेहो आकृष्ट हेता से आशा कयल जा सकैत अछि।

एखन बजार कोनो बस्तुक हो कतहु आशंकित सेहो करैत अछि। एहि आशंका के प्रारम्भहिमे विचारि लेब आ सतर्क होयब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि। हिन्दीक व्यापारी मैथिलीक बजार बनौता, ओकरा विकसित करता कि हिन्दीक पोथीसँ ओकरा आर तोपि देता। कालान्तरमे सम्पूर्ण बजार अस्सी प्रतिशत हिन्दी आ बीस प्रतिशत मैथिलीक भ' जायत। एही उद्देश्यसँ तत्काल हिन्दी पोथी-पत्रिकाक प्रकाशक-सम्पादक सभ मैथिली पोथीक प्रकाशन दिस आकृष्ट भेला अछि। एहि सन्दर्भमे राजकमलक मैथिली प्रकाशन तथा 'पहल' पत्रिका द्वारा मैथिलीक साहित्यकार जीवकान्तक हाथें हिन्दीमे 'पहल' पुरस्कार दिआयब, एक्के बात थिक। दूनूक मूल उद्देश्य पिछड़ल मैथिलीक इलाका पर हिन्दीक वर्चस्व स्थापित करब थिक। ई जाहि कारणे भ' रहलए से जोरगरक वर्चस्ववादी नीतिये थिक, मुदा नब मुखौटा धारण कयने अछि। लगैये जेना अपन सय-दू सय पोथीक बदला हिन्दीक हजारक हजार पोथी के उघ' पड़त। बजारोमे मैथिली के हिन्दीक उपभाषा बनेबाक साजिश। मुदा पिछड़ल इलाकाक लोक की क' सकैये? ओ त' पेप्सीकोला लेल मल्टीनेशनल आ साहित्य लेल नेशनलक मुखापेक्षी बनले रहत।

मैथिलीक अपन बजार नहि छैक। बजारक निर्माण लेल मिथिलाक पूंजीपतिकेँ कोनो इच्छा-सदिच्छा नहि छनि। अनेक कारणसँ अपन वस्तुक उत्पादन ओकर बजार विकसित करबाक प्रति असमर्थ देखाइत छथि। एहनामे मैथिली साहित्यक उत्पादन

* मुघ एखन धरि एके सेट प्रकाशित केलक अछि।

बढ़ेबाक लेल मिथिलाक प्रकाशक द्वारा कोनो यत्न नहि भ' रहल अछि। एकर जड़ियो कमजोर आ टूटल-भांगल सामाजिक-आर्थिकतंत्रमे निहित अछि। एही कारण लेखक पर पाठकक कोनो दबाबो नहि अछि। तैं मार्केट भेल्यू के ध्यानमे राखि कोनो प्रकाशन नहि भ' रहल अछि। जखनि कि बजार के ध्यानमे राखि कोनो प्रकाशन आ वितरण व्यवस्था आइ सभसँ बेसी जरूरी भ' गेल अछि। तखने समाजक संग साहित्योक जुड़ाओ आ लगाओ बढ़त। आइ त' पाठक एक दिस नीक पोथी तकैत छथि आ लेखक अपना हिसाबें पोथी छपैत छथि। एहन बाजार नहि बनबाक प्रभाव ईहो भेल अछि जे मैथिलीमे लोकप्रिय साहित्य बहुत कम लिखल जा रहल अछि। साहित्यकारक बीच ईहो धारणा जड़ि जमा लेने अछि जे लोकप्रिय साहित्य घटिया साहित्य थिक। ओहिसँ रचनाकारक स्तरीयता, श्रेष्ठता घटि जाइत छैक। एहि धारणासँ वर्तमान समाजमे पाठकक बृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ि रहल अछि। ई सत्य थिक जे प्रबुद्ध पाठककेँ, जे अपन भाव आ विचारकेँ परिष्कृत आ पुष्ट करबाक लेल साहित्य पढ़ैत अछि, एहन साहित्य संतोष नहि द' पबैत अछि। मुदा अधिकांश लोक जे मनोरंजन लेल साहित्य पढ़ैत अछि ओ साहित्यसँ कटि रहल अछि। एहिठाम ई ध्यातब्य थिक जे लोकप्रिय साहित्ये ओ मार्ग थिक जाहिमे प्रवेश क' कोनो पाठक बहुधा गम्भीर आ वैचारिक साहित्य दिस जाइत अछि। यदि लोकप्रिय साहित्य नहि लिखायत त' गम्भीरो साहित्य सृजित नहि भ' सकत। ओहुनो मनोरंजन के साहित्यक खूबीसँ बिकछाओल नहि जा सकैये। संसारक श्रेष्ठ साहित्य मनोरंजक सेहो थिक। जें कि तत्काल मैथिली क्षेत्रमे लेखके ड्राइविंग सीट पर छथि तेँ लोकप्रिय साहित्यक निर्माण लेल सेहो हुनके प्रयास कर' पड़तनि। वर्तमान समाजक अभिरुचि साहित्यमे बढ़ेबाक लेल एहि तरहक प्रयास जरूरी अछि।

पाठकीय अभिरुचिक संबंधमे मैथिली साहित्यक संदर्भमे अध्ययन होयब आवश्यक अछि। एहि प्रश्नक तत्काल उत्तर ताकल जेबाक चाही जे कोनो विशेष कालमे विभिन्न वर्ग ओ समुदायक बीच कोन साहित्य लोकप्रिय छल आ ओकर लोकप्रियताक की कारण रहय। कहल गेल अछि जे प्रत्येक समाजमे हरेक समय एक एहन समुदाय होइत अछि जे मुख्य रूपसँ संस्कृतिक संवाहक मानल जाइत अछि। वैह साहित्यिक रूचिक रक्षक आ निर्माता सेहो होइये। एहि प्रकारें साहित्यक मूल्य, प्रतिमान आ पाठकीय अभिरूचिक प्रश्नकेँ सामाजिक संरचनासँ जोड़ि क' देखबाक प्रयास होइत रहल अछि। एहि दिशामे मैथिली साहित्य आ समाजक संदर्भमे अध्ययन मनन अपेक्षित अछि।

जेना ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सन्दर्भमे मिथिलाक संग भेल दुर्घटनाक संकेत ऊपरमे कयल अछि तहिना मैथिली समाजमे पण्डित वर्गक द्वारा साहित्य के हेय दृष्टिसँ देखबाक परम्परा सेहो भेटैत अछि। दिमाग के बेसी महत्व देबाक कारणें न्याय, मीमांसा, दर्शनक समक्ष हृदय प्रदेशक साहित्य के आनन्दक दृष्टिएँ दोयम दर्जाक चीज मानल

गेल। ई तथ्य देवभाषा संस्कृतक संदर्भमे अछि। स्वाभाविक रूपसँ धर्मक आधार पर व्यक्तिक मुक्ति-प्रसंग एहिसँ जोड़ल अछि। मुदा समाजक भाषा, समाजक मुक्ति-प्रसंगक संग मैथिलीक संदर्भमे त' ओहि मानसिकताक प्रभाव आर गंभीर रूपें पड़ल। अर्थक आधार पर सामाजिक-मुक्ति प्रसंग त' दिमागमे रहबे नहि करय। कने-कने रहबो करय त' अछोप जकाँ छल। संगहि मैथिलि के त' साहित्यक भाषाक रूपमे स्वीकृति हालक घटना थिक। पूर्वमे त' मैथिली के भाषे मानबामे पण्डितलोकनिकेँ असोकर्य छलनि। तेँ साहित्यमे ओकर प्रयोग खाली गीतक रूपमे भेल। सेहो साहित्यिक पोथीमे खोंसल-अबडेरल। ई तथ्य अछि जे संस्कृतक विद्वान लोकनि मैथिली साहित्यक विकासमे अपन योगदान देलनि मुदा संस्कृतक संग मैथिली घरक खबासिनी बनल रहल। यैह मानसिकता ओकर बाद प्रभुवर्गक अंग्रेजी आ हिन्दी विद्वानक सन्दर्भमे एखनो चलि रहल अछि। जहिना राजनेतालोकनि मैथिली के हथउठाइमे किछु क' लाभ-लोभ दैत रहला तहिना विद्वानलोकनि सेहो वामा हाथें मैथिलियोमे किछु क' लीखि दैत रहला। ई मानसिकता आ एकर प्रभाव वर्त्तमानो समाजमे नहि बदलल अछि। एकर मूलमे मैथिली साहित्यक भौतिक सत्ता अछि। आइ जँ मैथिलीमे लिखलासँ यथेष्ठ पाइ भेट' लागय त' मैथिलीकेँ सभ भरि पाँजकेँ पकड़ता। एही बातक दोसर आयाम ईहो अछि जे मैथिलीक लेखक पार्ट टाइम लेखन करैत अछि। जीविकाक लेल आन काज करैत लेखनो क' लैत अछि। साहित्य लीखि जीविका अर्जित करब वर्त्तमान समाजमे असम्भव रहलए। हिन्दियोमे ई कमे गोटा लेल सम्भव भेल अछि। मुदा मलयालम, बंगाली, मराठीमे ई सम्भव अछि।

एहि प्रकारें ई कहल जा सकैत अछि जे वर्त्तमान समाज आ मैथिली साहित्यक संबंध समाजक आर्थिक सांस्कृतिक विकास पर टिकल अछि। आर्थिक विकासेक संग सांस्कृतिक विकास सेहो जुड़ल अछि। जाहि समाजक आर्थिक-सामाजिक संरचना मजबूत छैक, जत' शिक्षा छैक, ओत' साहित्य सेहो विकसित अछि। एक दोसराक बीच संबंध बढ़ि रहल छैक। मुदा जत' आर्थिक-सामाजिक पिछड़ापन अछि ओत' जन-भाषाक साहित्यक स्थिति नीक नहि अछि। आइ जखन मिथिलाक लोक आनठामसँ पठाओल मनिऑर्डर पर जीबि रहल अछि त' आन भाषाक साहित्यसँ ओ अपन मनोरंजन करबे करत। पिछड़ल इलाकाक ई नियति थिकैक। जोरगरक वर्चस्व ओ सहजें स्वीकार क' लैत अछि। मुदा एहि वर्चस्वक अस्वीकार लेल मिथिलाक आत्म निर्भरताक संग मैथिली साहित्यक जनोन्मुखी होयब सेहो जरूरी अछि।

वर्तमान समाज आ साहित्य, चेतना समिति, 2003

की अहाँ परिश्रमी लोकक पक्षमे छी?

देशक संस्कृति पर भूमण्डलीकरणक प्रभावके जाहि रूप सभमे देखल जा रहल अछि ओहिमे पुनरुत्थानवादी मानसिकताक प्रसार, सामाजिक परिवर्त्तनक चुनौतीके नकारबाक प्रयास, उपभोक्ता-संस्कृतिक व्यापकता, पितृसत्ताक सुदृढ़ता, नारी-सौन्दर्यक संस्थागत व्यवहार, सौन्दर्यबोधकेँ नष्ट करबाक प्रयास, सादा जीवन, उच्च विचारक संस्कृतिकेँ उलटबाक चेष्टा, भाषाक रूपमे अंग्रेजीक बढ़ैत प्रभाव, समाजबन्धक टूटब आ आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्वक निर्माण आदि उल्लेखनीय मानल जा सकैत अछि। ई प्रभाव अत्यन्त गम्भीर कहल जा सकैये। गम्भीरताक कारण अछि जे आइ लड़ाइ सांस्कृतिक मोर्चा पर बेसी लड़ल जा रहल अछि। लड़ाइकेँ सांस्कृतिक मोर्चा पर ल' जेबाक मात्र एकेटा उद्देश्य अछि—मनुक्खकेँ सांस्कृतिक चेतनासँ शून्य क' देनाइ। अपन सामूहिक-स्मृति, परम्परा-इतिहाससँ विछिन्न क' देनाइ ताकि ओकरा बजारमे हाँकल जा सकय। ओकर सोचबा-विचारबाक शक्तिके समाप्त क' देनाइ जाहिसँ ओ मात्र एक उपभोक्तामे बदलि सकय। विज्ञापनक मायाजालमे ओझरा क' मनुक्खक जेबी काटल जा सकय। वर्त्तमान तथा यथार्थकेँ देखबाक शक्ति नष्ट कयल जा सकय। मनुक्खकेँ भावनासँ संचालित क' शोषित कयल जा सकय। जे विवेकक आवाज नहि सुनय। जकर देहक भूख सदिखन जागल रहय। नांगट बुभुक्षा बनल रहय। जे धर्मक नाम पर मारा-मारी करबाक लेल तैयार रहय। आर अन्ततः जकर ओटमे पूंजीवादी हितक निर्ल्लज साधन कयल जा सकय।

भूमण्डलीकरण वस्तुतः बजारीकरण थिक। विश्वग्रामक परिकल्पना असलमे विश्वबजारक मोहक मुखौटा थिक। अभिजात वर्ग एहि मुखौटा पर लोभा गेल छथि। ओ एहि दुष्चक्रमे प्रवेश क' चुकल छथि। जकर परिणति नव उपनिवेशवादमे होयत। एहि नव उपनिवेशवादक मानसिकता आर नवसामंती (रूढ़िवादी) अकिलक गठजोड़ वर्त्तमान भारतक सभसँ पैघ संकट अछि। उग्र राष्ट्रवादी राजनीतिक विस्तारमे पुनरुत्थानवादी विचारधाराक भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। पुनरुत्थानवादी मानसिकताक प्रसारमे इलेक्ट्रानिक मीडिया आ ओकर सांस्कृतिक कार्यक्रमक भूमिका सेहो कम नहि अछि।

पुनरुत्थान यदि उग्र राष्ट्रवादक मुख्य वैचारिक सांस्कृतिक यंत्र थिक त' इलेक्ट्रानिक्स ओकर सभसँ कारगर माध्यम। ई अस्त्र-शस्त्रक होड़ लेल बहुत उपयुक्त अछि। एहिसँ अस्त्र-शस्त्रक बजार सुदृढ़ होइत अछि। जे शांति लेल खतरनाक थिक। समाजक आर्थिक-सांस्कृतिक विकास लेल शांति कतेक जरूरी अछि से बूझब कठिन नहि अछि।

पुनरुत्थानवादी मानसिकताक देशक सांस्कृतिक इतिहासमे बेर-बेर तहिया-तहिया विस्फोट भेल अछि जहिया-जहिया देशक समाज बाह्य आ आन्तरिक संकटसँ ग्रस्त भेल अछि। जखन एक दिस स्थापित व्यवस्था आ दोसर दिस नव सामाजिक आग्रह और प्रेरणाक बीच टकराहटि भेल अछि। कतेको बेर एहि टकराहटिमे नव जागरण आ सामाजिक आधार व्यवस्थामे संशोधन अथवा परिवर्तनक विचारधारा, कार्यक्रमक बदला प्रतिगमन आ पुनरुत्थानक मानसिकताक जन्म भेल अछि। जकर द्वारा सामाजिक परिवर्तनक चुनौतीके नकारबाक कोशिश कयल गेल अछि। आइयो सैह कयल जा रहल अछि।

ओना संसारकेँ बजारमे बदलबाक तथा लोककेँ उपभोक्ता बनेबाक अभियान पहिनेसँ चलैत रहल अछि। मुदा एहिमे एम्हर व्यापकता आयल अछि। उपभोक्ता संस्कृतिक व्यापक प्रभावकेँ एहीसँ अनुभव कयल जा सकैत अछि जे साम्यवादी सोवियत संघक पतनमे एकर मुख्य हाथ रहल अछि। सोवियत संघक पतनक उपरान्त एहि अभियानकेँ आर बल भेटल अछि। पहिने आन पश्चिमी देशक गप्प होइत रहैत छल। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदिक विचार चर्चा लेल विवश करैत छल। मुदा आब त' खाली अमेरिका अछि। भूमण्डलीकरणक शंकराचार्य अमेरिके थिक। भूमण्डलीकरणक सांस्कृतिक परिणाममे अमेरिकी स्वच्छन्दता आ धार्मिक कट्टरता एक संग देखाइ द' रहल अछि। देश लेल उत्तरदायित्वहीन आ निरंकुश व्यक्तिवाद आ वंशवाद दूनू अपसंस्कृतिक पर्याय थिक। एहिसँ समाजमे पितृसत्ताकेँ आर अधिक मजबूती भेटि रहल छैक।

भूमण्डलीकरण नारीक पारम्परिक अधीनस्थ छविके कायम रखैत ओकर सुन्दरताक संस्थागत उपभोग के बढ़ा रहल अछि। ओकरा वैश्विक आयाम प्रदान क' रहल अछि। जेँ कि नारी परम्परागत रूपसँ कमजोर अछि तें भूमण्डलीकरणक संकट सभसँ बेसी ओकरे उठाब' पड़ि रहल छैक।

संस्कृतिक अन्तर्गत आत्ममर्यादा और सौन्दर्यबोध लेल जीवनमे श्रम-परिश्रमक आवश्यकता अछि। जे सम्पत्ति परिश्रमसँ अर्जित नहि कयल जाइत अछि, जकर संरक्षण लेल मनुक्खक रक्त घाममे नहि बदलैत अछि, ओ केवल कुत्सित रुचिकेँ प्रश्रय दैत अछि। वास्तविक सौन्दर्य ओत' अछि जत' चोटीक घाम एड़ी धरि बहैत अछि तथा नित्य समस्त विकारकेँ धोइत रहैत अछि। स्वाभाविक रूपसँ संस्कृति परिश्रमी लोकक लेल थिक। आलसी आ आरामतलब लोकक हिस्सामे त' विकृतिए अबैत अछि। भूमण्डलीकरणक अन्तर्गत विलासिताक प्रचार कयल जा रहल अछि। विलासितामे केवल भूख रहैत अछि। विलासिता आ कलात्मक विलासिता एक वस्तु नहि थिक।

नांगट भूख पर कलात्मक विलासिता संयम चाहैत अछि। शालीनता चाहैत अछि। विवेक चाहैत अछि। ओकरा लेल ऐश्वर्य चाही, समृद्धि चाही, त्याग आ भोगक सामर्थ चाही। सभसँ बढ़ि क' एहन पौरुष चाही जे सौन्दर्य आ सुकुमारताक रक्षा क' सकय। जीवनक कोनो क्षेत्रमे असुन्दरकेँ बर्दास्त नहि करय।

मुदा उपभोक्तावाद लोककेँ परिश्रमसँ विमुख क' रहल अछि। आब मजदूरो मालिक सन जिन्दगी चाहैत अछि। शानसँ रहब ओकरो जीवनक अंग बनि रहल अछि। समानताक बात आब विलासिता, शान-शौकत, आडम्बरक सन्दर्भमे भ' रहल अछि। आब वस्तुक महत्ता सेहो समाप्त भ' रहल अछि। आब त' ब्राण्डक महत्ता अछि। यदि अहाँ लग फल्लां कम्पनीक सोफासेट, कुर्सी नहि अछि त' अहाँ पछुआयल लोक छी। यदि अहाँ पेप्सीकोलाक बदला 'रिमझिम' पसिन्न करैत छी त' प्राचीनताक पोषक छी। आइ कोनो समान पर बहुराष्ट्रीय कम्पनीक ठप्पा अनिवार्य भेल जा रहल अछि। ई बहुराष्ट्रीय कम्पनी सेहो पहिलुका कम्पनीसँ भिन्न भ' गेल अछि। एकरा मजदूर सँ, उत्पादनसँ कोनो सरोकार नहि रहि गेल अछि। बहुराष्ट्रीय कम्पनी लेल अनेक छोट-छोट कम्पनी अपन मजदूर, मशीन द्वारा समान बनबैत अछि। ओ केवल ओहि समान पर अपन 'ब्राण्ड' क नाम साटैत अछि। केवल ओकर पणन करैत अछि। एहि प्रकारें भूमण्डलीकरणक प्रक्रियामे बहुराष्ट्रीय कम्पनी 'बिग बौस' भ' गेल अछि। ओकरा मजदूर सभ सँ, उत्पादन सम्बन्धी प्रबन्धनसँ कोनो सरोकार नहि रहि गेलैक अछि। एहि कम्पनी सभमे शारीरिक परिश्रमक आवश्यकता घटल जा रहल छैक। घाम आब नहि निकलैत छैक। एहि कम्पनीक समानक बिक्री लेल अमेरिकी स्वच्छन्दता बहुत जरूरी अछि। जत' 'उपयोग करू आ फेकू' सैह धर्म थिक। सैह संस्कृति अछि। एकर प्रसार सम्पूर्ण विश्वमे कयल जा रहल अछि। मनुक्खसँ वस्तुक कोनो लगाओ नहि। कोनो मनुक्खता नहि। उपयोग करू आ फेकू।

अपन देशक संस्कृतिमे सादा जीवन आ उच्च विचारक महत्ता रहल अछि। ई एक जीवन शैली थिक। एहि जीवन शैलीकेँ खतम करबामे भूमण्डलीकरण अपन योगदान द' रहल अछि। जाहिमे नेता, अफसर, व्यापारी सभ ओकर संग द' रहल अछि। जीवनक सादगी त' कतहु देखाइ नहि दैत अछि। यदि कतहु देखाइतो अछि त' ओ व्यापारी मानसिकतासँ दूरक मनुक्ख थिक। भूमण्डलीकरण ओकरा स्पर्श नहि केलक अछि। भूमण्डलीकरणक त' आब ई हाल अछि जे हमर राजनेता जे समाजकेँ दिशा देबाक लेल उत्तरदायी होइत छथि, अपन जनसंपर्क, अपन भाषण, अपन गेट-अप टी.भी कैमराकेँ ध्यानमे राखि क' करैत छथि। टी.भी. सिनेमाक त' ई प्रभाव अछि जे चुनावमे फिल्म अभिनेता द्वारा प्रचारक नव अध्याय शुरू भेल अछि। जखन कि एहि देशमे करोड़ो एहन लोक छथि जे टी.भी. सिनेमाक पहुँचसँ बाहर छथि। जिनका रोटी-कपड़ा-मकान नहि उपलब्ध छनि। जिनकर गरीबी निरन्तर बढ़ि रहल अछि। एम्हर रोजगारक अवसर कम भ' रहल अछि।

भूमण्डलीकरण गरीब आ कमजोरसँ ओकर भाषा छीनि लेलक अछि। मातृभाषाक सम्बन्धमे आइ कियो नहि सोचैत अछि। आइ त' राष्ट्रभाषा सेहो संकटमे पड़ि गेल अछि। भूमण्डलीकरणक भाषा अंग्रेजी थिक। जे जबर्दस्ती सभ पर लादल जा रहल अछि। ई हमरालोकनिकेँ अपन धरोहरि, संस्कृतिसँ विच्छिन्न करैत अछि। हमरा भीतर हीनभाव भरैत अछि। जे एहि व्यापारी सभक लेल उपयोगी अछि।

भूमण्डलीकरणक एक सभसँ पैघ विडंबना अछि जे आइ समाजबन्ध टूटि रहल अछि। हमरालोकनि निरन्तर आत्मकेंद्रित भ' रहल छी। हमरा भीतरमे उदारता समाप्त भ' रहल अछि। कहियो वसुधैव कुटुम्बकमूक मंत्र जपनिहार लोक आइ घरमे बन्दी बनि गेल अछि। अपनासँ बाहर देखिते नहि अछि।

संस्कृति पर भूमण्डलीकरणक पड़ैत प्रभावक बात करैत काल ई तथ्य मोन रखबाक थिक जे सभ गड़बड़ीक जड़ि भूमण्डलीकरण नहि थिक। भूमण्डलीकरणेक कारण ई स्थिति उत्पन्न नहि भेल अछि। निश्चित रूपसँ ऐहि लेल स्वयं हमरालोकनि सेहो जिम्मेदार छी। एकर जड़ि हमर इतिहास आ संस्कृतिमे सेहो अछि। हमर समाज-व्यवस्थामे अछि। समाजमे उपयोगिता और सुन्दरता, श्रम और अवकाश, श्रमिक और सम्पत्तिशाली वर्गमे विभाजन तीव्र होइत गेल अछि। एकर मूलमे भारतीय सांस्कृतिक धरोहरिमे निहित ओहि मूल्य सभक अज्ञानता अछि जे परिवर्तन लेल प्रेरणा, ऊर्जा और शक्तिक स्रोत बनि सकैत अछि। सभसँ पैघ अज्ञान भारतक ओहि लघु परम्परा सभक अज्ञान अछि जे वृहत्तर वर्गक स्तर पर निरन्तरता और परिवर्त्तनमे सामंजस्य उत्पन्न करैत रहल अछि।

ई सत्य थिक जे लोक व्यापक स्तर पर एखन धरि भूमण्डलीकरणक और उदारीकरणक विकल्प नहि ताकि सकल अछि। ओना एकर विरुद्ध प्रतिरोध प्रारम्भ भ' गेल आछि।

भूमण्डलीकरणक अन्तर्विरोध जाहि गतिये बढ़ि रहल अछि से आशाक संकेत थिक। कुहेस छटब अनिवार्य अछि। भूमण्डलीकरणक ई दहाड़ैत शेर-बहुराष्ट्रीय कम्पनी काल्हि माटिक शेर साबित भ' सकैत अछि। जाहि प्रणालीसँ आइ ई अपन विकास क' रहल अछि से एकर विनाश सेहो करत। एकर जड़ि-विहीन अट्टालिका ढहि जायत।

व्यापक स्तर पर नहि मुदा बहुराष्ट्रीय कम्पनीक विकल्पक रूपमे अपन 'अमूल' डेयरी कोआपरेटिव तथा बंगला देशक बुनकर सभक कोआपरेटिव उभरि क' समक्ष आबि रहल अछि। ई कोआपरेटिव सभ ओकरासँ आर्थिक आ सांस्कृतिक दूनू मोर्चा पर टक्कर ल' रहल अछि। एहि कोआपरेटिव सभक जड़ि आम परिश्रमी उत्पादकमे जमल अछि।

विकल्पक एहि रस्ता पर दृष्टि रखैत देशमे भूमण्डलीकरणक संग सांस्कृतिक मोर्चा पर लड़ल जा रहल युद्धकेँ आर्थिक मोर्चा दिस मोड़ब जरूरी थिक। जेँ कि सरकारी उद्यम तत्काल लड़बाक स्थितिमे नहि बुझाइत अछि तेँ लोककेँ खास क'

आम परिश्रमी उत्पादककेँ एक जुट भ' अपन आर्थिक-सांस्कृतिक समाधान अपनहि कर' पड़त। मुदा एहि लेल कूरियन* सन अनेक लोकक सेहो आवश्यकता अछि। जे अपन शिक्षण आ उत्प्रेरणसँ लोककेँ संगठित क' सहकारी उद्यम ठाढ़ क' सकय। एहि क्रम मे—सामाजिक परिवर्त्तनकेँ गति देब, उपेक्षितक जागरणके समाजक पुनर्निमाण दिस मोड़ब, संवेदनहीनताक स्थान पर संवेदनशीलता जगायब, आलोचनात्मक चेतनाक संग बहुआयामी सक्रियता बढ़ायब, सृजनात्मक वातावरणक निर्माण करब आ सांस्कृतिक परिचितिक भावनाकेँ बना क' राखब सेहो आवश्यक अछि। एहि देशक उपभोक्तामे सांस्कृतिक परिचितिक भावना एखनो मजबूत छैक। संगहि प्रेम, सौन्दर्य, नैतिकता, सादगी, त्याग आ उच्चतर जीवनसँ बनल राष्ट्रीय अवधारणा एखनो मरल नहि अछि। जँ ई सभ समाजमे जड़ि जमौने रहल त' बहुराष्ट्रीय कंपनी सभ भूमण्डलीकरणक फायदा नहि उठा सकत। खुजल बजार व्यवस्था मुँह खोलने रहि जायत आ लोक नहि जायत ओकरा भीतर।

परन्तु आर्थिक आ सांस्कृतिक मोर्चा पर लड़त के? आ लड़त त' कोन मानसिकताक संग? आइ त' कूरियनोसँ बेसी दृढ़ संकल्पवान आ वैचारिक दृष्टिसंपन्न नेतृत्वक आवश्यकता भ' गेल अछि। देशक क्षेत्रीय असमानता आ भूमण्डलीकरणक बढ़ैत समर्थनक संग सहकारिताक समाजमूलक अन्तर्विरोध एहन नेतृत्वक अनिवार्यताकेँ बढ़ा देलक अछि। तेँ आइ फेर एक बेर ई प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण भ' गेल अछि जे की अहाँ संस्कृतिक रचना केनिहार आम परिश्रमी लोकक संग छी? जीवनक नवरूपक निर्माण करबाक पक्षमे छी? अथवा अहाँ आम परिश्रमी लोकक विरुद्ध छी? की अहाँ उत्तरदायित्वहीन लुटेराक प्रजातिके बचा क' रखबाक पक्षमे छी? तत्काल त' अहाँसँ फेर यैह प्रश्न सभ उत्तरक अपेक्षा क' रहल अछि।

भारती मंडन, अगस्त 2002

* अमूल डेयरी कोआपरेटिवक संस्थापक

विद्यापति आ मैथिल आँखि

चेतना समितिक सचिव विजयनाथ ठाकुर कहलनि जे गोपालजी झा 'गोपेश'क प्रस्ताव पर समितिक कार्यकारिणी ई निर्णय लेलक अछि जे स्मारिकामे सभ वर्ष विद्यापति पर कमसँ कम एकटा आलेख अवश्य रहबाक चाही। हमरा लागल कार्यकारिणीक ई निर्णय प्रायः पछिला सालक स्मारिकाक विषय देखिक' लेल गेल अछि। पछिला सालक स्मारिकाकेँ मिथिलाक अर्थ-व्यवस्था पर केन्द्रित कयल गेल छल। किछु लोककेँ लगलनि जे कत' विद्यापति आ कत' मिथिलाक अर्थ-व्यवस्था। मुदा जे लोक साहित्यकेँ ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे देखैत छथि से साहित्य ओ कला सृजनक लेल अर्थ-व्यवस्थाक सम्यक् ज्ञानकेँ आवश्यक मानैत रहल छथि। ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे साहित्य के देखब आ साहित्यक माध्यमसँ इतिहास ओ समाजकेँ जानब ई एकटा दृष्टिकोण थिक। आँखिक बात थिक। तेँ एहि सभक मूलमे आँखि अछि।

विद्यापतिकालीन मिथिला पर ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक अध्ययन भेल अछि। विद्यापतिक रचनाक प्रसंग ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टि संग सेहो लेखन उपलब्ध होइये। मुदा से ने त' पर्याप्त अछि आ ने समेकित, श्रृंखलाबद्ध। सर्वोपरि रूपसँ जाहि आँखिये ई सभ अध्ययन-अनुशीलन भेल अछि से अधिकांश मैथिल आँखि नहि थिक। फेर एहिठाम किछु लोककेँ आँखि आ तै पर मैथिल आँखि अजगुत-अनभुआर लगतनि। किछु अँखिगर विद्वानकेँ मैथिल आँखि, आँखि के संकुचित करब सेहो लागि सकैत छनि। एही संग किछु विद्वान-साहित्यकार विद्यापतिक प्रसंग अध्ययन- अनुशीलनक आवश्यकताकेँ सेहो नकारि सकैत छथि। आब एकर कोन प्रयोजन? एतेक अध्ययन त' भेले अछि। कतेको शोध-प्रबन्ध लिखल गेल। मुदा जे किछु विद्वान समकालीन मैथिली साहित्यकेँ ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे बुझबाक गुनबाक लेल विद्यापति वा कहू जे हुनक समकालीन ओ पूर्ववर्त्ती साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन ओही दृष्टियेँ करब जरूरी मानैत रहल छथि से एहि सभ विचारकेँ ठामहिं खारिज नहि करता। हुनको मुदा ई मैथिल आँखिक गप्प कने अखरतनि अवश्य। एकर कारणो विद्यमान अछि।

हम सभ जनैत छी जे विद्यापतिक अध्ययन ओ अनुशीलनमे पाश्चात्यक अतिरिक्त बंगाली ओ हिन्दीक विद्वानलोकनिक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। बंगाली विद्वानलोकनि जँ विद्यापतिकेँ ताकि संसारक समक्ष नहि अनितथि त' हम सभ हुनक अवदानसँ कदाचित बंचिते रहितहुँ। ई एक कठोर सत्य भ' सकैत अछि मुदा सत्य त' सत्य होइत अछि। एहि लेल हमरालोकनिकेँ बंगाली विद्वान लोकनिक कृतज्ञ हेबाक चाही। मुदा पाश्चात्य, बंगाली ओ हिन्दीक विद्वान लोकनि विद्यापतिक अध्ययन-अनुशीलन अपना आँखिये, अपन आवश्यकता ओ हितक अनुकूले केलनि। हमरालोकनि जेँ कि बहुत बादमे जा क' जगलहुँ तें ओहि अध्ययन-अनुशीलन ओ आँखिक प्रभाव स्वाभाविक रूपसँ बहुत दिन धरि पड़ल रहल। एखनो समाप्त भ' गेल अछि से नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा जखन अपना दिस, अपन साहित्य-समाज दिस ताक' लगलहुँ त' ई तथ्य सभ अखर' लागल। मिथिलाक ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे कने अनसोहांत सन लाग' लागल। अनेक भ्रमक सृष्टि सेहो एहिसँ भेल। जे समाज-संस्कृतिकेँ चिन्हबामे असोकर्य केलक। खास क' कय मैथिली साहित्य, मैथिली काव्य-धारा ओ मैथिली समाजक सन्दर्भमे ई तथ्य सभ विद्यापति सम्बन्धी बोधकेँ फरीछ करबामे सहायक नहि भेल। जखन कि एकर प्रयोजन ओ ऐतिहासिक अनिवार्यता उपस्थित भ' गेल छल। एहीठाम काञ्चीनाथ झा 'किरणक विद्यापतिकेँ चिन्हबाक मैथिल आँखि पर नजरि टिकल। वस्तुतः ई सभ विचार-मंथन आलोचक मोहन भारद्वाजक विद्यापति-प्रसंग नामक पोथी लिखबाक क्रममे हुनका संग चर्चा सभमे भेल। एहि विमर्शमे समान सोचक बहुत लोक भाग लेलनि।

काञ्चीनाथ झा 'किरण' पहिल विद्वान रहथि जे विद्यापतिकेँ चिन्हबाक लेल मैथिल आँखिक आवश्यकताक अनुभव केलनि। ई मैथिल आँखि की थिक? की भ' सकैत अछि? एकर सिद्धान्त पक्ष पर किरणजी विचार केलनि। कहलनि जे कोनो कविक कृतिक विवेचनक लेल तत्कालीन इतिहास प्र ध्यान राखब आवश्यक छैक। व्यवहारमे ओ विद्यापतिक संबंधमे जे निबंध सभ लिखलनि ताहिमे मैथिल आँखि छल। आ से आँखि मिथिलाक ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे छल। मिथिलाक एक स्वतंत्र, सार्वभौम सत्ताक दृष्टिमे छल। मुदा से मिथिला, भारतसँ आ भारतक राजनीतिक, सामाजिक मानससँ फराक नहि छल। वस्तुतः विद्यापतिकेँ देखबाक मैथिल आँखि विद्यापतिकेँ मिथिलाक पौतीमे बन्द करब नहि थिक। भारतीय चिन्तन, इतिहास, समाज-संस्कृतिमे मिथिलाक अपन निजत्वक संग योगदान थिक। जकर परंपरा विद्यापतिक पूर्वहिँसँ मिथिलामे विद्यमान रहल अछि। विद्यापति कोनो अनायास नहि टपकि गेल छला। हुनका भीतर ओ चिन्तन आ विचार मरउसी छल जेकरा ओ अपन साहित्यमे तत्कालीन आवश्यकता के देखैत परिवर्त्तित रूपमे प्रस्तुत केलनि। समकालीन आवश्यकता आ प्रयोजनसँ अपन परंपरामे परिवर्त्तन अनबाक दृष्टि विद्यापतिक छलनि। मुदा से केवल मिथिलाकेँ दृष्टिमे राखि नहि अपितु संपूर्ण भारतकेँ, कि संपूर्ण मानव समाजकेँ

दृष्टिमे राखि। विद्यापति साहित्यक अध्ययन-अनुशीलनसँ ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि। वास्तवमे ई दृष्टियो विद्यापति-साहित्यक अध्ययन-अनुशीलनेसँ मुखर भेल अछि। विद्यापतिकेँ केवल मिथिले नहि अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य सेहो स्पष्ट छलनि। मुदा आधुनिक समयमे हमरालोकनि हुनका कहैत त' रहलहुँ विश्व कवि लेकिन मिथिलाक संपुटमे बंद रखबाक कोशिश सेहो करैत रहलहुँ। एकरो कारण छल। अपन वस्तु जे आन ताकि क' हमरासभकेँ देने छल, तकरा देखि चकविदोर लागि गेल। गौरवे आन्हर भ' गेलहुँ। गौरवकेँ जुगता क' संपुटमे बंद क' लेलहुँ। खाली धुजा फहरबैत रहलहुँ। देखू हमर संपुटमे की अछि? मुदा आब एतेक निर्बल नहि छी जे कियो एहि माणिककेँ चोरा लेत। अपन बना लेत। तँ अपन आँखिये देखैत खखसि क' कहि सकैत छी जे मिथिला भारतसँ फराक नहि अछि। विद्यापति मैथिलीक भारतीय कवि छथि। भारतीय मानसक निर्माणमे आनक संग मिथिलोक अपन योगदान छैक। आ से विद्यापति वा हुनक पूर्ववर्त्ती कालहिसँ विद्यमान रहल अछि।

चेतना समिति स्मारिका, 2002

किरणजी आ मैथिली

ई एकटा तथ्य थिक जे एखनो कतेक लोक किरणजीपर तमसायल छथि। एखनो चेतना समिति जखन विद्यापति पर्वकेँ यात्रीक नाम समर्पित करैत अछि तँ कोनो नामी साहित्यकार समारोहमे नङटे नाच' लगैत छथि। मुँहसँ लाबा-फरबी सन गारि निकल' लगैत छनि। किरणजीपर तमसेबाक अथवा यात्रीजीकेँ गारि पढ़वाक तथ्य की कहैत अछि। की एहन लोककेँ हुनका संग दियादी झगड़ा छनि? जमीन-जाल आ सम्पत्तिक कोनो विवाद छनि? एकर की कोनो व्यक्तिगत कारण अछि? वस्तुतः बात एतेक साधारण ओ सहज नहि अछि। बात गहींर अछि।

देखबाक चाही जे के लोक, केहेन लोक किरण वा यात्रीपर बिगड़ल छथि। ध्यान देलापर लगैये जे एहन लोक साधारण, सामान्य लोक नहि छथि। समाजमे प्रतिष्ठित, जाति-कुल-अभिमानी, नामी विद्वान ओ कहबैका साहित्यकार सभ छथि। ई लोकनि मैथिलीक मंच सभपर संस्थान महन्थान सभमे बहुतो दिनसँ पुजाइत रहला अछि। मुदा आब जिनकर हाथसँ शक्ति ओ सत्ता खसकि रहल छनि। ओ लोकनि कमजोर भ' रहल छथि। अपन निर्बलता नुकेबाक लेल जखन-तखन यात्री-किरणपर गुम्हरि उठैत छथि। हुनका छोट बनेबाक चेष्टा करैत छथि। ओना एहन चेष्टा कोनो आइये नहि प्रारम्भ भेल अछि। पहिनो होइत रहल अछि। बहुत दिनसँ चलैत आबि रहल अछि। इतिहास एकर साक्षी थिक।

ई चेष्टा हरिमोहन झा, राजकमल चौधरीक संगहि सोमदेव आ धीरेन्द्रोक प्रति भेल अछि। एतबे नहि विद्यापति ओ ज्योतिरीश्वरोक संग हुनकर समयमे भेल छल। मौखिक ओ लिखित रूपमे एहि कुचेष्टाक एक परम्परा रहल अछि। की कारण अछि एकर? हमरालोकनिकेँ एकर जड़िमे जयबाक चाही। तखने ई बात स्पष्ट होयत जे अपन जाहि रचनाकार लोकनिपर हम सभ गौरव करैत छी हुनके पर किछु गोटे किए आमिल पीने छथि।

एहि सम्बन्धमे चिन्तन कयलापर ई तथ्य उभरि क' सोझाँ आओत जे एकर मूलमे ओ विचार अछि जे ओहि रचनाकारलोकनिक कलमसँ निकलल। हुनकालोकनिक

जीवन अछि, जीवनक प्रति दृष्टिकोण अछि जे सृजनक माध्यमसँ, क्रियाक माध्यमसँ प्रस्तुत भेल। हुनकालोकनिक पक्षधरता अछि जे गरीब ओ विपन्न लोकक लेल उजागर भेल। समाजमे पसरल अन्याय, वर्चस्व ओ विसंगति, असमानतापर हुनकालोकनिक लेखन किछु गोटेकेँ असहज बना देने अछि, से बात बूझक चाही। मुदा एहिमे खास बात इहो अछि जे मैथिलीमे लिखनिहार मिथिला पर गौरवबोध कयनिहार लोक सेहो हुनकालोकनिक विरुद्ध छथि। तखन ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे भाषा आ क्षेत्रधरि मामिला सीमित नहि अछि। ई खाली मैथिली भजनक मामिला नहि थिक। बात दोसर अछि। बात मैथिली समाजक सामाजिक-आर्थिक संरचनासँ जुड़ल अछि। समाजमे सम्पन्न ओ विपन्नक प्रति दृष्टिकोण ओ पक्ष-विपक्षसँ जुड़ल अछि। बात मैथिली मन्दिरमे प्रतिष्ठापन अथवा मन्दिरसँ बाहर मुक्त विचरणक अछि। मैथिलीक उपयोगक अछि। मैथिली भाषा सत्ता आ वर्चस्व कायम रखबाक लेल अछि अथवा अस्तित्वक संघर्षसँ जुड़ल अछि। स्वाभाविक रूपसँ मामिला वैचारिक थिक। सोचक थिक। सम्पन्न ओ विपन्नक थिक। अकारण नहि जे मैथिलीक संग किरण ओ यात्रीकेँ सेहो एही कारणेँ धौजनि होइत छनि। अपना कालमे विद्यापतियोकेँ बकसल नहि गेल रहनि।

किरणजीक प्रति तामस साहित्य क्षेत्रक अतिरिक्त हुनकर गाम-घर दिस सेहो छनि। हुनकर सोच, हुनक क्रिया, अभिव्यक्ति किछु विशिष्ट ओ सम्भ्रान्त लोककेँ विद्वेषसँ भरि देने छल। किरणजीक प्रति तामस विभिन्न रूपेँ प्रकट भेल अछि। बहुधा टिप्पणीक रूपमे।

- किरणजी साहित्यकार नहि मात्र आन्दोलनी छथि।
- किरणजी सोतिक विरोधी छथि।
- किरणजीक रचनामे कलात्मकताक अभाव अछि।
- किरणजी सभकिछुमे उलटे चलनिहार-सोचनिहार लोक छथि।
- किरणजी रचनाक प्रति गम्भीर नहि छला।
- किरणजीक कतेको रचना प्रतिक्रियामे रचल गेल अछि।
- किरणजी चाह जलखै लेल गामे गाम घूमल घूरै छला।

ई सभ तामसक उदाहरण हम साधारण ओ सीमित परिवेशसँ उठा क' रखलहुँ अछि। मात्र एक बयानक रूपमे, कमेंटक रूपमे। मुदा जँ ताकल जाय त' विद्वान आलोचक लोकनि सेहो विभिन्न भाव-भंगिमामे घूमा-फिराक' ई बात बजैत ओ लिखैत भेटि सकैत छथि।

किरणजीक प्रति तामसक आरो रूप ओ ढंग सभ रहल अछि। किरणजीक कोनो पोथी मैथिली अकादमी अथवा साहित्य अकादमी नहि छपलक। बहुत दिनक बाद जीवनक अन्तिम कालमे कथा संग्रह 'कथा-किरण' अयबो कयल त' भाखा प्रकाशन द्वारा। एहि प्रकाशन पर किरणजीक आनन्दक हमरालोकनि साक्षी रहल छी। आनन्दमे हुनकर आँखिसँ नोर बहि गेल छलनि। साहित्य आकदमी पुरस्कार हुनका मरणोपरान्त

भेटबो केलनि त' 'पराशर' महाकाव्य पर जकरा चिनगी प्रकाशन छपने रहय। किरणजीक कविता सँग्रह 'कतेक दिनक बाद', निबन्धावली आदि मरणोपरान्त हुनक सुपुत्रलोकनि प्रकाशित करौने रहथि। किरणजीकेँ सभ दिन मैथिलीक संस्था ओ साहित्य-अकादमीक क्रिया-कलापसँ बाहर राखल गेल। यात्रीजी त' मैथिलीक महन्थलोकनिक पाँजसँ बाहर भ' सम्पूर्ण भारतमे पसरि गेला। देश भरिक एतेक टा लोक भ' गेला जे महन्थलोकनि हुनकर किछु बिगाड़ि नहि सकलथिन। मुदा किरणजीकेँ जीवितावस्थामे ओ सभ पराभव ओ अपमान सहय पड़लनि जे अपन प्रखर जो प्रगतिशील विचारक कारणेँ हुनका मैथिलीक महन्थ लोकनिक द्वारा देल गेलनि। आइयो परोक्षो भेला पर हुनका छोड़ल नहि जा रहल अछि। हेवनियोमे घटल घटना सभ एकर साक्षी अछि। ओना ई फराक बात जे आब महन्थलोकनिक षड्यन्त्र सफल नहि भ' रहल अछि। आखिर की अपराध छलनि किरणजीक?

यैह अपराध छलनि ने जे ओ—

- 1933मे काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ मान्यता दिऔलनि। एहि लेल हुनका दू-तीन वर्ष धरि संघर्ष कर' पड़लनि।
- 1936मे 'मिथिला मोद' फेरसँ प्रारम्भ भेल त' किरणजी ओहिमे अगुआ छला।
- 1950-52सँ ओ विद्यापति गोष्ठीक माध्यमे गाम-गाममे क्रमशः मास-मास दिन धरि बौआइत रहला। साइकिल पर सतरंजी लदने सभा करथि। कविता पढ़थि आ पढ़ाबथि। लोकक व्यंग ओ अपमान सहथि।
- निरन्तर जन-सामान्यकेँ मैथिलीसँ जोड़बाक उद्योगमे लागल रहथि। एही क्रममे कविता, उपन्यास, नाटक, कथा, निबन्धक माध्यमे अपन विचार प्रकट करैत रहला।
- भरि जीवन अध्ययने करैत रहला। बुढ़ारीमे एम. ए., पी-एच. डी. मैथिलीमे केलनि। प्राध्यापक भेला। संगहि खुरपी ओ कोदारि सेहो कहियो नहि छोड़लनि। चाड़ आ टाटक बन्हन देब नहि बिसरला। शारीरिक श्रम ओ सारस्वत साधनाक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करैत रहला।
- भरि जीवन संघर्षे हुनकर मूल मंत्र वनल रहल।
- ककरो गलत आचरण, सामन्ती सोच ओ मैथिलीक प्रति अनादर कहियो सहन नहि केलनि।
- सामान्यजन सापेक्ष विचारसँ कहियो विरत नहि भेला। अपन कलमसँ जनताक पक्षमे लिखैत रहला। कथा हुअय, कविता हुअय सभमे अपन सोच ओ विचारसँ सम्पन्न पर प्रहार करैत विपन्नक पक्षमे ठाढ़ होइत रहला।

की एतबहिटा अपराध छलनि किरणजीक? नहि, खाली एतबे अपराध नहि

छलनि। ओ कलम ओ कर्मसँ सभ प्रकारक दासताक विरोध केलनि। से दासता मनुक्खक हो वा भगवानेक कियेक नहि हो।

कर्म्मबलसँ एक कुल्ली, ब्रिटिशकेर साम्राज्य साजल
तहीं ब्रिटिसक दास निपृतिक हम रहै छी पाछु लागल,
धिकधिगति ओहि बुधिकेँ जे लोक के कायर बनाबै
त्यागि उद्यम, पेट हेतुक भीख, खुस-आमद सिखाबै।

हुनकर अपराध छलनि जे ओ एहन कामना केलनि जे दास लोकनिकेँ सहाज नहि भेलनि। जिनकर स्वाभिमान ध्वस्त भ' गेल छलनि से किरणजीक विरोध केलनि। मुखर विरोध नहि त' तरे-तरे चुट्टी कटैत रहला। एहन कामनासँ के असहज भ' सकैत अछि तकर अनुमान लगायव कोन कठिन अछि?

नहि चाहै छी सौख्य सान सम्पत्ति ने प्रभुता
नहि वैभव-बलजात ख्याति कीर्ति सम्मान महत्ता
उचित सत्य कहबाक चेतना साहस बनल रहय आजीवन
नहि ताकी यश-अपयश
स्वाभिमान रक्षार्थ सन्नद्ध रहय मन सदिखन
पबितहुँ कष्ट अपार बौएतहुँ रनबन
अत्याचार अन्यायक संग-जंगमे बीतय जीवन
रूढ़ि अन्धविश्वासकेर कहाबी कट्टर दुश्मन

हुनकर इहो अपराध छलनि जे परम्परासँ चल अवैत अभिजात्य सौन्दर्यबोधक ओ खिधाँस केलनि। किरणजीक एहन रचना सभकेँ प्रतिक्रियामे लिखल गेल रचना कहल गेल। लेकिन ई विशुद्ध तामस छल जे किरणजीक गरीब ओ विपन्नक पक्षधरता आ सम्पन्नक विरोधसँ उपजल छल। ओ एहि अभिजात्य परम्परा ओ सौन्दर्यबोधक कटु आलोचक बनि समक्ष अबैत छथि।

नैनामे लहुक लेश नहि छै उपमान हेतैक सरोज कोना
जागल छै छातीक हाड़-हाड़ चकबा बनतैक उरोज कोना
पेट पीठ सटि एक भेल सोपान मनोजक हैत कोना
बच्चा बिलखै छै दूध बिना बनतै कहु सोमक घैल कोना
बतरी बंका झाउक बनमे हैत कोना मधुश्रीक विकास
अन्न न पेट न दम तनमे के गाओत मलार मनोहर रास

खा-पी क' अघायल आ मलार मनोहर रासमे लागल लोक, साहित्यकार-आलोचककेँ उचिते किरणजी सहन नहि होइत छथिन। यात्रीजी सहन नहि होइत छथिन। ओ तामसे

बड़बड़ाए लगैत छथि। विक्षिप्त भ' जाइत छथि।

स्पष्ट अछि जे ई वैचारिक प्रश्न अछि। मानसिकताक प्रश्न अछि। सामन्तवादी मानसिकता सभ दिन अपन मोनमे एकटा मन्दिर बनौने रहैत अछि। सभ वस्तु, कला ओ विचारकेँ मन्दिरमे संग्रह करबाक, प्रतिष्ठित करबाक पक्षपाती अछि। मन्दिरमे सभकेँ ढुका क' निश्चित भ' फोंक काट' चाहैत अछि। एहन लोककेँ सभ वस्तु पर, साहित्य, कला, विचार, भाषा पर मन्दिरक मोहर चाही। तेँ उचिते एहन मानसिकता मैथिलीकेँ मन्दिरमे प्रतिष्ठित क' निचैन भ' जाइत अछि। विद्यापतियोकेँ मन्दिरमे टाँगि दैत अछि। सम्पूर्ण प्रयास क' क' किरणजी ओ यात्रीजीकेँ सेहो मन्दिरक तोसखानामे ध' दिअ' चाहैत अछि। विद्यापतिक संग त' ई प्रयास सफल भ' गेल अछि। मुदा किरण ओ यात्री एखनो हुनकालोकनिक पाँजमे नहि आबि रहल छथिन। कतहु गड़' लगैत छथिन त' कतहु पाँजसँ छिहलि जाइत छथिन। तेँ एहन लोक हुनका पर तामसे माहुर भ' जाइत अछि।

वास्तवमे किरण ओ यात्रीकेँ मन्दिरमे बन्द करब सम्भवो नहि अछि। ने हुनकर मैथिली ओ मिथिलाकेँ मन्दिरमे संग्रहक वस्तु बना देब सम्भव अछि। ने हुनकर जीवन, ने हुनकर साहित्य, ने हुनकर विचार एहन अछि जाहिसँ मन्दिरक कलश चमकैत हो। ओ लोकनि त' सभ दिन एहि मानसिकता, एहि मन्दिरक विरोधी रहला। हुनकर मैथिली सेहो मन्दिरक भित्तिपर खोधल नहि जा सकैत अछि। ओहो दिन दूर नहि अछि जे विद्यापतियोकेँ मन्दिरसँ बाहर निकालि लेल जायत। विद्यापतिक साहित्ये एहि लेल सक्षम अछि जे विद्यापतिकेँ मन्दिरक ध्वजा बनबैवलाक षड़यन्त्रकेँ उघारि देत। छहोछित क' देत। वैचारिक अन्हरजालीकेँ फाड़ि देत। किएक त' ई लोकनि मन्दिरक शोभा नहि छथि। ने हिनकर मैथिली कोनो देवभाषा थिक। सत्ताक भाषा ओ कोना भ' सकैत अछि? ओ त' सभ दिन सत्ता-शासनक आँखिमे गड़ैत रहल अछि। चाहे ओ दरभंगाक सत्ता हो वा पटनाक सत्ता। परम्परासँ प्रतिपक्षमे ठाढ़ मैथिली सभ दिन मन्दिरसँ बाहर रहल अछि। सत्ता आ मन्दिरक बज्रगेँठ त' सभकेँ बुझले अछि। किरणजी आ यात्रीजी एहि लेल हमरा सभकेँ चेता गेल छथि।

आरम्भ, दिसम्बर 2000

हरिमोहन झाक उपन्यासक पृष्ठभूमि ओ यथार्थ

हरिमोहन झा जहिया अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान' लिखब प्रारम्भ कयलनि तहिया महज एक्कैस बरखक नवयुवक छला। हुनकर जन्म 1908मे भेलनि आ कन्यादान धारावाहिक रूपमे 'मिथिला' पत्रिकामे 1929मे छपब प्रारम्भ भेल। ओही वर्ष ओ बी. ए. ऑनर्स सेहो केलनि अंग्रेजीमे। हिनकर पहिल कविता 'सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक' सेहो 1929मे छपल। ई मिथिला पत्रिकाक प्रथम अंकमे छपल छल। पत्रिकाक दोसर अंकमे हरिमोहन बाबूक दोसर कविता आयल 'कन्याक नीलामी डाक'। मिथिलाक पहिल अंकमे एक लेख सेहो छपल छल 'स्त्री शिक्षाक वर्तमान दशा'। 'सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक' कवितामे हरिमोहन बाबू कहैत छथि,

बाहर बाजथि 'तिलक-प्रथा के बिष सन जानू'।
घरमे बाजथि, दुइ हजार सौ कम नहि आनू॥

बाहर बाजथि छुआछूत कैं शीघ्र हटाउ।
घरमे बाजथि ई चमैनि थिक, दूर भगाउ॥

ई कविता सभ, निबन्ध आ 'कन्यादान'क प्रारम्भ आ हरिमोहन बाबूकेँ अंग्रेजी ऑनर्स ल' कए बी. ए पास करब संयोगे मात्र नहि छल। मोहन भारद्वाज कहैत छथि 'एहिसँ हिनक अध्ययन एवं विचारक दिशाक ज्ञान होइत अछि, दूनूक एक सूत्रताक पता चलैत अछि। प्रो. हरिमोहन झाक लेल पद्य ओ गद्य महत्त्वपूर्ण नहि अछि, कथा ओ कविता महत्त्वपूर्ण नहि अछि महत्त्वपूर्ण अछि सामाजिक स्थिति।'

हरिमोहन झाक वियाह सुभद्रा देवीसँ सोलहे वर्षक अवस्थामे 1924मे भ' गेल छलनि। ओ 1932मे दर्शनशास्त्रमे एम. ए. क' लेलनि आ 1933मे बी. एन. कालेजमे दर्शन शास्त्रक व्याख्याता भ' गेला। 1948मे ओ पटना कालेज आबि गेला। कन्यादान पुस्तकाकार छपल 1933मे आ द्विरागमन 1943 मे। एहि सभ वृत्तांतमे एकटा बात जे हमरा ध्यान देबा योग्य बुझा रहल अछि—ओ थिक, हरिमोहन बाबू जखन अंग्रेजी

पढ़ैत छला तखन कन्यादान लिखब प्रारम्भ केलनि आ जखन दर्शन शास्त्रक व्याख्याता भ' गेला त' द्विरागमन लिखलनि। एतबे नहि कन्यादानक प्रारम्भिक तीन परिच्छेद तथा शेष नौ परिच्छेदक वीच सेहो तीन वर्षक अन्तराल अछि। हमरा जनैत हरिमोहन बाबूक दूनू उपन्यासक रचनामे हुनकर बएस आ तत्कालीन अध्ययनक भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। एकटा तत्त्व आर महत्त्वपूर्ण अछि ओ थिक—पिता जनार्दन झा 'जनसीदन'सँ पाओल विषय ओ विचार, जकरा ओ विस्तार देलनि ओ आगू बढ़ौलनि।

हरिमोहन झा 'कन्यादान' किएक लिखलनि? ओकर पाछाँ कोन प्रेरक तत्त्व छलनि? 'कन्यादान'क प्राक्कथनमे लेखक स्वयं कहैत छथि, 'आईसँ तीन वर्ष पहिने 'मिथिला' नामक एक मासिक पत्रिका बहराएल छलि। ओकर प्रकाशक छला श्रीयुत बाबू रामलोचन शरण और सम्पादक-मंडलमे छला श्रीयुत बाबू भोलालाल दास बी. ए., एल. बी.। एक दिन सन्ध्या समय भोला बाबू आबि ठोंठ पर सवार भ' गेलाह जे 'मिथिला'क अन्तिम फर्मा अहाँक लेख बेत्रेक रुकल अछि, झट द' किछु लिखि दियौक जे काल्हि छपि जाय। हमरा रातिमे जे किछु फुरल से लिखि लाखि कए हुनका दए देलिऐन्हि। वैह भेल 'कन्यादान'क श्रीगणेश। तकरा बाद जहिया-जहिया भोला बाबूक तगादा भेल गेल, थोड़ेक लिखि पिण्ड छोड़बैत गेलहुँ। चारि-पाँच अंक धरि यैह सिलसिला चलल।' राजमोहन झा सेहो एहि प्रसंग कहैत छथि, 'कन्यादान'क आरम्भिक तीन परिच्छेद तँ मइ आ सितम्बर 1929 क बीच लिखत गेल, शेष नौ परिच्छेद जुलाइ 32सँ मइ 33क मध्य लिखल गेल।' प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक कथा-विभागक अध्यक्षीय भाषणमे लेखक 'कन्यादान'क जन्मक प्रसंग कहने छथि—'ओहि समय हमर छोट बहीन (दिवंगता सोन दाइ) क कन्यादानक हेतु बाबूजी चिन्तित रहथि। कतहु जोगारे नहि लगैन्ह। एक दिन गामपर हमर माय अड़ोसिन-पड़ोसिनसँ ओहि विषयमे गप्प करैत रहथि। आवेशरानी, ढुनमुनकाकी, दुलारमनि पिउसी-सभ ओहीमे भेटि गेलीह। हमरा ओ गप्प तेहेन प्रियगर लागल जे हम चुपचाप सभटा नोट क' लेलहु आओर वैह गप्प रंग-पालिश चढ़ा 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' शीर्षकसँ 'मिथिला'मे छपक हेतु द' देलियैक। यैह भेल 'कन्यादान'क श्रीगणेश। ताहि समय हमरा ई भान नहि रहय जे ई गप्प आगाँ जाक' कोन आकार-प्रकार ग्रहण करत। केवल पेनी टा छानि देने रहियैक।" ओही सम्मेलनमे हरिमोहन बाबू इहो कहने छला जे 'कन्यादान' लिखबाक प्रेरणा ओ अपन पिता जनसीदनेजीसँ ग्रहण कयलनि।

रमानन्द झा 'रमण' कहैत छथि जे, 'जनसीदन जीक 'निर्दयी सासु'क धारावाहिक प्रकाशन 'मिथिला-मिहिर'मे 17 अक्टूबर 1914सँ 28 नवम्बर 1914 ई. धरि भेल तथा 'पुनर्विवाह'क प्रकाशन मिथिला प्रिटिंग वर्क्स, मधुवनीसँ 1926 ई. भेल। निर्दयी सासु तथा पुनर्विवाहक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे उपन्यासकार सामाजिक समस्याकेँ स्वर

देल अछि। समाजमे पसरल विकृति दिस लोककेँ ध्यान आकृष्ट कयल अछि। वर्तमान शतीक आरम्भमे नारी जागरणक हेतु आन्दोलन चलि गेल छल। बहुतो पण्डित स्त्री-शिक्षाक विरोधी छलाह किन्तु जनसीदनजी समाजक अभ्युदय हेतु नारी शिक्षाक प्रचार-प्रसार आवश्यक मानैत छला। 'निर्दयी सासु'क ज्योतिषी चिन्तामणि झा अपन कन्या शारदाकेँ एतेक अवश्य पढ़ा दैत छथि जे ओ मिथिलाक्षर ओ देवाक्षर लिखि-पढ़ि सकैछ। किताबक सन्देश अशिक्षिता धरि पहुँचा सकैछ। एहिना हरिसिंह देवी व्यवस्थाकेँ वर्तमान कालक लेल लाभप्रद नहि मानि घटकसँ कहबाओल अछि—'हरिसिंहदेवी कतय लेने फिरैत छी, कन्या जाहिसँ सुखमे रहय से कर्तव्य थिक।' एहिना पुनर्विवाहमे ज्योतिषीक आँखिक पुतरी दयानाथक दशा देखि कलाधर ज्योतिषीकेँ कहैत छथि—'भाइ दोसर विवाह नहि करितहुँ सएह नीक।'

निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह उपन्यासक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे तत्कालीन मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे हरिसिंहदेवीक पूछ कम हुअ' लागल छल। हरिसिंहदेवी अर्थात् कुल-मूल, बंशक बदलामे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल आ धनिक वरक कद्र बढ़ि रहल छल। निर्दयी सासुमे ज्यातिषीक स्त्री कहैत छथि, 'जेहने हमर कन्या अछि तेहने वर चाही। हम जमाय सुन्दर ओ धनिक चाहै छी। तेहेन जौं नहि आनब तँ हम बेटीक विवाह नहि करब।' ज्योतिषी रजधानीमे रहि कमाइत छला आ आब गाम रह' लागल रहथि। कन्याकेँ पढ़ब-लिखब सिखौलनि। दू वर्षक भीतर यशोदाकेँ तिरहुता, हिन्दी ओ मामूली देशी गणितक बोध उत्तम रूपेँ भ' गेलैक। एहेन कन्या यशोदा लेल स्त्रीक इच्छानुसार ज्योतिषी हरिसिंहदेबीक परवाहि नहि करैत सुन्दर, सोलह वर्षक आ अंग्रेजी पढ़ैत वर अनलनि। ओ पंजीबद्ध नहि रहथि। पुरान विचारक लोक सभ 'समय देखि जी मसोसि रहि गेला।' धन ओ वरगुण सैह सभसँ उपर मानल जाय लागल रहय। अयोध्यानाथ मिश्र जे जातिसँ न्यून रहथि, पुतहुकेँ देखितहि तृप्त भ' गेल रहथि। बजलाह 'देब-लेब किछु छैक। बेटा-बेटी बेचने ककरो सम्पत्ति भेलैक अछि। मनुष्य नीक होयबाक चाही।' ओहिकालसँ पूर्व 'बिकौआ'क अनघोल छल। कुल-मूलबला अपन 'हरिसिंहदेवी'केँ भजा रहल रहथि। बिकौआकेँ ओहीसँ आमद होइन। ओही ल' क' लहक-चहक। मुदा पंजी व्यवस्थाक गधकिच्चनि, परदेशक सम्पर्क ओ तत्कालीन परिस्थितिक संग अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक कारणें क्रमशः व्यक्ति-गुण तत्त्व, जाति-वंश-तत्त्वक स्थान लेबाक ओरिआओन प्रारम्भ क' देने रहय। वरेक गुण-तत्त्व दिस ध्यान नहि गेल रहय कन्याक गुणक विचार सेहो हुअ' लागल छल। पुनर्विवाह उपन्यासक आरम्भे अही विमर्शसँ होइत अछि। रूप पैघ की गुण? और अन्ततः गुणक महत्ता उपन्यासमे सिद्ध कयल गेल अछि। स्त्रीक रूप ओ पुरुषक वंशकेँ गुण मानबाक परम्परापर आघात करैत जनसीदनजी स्त्री-पुरुषक शील-स्वभावकेँ मान्यता दैत छथि। मुदा 'रूपक संग गुण होयब, सोनमे सुगन्धि होयबाक बराबरिए बुझबाक थिक' सेहो अन्ततः कहैत

छथि। एवं प्रकारें ओहिकालमे जँ व्यक्ति-गुण आ व्यक्तिगुणोमे शील-स्वभाव, आचार-व्यवहारकेँ मान्यता भेटब प्रारम्भ भेल छल तँ वंश आ रूपकेँ एकदम्मे त्याज्य बुझबाक संस्कृति नहि विकसित भेल रहय। मात्र ओकरा विकृति बुझबाक दिस जनसीदनजी संकेत अवश्य करैत छथि। गुणकेँ प्रधानता देबाक बात मिथिलाक संस्कृति ओ परम्पराक प्रमुख तत्त्वक रूपमे समाहित रहल अछि, अस्मितासँ जुड़ल रहल अछि। विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' ओ विभिन्न लोक-व्यवहार गीतमे व्यक्तिक गुण तत्त्वक बेश प्रशंसा ओ महत्त्व बखानल गेलय। मुदा पंजी ओ वर्ण व्यवस्थाक कुप्रभावजन्य ई मूल्य झँपा गेल। कुरीतिक एहेन विहाड़ि आयल जे विकृतिक रूप ध' लेलक। सांस्कृतिक रूपसँ पतनक एक कारण बनि गेल।

दूनू उपन्यासकेँ पढ़ि स्त्री-शिक्षाक सम्बन्धमे सेहो जनसीदनजीक धारणा स्पष्ट होइत अछि। संगहि स्त्री शिक्षाक विरोध स्त्रीगणे द्वारा होयब सेहो उपन्यासमे देखाओल गेल अछि। निर्दयी सासुमे यशोदाक सासुरमे पराभव एना व्यक्त भेल अछि, 'विद्या-बुद्धि किछु ओहिठाम काज देनिहार नहि। जेना कौआक मण्डलीमे हंस दुर्दशा पबै अछि, तहिना एहि मूर्ख मण्डलीमे आबि यशोदा कष्ट काटय लागलि। भरि-भरि दिन घरमे बन्द, ककरासँ की कथा करी से नहि फुरैक।' सासुक निर्दय होयबाक सेहो प्रमुख कारण यशोदाक पढ़ब-लिखब सैह रहय। दोसर चिरन्तन कारण स्त्रीक पुरुषकेँ अपन वशमे रखबाक इच्छा आ ओहि इच्छापर कुठाराघात होयबाक सम्भावना छल। 'पुतहु अयलैन्हि और बेटा पुतहुकेँ एकत्र देखलन्हि तखनि पुतहुँसँ इर्ष्या होमय लगलैन्हि जे ई हमरा बेटाकेँ वशमे कय लेलक।' जनसीदनजी मुदा शिक्षेकेँ सर्वोपरि नहि मानैत छथि। हुनका नजरिमे गुण ओ मूल्य सर्वोपरि अछि। शिक्षासँ जँ संस्कार नहि बदलल, व्यक्तित्व विकास नहि भेल, मानवोचित गुणक समावेश नहि भेल तँ शिक्षा व्यर्थ। से चाहे पुरुषक शिक्षा हो वा स्त्री शिक्षा।' पुनर्विवाहमे पार्वतीकेँ पढ़बा-लिखबाक दम्भ रहनि। ओ ज्योतिषीकेँ 'अपन रूप यौवनसँ मोहित कए, जे-जे नाच नचबैन्हि; से नाचथि।' ज्योतिषीजी अपन नीक शील-स्वभावक पहिल स्त्रीकेँ जे वेश गुणी छली, पाइक कारणे गाममे छोड़ि परदेश रहैत छला। स्त्री दुःखीत भेलथिन त' देओर जयनाथ जे गाममे रहैत छला नीक जकाँ हुनकर ताकूती नहि कयलथिन। ओ कंजूस रहथि, संगहि मानवोचित गुण हुनकामे नहि रहनि। ओ स्त्रीक प्रति, निम्नवर्गक प्रति मानवोचित व्यवहार नहि करैत छला। अपन भाउजक ठीकसँ इलाजो नहि करौलनि। स्त्रीक अंतिम अवस्थाक समाचार सुनि ज्योतिषी जखन गाम अयला तँ चिकित्साक प्रबन्धो क' अपन स्त्रीकेँ बचा नहि सकला। ओ एक तीन वर्षक बालक दयानाथकेँ छोड़ि मरि गेली आ ज्योतिषीकेँ वियाह नहि करवाक शपथ द' गेली। मुदा ज्योतिषी स्वर्गीया पत्नीक शपथ नहि मानलनि। पुनर्विवाह कयलनि। उपन्यासक अन्तमे हुनकर पराभवक वर्णन अछि 'पार्वती कोना प्रसन्न रहतीह तकरे चिन्ता दिनराति मनमे लागल रहन्हि। पार्वती

यद्यपि पढ़लि-लिखलि छलीह परंच सतौत कदाचित मुद्दई भै ठाढ़ ने हो, तैं कथी लय ओकरा एको अक्षर सिखौथिन्ह। जे दयानाथ ज्योतिषीक आँखिक पुतरी छलैन्हि, से आब आँखिमे काँट जकाँ गड़य लगलैन्हि। पुनर्विवाह जे ने चाहय।'

पं. जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिलीक प्रारम्भिक दूनू उपन्यास निर्दयी सासु आ पुनर्विवाहमे एवं प्रकारें हमरा जनैत नहि केवल तत्कालीन मैथिली समाजक वास्तविक चित्र उपस्थित करैत छथि, सामाजिक समस्या ओ कुरीति पर आंगुर रखैत छथि अपितु जीवन-मूल्य दिस सेहो हमरालोकनिक ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ब्राह्मण समाजमे मूल्यक पतनसँ ओ चिन्तित लगैत छथि। पाँजि ओ वंशक महत्ताकेँ न्यून मानैत ओ व्यक्ति ओ व्यक्ति गुणक बखान करैत छथि। ई गुण उदात्त मानवीय गुण थिक आ एही गुणकेँ ओ जीवनमूल्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहि तरहें जनसीदनजीक दूनू उपन्यासक एक नैतिक आयाम अछि। आरम्भहिंसँ नैतिक आधारपर उपन्यासक विरोध होइत रहल अछि। मैथिली साहित्यमे सेहो ई प्रवृत्ति प्रारंभेसँ रहल अछि। अहूठाम विरोध भेल अछि। रूढ़िवादी नैतिकताक समर्थक ओकर विरोध करैत रहला अछि। मुदा विरोध केहेन भेल अछि से स्पष्ट नहि होइत अछि। हमरा लगैये कदाचित जनसीदनक दूनू उपन्यासक विरोधक लेखा नहि भेटबाक कारण ओहिकालक पत्र-पत्रिका नहि उपलब्ध होयबाक अतिरिक्त मैथिल बुद्धिजीवी वर्गक मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यसँ उदासीनता सेहो अछि। मैथिली साहित्य की सम्पूर्ण साहित्येक प्रति उदासीनता अछि। साहित्यकेँ मात्र मनोरंजनक साधन मानब एकर जड़िमे लगैत अछि। डा. आनन्द मिश्र 'निर्दयी सासु'क पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैत कहैत छथि, 'जाहि समयमे एकर प्रकाशन भेल ताहि समयमे 'मिहिर'क पाठकक संख्या थोड़ छल तथा जेहो छला से मात्र मनोरंजन क उद्देश्यसँ ओकरा पढ़ैत छला। ताहि हेतु ओकर विश्लेषण नहि भ' सकल।' ओना एकटा ईहो तथ्य लगैत अछि जे जीवन-मूल्यसँ जोड़ि क' साहित्यकेँ देखबाक बेगरता ताहूमे मैथिलि साहित्यकेँ देखबाक आवश्यकताक अनुभव मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्ग ताहि काल धरि नहि केने छला। मात्र रस लेल ओ साहित्य पढ़ैत छला। मिथिलामे तँ न्याय वेदान्त, मीमांसा, ज्योतिष तंत्र आदि पण्डितवर्गक विचारक ओ अध्ययनक मुख्य विषय छल। एही विषय सभमे पाण्डित्यक समाजमे मान्यता छल। साहित्य लिखैत विद्यापतियोकेँ ओकर न्यूनताक बोध पण्डित वर्गसँ कराओल गेल छलनि। मुदा पण्डित होइतो विद्यापति देसिल बयना ओ समाजकेँ, सामाजिक जीवनकेँ अपन दृष्टिमे अनलनि आ जनसामान्यकेँ सोझे-सोझ सम्बोधित करबाक आवश्यकताक अनुभव करैत गीत रचलनि। से बहुत महत्त्वक बात भेल। एहि प्रकारें इहो कहि सकैत छी जे जहिना देसिल बयना अर्थात मैथिली, संस्कृतक विरुद्ध जनसामान्यक भाषा-साहित्य बनि क' ठाढ़ भेल तहिना प्रारम्भेसँ जनसामान्यक जीवन सेहो ओहिमे प्रतिबिम्बित हुअ' लागल। सामाजिक स्थिति ओ रीति-कुरीति,विकृतिक दिग्दर्शन सेहो कराब'

लागल। ओना साहित्यसँ समाज ओ जीवन कटल रहल तकर सेहो मध्यकालमे पर्याप्त साक्ष्य भेटैत अछि। इहो सत्य अछि जे सम्पूर्ण मध्यकालमे विद्यापतिक बाद मैथिली मात्र पद्यक भाषा बनि क' रहि गेल सेहो संस्कृत गद्यक संग कोनटामे ठाम-ठीम लतरल। मुदा आधुनिक काल अबितहिं (बीसम शतीमे) जखन पुनः मैथिलीक भाषायी पुनर्जागरण प्रारम्भ भेल तँ शुरुएमे गद्य-पद्य दूनूमे समाज ओ ओकर दुख-दर्द स्थान पाब' लागल। भनहि ओ केवल ब्राह्मण समाज धरि सीमित हुअय मुदा ब्राह्मण ओ कायस्थ समाजमे जे प्रबुद्ध वर्ग छला हुनकामे मैथिली साहित्यक प्रति आ तेँ समाजक प्रति उदासीनता बनले रहलनि। ब्राह्मण जँ संस्कृतक मोह नहि छोड़ि पाबि रहल छला त' कायस्थ अरबी-फारसीकेँ जे राजकाजक भाषा छल जीविकाक कारणे गहने रहला। मैथिलि ने राजकाजक भाषा छल ने जीविका द' सकैत छल आ ने पण्डित होयबाक अभिमान तेँ ओ मात्र मनोरंजनक ओ गप्पक माध्यम टा मानल गेल। ओहि साहित्यमे अभिव्यक्त विचारकेँ गम्भीरतासँ लेबाक बात पण्डित ओ बुद्धिजीवी वर्गमे नहि आयल। कमोवेश लगभग एक सए बरख बीति गेलाक बादो आइयो हमरालोकनि मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्गक एहि मानसिकतासँ त्राण नहि पाओल अछि। संस्कृत आ अरबी-फारसीक स्थान आब भनहि अंग्रेजी ल' लेने हो मुदा मैथिलीक प्रति मानसिकता वैह अछि। ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि आयल अछि। एहना स्थितिमे जनसीदनजी द्वारा अपन मैथिली उपन्यासमे समाजक वास्तविकताकेँ उपस्थित करब आ जीवन मूल्यक संकेत करब बहुत महत्वपूर्ण ओ साहसक काज छल। एहि उल्लेखनीय काज लेल मैथिली समाज हुनका सभ दिन मोन रखतनि। से आब' बला दिनमे आर उजागर भ' जायत।

हरिमोहन बाबू अपन पितासँ पैतृक उत्तराधिकारे टा नहि पौलनि, साहित्यिक आ वैचारिक संस्कार सेहो ग्रहण कयलनि। जनसीदनजीक रचना ओ हरिमोहन बाबूक प्रारम्भिक रचनामे अद्भुत साम्य देखबामे अबैत अछि। हरिमोहन बाबू जत' खट्टरककाक तरंग ओ अपन कथा सभमे हुनकासँ फराक लगैत छथि ओत' कन्यादान ओ द्विरागमन उपन्यासमे बहुत किछु जनसीदनसँ ग्रहण करैत देखाइत छथि। मुदा औपनिवेशिक मानसिकताक प्रभावे समाजमे बढ़ैत अन्तर्विरोध, दू मूल्यक अन्तर्द्वन्द्व जेँ कि हरिमोहन बाबूक कालमे आर तेज भ' गेल छल तेँ ओ अपना रचनामे वैचारिक स्तरपर सेहो परिवर्तन अनैत छथि। अपन बाना बदलि लैत छथि। हमरा लगैत अछि जे बाना बदलबाक एक कारण इहो रहल होयत जे ओ अपन पिताक पराभव देखि चुकल छला। मैथिली समाजक मैथिली साहित्य ओ ओहिमे अभिव्यक्त विचारक प्रति उदासीनता लक्ष्य क' गेल छला। ओ ई बात जानि गेल छला जे खुशफैलसँ जीव'वला एवं हँसी-ठहक्का लगब' वला गप्पी लोक लेल हुनका साहित्य सृजित करबाक छनि। समाज द्वारा साहित्यकेँ गम्भीरतासँ नहि लेबाक परम्पराकेँ देखैत ओ सामाजिक स्थिति चित्रित कर'वला साहित्यमे पाठकक स्वभावें कथा रससँ बेसी हास्य रसकेँ महत्ता देलनि।

पाठक हुनका लगमे प्रमुख छलथिन। पाठकसँ ओ अपन रचना पढ़बाब' चाहैत छला। ओ साहित्यक माध्यमे समाज सुधारक सेहो आकांक्षा रखैत छला जे ओहिकालक मुख्य प्रवृत्ति छल। मुदा साहित्यक माध्यमे समाज सुधारक आकांक्षा पोसनिहार रचनाकारक दुर्गति अपना आँखिसँ अपन पिताकेँ देखि अनुभव कयने छला तेँ कुनैनक गोलीकेँ रंग-विरंगी कागजमे संगहि मिसरीमे लपेटि क' परसलनि। हँसी-ठहक्कामे जीव' बला समाजकेँ हँसी लगबैत बिठुआ कटबाक चालि अपनौलनि। कदाचित मखौलिया स्वभाव सेहो हुनका संग द' रहल छलनि। एवंप्रकारें उपन्यासकार पितासँ प्राप्त मरौउसी सम्पत्तिकेँ अपन अर्जित दृष्टि ओ स्वभावक अनुसारे विशाल पाठक वर्ग दिस ल' गेला। ई तथ्य आरो महत्त्वपूर्ण भ' जाइत अछि जखन हमरालोकनि देखैत छी जे ओहिकालमे मैथिली भाषाक उन्नति ओ विकासक संकल्प रखनिहार चेतना सम्पन्न युवकलोकनि मैथिलीक संस्थापन ओ शिक्षा जगतमे प्रवेश सुनिश्चित करा रहल छला। मैथिलीक भाषिक चेतनाक आरम्भ ओ विस्तारक कथा कोनो प्रकारें 'कन्यादान'क बिना अपूर्ण रहैत अछि से बात दृष्टिमे राखब आवश्यक अछि। ओना ई बात भिन्न अछि जे हँसी-ठहक्का लगब'वला समाज जेना 'कन्यादान'केँ हँसीएमे उड़ा देलक तहिना मैथिलीकेँ सेहो कहियो गम्भीरतासँ नहि लेलक।

'कन्यादान'सँ पूर्व जनसीदनजीक दूनू उपन्यासक अतिरिक्त पुलकित मिश्र 'काव्यतीर्थ'क मोहिनी मोहन' (1908), रासबिहारी लाल दासक सुमति (1918) तथा कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' (1924) सेहो विवाहक ब्याजें मैथिली समाजक दुर्दशा ओ कुरीति-विकृतिकेँ विषय बनाय आबि चुकल छल। मैथिलीक प्रारम्भिक कथा-उपन्यासमे वैवाहिक समस्या पात्र बहाना रहय। ओहि लाथें पंजी व्यवस्था जन्य समाजक दुर्दशाक चित्रणक संग धनक सदुपयोग सिखायब, पारम्परिक जीवन्त जीवन-मूल्यकेँ प्रतिस्थापित करब ओ मानवीयताक भावना जगायव मुख्य उद्देश्य रहल करय। मिथिलामे विवाह ओ कथा-उपन्यासक प्रसंग एक अद्भुत बात अछि। डा. रामदेव झा मैथिलीक आद्यकथा नामक लेखमे कहैत छथि, 'कथा ओ उपन्यास शब्द साहित्यक विधासँ अधिक वैवाहिक सम्बन्धक अर्थद्योतनमे समर्थ छल। कथाक अर्थ छल विवाह योग्य वर ओ कन्याक सम्बन्धमे विचार-विमर्श। कन्यापक्ष दिससँ बर-पक्षक समक्ष वा वरपक्ष दिससँ कन्या-पक्षक समझ विवाह सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रस्ताव 'उपन्यास' कहल जाइत छल। 'कथा वार्त्ता'वा 'कथाक उपन्यास' इत्यादिक अर्थ छल वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबाक विषयमे विचार-विमर्श, जकरा अंग्रेजीमे 'मैरेज निगोशिएसन' कहब उपयुक्त होयत। कथा-उपन्यासक साहित्यिक विधामे सेहो जेना ई अर्थ कतहु ने कतहु अवश्य निहित रहैत छल। यैह कारण अछि जे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास ओ कथामे विवाह प्रकरण कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य समाविष्ट रहैत छल।' वैवाहिक अवसर पर मिथ्याडम्बरक कारणे दुख भोगैत एक कर्ण कायस्थ परिवारक

कथा थिक 'सुमति' तँ कुलीनताक प्रति विनाशक सीमा धरि व्यामोह, कुलीन कन्याकेँ धनक रूपमे विक्रय, नैहर-सासुर ओ समाजमे नारीक प्रताड़ना, नारीक अशिक्षा संग विकृत आचार-व्यवहारक कथा 'मनुष्यक मोल'मे कहल गेल अछि। 'मोहिनी-मोहन'मे जेना डा. रामदेव झा कहैत छथि, 'वैवाहिक सम्बन्धमे जाति-पातिक अनावश्यक महत्त्व, घटक लोकनिक कौटिल्य, विवाहमे फड़क निर्धारण ओ तदर्थ टाका गनायब सन दोषकेँ लेखक प्रकारान्तरें देखयबाक प्रयास कयने छथि। तथापि स्पष्ट आलोचना करबाक साहस नहि देखौलनि अछि।' एहि सभ मैथिली उपन्यास ओ कथाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सेहो छल। डा. जटाशंकर झा अपन एक निबन्धमे कहैत छथि जे बहुविवाह बिहारमे मिथिला धरि सीमित छल। प्रत्येक खण्डवला राजा एकसँ अधिक वियाह कयने छला।' ओ इहो कहैत छथि जे 'बंगालसँ भिन्न बहुविवाह मिथिलामे वंशपर आधारित छल नहि कि धनपर।' ई हरिसिंहदेवी पंजी व्यवस्थासँ उपजल छल आ एकरा 'बिकौआ प्रथा' कहल जाइत छल। किएक तँ उँच श्रेणीक ब्राह्मण रुपैयाक कारणे निम्न श्रेणीक कन्यासँ विवाह करैत छला। पत्नीक पालन-पोषण एहिमे पतिक जिम्मेदारी नहि रहैत छल। ओ लोकनि नैहरेमे रहैत छली। एक-एक टा ब्राह्मण चालीस-पचासटा विवाह करैत छला, आ मात्र रुपैया वसूलीक लेल सासुर जाइत छला। बिकौआ जमायसँ प्राप्त दुर्दशाक वर्णन मुंशी रघुनन्दन दास एना करैत छथि, 'जे जन कएल जमाए बिकौआ, तनिक मान धन नाश। दुर्बचनहिं आदर हो तनिका, सब खन चित्तमे त्रास॥' राजा माधव सिंह (1775-1807) पहिल व्यक्ति छला जे अंग्रेजी अधिकारीलोकनिक ध्यान एहि कुप्रथा दिस आकृष्ट कयने रहथि। सरकार हुनकर बात सुनलक आ दिवानी अदालत तिरहुतक जज जौन निफ 1795मे एकटा नोटिस निर्गत क' कय सभ ब्राह्मण ओ पंजियारकेँ चारिटासँ बेसी विवाह करब ओ करायबपर प्रतिबन्ध लगा देलनि।

शाहाबाद जिलाक मुंशी प्यारेलाल सेहो अजुंमन-ए-हिन्द संस्था बना विवाह आदि अवसरपर बहुखर्ची ओ मिथ्याडम्बरक विरोध क' रहल छला। दरभंगा शहरमे सेहो ई संस्था बनल छल जकर अध्यक्ष महराज दरभंगा छला। मुंशी प्यारेलाल 1876मे सौराठ सभामे सेहो उपस्थित भेल रहथि आ आषाढ़ आ अगहनक सभामे कमिटीक बनाओल नियमक अनुसार 2289 टा वियाह कराओल गेल रहय। अनुमण्डल अधिकारी, मधुबनी आ महराज लक्ष्मीश्वर सिंह व्यक्तिगत रूपेँ एहि कार्रवाईक पर्यवेक्षण कयने रहथि। रासबिहारी लाल दासक 'सुमति'मे एहि कमिटी ओ कमिटीक नियमक उल्लेख अछि। वस्तुतः एही सुधार आन्दोलनसँ प्रेरणा पाबि 'सुमति'क रचना भेल अछि से लगैये। एही प्रकारें बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि सेहो मिथिलामे प्रचलित रहय मुदा तकर विरोध ओ ओहिमे सुधारक चेतना समाजमे जगयबाक प्रयास सेहो चलि रहल छल। ताहि दिनक अखबार सभमे सेहो एहि कुप्रथा सभक विरुद्ध लिखल जाइत छल। परन्तु सरकारक मत एहि सामाजिक समस्याक प्रति सोझे-सोझ हस्तक्षेपक नहि

रहय। पटना प्रमण्डलक आयुक्त एफ. एम. हॉलीडेक एहि सम्बन्धमे कथन छल जे 'सुधार भीतरसँ होयबाक चाही नहि कि बाहरी दबाबसँ।' मुदा अन्ततः सरकार एक बिलक द्वारा बाल विवाहकेँ रोकबाक प्रयास केलक। ओहि बिलमे मुख्य प्रस्तावक रूपमे बारह वर्षसँ कम वयसक कन्यासँ सम्भोग लेल दण्डित करबाक प्रावधान राखल गेल छल। अन्ततः समयक प्रभावें तथा शिक्षाक प्रसारसँ उच्चवर्गमे बाल विवाह समस्या नहि रहि गेल। मुदा निम्न वर्गमे ई कुप्रथा एखनो पूरा-पूरी नहि हटल अछि। बादमे शारदा बिल सेहो बनल। आर्यसमाज ओ ब्रह्मोसमाजक सेहो एहि सुधार सभक दिशामे छिटफुट योगदानक लेखा मिथिलामें भेटैत अछि।

एही ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे अपन पितासँ प्राप्त विषय ओ विचार संगहि पारिवारिक परिस्थितिजन्य अर्जित सामाजिक दृष्टिक संग जखन हरिमोहन बाबूकेँ अनुकूल विषय भेटलनि तँ ओ ओहिमे ''रंग पालिश'' चढ़ाए 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' शीर्षकसँ कन्यादान उपन्यासक श्रीगणेश कयलनि। हुनका लग पाठक समूह स्पष्ट छलनि। ओ पाठक समूह छल भोजन ओ गप्पक प्रेमी पाठक समूह। संस्कारसँ तार्किक ओ तर्कक लाठीसँ केहनो सिद्धान्तकेँ ध्वस्त कर' बला पाठक समूह। अनका लेल सभटा सिद्धान्त ओ व्यवहार मान' वला आ अपना लेल सुविधाक अनुसार तर्क गढ़'वला पाठक समूह। दारुण सामाजिक स्थितिकेँ कतियाबय वला आ' अतिवादमे जीब'वला छद्म ओ मिथ्याडम्बरक मानसिकतासँ ग्रस्त, बात-बात पर हँस'-हँसाब'बला पाठक समूह। एक दिस अंग्रेज बनबाक सेहन्ता पोस'वला, अंग्रेज दिस विस्फारित आँखिसँ देख'बला, नतमस्तक आ अपन परम्परासँ विक्षुब्ध ओ हीनताबोधसँ ग्रस्त पाठकक समूह तँ दोसर दिस अपन रीति-रेवाज, समाज-संस्कृतिक प्रति कट्टर आदर रखनिहार ओ अंग्रेजक प्रभावेँ ओकरा पददलित ओ नष्ट होयबाक आशंकासँ ग्रस्त पाठक समूह। एहि पाठक समूहमेसँ अधिकांश 'कन्यादान'क स्वागत कयलक तँ किछु ओकर तिरस्कारो कयलक। स्वाभाविक रूपसँ प्रशंसा ओ निन्दा चल' लागल। ई बात स्पष्ट अछि जे यैह स्वागत ओ तिरस्कार 'कन्यादान'क लोकप्रियताक मूलमे अछि। कतेक लोककेँ आइ ई बात आश्चर्यजनक लगैत छनि जे अपन समाजक एहन दारुण सामाजिक स्थिति, अशिक्षाक घोर अन्धकार, कोंढ़ तोड़य बला अर्थचक्र, पुरुषक अहंकार ओ वैवाहिक संस्थाक घोर दुर्व्यवस्था, छद्म ओ मिथ्याडम्बर, ठकपनीकेँ देखि कोना लोक हँसैत छल आ आइयो हँसैत अछि? हमरा जनैत एहिमे हरिमोहन बाबूक उच्चस्तरीय कलाकारीक अतिरिक्त लोकक कोनो बातपर हँसबाक, गप्प मारबाक हिस्सक, अपनाकेँ सदैव शेष समाजसँ उपर बुझबाक मानसिकता, अंग्रेजी पढ़बाक उच्चग्रन्थि संगहि सामाजिक समस्या अथवा समाजक बेगरताकेँ न्यून क' बूझब, ओहिपर ध्याने नहि देब रहल अछि। अंग्रेजी शिक्षाक एकटा ईहो प्रभाव पड़ल अथवा कहू जे औपनिवेशिक मानसिकताक इहो एक लक्षण रहल जे पढ़ल-लिखल लोक जे

'कन्यादान'क पाठक छल ओकरा कन्यादानमे चित्रित ग्रामीण समाज अपन तँ लगलैक मुदा 'पछुआयल' लगलैक। हमर कहबाक अर्थ अछि जे 'कन्यादान'क पाठक ओहि वर्गक नहि छल जे वर्ग 'कन्यादान'मे चित्रित भेल अछि। एहि प्रसंग प्रभास कुमार चौधरी 'प्रवासी' पत्रिकाक 'हरिमोहन झा विशेषांक'क सम्पादकीयमे लिखैत छथि, 'अपन सहज हास्य-विनोद दिस प्रवृत्त मनोवृत्तिक कारणे ओहू दिनमे आ आइयो बेसी मैथिली पाठक आ लेखको एकरा मनोरंजक साहित्य रूपमे लैत अछि, गम्भीर साहित्यक रूपमे नहि! तकर कारण छैक जे जाहि बुच्चीदाइ सभक लेल ओ भविष्यक कथा लिखलनि, ओ ताहि दिनमे ओतेक पढ़लि-लिखलि आ बौद्धिक रूपसँ विकसित नहि रहथि जे ओकर मर्मकेँ बुझितथि आ आइ ततेक पढ़ि लिखि गेल छथि जे द्विरागमनोक बुच्चीदाइसँ बहुत बेसी निकलि गेल छथि आ आधुनिकताक नामपर अपन मैथिल संस्कृति आ परम्परेकेँ बिसरि त्यागि देने छथि। तेँ ओहू दिनमे ओ हरिमोहन बाबूकेँ क' ट' क' मनोरंजन लेल पढ़ैत छलीह आ आइयो क' ट' क' (शिक्षिता होइतो मैथिली पढ़बामे असुविधा होइत छनि) पढ़ि जाइत हेती।' त' बुच्ची दाइ त' स्वयं ताहि दिन कन्यादान नहि पढ़लनि अथवा क' ट' के पढ़लनि। तखन रहली बड़का गामवाली। ओ पढ़ि सकैत छथि। आ रेवतीरमण पढ़ि सकैत छथि। त' सम्पूर्ण कन्यादानमे मात्र रेवतीरमण आ हुनक स्त्री बड़का गामवाली छथि जे स्वयं कन्यादान पढ़ि सकैत छथि। पढ़ि क' हँसियो सकैत छथि। एकर अतिरिक्त कियो एक-आध गोटे होथि त' होथि। एहि प्रकारें हमरा जनैत कन्यादानक लोकप्रियताक एकटा ईहो कारण रहल जे ओहि 'पछुआयल' लोक'क दुखदर्दकेँ बुझनिहार, ओकर पीड़ाकेँ अपन माननिहार कन्यादानक पाठक ताहि दिनमे नहि रहथि। यदि रहबो करथि त' संख्यामे एकदम थोड़। ई तथ्य सम्पुष्ट करैत अछि जे मैथिल ब्राह्मणोमे कैकटा वर्ग अछि, कैकटा स्तर अछि। संगहि एक वर्ग, दोसरसँ एकदम पृथक ओ निर्विकार अछि। क्रमशः जखन ओहि 'पछुआयल' लोकक संतति सभ पढ़' लिख' लगला आ अपन समाजक पीड़ासँ जुड़बाक कोशिश कर' लगला त' 'कन्यादान' पढ़ैत हुनकर ठोरपरसँ हँसी बिलाय लगलनि। जँ गद्य आ वर्णनक चमत्कारसँ हँसितो छला तेँ समाजक वास्तविकता एवं यथार्थकेँ बुझैत-गमैत करेज चालनि भ' जाइत छलनि।

कन्यादान ओ द्विरागमन माध्यमे मिथिलाक कोन यथार्थ उभरि क' सोझा अबैत अछि, से देखब हमरालोकनिक लेल अन्ततः आवश्यक भ' जाइत अछि। रहरहाँ ई बात आलोचक ओ विद्वानलोकनि कहैत रहला अछि जे कन्यादान ओ द्विरागमनक माध्यमसँ मिथिलामे स्त्री शिक्षाक क्षेत्रमे क्रान्ति आयल। लोक बुच्चीदाइक पराभवसँ अभिभूत भेल आ वुच्चीदाइ सभ के आधुनिक शिक्षा दिस प्रवृत्त कराओल गेल। कन्यादान' पोथीकेँ विवाहक समयमे भारमे पठेबाक चर्चसँ जत' पोथीक लोकप्रियता सिद्ध कयल जाइत अछि ओतहि 'कनियाँ'क लेल शिक्षाक अनिवार्यता ओ ओहिसँ

'कन्यादानकेँ जोड़बाक मानसिकता सेहो स्पष्ट होइत अछि।

हमरा जनैत जे यथार्थ सोझाँ आयल अछि से थिक अंग्रेजिया चालि आ पाश्चात्य भोग दृष्टिवला मैथिलक अन्ततः प्राच्य संस्कारक समक्ष नतमस्तक होयब। दूनू दिस नतमस्तक। अंग्रेजो बनब आ महात्मा सेहो बनब। पश्चिमक बुद्धिवाद आ उपयोगितावादक प्रखर ओ खुजल समर्थनक उपरान्त वैचारिक महायात्रामे अन्ततः आध्यात्मवादमे शांति ताकब। छद्म ओ मिथ्याडम्बरक अन्तहीन यात्रा। संगहि पाश्चात्य पद्धतिसँ शिक्षाक प्रभावें अपन समाज ओ लोकवेदकेँ हेय दृष्टिसँ देखब। ओकरा 'बैकवार्ड' मानव। ई यथार्थ एकदम चौकबैत अछि। अपनासँ निम्न जातिक लोककेँ तँ 'बैकवार्ड' मानबे करब, अपनो जातिक लोककेँ 'बैकवार्ड' मानव। ई यथार्थ मिथिलाक कोनो एक जातिक नहि थिक, सम्पूर्ण समाजक थिक। सभ जातिक थिक। मिथिला समाजक एहि दूनू यथार्थकेँ हरिमोहन बाबू कन्यादान ओ द्विरागमनक माध्यमसँ हमरालोकनिक समक्ष रखलनि अछि। एहि दूनू यथार्थक प्रस्तुतिमे किंचित निर्वैयक्तिताक अभावक अछैतो लेखक एहि कारणे सफल भेल छथि जे हुनका समाज आ जीवनकेँ देखबाक अनुभव विस्तार ओ गँहीरसँ सुलभ भ' गेलनि। मरौउसी ओ अर्जित ज्ञानसँ ओ चेतनासम्पन्न भ' गेल छला, जे हुनकर दृष्टिकेँ चोख बनयबामे सहायक भेल। तेँ कने टेढ़-टूढ़ आ भ्रमाह रहितो मूर्ति (यथार्थ) एकदम उभरि क' समझ आबि जाइत अछि। जाहि दूनू बिन्दुक हम चर्चा कयल अछि से यथार्थ अहू कारणे थिक जे ओ आइयो यथार्थे अछि। आइयो मैथिली समाजमे ई यथार्थ एकदम प्रशस्त रूपसँ विद्यमान अछि। एहि यथार्थ क' तेज कने आर बेसिये भेल अछि। ओहिमे नजायज पाइ आ भ्रष्टाचार दूनू जुटि गेल अछि। कोनो प्रकारें रुपैया होयबाक चाही। तखन खर्च लेल चालि-चलनमे परिवर्तन जरूरी। यैह यथार्थ विद्यापतिक सुपुरुषकेँ मिथिलामे कुपुरुष बनबाक यथार्थ थिक। मिथिलाक लोकक आधुनिक नहि बनि सकबाक जड़िमे सेहो यैह अछि। एहि यथार्थकेँ ओहि कालमे पकड़ि पयबाक लेल आ ओकर कलात्मक प्रस्तुतिक लेल हरिमोहन बाबूक जतेक प्रशंसा कयल जाय से कमे होयत।

निर्दयी सासु आ पुनर्विवाहक चर्चक क्रममे हमरालोकनि देखि चुकल छी जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल ओ धनिक वरक प्रति झुकाव मैथिली समाजमे प्रारम्भ भ' गेल छल। एहि बात के जनसीदनजी गमि लेने छला मुदा अंग्रेजी पढ़ला-लिखलाक प्रभावक कारणें अंग्रेजियत आबि जयबाक आ अपन समाजकेँ हीन बुझबाक वास्तविकतासँ जनसीदनजी परिचित नहि भेल रहथि। मुदा जाहिसँ ओ परिचित नहि भ' सकला ताहिसँ हुनकर योग्य पुत्र परिचित भ' गेला। हुनकर नजरि सी. सी. मिश्र सनक अपन जड़िसँ कटल ओ पाश्चात्य भोगवादक अन्धभक्त दिस गेलनि, जे अपन पाश्चात्य शिक्षाक अहंकार पसारैत, स्त्रीक मानसिकता विकसित करबाक ओ अपन समकक्ष अनबाक बुद्धिवाद प्रदर्शित करैत, किंचित समाज सुधारकक बाना धयने अन्ततः स्त्री विलासक

नव-नव विन्यास तकैत रहैत अछि। जहिना जीह के सेहो नव-नव स्वाद ओ विन्यास चाही जाहिसँ संतुष्टि भेटैक तहिना शिश्न के सेहो नव-नव रूप, नव-नव ढंग चाही जाहिसँ विलासक सुख बढ़ि जाय। सी. सी. मिश्र सेहो एही सुखक लोभी छथि जे मिस बिजली संग हुनकर एकान्त वार्त्तालापमे प्रकट भ' जाइत अछि। एहि बातकेँ चीन्हि मिस बिजली अपन अचूक तर्कशक्तिसँ हुनकर दुर्दशा क' दैत छथि। हरिमोहन बाबू लिखैत छथि, 'चंचला युवतीक संग हवाखोरीक मजा आब बहराय लगलैन्ह। जहिना आनन्दसँ आयल छला तहिना घिसिऔर कटैत फिरय लगलाह। हुनक सरस छायावाद रौद देखैत बिला गेलैन्ह और रसिकता सिकतामे मिलि गेलैन्ह।' अन्ततः बिजलीक निष्ठुर वज्राघातसँ सी. सी. मिश्रक कल्पना महल चूर-चूर भ' गेलनि। ओत'सँ निराश भेलाक वादे ओ थाकि-हारि क' बुच्चीदाइ दिस घुमला। ओना एहि प्रत्यावर्त्तनकेँ तर्कसंगत सिद्ध करबाक लेल 'अपना घरमे शिक्षाक ज्योति जगयबाक' छद्म पसारैत छथि। सी. सी. मिश्रक छद्म कतेक ठाम आर उघार भेल अछि। खास क' क' जखन हुनका भोगक आकांक्षा पर आघात लगैत छनि। पहिल अछि चतुर्थी रातिक घटना। स्त्री-सुख तथा भोग ओ विलासक कल्पनामे मग्न सी. सी. मिश्र जखन बुच्चीदाइमे कोनो पर्सनालिटी (व्यक्तित्व) नहि पबैत छथि आ अन्ततः बुच्चीदाइक चोख हीराकाटक कंगना मिसरजीक नाकमे एतेक झोंकसँ लगैत छनि जे टप्-टप् शोनित खस' लगैत अछि त' ओ रेवतीरमणकेँ चिट्ठ लिख' लगैत छथि आ ओहिमे आजन्म ब्रह्मचारी रहबाक शपथ लैत घूमि-घूमि कन्या सभक जीवन सुधारबाक चेष्टा करबाक आ स्वार्थक वेदीपर कन्यालोकनिक हत्याक विरुद्ध आन्दोलन करबाक निर्णय लैत छथि। मुदा ई निर्णय ओ शपथ मिस बिजलीक मोहक व्यक्तित्वमे हेरा जाइत अछि। बिजलीक प्रति मोह दोसर स्थलपर जखन मिस बिजलीक तर्कक समक्ष पानि भर' लगैत अछि आ मिसरजीक छद्म उघार भ' जाइत अछि तखन फेर ओ अगत्या बुच्चीदाइ दिस घुमैत छथि। अपन घरमे स्त्री शिक्षाक तर्कसँ अपनाकेँ आश्वस्त करैत बुच्चीदाइक शिक्षाक बृहत, आडम्बरपूर्ण ओरिआओन करैत छथि। लगभग छबे मासमे 'रैपिड एक्शन कोर्स' जकाँ शिक्षाक व्यवस्था समाप्त भ' जाइत अछि। बुच्चीदाइ योग्य भ' जाइत छथि। सी. सी. मिश्रसँ जुत्तामे पालिस करबाब' लगैत छथि। मिसरजी एहि सभसँ प्रसन्न होइत छथि। अपन स्त्रीकेँ आधुनिक बनाक' सी. सी. मिश्रक आधुनिक बनबाक छद्म फेर महात्माजी लग ठेहुनियाँ द' दैत अछि। ओ 'मनहिमन मिस बिजली तथा महात्माजीक व्यक्तित्वक तुलना करय लगलाह। एक चञ्चल निर्झरिणी, दोसर शान्त महासागर। एक रजोगुणक मूर्त्ति, दोसर सत्त्वगुणक अवतार। एक देहाभिमानी सुखाराधिका, दोसर देह ओ सुखकेँ तुच्छ बूझि तपस्यामे निरत। मिश्रजी जतेक अधिक चिन्तन करए लगलाह, ततेक अधिक महात्माजीक प्रति हुनक श्रद्धा बढ़य लगलैन्ह।' सी. सी. मिश्रक एहि अतिवादकेँ हरिमोहन बाबू विलक्षण ढंगे प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि अतिवादसँ

जनमल सी. सी. मिश्रक वैचारिक छद्म सेहो अन्तमे उघार भ' गेल अछि। ई छद्म तखन आर देखार होइत अछि जखन ओ 'आर्य सभ्यता' नामक अंग्रेजी पत्रिकाक एडीटर नियुक्त होइत छथि। हरिमोहन बाबूक तात्पर्य एकदम स्पष्ट अछि। जँ सी. सी. मिश्र सनक लोक 'आर्य सभ्यता'क संपादक होयता तँ पत्रिकाक केहेन दुर्गति हैत? समाजकेँ ओकरासँ की भेटतैक? ओ सम्पादक अंग्रेजी पढ़ल-लिखल मुट्ठी भरि लोकक बीच केवल छद्म ओ भ्रम पसारत। 'सभ्यता'क नाम पर 'एलिट' वर्गक निर्माण करत जकरा शेष समाजसँ दूर-दूर धरि कोनो सम्बन्ध नहि रहि जेतैक। संगहि एहन मानसिकतावला लोकक स्त्री शिक्षाक व्यवस्था ओ पद्धतिसँ शिक्षित स्त्रीमे सेहो अतिवादेक जन्म होइत अछि। गुण-दोष विवेचनक विवेक नहि विकसित भ' पबैये। अपनाकेँ उच्च ओ शेष समाज एत' तक जे माय-बहीन, बाप-भायकेँ सेहो देहाती भुच्चर बूझ' लगैत अछि से बुच्चीदाइक माध्यमे हरिमोहन बाबू कह' चाहैत छथि। आ से बात स्पष्टतः कहि सेहो दैत छथि। जेँ कि ई दूनू अतिवाद ओ छद्म आइयो बनले अछि तै ई मैथिली समाजक एक दारुण यथार्थक रूपमे प्रस्तुत होइत लगैत अछि। एहि दारुण यथार्थक जड़िमे मूल्यहीनता अछि। मूल्यक पतन अछि। समाजक जड़ता अछि। एहि छद्म ओ अतिवादी मानसिकताक कारणे मनोबल ओ आत्मसम्मानक ह्राससँ आत्महीनता उपजल अछि जे कोनो सबल पक्षक समक्ष अथवा सत्ताक समक्ष नतमस्तक भ' जाइत अछि।

उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे जखन बंगालमे अभिजात समाजक लोक अंग्रेज जकाँ रह' लागल छल, अंग्रेजी चालि-ढालिक नकल कर' लागल रहय, अंग्रेजक जीवन पद्धति अपनाब' लागल छल आ अपन समाज आ अपन जड़िसँ एकदम कटि गेल छल तँ तकर विरोध ताहिकालहिमे नाटक ओ नाचक माध्यमसँ कयल जाय लागल। पुरुषक एहि पतनकेँ रोकबाक लेल स्त्रीलोकनि आगू अयली। मुदा हमरा लग की तहिया एक्कोटा बुच्चीदाइ रहथि अथवा आइयो कतेक बुच्चीदाइ छथि जे आगू आबि सांस्कृतिक पतनक लेल विरोधक स्वर उठौती? एहेन सांस्कृतिक जागरण मिथिलामे सम्भव होयत? हरिमोहन बाबूकेँ सी. सी. मिश्रक दर्पकेँ चूर करबाक लेल आ छद्मके उघार करबाक लेल मिस बिजलीक आवश्यकता बुझयलनि जे बंगाली छली। मुदा अन्ततः एहिमे दोष हमरा जनैत ने बुच्चीदाइक अछि ने सी. सी. मिश्रक अछि, दोष मैथिली समाजक जीवन पद्धति ओ जीवन दृष्टिक बीच उत्पन्न पैघ दूरीक अछि जकर मूल कारण सभ्यता ओ संस्कृतिक आधुनिक अंतर्विरोधमे निहित रहलय। कर्मपर आधारित जीवनक अपेक्षा भोग पर आधारित जीवन लालसा आ ताहिसँ उपजल जीवन पद्धति मैथिली समाजक सोच ओ क्रियामे बड़का फाँक उत्पन्न कयलक अछि। सांस्कृतिक मूल्य अथवा कहू जे जीवन मूल्यकेँ क्षतविक्षत क' देलक अछि। सौन्दर्य-बोध नष्ट भ' रहलय। आ एकर कारण यैह भोगवादसँ उपजल अतिवादिता अछि जे हरिमोहन

बाबूक दूनू उपन्यासक माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि। विलासी लोकक मिस बिजली ओ महात्माजीक बीच बौआयब आ नतमस्तक होयब, द्विविधाग्रस्त होयब एखन धरि समाप्त नहि भेल अछि तैं कन्यादानक यथार्थ आइ धरि कायम अछिये। एही कारण हरिमोहन बाबू अपन दूनू उपन्यासक संगं प्रासंगिक बनले छथि। एहेन दारुण यथार्थक ओहिकालमे अर्थात् आइसँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व उजागर होयब सेहो मैथिलीक पहिल लोकप्रिय उपन्यासक माध्यमे कम महत्त्वपूर्ण बात नहि अछि। एहन यथार्थ कन्यादान ओ द्विरागमनकेँ भविष्योमे लोकप्रिय बनौने रहत से कहल जा सकैत अछि। भनहि दूनू उपन्यासक ताहि दिनुका लोकप्रियता, आजुक लोकप्रियता आर भविष्यक लोकप्रियतामे मूलभूत तात्त्विक अन्तर रहय।

आरम्भ, जून 1998

बाबाक आत्मीयता

लोक हुनका बाबा कहैत छलनि। बाबा कहायब हुनका नीक लगनि। से बात कत्ते गोटे कहैत छथि। एक गोटा कहैत छथि जे हुनका कोनो नवयुवतियोसँ बाबा कहेबा पर आपत्ति नहि छलनि। केशवदास नहि छला ओ। कियो नवयुवती जखन हुनका बाबा कहनि त' हुनकर हृदयमे वात्सल्य उमड़ि आबय। भोजपुर इलाकामे ब्राह्मणकें बाबा कहल जाइत छैक। बूढ़ो बाबा आ नेनो बाबा। ब्राह्मण दुआरे बाबा। कतेक गोटाकें एहि सम्बोधन पर फूलि क' कुप्पा होइत देखने हेबनि। साइत ब्राह्मणत्वक मोजरक कारणें। मुदा ओ ब्राह्मण बाबा नहि छला। नागा बाबा सेहो नहि छला! संसार त्यागी ओ कोना भ' सकैत रहथि? संसारसँ त' हुनका अत्यन्त लगाओ छलनि। ओ परिवारक, गाम घरक बाबा छला। जे बाबा अपन संतानमे सुसंस्कार भरैत अछि। हँसैत तमसाइत नीक बेजाए बुझबैत अछि। संसारक कोमलता कठोरताक ज्ञान करबैत अछि। जीबाक ढंग सिखबैत अछि। हाथी घोड़ा बनिक' पोता-पोती के पीठ पर चढ़बैत अछि। मुँह-कान बना क', नाचिक' संतानक मनोरंजन करैत अछि। गलती भेलापर कानो ऐंठैत अछि।

बाबाकें बहुतरास बात पसिन्न नहि छलनि। ओ ककरो छोट नहि बुझैत छला। ककरो पैघत्वक कारणें मोजर देब ओ नहि जनैत छला। ओ अपना समाने सभकें बुझैत छला। एक्कोरती घमण्ड हुनका बरदास्त नहि रहनि। बड़का बड़काक घमण्ड तोड़ै लेल ओ मारुक कविता सभ लिखैत छला। बाबाके ककरो डर नहि छलनि। कियो होथि, नेता, धनीक, अफसर, पण्डित, सभकेँ समाजक दिससँ ओ चेतौनी दैत छला। समाजक लेल, गरीबक लेल ओ ककरोसँ भीड़ि सकैत छला। अपन कविताक अचूक व्यंग्य वाणसँ बेधि सकैत छला। बाबा गरीब आ विपन्नक मित्र छला। समाङ छला।

बाबाकें गाछ बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि। मेघ देखि क' ओ उमंगमे नाच' लागथि। अगहन मास हुनका प्रिय रहनि। अगहन मासमे धान होइ छै। अगहनमे सभ जन, मजूर, किसानक घर अन्नसँ भरि जाइ छै। पोखरि, माछ, मखान बाबा के बड़ नीक लगनि। असलमे बाबा एकटा खेतिहर छला। खेत हुनका मोनमे रचल बसल छल।

कोदारि, खुरपी, हर, खेतीमे काज आब' बला औजार सभ ओ कहियो नहि बिसरि सकला। ओ अपन कवितो लिखबकें खुरपी चलायब कहथि। कोदारि नहि त खुरपीये। नहि खेत कोड़ल होइये तँ खुरपीसँ कमैनी त' होइये। खढ़ पात हेंठ कयल त' होइये। कनियो दूरक माटि पलटल तँ होइये। छोट छोट नवजात गछुलीकें स्वस्थ सुन्दर बनेबाक उपक्रम तँ कयल होइये। ओकरामे नवजीवनक संचार तँ कयल होइये। यैह नवजात गछुली विशाल बृक्ष बनत। धरतीक सुन्दरता बढ़ाओत। बाबा सुन्दर धरती चाहैत छला।

बाबा सुन्दर मनुक्ख सेहो चाहैत छला। एहन मनुक्ख जे ककरोसँ घृणा नहि करय। ककरो अस्पृश्य नहि मानय। संसारक हरेक वस्तु बाबाकें सुन्दर ओ सार्थक लगैत रहनि। ओ भेद-भाव, वर्ग, जाति नहि चाहैत छला। ऊँच नीचक भावनासँ ओ एकदम फराक रहथि। समाजमे सभ कियो समान हुअय। सभकें अपन जीवन अपना ढंगसँ जीबाक अधिकार होइ। जीवनमे संघर्ष के ओ सर्वोपरि मानैत छला। वर्ग-भेद देखि ओ तमसा जाथि। कोनो मनुक्खकें दोसराक शोषण-दमन करैत देखि हुनकामे प्रतिहिंसा जागि जाइन। बाबा अगियाबेताल भ' जाथि। हुनकर अनेकानेक कविता सभमे ई बात कियो देखि सकैत अछि। भरि जीवन हुनकामे ई विचार बनल रहलनि।

बाबाके दूटा मोन नहि छलनि। एक्केटा मोन रहनि। आचार आ विचारमे कोनो भेद नहि रहनि। सोचलहुँ किछु, बजलहुँ किछु आ केलहुँ किछु, एहन लोक नहि छला ओ। एहने लोक आइ काल्हि सभ तरि फड़ि गेल अछि। जेकर बातक कोनो ठेकान नहि होइत छैक। करत किछु आ बाजत किछु, मुदा बाबाकें से पसिन्न नहि छलनि। ओ जे बात सोचै छला से मोनसँ करैत छला। सैह बात बजितो छला। से कविता हो, उपन्यास हो आ कि आन कोनो रचना हो। मंच पर भाषण देबाक हो आ कि जीवनमे व्यवहार हो। सभठाम एक रंग रहथि बाबा। बाबा गिरगिट सन रंग नहि बदलि सकैत छला।

पण्डित सभ कतेक तरहक चश्मा लगाक' हुनका देखलनि। सभ अपन अपन छहरदेबालीक भीतर ठाढ़ भ' क' हुनका भजियबैत छला। आइयो देखैत रहैत छथि। सभ अपनामे बाबा के मिलब' चाहैत अछि। बाबाक नाम ल' क' अपन झंडा पतक्का ऊँच कर' चाहैत अछि। बाबाके अपन बनब' चाहैत अछि। हुनकर मुइलाक बाद ई काज आर बेसी जोरसँ भ' रहल अछि। सभ बाबाके पकड़ि अपना के ऊँच कर' चाहैत अछि। बाबा सन अपनाकें कह' चाहैत अछि। मुदा बाबा ककरो पाँजमे नहि आबि रहल छथिन। कतहु ने कतहु अधिकांश के गर' लगैत छथिन। लोक इस इसो करैत हुनका भरि पाँज पकड़' चाहैत अछि। मुदा बाबा त' विपन्न लोकक हेंजमे मुसकुराइत ओहिना ठाढ़ रहैत छथि। ओहि हेंज धरि पहुँचबाक साहस बहुतो के नहि होइत छैक। लोकक नाटक असफल भ' रहल छैक। अपन समाङक बीचमे ठाढ़ बाबा हँसैत रहैत छथि। खिलखिल...खिलखिल।

सौंसे भारतमे बाबाक हजारो परिवार रहनि। हजारो परिवारमे बाबा अपन यात्रामे रहल छला। दिनसँ मास धरि। परिवारक हरेक सदस्यक ओ बाबा रहथि। स्त्री आ नेना सभक त' ओ खास लोक छला। एकदम अप्पन लोक। जेकरा ओ अपन सुख दुख कहि सकैत अछि। बाबा सभकें नीक बात सिखबैत रहथिन। बच्चा सभ संग ओ संगतुरिया बनि क' खेलाइत रहथि। गृहिणी सभकें घर सुन्दर बनौनाइ सिखबैत रहथि। तरकारी तीमन बनौनाइ सेहो सिखबथिन। शिक्षा दीक्षामे अपन सुझाव देथिन। नोकरी चाकरी खेती पथारी मादे कोनो समस्याक समाधान करथिन। लोक हुनकर बात ग'रसँ सुनय, मानय। आइ काल्हि जखन लोक अपनेमे जीब' चाहैये। आन परिवारमे रहबामे असुविधाक अनुभव करैये। अपने बिछान नीक लगै छै। अपने तकिया पर नींद होइ छै। खेबा पीबाक अपन खास रंग ढंग भ' गेल छैक। तखन सोचियौ, बाबा कोना एतेक भिन्न-भिन्न परिवारमे रहि जाइत छला? कतेक जाति, कतेक वर्ण, कतेक संस्कृतिक बीच बाबा अपन लोक भ' क' जीबैत छला। जीबाक ई ढंग बाबा के कत'सँ अयलनि? अपन समाजक सँभ्रान्त, द्वीप सन बनिक' जीब बला लोककें बाबाक जीबाक ढंग चकबिदोर लगबैत अछि। बाबा अबोध बच्चा जकाँ स्वयं अपनाके बेसी क' कय नहि बूझैत छला। अपन समान सभकें बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कत्तहु आनठाम नहि अछि। एहने लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छला।

बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला। एहिठामक धरती, लोक-वेद, नीक बेजाए, दुख, सुख सम्पन्नता, विपन्नता, संघर्ष, कुरूपता, सौन्दर्य सभ किछु बाबाकें मोन रहैत छलनि। कत्तहु रहथि देशमे, विदेशमे अपन मिथिलाकें ओ नहि बिसरथि। सभठाम, सभ भाषामे ओ अपन समाजक, अपन मिथिलाक बात राखथि। आनठामक लोक बाबाक लेखनीसँ मिथिलाकें फेर तेसर बेर नब आँखिसँ चिन्हलक। पहिल बेर सीताक माध्यमसँ चीन्हने छल। दोसर बेर विद्यापतिक आँखिये देखलक। परिचय पौलक। मुदा हमरालोकनिक दुर्भाग्य अछि जे बाबाकें एहिठामक मुँहपुरुष लोकनि नहि चिन्हलनि। अपना समाजक ठीकेदार नेता, सँभ्रान्त लोक, अगुआ कहाब' बला सभ दाँततर आंगुर काट' लगला जखन सौसें देशक अखबार, पत्रिका, रेडियो, टी. वी. बाबाक देहावसान पर हुनकर चर्चा केलक। हुनका संग अपन मिथिलाक चर्चा केलक। ओना कहू त' इहो कोनो अनर्गल बात नहि थिक। बाबा हिनकालोकनिक लोको नहि छला। इहो सभ बाबाक लोक नहि छथि। बाबाक लोक त' मिथिलाक विपन्न दलित किसान सभ छथि। जे बाबाक दाहसंस्कारमे हजारक हजार संख्यामे नोर भरल आँखिसँ हुनका अन्तिम बिदाइ देलथिन। जिनका लेल बाबा सभ दिन लिखैत रहला। बजैत रहला। जिनका बीच रहब बाबाके सभ दिन पसिन्न छलनि। जिनकर जकाँ रहब, जीवन जीयब बाबाक पहिचान बनि गेल अछि।

बाबा यात्री छला। यात्राक एखनहुँ अन्त नहि भेल अछि। भने शरीरे ओ हमरा

लोकनिक बीच नहि छथि। ओ बहुत रास कलम लगा गेल छथि। बीया सभ छीटि गेल छथि। आइ ने काल्हि ई बीया धरती तरसँ जनमत। लगाओल कलम विशाल वृक्ष बनत। फड़त फुलायत। बाबा पुरैनिक पात पर बैसल सभ के देखैत रहता। बाबा मखान हेता। माछक आँखि सन कोनो बच्चाक आँखिमे तकता। दनूफक फूल सन कोनो बहीनकें सिनेह बिलहता। जेठक जरैत दुपहरियामे कोनो हरबाहक कण्ठ शीतल करता। मशीनसँ थाकल कोनो मजूरक घाम पोछता। कोनो लोकगीत सन श्रमजीवी मनुक्खकेँ ऊर्जासँ भरि देता। दलित प्रताड़ितकें एकजुट भ' संघर्ष लेल ललकारा देता। यात्रीक यात्रा एहिना चलैत रहत।

बाबा हमरालोकनिक लेल 'यात्री' छथि। मुदा सौसें देशक लेल 'नागार्जुन' सेहो छथि। सौसें भारत हुनका यात्री नागार्जुन नामे जनैत अछि। हुनकर नाम किछु रहनु। ओ सभक आत्मीय छथि। एहेन आत्मीय लोक दुनियामे कम्मे होइत अछि। एहन आत्मीयता हुनकामे कत'सँ अयलनि? अपन लोक संस्कृतिसँ। मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। ई आत्मीयता हमरालोकनिकें बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

प्रवासी, नवम्बर 2000

रूप तत्त्वक सचेत कथाकार

प्रो. उमानाथ झा अपन कथा-संग्रह 'रेखाचित्र'मे कहैत छथि, 'चारि ढाकी कहबाक नहि अछि-एक मौनी मात्र। बुच्चीदाइलोकनिक समक्ष उपस्थित भेल छी, परन्तु हुनका अनरसाक हिसख, मलपुआ रुचिकर, ऐहबक फड़ ओ बगेयासँ परिचय, बिस्कुट-सएण्डविच-केक नीक लगतैन्ह? के कहय? मएदा, आँटा, घी, चिनी-ई सभ वस्तु तँ परिचित केवल बनएबाक विधि भिन्न। तेँ धृष्टता कएल। नीक लगैन्ह तँ आओरो भेटतैन्ह। नहि नीक लगैन्ह तँ दोष सोड़हो आना हमर-केक ओ बिस्कुटक नहि।'

स्पष्ट अछि जे प्रो. झा तहिया अर्थात् 1950मे केक ओ बिस्कुट ल' क' उपस्थित भेल रहथि। आशंका मुदा रहनि जे बुच्चीदाइलोकनिकेँ ई नव वस्तु रुचतनि की नहि? किएक त' हुनका सभकेँ अपन पारम्परिक पकवान जानल छलनि। पारम्परिके पकवान रुचितो छलनि। केवल बनयबाक विधि भिन्न भेलासँ वस्तुओ भिन्न भ' गेल छल। कत' मलपुआ आ कत' केक! कत' अनरसा आ कत' बिस्कुट? मुदा प्रो. झा अपरिचित विधिसँ बना क' अपिरिचित वस्तु तहिया किए ल' क' अयला। कोन एहन बाध्यता रहनि? किएक ओहेन रिस्क लेलनि? की रूप परिवर्तन लेल? खाली पाश्चात्य शिल्पक आकर्षण मे? आ कि जे बात हुनका कहबाक रहनि से बिना रूप परिवर्तनक सम्भवे नहि छल? जाहि लोकक खिस्सा, जाहि जीवनक कथा ओ सुनब' चाहैत छला से की पारम्परिक रीतिएँ कहल जा सकैत छल? हमरा जनैत नहि कहल जा सकैत छल। जीवन बदलि रहल छल। समाज परिवर्त्तित भ' रहल रहय। व्यक्तिक मानसिकता सेहो ताही संग बदलि रहल छल। स्वाभाविक रूपें कथाक अन्तर्वस्तु परिवर्तनशील आ विकासशील रहय। तैं ओहि अन्तर्वस्तुकेँ प्रस्तुत करबाक लेल नव रूपक आवश्यकता अनिवार्य भ' गेल।

प्रो. झाक 1942मे लिखल कथा अछि 'मकर'। एकटा नेना रामफल मकरक मेलामे जाय चाहैत छल। मकरमे कठपुतरीक नाच देख' चाहैत छल। एक पाइक लाइ, दू पाइक जिलेबी, एकटा पिपही कीन' चाहैत छल। बिचला तीन मकर तँ दुखित रहबाक

कारणे नहि जा सकल। स्वस्थो भेला पर चारिम मकरमे बाप नहि जाय देलथिन किएक त' रस्ता महक गाम बिगड़ल छलैक। एकटा कौआ मरि गेल रहय। जीयत त' अगिला साल देखि लेत। मायक अनुनय-विनयक कोनो प्रभाव बाप पर नहि पड़लनि। रामफल कतबो कोशिश केलक। मायक कोँचा ध' ठुनकल। ओकर भभटपनसँ मायक क्रोध, दुख, अभिमान सभ जागृत भ' गेलनि। रामफलकेँ थापड़, मुक्का लगलैक। एहन दिन पहिनहुँ होइत रहैक मुदा ओहि दिन रामफलक आत्मविश्वास नष्ट भ' गेलैक। ओकर कोमल मस्तिष्क पर माय-बापक व्यवहारसँ मनुष्यक प्रति सन्देहक दृष्टि जनमि गेलैक। आइ ओकर कोनो अपराध नहि रहैक। प्रकृतिक विचित्रता देखि ओ अत्यन्त विस्मित भेल। परन्तु करितय की? तेँ ओ अन्तर्हित भ' गेल अर्थात् भड़ारक असोरा पर राखल खाली ढाड़मे पैसि गेल। संसारसँ नुका लेलक अपनाकेँ। आब रामफलक खिस्सा कहबाक लेल ओकर आक्रोश, सेहन्ता, मानसिक आघात, दुख, दुखक परिणाम सुनेबाक लेल पुरना ढाठिक आख्यायिका, कथाक संरचना, स्थापत्य आ शिल्प यथेष्ट छल? की कथाक मूल अभिप्रायक अभिव्यक्ति पुरना रीतिएँ अथवा पारम्परिक रूपमे सम्भव छलैक? हम सभ जनैत छी जे पुरना कथा आ आख्यायिका-साहित्य अभिप्राय विशेषक अभिव्यक्ति करैत अछि, चाहे ओ अभिप्राय धर्मकेँ विषय बना निर्मित भेल हो अथवा लोक-जीवनकेँ विषय बना लिखल गेल हो। एहि अभिप्राय सभक अंकन हेतु आख्यायिका आ कथामे किछु रूढ़ि बनि गेल छल, समयानुसार ई सभ आकस्मिकता सभमे बदलि गेल और कथामे घटना-संयोग नाम पर स्वीकृत भ'गेल।[1] मुदा प्रो. झाकेँ 'मकर' कोनो घटना संयोग पर नहि लिखबाक छलनि। हुनका जे लिखबाक छलनि, ताहि लेल कथाक रूप बदल' पड़लनि। साहित्यक रचनामे रूपक दू प्रकार होइत अछि। एक रूप ओ थिक जे अन्तर्वस्तुक परिवर्त्तनक बावजूद अपेक्षाकृत स्थायी होइत अछि। एकरा साहित्यमे विधा कहल जाइत अछि। रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप अन्तर्वस्तुकेँ प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। एहि कारणेँ ओ अन्तर्वस्तुक संग परिवर्त्तनशील और विकासशील होइत अछि।[2] साहित्यमे विधा जेना-कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य आदि अपेक्षाकृत स्थायी मानल गेल अछि। मुदा ओहो विकसित होइत अछि। ओकरो ह्रास होइत छैक। कोनो-कोनो विधा त' लुप्त सेहो भ' जाइत अछि। आधुनिक कालमे जेना चरित काव्यक परम्परा लुप्त जकाँ भ' गेल। जकाँ एहि कारणे जे मैथिलीमे एकरा एकदम लुप्त नहि कहल जा सकैये। कखनो कियो कोनो राजाक फूसि-साँच चरित्रक अतिरंजित चित्रणक संग उपस्थित भ' सकैत छथि। कोनो देवताक प्रशस्तिकाव्य त' हेबनियोमे भेटि सकैत अछि। दोसर प्रकारक रूप जेना रचनाक शिल्प, टेकनीक आदि लगभग सभ विधामे बदलल अछि। विकसित भेल अछि। कथा, कविता, नाटक, उपन्यास सभ मे। महाकाव्य त' आधुनिक कालक विधे नहि मानल जाइये तेँ ओकर चर्चा नहि कयल। ओकर विकासक गप्पक कोन प्रयोजन? ई फराक बात थिक जे विभिन्न कारणेँ आइयो

कतेक महाकाव्य, खण्डकाव्य पढ़ल जाइये-सुनल जाइये, पुरस्कृत कयल जाइये। भारतीय वाङ्मयमे मुदा प्राचीने कालसँ कथा एकटा लोकप्रिय विधाक रूपमे मान्य रहल अछि। संस्कृत साहित्यमे कथानक, पात्र, उद्देश्य, वर्णनशैली, गद्यपद्यक अभिव्यक्ति-माध्यम इत्यादिक आधार पर कथाक अनेक प्रकार ओ भेदोपभेदक विकास भेल। आचार्य हेमचन्द्र अपन 'काव्यानुशासन' नामक ग्रन्थमे परिभाषा ओ उदाहरण—संकेत दैत कथाक दस गोट प्रभेद-आख्यान, निदर्शन, प्रवटिका, मतल्लिका, मणिकुल्या, परिकथा, खण्डकथा, सकल कथा, उपकथा आ वृहत्कथाक उल्लेख कयने छथि।[3] मुदा आधुनिक कालमे कथाक रूपमे जाहि विधाक विकास भेल से पाश्चात्य साहित्यक देन थिक। आधुनिक कालमे मैथिलीक पहिल कथा जनार्दन झा 'जनसीदन' क 'ताराक वैधव्य' मानल जाइत अछि। एकर प्रकाशन मिथिला-मिहिरमे 1917 ई.मे भेल। अनमेल विवाहक सामाजिक समस्याकेँ उठबैत, कारुणिक अन्तसँ पाठकक संवेदना जगायब लेखकक अभीष्ट छनि। कथाक शिल्प ओहीक अनुरूप अछि। 1931-40 क दशकमे बहुत कथा एहि तरहक लिखल गेल। कथाकारलोकनि पूर्वसँ चल अबैत सामाजिक समस्या खासक' विवाहजन्य कुपरिणामकेँ कथाक आधार बनौलनि। किछु कथा स्वतंत्रता आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर सेहो लिखल गेल मुदा परिणाममे सुधारवादी कथाक बाहुल्य छल। एहि अवधिक करीब-करीब सभ कथा भावुकतासँ ओत-प्रोत रहय। सुधारवादी कथाक लेल ब्रह्मसमाज, आर्यसमाजक चलाओल आन्दोलनक संग मैथिल महासभाक निदेश सभ सेहो कथाकारकेँ प्रेरित केलक। मुदा कथामे रूपक नवीनता बहुधा दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। तथापि उद्देश्यमे सामाजिक सुधार आ तत्कालीन बोधक कारणे कुमार गंगानन्द सिंह, काली कुमार दास, कांची नाथ झा 'किरण', श्यामानन्द झा, श्रीवल्लभ झा, हरिनन्दन ठाकुर, 'सरोज' क कथा सभ पाठकक ध्यान आकृष्ट केलक।

मैथिली कथा-कोशक अनुसार वर्ष 1908-10 ई. क बीच तीनटा कथा प्रकाशित भेल। वर्ष 1911सँ 1920 क बीच कुल नौटा कथा निकलल। 1921-30क अवधिमे उन्तीसटा नव कथा आयल। 1931सँ 40क बीच एक सए तैंतीसटा कथा प्रकाशित भेल। मुदा 1941-50 अवधिमे दू सए एक्कानबेटा कथा आयल। एहि अवधिक बादे कथाक प्रकाशन दोबर-तेबर होइत गेल। मुदा से 1980 धरि चलल। 1971-80क बीचमे चौबीस सए उन्हत्तरि नव कथा प्रकाशित भेल अछि। ई दशक एखन धरि सभसँ बेसी नव कथा प्रकाशनक दशक बनल अछि। कथा-कोशक निर्माता डॉ. मेघन प्रसाद 1991सँ 1995 धरि छौ सए पनचानबे टा कथा प्रकाशित हेबाक सूचना दैत छथि। कोनो हिसाबें जोड़ैत छी त' शताब्दीक अन्तिम दशकमे कुल प्रकाशित मैथिली कथाक संख्या हजारसँ बेसी नहि होइत अछि। कथा लिखबसँ ल' कय प्रकाशन धरि 1980 क बाद मैथिली कथाक संख्या घटल अछि। एकर कारण बहुत भ' सकैत अछि। मुदा मिथिला-मिहिरक बन्द होयब सभसँ प्रमुख अछि। कथा-कोशमे देल सूचना पर जँ ध्यान देल जाय त'

ई सहजें स्पष्ट भ' जायत जे 1941-50क दशक मैथिली कथाक प्रकाशनमे गति ओ उछाल अनलक। प्रो. उमानाथ झा ओही दशकमे अपन ऐतिहासिक योगदान द' रहल छला। परन्तु ई एक तथ्य थिक जे मिथिला मिहिरमे हुनकर कोनो कथा नहि छपल अछि।

1941-50क दशक नहि केवल संख्यामे वृद्धि लेल अपितु कथाक गुणात्मक विकास लेल सेहो उल्लेखनीय अछि। एही दशकमे आबि क' मैथिली कथाक प्रवृत्तिमे परिवर्तन आयल। तकनीक आ शिल्पक दृष्टिसँ सेहो कथा आधुनिक भेल। मैथिलीमे आधुनिक कथाक धार मजरल। प्रवृत्तिक आधार पर कथा अनेक उपधारामे बँटल। प्रो. हरिमोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग' एहि अवधिमे आयल। एही कालखण्डमे लिखित उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' क कथा 'रूसल जमाय' (मिथिला मिहिर, 25.8. 1945)केँ डॉ. जयकान्त मिश्र मैथिली कथा साहित्यक विकासमे प्रस्थान-बिन्दु मानल अछि। 'रूसल जमाय' आधुनिक शिल्पेक कारणे प्रस्थान-बिन्दु बनल अछि। रूसल जमायक मोनमे चलैत राग-अनुराग-विराग आ आत्मसम्मानक संघर्ष एकदम पारदर्शी भ' गेल अछि। व्यासजीक 'बकरी' आ नगेन्द्र कुमारक 'ससरफानी' कथा एही अवधिमे आयल। कुमार गंगानन्द सिंहक 'बिहाड़ि' योगानन्द झाक 'आम खयबाक मुँह', मनमोहन झाक 'बोटिब्स' क अतिरिक्त प्रो. उमानाथ झाक 'आध घन्टा' आ 'ओहि दिनक यात्रा', 'दीक्षान्त समारोह', 'बुधनी', 'प्रहेलिका', 'गल्प नहि गप्प', आदि कथा ओही अवधिमे निकलल जे बादमे 1950मे 'रेखाचित्र'मे संकलित भ' प्रो. झाकेँ कथाकार रूपमे स्थापित केलक। एहि अवधिमे आबि क' मैथिली कथाक लगाम अंग्रजीदां लोकक हाथमे आबि गेल। एक आधटा अपवाद छोड़ि अधिकांश कथाकार अंग्रजी शिक्षापद्धतिमे दीक्षित छला। हरिमोहन झा, नगेन्द्रकुमार, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', उमानाथ झा, योगानन्द झा, अमरनाथ ठाकुर, मनमोहन झा आदि कथाकारकेँ संस्कृतक अपेक्षा अंग्रेजी, बंगला ओ हिन्दी कथाक सान्निध्य बेसी प्राप्त छलनि। जकर स्पष्ट प्रभाव हिनकालोकनिक कथा-लेखन पर पड़ल।[4] एही कालावधिमे 'धर्मरत्नाकार' (कांची नाथ झा 'किरण') अछि त' 'वृहस्पतिक शेष' (सुरेन्द्र झा 'सुमन') सेहो अछि जे क्रमशः जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध उठैत आक्रोश तथा दाम्पत्य जीवनक माधुर्य आ रसज्ञता ल' कय दू भिन्न प्रवृत्तिक कथा लेखनकेँ जनम देलक। संस्कृत साहित्यमे प्रेम आ सौन्दर्यक जे उदात्त रूप भेटैत अछि तकर प्रभाव व्यासजी आ सुमनजीक कथा लेखनमे देखल जा सकैत अछि। मुदा से अंग्रेजिया कथाकारक कथामे नहि अछि। अंग्रेजिया कथाकारक कथामे प्रेम ओ सौन्दर्यक उत्स नारी देह थिक।[5] सेक्सक प्रति पाश्चात्य दृष्टि खासक' फ्रायडक मनोविज्ञान अंग्रेजिया कथाकारलोकनिकेँ बेसी प्रभावित केलक। मोनक भीतर पैसबाक प्रवृत्ति बढ़ल। ई स्वाभाविक छल। भोगकेँ देहसँ दिमाग धरि जेबामे एहिसँ सहायता भेटलैक। मुदा पारम्परिक सौन्दर्य-बोधक स्थान पर आधुनिक दृष्टि-बोध मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ स्वरूपमे व्यापक परिवर्त्तन अनलक।

जीवनकेँ देखबाक नजरि सेहो बदलि गेल। दृष्टि-बोधमे परिवर्त्तन मार्क्सक द्वन्द्ववाद ओ अर्थ पर आधारित वर्गवादसँ सेहो आयल। प्रखर रूपमे से अगिला दशक अर्थात् 1951-60क दशकमे आबि क' चिन्हार भेल। ठीक पछिला दशकमे मुदा विधा आ टेकनीक दूनू रूपमे आधुनिक मैथिली कथाक न्यों पड़ि गेल।

जेना ऊपर कहि आयल छी अन्तर्वस्तुक संग रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप परिवर्त्तित ओ विकसित होइत अछि। ई बदलैत अन्तर्वस्तुकेँ प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। मैथिली कथा रचनामे लगातार एहि रूपक परिवर्तन ओ विकास होइत गेल अछि। यैह कारण अछि जे कथामे रिपोर्ताज, रेखाचित्र, डायरी, व्यक्ति-चित्र, शब्द-चित्र आदि उपरूप विकास क्रममे आयल। पहिने ई उपरूप सभ फराक-फराक सेहो छल। एखनो अछिये। मुदा कथामे ई सभ उपरूप क्रमशः समाहित होइत गेल अछि। प्रारंभिक कालमे एहि उपरूप सभक दोखरा प्रयोग भेटैत अछि। मुदा कालान्तरमे एहि प्रयोगमे महीनी अबैत गेल अछि। ई महीनी कथाकारक संवेदनशीलता ओ कथा-शक्ति पर निर्भर करैत अछि। परन्तु कथा-परम्पराक मैथिलीमे विकासकेँ एहिसँ अकानल जा सकैये। एहि संग ई सेहो देखबाक थिक जे मैथिलीमे 'गल्प' आ 'गप्प' कहिक' सेहो कथा निकलल अछि। 'गल्प' बेरमे चुप्पो रहि कथा रूपमे 'गप्प' पर प्रश्नचिह्न लगेबाक लेल बहुत गोटे फाँड़ बान्हि सकैत छथि। मुदा गप्पकेँ शैली रूपमे स्वीकृत करबा पर बहुतक सहमति भ' सकैत अछि। गप्पक जाहि रूपक विकास मिथिलामे भेटैत अछि तकरा देखैत शैलीक रूपमे त' ई स्वीकृतिक अधिकारी अछिये। एहि गप्पक महीनी की कहल जाय। गप्प नामसँ निकलल रचना सभकेँ पढ़ि क' महीनी सीखल जा सकैत अछि। स्वाभाविक रूपसँ पूर्वज आ अग्रज कथाकारलोकनिक योगदानकेँ एहि तरहक विकासमे रेखांकित कयल जा सकैत अछि। असलमे युगबोधक कारणे आधुनिक कथाक स्वरूपमे व्यापक परिवर्त्तन भेल अछि। कथाक पुरान रूपक तुलनामे बहुत भिन्नता आबि गेल अछि। कथानकक एकदम नवरूप, अन्तर्वस्तुक नव भंगिमा आ तथ्यक इतिवृत्तात्मक वर्णनक संग व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक आ यथार्थपरक कथा-विन्यासक कारणे आधुनिक कथा पारम्परिक कथासँ स्वतंत्र देखाइत अछि। मुदा धीरे-धीरे मैथिली कथा अपन आधुनिक रूपकेँ अक्षुण्ण रखैत प्राचीन परंपरासँ कथाक मौलिक आ सार्थक तत्त्व सभकेँ समेटि रहल अछि। पारम्परिक कथा प्रवाह, कथनशैली, अन्य चुम्बकीय गुण सभ क्रमशः मैथिली कथामे अबैत गेल अछि। आब त' शिल्पक दृष्टिसँ लोककथाक सादगी आ बोधकथाक पारदर्शिता सेहो कथाकार लोकनिक नजरिमे आबि रहल छनि। मुदा प्रारंम्भिक कालमे प्राच्य आ पाश्चात्य शिल्पक देखार अन्तर दूनूक बीचक दूरीकेँ एकदम जगजियार क' देने छल। तेँ आधुनिक कथा एकदम अपरिचित सन लगैत रहय। भिन्न कोटिक बुझाइत छल। प्रो. उमानाथ झाक कथा-संग्रह 'अतीत'मे डॉ. मदनेश्वर मिश्र लिखलनि जे 'उमानाथ बाबू कथाकारक ओहि वर्गमे अबैत छथि जे पाश्चात्य साहित्यक कथाक

टेकनीक तथा शैलीसँ प्रभावित भ' 1940क बाद मैथिलीमे कथा लिखब प्रारम्भ केलनि। 'रेखाचित्र'मे संगृहीत कथासँ ई स्पष्ट भ' गेल जे उमानाथ बाबूक कथा मैथिली साहित्यमे लिखल जाइत कथा सभसँ भिन्न कोटिक होइत अछि। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मनश्चेतनाक अन्तरालसँ प्रवाहित धारा तथा पूर्वदीप्ति इत्यादि जे नवीन तकनीक कहबैछ तकर प्रयोग सभसँ पहिने इएह मैथिली कथामे कयलनि। उमानाथ बाबूक कथा चिन्तनप्रधान एवं दार्शनिक कोटिक होइछ जाहिमे परम्परागत कथातत्त्व जेना कथानक, चरित्र-चित्रण एवं घटनाक लोप जकाँ भ' जाइत अछि। मनोविश्लेषणक एहि तरहक प्रभावी प्रयोग आइ तक आन केओ कथाकार मैथिलीमे नहि क' सकलाह अछि। कथामे पात्रक अन्तर्द्वन्द एवं संघर्षक चित्र बहुत सहज, सरल एवं स्पष्ट भाषामे करबाक हिनक क्षमता अपूर्व अछि।'

निर्विवाद रूपेँ कथामे कथापन आ कथाकारमे कथा-शक्ति ओ पाठकक चिन्ता रहब जरूरी होइत अछि। कथाक रूप, शिल्प टेकनीक सभ निरर्थक भ' जायत जँ कथा अपन अभीष्टक प्राप्ति नहि क' सकय। ओकर कथ्य, अभिप्राय जँ पाठक धरि नहि पहुँचल त' कथाक सार्थकता सन्देहास्पद भ' जाइत अछि। रूप आ शिल्पक कोनो नव प्रयोग कथाक अभीष्ट प्राप्तिमे सहायके भ' सकैत अछि। प्रारम्भमे मैथिली कथा आस्वादपरक तकर बाद भावपरक आ बोधपरक होइत गेल अछि। क्रमशः सांस्कृतिक सन्दर्भ सेहो ओहिसँ जुड़ैत चल गेल। ई नहि कहल जा सकैत अछि जे आस्वादपरक कथा आइ नहि लिखाइत अछि अथवा आस्वादपरकता कथाक एक गुण रूपमे आइ सम्पूर्णतया रहक' देल गेल अछि। तहिना ईहो नहि कहल जा सकैये जे भावपरक वा बोधपरक कथा पूर्वमे नहि आयल अथवा कथासँ सांस्कृतिक सन्दर्भ नहि जुड़ल रहैत छल। कथात्मक स्तर, भाव आ बोधक स्तर और सांस्कृतिक स्तर पर चलैत कथा पूर्वहिंसँ पाठककेँ भेटैत रहल अछि। तेँ अभिप्राय आ अभीष्टक स्तरपर कथाकारक दृष्टिमे विकाससँ पाठकक एक जागरूक वर्ग आब तैयार भ' गेल अछि। भले ही एकर संख्या कम हो मुदा ई वर्ग मैथिली कथाक अपन पाठक कहा सकैये। ई पाठक वर्ग कैक स्तर पर एक संग चलैत कथाक आनन्द सेहो संवदेनाक स्तर पर ल' सकैये। मैथिली कथामे ई विकास पाठकक चिन्तासँ भेल अछि। पाठकक ई चिन्ता प्रो. झाकेँ शुरुहेसँ रहलनि अछि, भनहि हुनकर दृष्टि आस्वादपरक रहल हो मुदा कथा पाठके लेल होइत अछि से ओ बुझैत छला। अपन कथा 'ओहि दिनक यात्रा'मे ओ लिखलनि—

'एहि भूमिकाक अर्थ अहाँ बूझि गेल होयब। पटना-गयाक ट्रेनमे जाहि अपरिचिताकेँ देखि क' हम प्रभावित भेल रही तकरा मसूरीमे अपन हृदयक सिंहासन पर बैसाओल। अहाँकेँ मोनमे होयत जे 'बम्बइ टाकीज' क फिल्म देखि रहल छी। ठीक, मुदा हम की करू, जँ प्रेमक निन्दा करू तँ लोक कहैए-बड़ जमबैत छथि। गल्पमे प्रेमकेँ स्थान नहि दैत छिये त' गल्प लोककेँ 'फिक्का' बूझि पड़ैत छै। जीवनक दुःखके मुकुरित

करबाक चेष्टा करू तँ सभ कहै छी जे गल्प लोक पढ़ैए मनोरंजनक हेतु, मोनके घोर करबाक हेतु नहि। तखन?'

स्पष्ट अछि जे कथाकार पाठककेँ अपन दृष्टिपटलसँ कखनो नहि हटबैत छथि। पाठककेँ दृष्टिपटलसँ कात नहि करबाक परम्परा मैथिली कथाकारमे एहि प्रकारेँ शुरूहेसँ रहल अछि। मुदा तकरे संग प्रयोग काल बहुधा पाठककेँ बिसरि जेबाक झोंक सेहो रहल अछि।

पाठकक संगहि प्रो. झा टेकनीक आ शिल्पक प्रति सेहो सभ दिन सचेत रहला अछि। मैथिलीमे नव टेकनीकक कथामे प्रयोगक कारणे ओ खूब ख्याति अर्जित कयलनि। मुदा हुनको बादमे नव टेकनीकक व्यापक प्रसार आ पाठकक एहिसँ सुपरिचयक बाद ओकर आकर्षण कम भ' जेबाक तथ्य अज्ञात नहि रहलनि। अपन कथा संग्रह 'अतीत' क प्राक्कथनमे ओ कहलनि जे, 'ओहि समय जे नवीन छल से आब नवीन नहि रहल। तेँ शिल्प वा प्रविधिक दृष्टिएँ वर्त्तमान कथा-संग्रहमे पाठककेँ कोनो नवीनता भेटबाक सम्भावना कम। तेँ जँ एक दिस 'अतिपरिचयादवज्ञा' क भय तँ दोसर दिश नवीनक अविश्वास भयमुक्ति।' प्रो. झा स्पष्टतः स्वीकार केलनि अछि जे 'वर्त्तमान शताब्दीक चारिम दशकमे जखन एहि पंक्तिक लेखक लघुकथा लिख' लगलाह तँ आधुनिकता अनुसन्धानमे योरोपीय-विशेषतः अंग्रेजी-कथा साहित्यसँ प्रेरित भेलाह। परिणाम—'रेखाचित्र' क लघुकथा सभ जे ओहि समय अंग्रेजी साहित्यसँ अपरिचित पाठककेँ नवीन बुझि पड़लनि।'

प्रो. झाकेँ जखन एहि नव टेकनीकक आकर्षण कम भ' जेबाक तथ्य ज्ञात भेलनि त' ओ अपन 'अतीत' कथा-संग्रहक कथा सभमे कथा कहबाक रीति-ढंग बदलबाक कोशिश सेहो केलनि। कथा सम्बन्धी सिद्धान्तक अनुसार जँ कथा-विधानकेँ दृष्टिविन्दुक स्तरसँ देखल जाय तँ ओकर दू प्रकारक अवधारणा अछि। ई दुनू प्रकारक अवधारणा कथाक पूरक पार्श्वकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। ई दुनू पार्श्व अछि कथाकेँ जान'वला और कथा कह' वला। आधुनिक विद्वान् एकरा कथावाचक कहैत छथि। कथाक आधारभूत तत्त्वक रूपमे एहि वाचन-स्थापत्य (Voice Structure)क विशद और रेखांकन सहित विवेचन एलेन टेट अपन शिल्प सम्बन्धी टिप्पणीमे केलनि अछि।[6] मोटामोटी प्रथम पुरुष कथावाचक आ सर्वज्ञ कथावाचक रहरहाँ आधुनिक कथामे भेटैत अछि। प्रो. झा 'अतीत' के कथा सभमे कथावाचक आ कथा-भूमिक स्तर पर विस्तार केलनि। मुदा अहूठाम मनोवैज्ञानिके तल पर एकर विस्तार भेल अछि। कथा-संग्रह 'अतीत'मे 'सबरंग पटिया' आ 'प्रायश्चित्त' नामक कथामे टूटा गप्पीक खिस्सा कहल गेल अछि। 'सब रंग पटिया'मे गप्पी एकसँ एक रोचक अनुभव सुनबैत छथि। मुदा एही संग एकटा दुखद घटना सेहो सुना जाइत छथि। घटना एकदम यथार्थ छल। गप्पे-गप्पमे मार्मिक यथार्थक उद्घाटनसँ अभिनयकुशल गप्पीक सृजित हास्यमय वातावरण गम्भीर भ' जाइत अछि। 'प्रायश्चित' क गप्पी त' आशु-कथाकार छथि।

लोक कहनि रामबाबू गप्पक खेती करैत छथि, गप्प हँकैत छथि, फँचारि छथि, फुसियाह छथि। राम बाबू मुदा अपन मित्रमण्डलीक मनोरंजनार्थ खीसा कहैत छला, अपन कलाक प्रचार हुनक उद्देश्य नहि छलनि। एही खीसा सुनेबाक हिस्सकक बीच एकटा दुखद घटना भ' गेल। एक युवक-युवती आत्महत्या क' लेलक। ओहि मृत्यु आ खिस्सा सुनेबामे कोनो सम्बन्ध नहि छल तथापि से सोच रामबाबू अपन मोनसँ हटा नहि सकलाह। ओ अपनेकेँ एकर कारण मानि प्रायश्चित्त स्वरूप भविष्यमे फेर कोनो खीसा नहि कहबाक प्रण ल' लेलनि। दूनू कथा एक दिस जत' श्रोता-पाठकक संवेदनशीलताक गप्प कहैत अछि त' दोसर दिस मनोरंजन लेल खीसा कहनिहारक संवेदनशीलताकेँ सेहो प्रकट करैत अछि। एहि प्रकारेँ प्रो. झा कथकारक कथा कहबाक आ पाठकक कथा सुनबाक प्रयोजनक संग दूनूक संवेदनशील हृदयक तथ्यकेँ सेहो रखलनि अछि। प्रो. झाक कथामे एही संग कथाभूमिक विस्तार कथामे वर्णनसँ भेल अछि। संगहि कथावाचकक आँखि पसरलासँ सेहो भूमि पसरल अछि। स्वाभाविक रूपसँ ई परिवर्त्तन कथाकारमे संवेदनाक विस्तारसँ सम्भव भेल। अही कारणें हुनक गल्पो कथा दिस बढ़ल, मुदा संवेदनाक मूल अधिकांश कथामे स्त्री-पुरुषक सम्बन्धे रहल। से दाम्पत्य जीवनक कथा 'दाम्पत्य' हो वा 'निकट वा दूर'। उच्चवर्गीय मानसिकताक दैहिक शोषणक कथा 'रामदानाक लड्डू' हो, सभमे स्त्री-पुरुषक परम्परागत सम्बन्ध पर आधुनिक वा बदलैत समयक प्रभाव-दबावक कथात्मक अभिव्यक्ति भेटैत अछि।

कोनो-कोनो कथामे जीवन रहस्यक दार्शनिक कवित्वमय पक्ष सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि तरहक कथामे कथापनक अभाव रहैत अछि। जे हो, ई कहल जा सकैये जे प्रो. झा बदलैत समयक संग कथाक रूप ओ शिल्प प्रविधिक प्रति सचेत-सचेष्ट रहला अछि। रूप ओ शिल्पक दृष्टिसँ प्रो. झाक किछु कथाक विस्तारसँ चर्चा होयब आवश्यक अछि। ओकर पाठ ओ प्रक्रिया पर विचार हेबाक चाही। एहि कार्यसँ मैथिली कथामे रूपतत्त्वक विकास पर प्रकाश सेहो पड़त। एहि दृष्टिसँ पाठ-प्रक्रिया लेल 'माधवजी' सभसँ उपयुक्त कथा अछि। तत्काल एहि काजकेँ हम मैथिलीक मान्य आलोचक लोकनिक लेल छोड़ैत छी। ई जनैत जे आलोचकमे अंग्रेजीदाँक संग मैथिलीदाँक अत्यन्त अभाव अछि। जे अंग्रेजीदाँ छथि से मैथिलीदाँ नहि। जे मैथिलीदाँ छथि से अंग्रेजीदाँ नहि। तथापि वीरसँ त' पृथ्वी कहियो खाली नहि रहैत अछि।

साहित्यमे रूपक वैचारिक आधार बनबैत जार्ज लुकाच लिखलनि अछि जे साहित्यमे रूप सामाजिक और सौन्दर्यबोधीय होइत अछि। साहित्यिक वैह समाजशास्त्र प्रामाणिक और विश्वसनीय होइत अछि जे साहित्यक रूप सम्बन्धी एहि दुनू पक्षकेँ उजागर करय। एहिमेसँ कोनो एक पक्ष तक सीमित रह' बला आलोचना अन्ततः अपूर्ण होइत अछि।[7] मैथिली कथाक प्रवृत्तिमूलक विकासक संग ओकर बदलैत रूपक विकास कथा एखन धरि नहि लिखल गेल अछि। ई जहिया लिखल जायत तहिया 1941-50क दशकमे भेल प्रयोग फड़िछा क' लोकक समक्ष आओत। तखनहि ई नीक

जकाँ स्पष्ट होयत जे ओहि दशकक कथाकारलोकनिक खास क' कय प्रो. उमानाथ झाक कथामे रूप तत्त्वक केहेन प्रयोग भेल अछि आ ओहि प्रयोगक परवर्त्ती कथा पर केहेन प्रभाव पड़ल। तत्काल एहि धारणासँ आश्वस्त भेल जा सकैत अछि जे परिमाण बहुधा गुण के संग अनैत अछि तेँ कथा परिमाणमे भेल बृद्धि गुणात्मक बृद्धि के सेहो अनलक। ताही संग एहि बातक लेल सेहो आश्वस्त भेल जा सकैत अछि जे मैथिली कथाकेँ आधुनिक बनेबाक लेल पश्चिमक शिल्प अनबाक संग प्रो. झा बुच्चीदाइलोकनिक 'टेस्ट' के सेहो ध्यानमे रखलनि। परम्पराक प्रतीक 'बुच्चीदाइ'केँ आधुनिक बनेबाक तात्कालिक चेतना संग रुचि परिवर्त्तनक चिन्ता कथाकारक सामाजिक चिन्तेकेँ प्रकट करैत अछि। एकरे संग ईहो कम आश्वस्तिदायक नहि अछि जे भनहि प्रो. झाक आशुकथाकार चरित्र प्रायश्चित स्वरूप खीसा नहि कहबाक प्रण लेलनि मुदा प्रो. झा एहि तरहक सप्पत कहियो नहि खेलनि। हुनकर कथाकार लगातार कथा कहैत रहल।

सन्दर्भ संकेत

1. *हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ-सुरेन्द्र चौधरी*
2. *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका–डॉ. मैनेजर पाण्डेय*
3. *मैथिलीक आद्यकथा (मैथिली आलोचना)–डॉ. रामदेव झा*
4. *बीजी पुरुषक भूमिका निबाहैत कथा–(अनवरत) मोहन भारद्वाज*
5. *वैह*
6. *हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ*
7. *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*

उमानाथ झा अभिनंदन ग्रन्थ, 2003

सगर राति दीप जरय आ गोविन्द झा

मधुबनी जिलाक सरिसब गामसँ धर्मपुर गामक बीचमे लोहना पड़ैत अछि। सरिसबसँ सटल मुदा कने हटल इसहपुर अछि। इसहपुरसँ धर्मपुर जयबाक लेल लोहने बाटे रस्ता छैक। लोहनाक सटले लालगंज अछि। केवल अलकतराक रोड बीचमे एकदम समानान्तर। सरिसबसँ धर्मपुरक दूरी हैत लगभग छओ कि. मी.। सरिसवसँ लोहना तीन कि.मी.। इसहपूरोसँ करीब सैह दूरी। सोझे गेला पर कने कमे, मुदा एहि सभक खेरहा कोन जरूरी अछि एहिठाम? जरूरी अछि। सरिसव मनमोहन झाक गाम थिक। 'अश्रुकण' आ 'बीरभोग्या' क कथाकार। 'रुना', 'झगड़ा', 'चाँपकली', 'मीनाक्षी' आ 'सुकेशी' सन मैथिली कथाक धराउ पटोर। कोमल बाँहि परहक जस्सन...। हिनके सम्पर्कमे गोविन्द झाकें कथाकारक बाट देखल भेलनि। धर्मपुर कथाकिरण क कथाकार कांचीनाथ झा 'किरण' क गाम। 'मधुरमनि', 'धर्मरत्नाकर', 'रुपा'...सन मैथिलीक गर्दनिक हँसुली। शृंगारक शृंगार आ विपत्तिमे काज देनिहार। किरणेजयन्तीक अवसर पर 'सगर राति दीप जरय' क निर्णय भेल। लोहना गाममे। लोहना गाम थिक डा. धीरेन्द्रक। 'मामी', 'दादी माँ' आ 'सुगरक बाप' सन कथाक कथाकारक। दरकैत आ झरकैत नेह-छोहक नगीना जड़ल औंठी। शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक आ शैलेन्द्र आनन्दक गाम सेहो थिक लोहना। कथाकार मन्त्रेश्वर झाक गाम थिक लालगंज। मुदा इसहपुर? धर्मपुर आ लोहनाक नजदीकी असगर टिमटिमाइत पण्डितक गाम इसहपुर। इसहपुर गाम थिक गोविन्द झाक। 'फूलक चोट', 'अंतिम एकन्नी' होइत 'नखदर्पण' धरि पहुँचल कथाकारक। हुनके त' गप्प करबाक अछि 'सगर राति दीप जरय' क संग...।

महाकवि गोविन्ददास एवं कथाकार डा. धीरेन्द्रक गाम लोहनामे एक दिसम्बर उन्नैस सय नबासीकेँ कांचीनाथ झा 'किरण' क जयन्ती पर जागरण-दिवस आयोजित भेल रहय। किरणजी पर चर्चा-परिचर्चाक बाद कवि-सम्मेलन भेल। कवि-सम्मेलनक बाद भोजनोपरान्त मिडिल स्कूलक हॉलमे विश्राम करैत निशीभाग रातिमे एकटा विचार जनमल। पंजाबी जकाँ 'दिवा बले सारी रात' क तर्ज पर मैथिलीमे सेहो आयोजन करबाक निर्णय भेल। आयोजनक सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर केलनि उपस्थित

साहित्यकारगण-जीवकान्त, नारायणजी, विभूति आनन्द, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, रमेश, उदयचन्द्र झा 'विनोद', शैलेन्द्र आनन्द, कुमार शैलेन्द्र आ मोहन भारद्वाज। पहिल कार्यक्रम हमरहि संयोजकत्वमे 24 दिसम्बर 1989 कें कटिहारमे राखल गेल। मुदा जेठ बहिनिक असामयिक निधनक कारणेँ ओ कार्यक्रम स्थगित करय पड़ल। फेर 21.1.1990कें मुजफ्फरपुरमे प्रभास कुमार चौधरीक संयोजकत्वमे पहिल आयोजन भेल। नाम राखल गेल-'सगर राति दीप जरय'। तकर बादसँ हरेक तीन मास पर ई कार्यक्रम भेल करैये विभिन्न स्थान पर। एखन धरि पचीस स्थान पर[1] आयोजन सम्पन्न भय चुकल अछि। एखनि धरि मुजफ्फरपुर, ड्योढ़ दरभंगा, पटना (दू बेर), बेगूसराय, कटिहार, नवानी, सकरी, नेहरा, विराटनगर, वाराणसी, सुपौल, बोकारो, पैटघाट, घोघरडीहा, इसहपुर, सरहद, झंझारपुर, जनकपुर, बहेड़ा, सुपौल (बिरौल), काठमान्डू, राजविराज, कलकत्तामे सफलतापूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न भ' चुकल अछि। एहि पचीस आयोजनमे सात सयसँ बेसी कथा पढ़ल गेल अछि। निश्चित रूपसँ दू सयसँ बेशी श्रेष्ठ कथा ई आयोजन मैथिली साहित्यकेँ देलक अछि। तीसटा चुनल कथाक संग्रह श्वेतपत्र नामसँ रमेश ओ डा. तारानन्द वियोगीक सम्पादकत्वमे निकलि चुकल अछि। बोकारोमे पढ़ल गेल कथाक संग्रह बुद्धिनाथ झा एवं तुलानाथ मिश्रक सम्पादकत्वमे कथाकुम्भ नामसँ निकलल अछि। पटनाक आयोजनमे पढ़ल गेल कथा सभकेँ मैथिली अकादमी पत्रिकामे रवीन्द्र नाथ ठाकुर (पूर्व निदेशक) क प्रयाससँ छापल गेलय। एहि आयोजनमे विभिन्न ठाम अनेक पोथीक लोकार्पण सेहो भेल अछि जाहिमे कथासंग्रह सभ सेहो अछि।

'सगर राति दीप जरय' क प्रारम्भिक रूपरेखा मादे प्रस्तावक शिवशंकर श्रीनिवासक वक्तव्य कार्यक्रमक मूल भावनाकेँ सेहो स्वर दैत अछि :

"कोनो साहित्यकार वा साहित्यप्रेमी बन्धु अपना ओहिठाम गोष्ठी करेबाक प्रस्ताव रखताह आ तदनुसार कथाकारलोकनि अपन-अपन खर्चसँ ओहि गोष्ठीमे भाग लैत जयताह। समारोह-स्थल पर जे खर्च होयत से आयोजकक रहत। मुख्य रूपसँ एहिमे कथाकार आ आलोचक भाग लेताह। ई एक प्रकारक लेखक-सम्मेलन होयत। परिकल्पनामे रहैक जे आइ मैथिलीक कथाकारलोकनि अधिकतर शहरमे रहैत छथि, तेँ ई आयोजन अधिकतर गामसे होमय, जे लेखककेँ ग्रामीण परिवेशसँ जोड़ने राखत। दोसर बात, पत्र-पत्रिकाक अभावमे जे साहित्यिक गतिहीनता आबि गेल अछि तकरा ई तोड़त आ कथा-आन्दोलनकेँ आगू बढ़ाओत। निर्णय भेल जे ई कथा गोष्ठी साँझसँ भोर धरि चलत।" (स्वर-समवेत, श्वेतपत्रसँ)

1. आब त' पचाससँ बेसी स्थान पर आयोजन भ' चुकल अछि।

आइ पचीसटा आयोजनक समाप्तिक बाद देखैत छी जे उपर्युक्त परिकल्पना बहुत अंशमे मूर्त रूप धारण केलक अछि। खाली अधिकतर गामसे आयोजन करबाक परिकल्पना सफल नहि भ' सकल। तथापि ड्योढ़, नवानी, नेहरा, पैटघाट, इसहपुर, सरहद, घोघरडीहा, बहेड़ा, सुपौल (बिरौल) के संग-संग मिथिलाक छोटछीन कस्बा सभमे सेहो आयोजन सम्भव भ' सकल अछि। तथापि सहरसा, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, पूर्णिया, भागलपुर आदि शहर अथवा गामसे आयोजन एखन धरि नहि भेल अछि जे आवश्यक अछि।[1]

एहि आयोजन मे, मैथिलीक अधिकांश कथाकार कोनो ने कोनो स्थान पर सम्मिलित भ' चुकल छथि। कथा-पाठ केलनि अछि। तथापि किछु उल्लेखनीय कथाकार जे एखन धरि एहि आयोजनमे कथा-पाठ नहि केलनि अछि से छथि-सोमदेव, हंसराज, प्रो. मनमोहन झा, बलराम, विनोद बिहारी लाल आदि। आश्चर्यजनक रूपसँ प्रसिद्ध कवि-कथाकार उदयचन्द्र झा 'विनोद' आयोजनक निर्णय एवं सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर कइयो कय एखन धरि कार्यक्रमसे सहभागी नहि बनि सकला अछि।[2] हिनकालोकनिक सहभागिता सुनिश्चित होयब जरूरी लगैत अछि। अनेक प्रसिद्ध समालोचक-समीक्षक सेहो एहि आयोजनमे नियमित रूपसँ भाग लैत रहला अछि। डा. रमानन्द झा 'रमण' असगर व्यक्ति छथि जे पचीसो आयोजनमे भाग लेलनि अछि। प्रत्येक आयोजनमे भाग लेबाक दाबा हिनका छोड़ि आन कियो कथाकार-समीक्षक प्रायः नहि क' सकैत छथि। हिनकर अतिरिक्त मोहन भारद्वाज, डा. भीमनाथ झा, प्रो. रमाकान्त मिश्र, कुलानन्द मिश्र, डा. जयधारी सिंह, प्रो. उमा नाथ झा, डॉ. अमरनाथ झा, डॉ. शिव शंकर झा 'कान्त', प्रो. सदन मिश्र, डा. योगन्द्र प्रसाद यादव आदि मैथिलीक प्रसिद्ध समालोचक विद्वान सेहो 'सगर राति दीप जरय'मे अपन सहभागितासँ आन्दोलनकेँ सक्रिय आ महत्वपूर्ण बनौलनि अछि। तथापि प्रो. आनन्द मिश्र, डा हरिनारायण मिश्र, प्रो ललितेश मिश्र, डा. देवकान्त झा, हरेकृष्ण झा एवं मैथिली साहित्यसँ जुटल समाजशास्त्री डॉ. हेतुकर झा ओ डा. महेन्द्र नारायण कर्णक सहभागिताक प्रतीक्षा छैके एहि आयोजनकेँ।

'सगर राति दीप जरय' आयोजनक उपलब्धिक सम्बन्धमे अनेक ठाम बहुत चर्चा भेल अछि। श्वेतपत्र कथासंग्रहक आमुख 'स्वरसमवेत'मे रमेश आ डा. तारानन्द वियोगी कहैत छथि, "जेना लोक बेटीक बियाह, बेटाक शिक्षाक ओरियान करब अपन व्यक्तिगत काज बुझैत अछि आ' व्यक्तिगत स्तरसँ ब्योँत कय पाइ लगबैत अछि, तहिना मैथिलीक लेखक अपन रचनाक प्रकाशन सेहो व्यक्तिगत प्रयाससँ करैत रहल अछि। (कुलानन्द मिश्रक एक कथन पर आधारित) ई जबदाह स्थिति लेखकक हेतु

1. आब सहरसा, पूर्णिया, भागलपुरमे आयोजन भ' चुकल अछि।
2. आब करीब-करीब सभ कार्यक्रममे सहभागी बनि गेला अछि।

लिखबाक आवश्यकताकेँ कुंठित करैत छैक। लेखनक लेल कोनहुँ पारम्परिक उत्प्रेरक परिस्थिति अथवा उत्साह-विन्दु नहि रहि गेने मैथिली लेखनक गति असंभावित रूपसँ अवरुद्ध भ' गेल अछि। ऐहना स्थितिमे कथा-गोष्ठी आन्दोलन लेखकक लेल एक उत्साहजनक परिस्थिति तैयार कएलक अछि आ लिखबाक लेल उत्प्रेरक बनल अछि।''

यहि आयोजनक निर्णयकाल (दिसम्बर 1989) पर ध्यान देल जाय त' ज्ञात होइत अछि जे ओहि कालमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन लगभग शून्य भ' गेल छल। ओहि कालमे मिथिला-मिहिर पत्रिका बन्द भ' चुकल रहय। भाखा सेहो नहि निकलि रहल छल। दरभंगासँ खाली वैदेही टा टेक धयने रहय। स्थिति आइयो कोनो नीक नहि अछि। मुदा ओहेन नहि अछि। कोनो साहित्यिक आयोजन सेहो नहिये जकाँ चलैत रहय। विद्यापति पर्वक आयोजन सेहो घटि गेल छल। ताहूमे कविसम्मेलन कार्यक्रम त' नहिये जकाँ। विचारगोष्ठी, परिचर्चा आदि एकदम शून्य। कथाकारक कथे कोन, कवि, विद्वान, समीक्षक लोकनिक भेँट-घाँट पारस्परिक विमर्श समाप्तप्राय रहय। सर्जनात्मक वातावरणक त' ओहिना अभाव रहैये। ताहि परिप्रेक्ष्यमे एहि आयोजनक निर्णय आ' नियमित क्रियान्वयन अन्हार घरमे रोशनी सन छिटकि गेल। प्रसिद्ध कथाकार जीवकान्त लिखैत छथि :

''कथा-रैली एक आन्दोलन थिक। एक सृजनात्मक कार्यक्रम थिक। एहिमे अनेक लोकक सहभागिता एकरा महत्वपूर्ण बनबैत अछि। मैथिली-सन भाषामे जत' जीवंतताक अवसर घटल जाइत छैक, आत्मविश्वास क्षरण होइत जाइत छैक, ई आन्दोलन बहुत प्राणमय आ आलोकमय बुझाइत अछि।''

एखनि धरि जे कविलोकनि अथवा साहित्यकार कोनो कार्यक्रममे रचनापाठ करबाक लेल अथवा लेख आदि पढ़बाक लेल आयोजकक खर्च पर जाइत छला से अपन खर्चसँ एहि कार्यक्रममे आब' लगला। पछिला पचीस कार्यक्रम पर जँ ध्यान देब त' ज्ञात होयत जे साहित्यकारलोकनि विराटनगरसँ वाराणसी धरि आ सुपौलसँ बोकारो, काठमाण्डू धरि अपन खर्चसँ जा क' कार्यक्रममे सहभागी बनि मैथिली कथाक दीप जरा रहल छथि। ई मैथिली आ साहित्यक प्रति प्रेम, प्रतिबद्धताक अपूर्व प्रतिमान उपस्थित करैये। एहि प्रतिरोधी आ विपरीत वातावरणमे अपन सर्जनात्मकता बचा क' रखबाक आर ओकरा मँजबाक, विकसित करबाक एहेन अभिलाषा जाहि भाषाक रचनाकारमे रहत ओ भाषा कोना मरि सकैये। जाहि भाषामे सत्तरि बरखक बुजुर्ग पांचम दशकसँ कथा लिखब प्रारम्भ कयनिहार पं. गोविन्द झा आ ओकर बादक प्रतिष्ठित, स्थापित कथाकारक संग एक मंचसँ दशम दशकक अद्यतन पीढ़ीक कथाकार भरि राति कथा-पाठ करथि आ' ओहि पर समीक्षा चर्चा होअए ताहि भाषा-साहित्यकेँ ककरा दबेबाक सामर्थ छैक? ई आयोजनक उपलब्धिक एक पक्ष भेल। दोसर पक्ष अछि पत्र-पत्रिकाक अभावमे मैथिलीप्रेमी पाठकवर्गकेँ मैथिलीक

टटका कथा सुनबाक आ' गुनबाक अवसर भेटब। ओहि पर अपन विचारो प्रकट करबाक सोझाँ-सोँझी मौका। लेखक-पाठक सम्बन्धक स्थापन। संगहि समीक्षक लेखकक सोझाँ-सोझी होयब सभसँ महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक। ठामहि कथाक आलोचना करब आ ओकरा सुनब। एहि आयोजनसँ लेखक-समीक्षक दूनू लाभाविन्त भेला अछि। आत्मविश्वास बढ़ल अछि। रमेश आ डा. तारानन्द वियोगी कहैत छथि, 'कथा-गोष्ठीक समीक्षा-प्रक्रिया लेखककेँ योजनाबद्ध रूपसँ, सम्हरि क' नीक लिखबाक उत्साह देलकैक अछि।...कथा-गोष्ठी आलोचनाक एक नवीन धाराक उपस्थापन कयलक अछि। आइ धरि समीक्षा मात्र रचानाकारक परोक्षमे होइत रहलैक अछि-से कि त' बन्न ड्राइंग रूममे अथवा पत्र-पत्रिकामे। कथा-गोष्ठीमे रचनाकारक आमने-सामने समीक्षाक चेष्टा कएल गेलैक अछि आ' तकर परिणाम बहुत उत्साहजनक बहरायल अछि।''

प्रसिद्ध समीक्षक मोहन भारद्वाज एहि बातकेँ कथा-गोष्ठीक सभसँ पैघ उपलब्धि मानैत छथि जे रचनाकारमे आत्म-मुग्धता समाप्त भैलैक अछि आ' ओ अपन रचनाक आलोचना सुनबाक सहनशक्ति अर्जित केलक अछि।

किछु अपवादकेँ यदि छोड़ि देल जाय त' कियो कथाकार एहि कारणेँ कथा-गोष्ठीमे आयब बन्द नहि केलनि जे हुनकर कथाक निर्ममतापूर्वक समीक्षा कयल गेल। नव आ युवा कथाकारक कथे कोन, सभसँ वृद्ध कथाकार गोविन्द झा एहि मादे कहैत छथि, ''आरम्भमे प्रायः बूढ़ होयबाक कारणे हम आलोचनाक अपात्र बूझल गेलहुँ, परन्तु पछाति हमरहु पर आलोचनाक निर्मम प्रहार पड़य लागल। हम नीक चटिया जकाँ ओहि प्रहारकेँ पथ्य बूझैत रहलहुँ।'' अपन कथाक निर्मम समालोचना ओ समीक्षा सुनियो क' अन्यथा नहि लय अनवरत कार्यक्रममे सहभागी बनल रहनिहार गोविन्द बाबूक व्यक्तित्वक विशालता सहजेँ जानल जा सकैये। ई तखने सम्भव अछि जखन रचनाकार रचनाकर्मक प्रति एकनिष्ठ भावसँ समर्पित हो। एतबे नहि, गोविन्द बाबू सगर रातिमे अपनाकेँ विशिष्ट बनेबाक ने प्रयास करैत छथि ने अपनाकेँ विशिष्ट बूझैत छथि। ओ सदिखन आन सभ लेखक / कथाकार जकाँ अपनहुँकेँ मानैत एहि लेल दुखी ओ रुष्ट होइत छथि जे हुनकर कथाक खूब नीक जकाँ आलोचना नहि भ' रहल अछि। सकरी गोष्ठीमे ओ एहि लेल रुष्ट भेल रहथि। ओ अपन रचनामे कमी आ गड़बड़ी सुनबाक लेल उत्सुक छला। हमरा जनैत पं. गोविन्द झाक रचनाकार अथवा व्यक्तिकेँ आलोचना सुनबाक जे 'उत्सुकता' रहलनि सैह हुनकर रचना आ व्यक्तित्वकेँ बहुत अंशमे अद्यतन (up to date) रखने अछि। ओ कहियो-कोनो क्षण आत्ममुग्ध नहि होइत छथि। अपना संग अन्याय होइत देखि ओ तमसाइत छथि जरूर। मुदा कहियो-कखनो अनर्गल लाभक लालसा हुनकर स्वभावमे नहि भेटैत अछि। जेना देखैत छी अनेक बूढ़केँ अपनाकेँ कुण्ठाक कोठलीमे बन्द करैत, सभामध्य रहितो 'असगर' रहैत, से सभ दोषसँ गोविन्द

बाबू बहुत दूर छथि। नव आ युवा आधुनिक लेखकक बीच हुनक लोकप्रियताक ई सभ जबर्दस्त कारण रहल अछि। कतहु ने कतहु "विशिष्टता" 'साधारणत्व' सँ अर्जित होइत अछि। ई दृष्टि जिनका नहि छनि से बूढ़ लोकनि गोविन्द झा सन वयोबृद्ध लेखकक नवतुरिया द्वारा प्राप्त स्नेह आ सम्मान देखि अपन आँगुर दाँतसँ काटि सकैत छथि। एहि तथ्यकेँ सगर राति...गोविन्द बाबूक सन्दर्भमे प्रमाणित क' चुकल अछि।

एहि प्रसंग किछु लोकक मानसिकता दोसर भ' सकैत अछि। ओहने कियो साहित्यकार गोविन्द बाबूकेँ सगर रातिमे बेर-बेर जाइत देखि हुनका टोकबो कयलनि। गोविन्द बाबू अपन कथासंग्रह 'नखदर्पण' क भूमिका (नेपथ्य सँ)मे लिखैत छथि, "एहि सगररतिया कथा गोष्ठीमे हमरा बेरि-बेरि जाइत देखि हमर शुभचिन्तक एक प्रतिष्ठित साहित्यकार अयाचित सत्परामर्श देलनि, 'पण्डितजी, की अहाँ सींघ तोड़िके पड़रूमे मिलै छी। हुनक कहब फूसि नहि। गोष्ठीमे जे-जे सामान्यतः जाइत रहला अछि ताहिमे प्रायः सभ केओ बएसमे हमरासँ कमसँ कम पनरह बरखक छोट छथि। तेँ ठीके हमरा समक्ष पड़रू भेलाह। मुदा हमरा एहि पड़रूसभसँ ततेक स्नेह भय गेल जे ओ परामर्श एहि काने सुनल, ओहि काने उड़ाए देल। वास्तवमे साहित्य-सर्जनामे बएसेँ ने केओ पड़रू होइत अछि, ने पाड़ा। ओकर आयुक निर्धारक होइत अछि ओकर दृष्टि आ सृष्टि। एहि अर्थ मे, सत्य कहब जँ अभिमानोक्ति नहि हो तँ, हम अपनाकेँ एखन धरि बूढ़ नहि मानलहुँ अछि। प्रायः इएइ कारण थिक जे ओहि पड़रू सभसँ हमरा 'स्ववर्गे परमा प्रीतिः' अछि। हमरा तेँ इहो कहबामे संकोच नहि होइत अछि जे वयः श्रेष्ठ वा समवयस्क कथाकार हमरा ततेक प्रेरित-प्रभावित नहि कएलनि अछि जतेक एहि पड़रू वर्गक जीवकान्त जी, प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, आ' रमेश पर्यन्त कएलनि अछि।"

गोविन्द बाबू यदि अपनाकेँ बूढ़ नहि मानलनि अछि त' हुनक अनुज कथाकार आ साहित्यकारलोकनि सेहो हुनका बूढ़ मानबाक लेल तैयार नहि अछि। ने व्यक्तिक स्तर पर, ने रचनाक स्तर पर। जाहि कथाकारक 1947मे पहिल कथा प्रकाशित भेल हो, जे एखनि धरि कथालेखनमे संलग्न हो, परवर्त्ती एकदम नव कथाकारलोकनिक संग डेगसँ डेग मिला क' चलबामे प्रसन्नताक अनुभव करैत हो, एहेन रचनाकार मैथिलीमे असगर गोविन्द झा छथि। अपन अनुज रचनाकारक संग जेहेन निकट सम्पर्क गोविन्द बाबूकेँ छनि से अनका सम्भव नहि भेल अछि। एकर कारण की अछि? गोविन्द बाबूक व्यक्तित्वमे ऐहन कोन तत्व सभ अछि जे हुनका अनुज साहित्यकारक निकटवर्ती बनबैत अछि? ओ एखनो युवा कोना बुझाइत छथि? ई तथ्यसभ हुनका संग 'सगर राति'मे जागि क' नीक जकाँ सहजेँ अनुभव कयल जा सकैत अछि। जेना ओ अपनो कहैत छथि, ओ पीढ़ीक अन्तरक मानसिकतासँ ग्रस्त नहि छथि।

संवादहीनताक स्थिति अपन अनुज साहित्यकारक संग कहियो नहि अयलनि। ओ एहि सभ 'गैप'केँ सर्वप्रथम त' निरंतर अद्यतन साहित्यक आ आन अनुशासनक पोथी सभकेँ पढ़ैत-गुनैत रहबाक कारणेँ, दोसर, वस्तु एवं यथार्थकेँ क्रमशः समकालीन दृष्टिसँ देखबाक शक्ति अर्जित क' लेबाक कारणे, आ तेसर, युवा, अनुज रचनाकारक प्रति ममत्व संग बात बुझबाक पूर्वाग्रहहीन मानसिकताक कारणे भरि लैत छथि। हुनका संग आरामसँ बिना कोनो उत्तेजनाक विमर्श-विचार कयल जा सकैत अछि। विवाद कयल जा सकैत अछि। मतभिन्नतोक स्थितिमे अपन वृद्धत्व ओ ज्ञानक बल पर विचार थोपबाक कोनो आग्रहसँ ओ सदैव ओ सर्वथा मुक्त रहैत छथि। गोविन्द बाबू हमरा सभ दिन प्रवहमान आ शान्त लगला अछि। निश्छल लगला अछि। हुनकर कोनो बात पर छनकि आ तनकि गेनाइ सेहो हुनकर रंगहीनता ओ निश्छलतेक परिचायक थिक। भावनाकेँ, ओ अपन भीतर सड़ा नहि सकैत छथि। ओकर मूड़ी गोति नहि पबैत छथि। तेँ कखनो-कहियो हुनकर क्रिया-प्रतिक्रिया अव्यावहारिक, अगम्भीर बूझि पड़ि सकैत अछि। मुदा हमरा इहो लागल अछि जे ई तमाम गुण ओ आयास आ प्रयाससँ अर्जित कयलनि अछि। अपन व्यक्तित्वकेँ जटिलसँ सहज बनेबाक उद्यम हमरालोकनिकेँ गोविन्द बाबूसँ सिखबाक चाही। ओना एकर सुदीर्घ परम्परा हमरालोकनिक संस्कृतिमे पूर्वहुसँ विद्यमान अछि।

जहिना अपन व्यक्तित्वकेँ सहजता दिस उन्मुख करैत छथि गोविन्द बाबू तहिना रचनाकेँ व्यक्तिसँ समाज दिस सेहो यत्लपूर्वक उन्मुख करैत देखाइत छथि। हुनकर 'हम' क्रमशः क्षीणतर होइत गेलए। रचनामे समाज दिस उन्मुख होइत छथि त' अपन सहज संस्कारक विरुद्ध वातावरण पाबि छगुन्तामे पड़ैत छथि। विडम्बनासँ टकराइत छथि। आत्मीयताक अभाव, ज्ञानक अवेहलना, विद्याक प्रति अनास्था, अर्थक बढ़ैत प्रभावक कारणेँ जोगाड़ लेल लोकक निर्लज्ज होयब, संवेदनहीनता, संस्कृतिक उद्योगीकरण आदिसँ मर्माहत गोविन्द बाबूक कथाकार क्रमशः व्यंगात्मक होइत गेल अछि। कतेको कथामे ई व्यंगक धार बेश तीक्ष्णतासँ उभरि कय आयल अछि। खास क' नखदर्पणक कथासभ मे। नखदर्पणक सम्पूर्ण कथा 'सगर राति दीप जरय' क विभिन्न आयोजनमे पढ़ल अछि। गोविन्द बाबू मानैत छथि जे एहि कथासभकेँ लिखेबाक श्रेय 'सगर राति'केँ छैक। यदि सगर राति नहि भेल रहितय त' गोविन्द बाबूक एहि कथासभक जन्मो भरिसक सम्भव नहि होइत। कतेक क्षति होइतय मैथिली कथाक?

गोविन्द झा पण्डित छथि। बहुत शास्त्रक ज्ञाता छथि। अनेक पोथीक अनुवाद कयने छथि। अनुवादक छथि। सम्पादक छथि। शब्दकोशक निर्माता छथि। व्याकरणक विद्वान छथि। साहित्यक विभिन्न विधामे रचना कयलनि अछि। क' सकैत छथि। भाषाविज्ञानसँ ल' कय देशमे चलैत राजनीति पर्यन्त पर आवश्यकता भेला पर लीखि

सकैत छथि। हुनकर कर्मठताक मादे त' कहल नहि जाय।* सभ दिन कर्म पर आस्था रखनिहार, श्रम पर भरोस कयनिहार गोविन्द बाबूक व्यक्तित्व हमरालोकनिक लेल प्रेरणाक स्रोत अछि। साधना ओ श्रम, निश्छलता ओ सहजता, आत्मीय व्यवहार, सदैव विमर्श लेल प्रस्तुत आदि विभिन्न गुणक लेल गोविन्द बाबू आदरणीय छथि। मैथिली साहित्य हुनकर योगदानसँ समृद्ध भेल अछि। भाषा समृद्ध भेल अछि। गोविन्द बाबू हमरा लोकनिक मित्र छथि। एक बुजुर्ग मित्र...।

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा, 1997

* आइयो काल्हि ओ कम्प्यूटर सीखि रहल छथि।

कमनीय कोमलताक प्रेमी कवि

डा. शैलेन्द्र मोहन झाक किछु कविता सभ हमर समक्ष अछि। जे कविता सभ हमर समक्ष अछि से वर्ष 1953सँ 1958 क बीचक कविता सभ थिक। सभ कविता 'वैदेही'मे छपल अछि। मात्र एक कविता जे श्री शैलेन्द्र उपाध्याय नामसँ अछि से 'मिथिला मिहिर'मे वर्ष 1966मे छपल अछि। ई कवितो अछि हुनक आन कवितासँ भिन्न प्रकारक। एकटा आर भिन्न प्रकारक कविता अछि 'हे हमर चिर मित्र'। एहि दूनू कवितामे मित्र-शत्रुभावसँ ओ व्यथित-मथित भेल छथि। आन सभ कविता जे हमर समक्ष अछि से प्रकृति सौन्दर्य, नारी सौन्दर्यमे सम्पूर्ण रूपेँ कविक डूबि जेबाक कविता अछि। कविवर बिहारी लाल कहितो छथि—

तन्त्री-नाद, कवित्त रस, सरस-राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अङ्ग॥

प्रसिद्ध समालोचक रमानाथ झा 'नवीन गीत' पोथीमे डा. शैलेन्द्र मोहन झाक सम्बन्धमे कहैत छथि जे 'वस्तुतः हिनक व्यक्तित्व कवित्वहिक रससँ श्लथ अछि।' कवित्व रसमे सर्वांग निम्मजित शैलेन्द्र मोहन बाबूक चन्द्रमा-शिशुकेँ सम्बोधित एक लोरी सेहो हुनक शिशु सौन्दर्यमे प्रकृति सौन्दर्यक चित्र उपस्थित करैत अछि। चित्र आ भावक संयोग शैलेन्द्र बाबूक कवितामे विभिन्न रंग आ सुगन्धि भरैत अछि। हृदयमे भाव आ आँखिमे सौन्दर्यक जादूसँ मिश्रित कविता रचल गेल अछि। मिश्र रागिनी बनल अछि।

शैलेन्द्र बाबूक कवितापर जखन हम विचार कर' लगैत छी त' सर्वप्रथम हमरा मैथिली कविताक ओ काल मोन पड़ैत अछि। तहिया कविताक भाववादी धारा प्रबल छल। विद्यापति जयन्ती महोत्सव, कलकत्ता (नवम्बर 1957) क कवि सम्मेलन काल यात्रीजी व्यथित भ' कय राजकमल चौधरीकेँ कहने रहथिन 'मैथिलीमे एखनहुँ पचास वर्ष पुर्वहि जकाँ कविता लिखल जा रहल अछि...।' आ राजकमल चौधरी वर्ष 1959मे एहेन निराशाजनक विचारकेँ खण्डित करबाक उद्देश्यसँ 'स्वरगन्धा' क संग उपस्थित भेल रहथि। 'हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक कविता' नामक एक निबन्धमे

राजकमल चौधरी लिखैत छथि, ‘1959 मे, ‘चित्रा’ क पूरे-पूर दस वर्षक उपरान्त राजकमल चौधरीक कविता-संकलन ‘स्वरगन्धा’ प्रकाशित भेल। एहि कविता-संकलनपर दरभंगाक एक यशस्वी कवि अपन मत प्रकट कएलनि ‘स्वरगन्धा’ ठीके गन्ध करैत अछि, अर्थात गन्हाइत अछि।’ एहि प्रकारें कहि सकैत छी जे ओ काल मैथिली कविताक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काल छल। जखन राजकमल चौधरी अपन काव्य हस्तक्षेपसँ एक हिलकोर उत्पन्न केने छला। नव आ पुरानक बीच भाववादी आ यथार्थवादी धाराक बीच तीव्र मतभेद उभरिक’ समक्ष आबि रहल छल। अगिला दशकमे त’ सोमदेवक ‘कालध्वनि’क माध्यमे यथार्थवादी धारा अपन जोरगर उपस्थिति दर्ज करौने रहय। मुदा ई तथ्य अछि जे ओहिकालमे एहनो मैथिली कविता बहुलतासँ लिखल जा रहल छल जे समयसँ बहुत पाछू छल। से बात यात्रीजीकेँ चिन्तित केने रहनि।

शैलेन्द्र बाबूक कविताकेँ समकालीन कविता नहि कहल जा सकैये। निश्चित रूपसँ ‘यथार्थ’ समकालीनताक केन्द्रमे ओहू समयमे आबि गेल रहय। भोगल यथार्थक बात सेहो राजकमल चौधरी बहुत प्रखरताक संग राखि देने रहथि। परन्तु ओहिकालमे भाववादी धाराक कवि भइयो क’ किछु कवि अपन भाषा, शिल्प, लयात्मकता आदि दृष्टिएँ पुरातन संस्कृतनिष्ठ, संस्कृत साहित्यसँ पैंच-उधार लेल भाव-बोधसँ फराक अपन कविता, गीत ल’ कय उपस्थित भेल देखाइत छथि। हिनकालोकनिक कवितामे लयात्मकताक अपन खास रंग-ढंग छल जे कतहु-कतहु मिथिलाक माटि-पानिसँ जुड़ल बुझाइत अछि। हमरा ज्ञात नहि अछि जे मैथिलीक आलोचकलोकनि ओहि काल विशेषक कविलोकनिकक रचनाकेँ एहि दृष्टिसँ विश्लेषित केलनि अछि की नहि। ओना आचार्य रमानाथ झा द्वारा सम्पादित ‘नवीन गीत’मे डा. शैलेन्द्र मोहन झाक कविताक चयन कमसँ कम आलोचक रूपमे रमानाथ झाक दृष्टिकेँ स्पष्ट करिते अछि। हमरा शैलेन्द्र बाबूक कविताकेँ पढ़ैत पता नहि किए ई लगैत रहल जे मैथिलीक प्रसिद्ध कवि जीवकान्त जकरा ‘जीर्ण लेखन’ कहैत छथि आ ‘नव लेखन’क बीचमे मैथिलीक किछु कवि छथि जिनकापर सोझे-सोझ दू गोला भ’ गेलाक कारणेँ आधुनिक दृष्टिसँ विचार नहि भेल अछि। हुनको लोकनिकेँ जीर्ण लेखनेक गोलमे टारि देल गेल अछि। भ’ सकैये ई लोकनि बहुत रचना नहि केने होथि। बीचमे ठाढ़ एहन लोकक ई नियति स्वाभाविक अछि। मुदा हमरा लोकनिकेँ आब एहि दिशामे काज प्रारम्भ क’ देबाक चाही। शैलेन्द्र बाबू एहने कोटिक कवि छथि।

एहिना शैलेन्द्र बाबूक कविता पढ़ैत, कालक संग कला, विचार, वस्तु, दृष्टि आदि कतेक बात हमर मोनमे उठैत अछि। होइत अछि जे सभकेँ शैलेन्द्र बाबूक कवितामे ताकल जाय। एहन परम्परो रहल अछि। कदाचित आलोचना कर्म एकरे कहल जाइत छैक। मुदा क्रमशः हमरा लगैत अछि जे अपन मोनमे एहि सभ बातकेँ भरि क’ अथवा एहि सभ बातकेँ लादि भरल मोनसँ कविता पढ़ल जाय कि नहि? की एहि सभसँ मुक्त भेल जा सकैत अछि? की एहि सभसँ मुक्त भ’ साहित्यक

समालोचना सम्भव अछि? मुदा की विना कवितामे डुबने, कविताकेँ अनुभूतिक स्तरपर भोगने विना कविताक रसास्वादन सेहो सम्भव अछि? हमरा लगैये रसास्वादनक उपरान्ते नीक बेजाय ताकल जा सकैये। हमरा होइये जे सभ कविक कविता हमरा एही आधारपर पढ़ब प्रारम्भ करबाक चाही। अनुभूतिक स्तरपर पहिने कविताकेँ ल’ जेबाक चाही। तकर बादे ओहिमे विचार तकबाक चाही। विचार करबाक चाही। यथार्थोकेँ बुझबाक लेल एकर आवश्यकता हमरा बूझि पड़ैत अछि। एतेक अस्त्र-शस्त्र ल’ कय कवितामे कोना प्रवेश कयल जा सकैत अछि? ‘संस्कृति के प्रश्न’मे प्रसिद्ध दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति कहैत छथि ‘मोनकेँ अपन द्वारा संग्रहीत कयल समस्त वस्तुक प्रति विसर्जित हुअ’ पड़तैक—समस्त वस्तुक प्रति, अनुकरणमे साधल समस्त गुणक प्रति और ओहि समस्त वस्तुक प्रति जाहिपर ओ अपन सुरक्षा लेल आश्रित अछि।’ हमरा होइये शैलेन्द्र बाबूक कविताकेँ हमरा अपन मोनक समस्त कठोरताकेँ परित्याग क’ देखबाक चाही। ओहि बिन्दुक खोज करी जत’सँ शैलेन्द्र बाबूक कविताक स्रोत फुटल अछि। ओ बिन्दु की थिक? कत’ अछि?

शैलेन्द्र मोहन झाक एक कविता अछि ‘प्रकृति सुन्दरी’। ‘प्रकति सुन्दरी’मे ओ एकठाम कहैत छथि जे कोनो सरिताक किन्हेरमे बैसल बहुत रास पूर्णिमाक राति आयल अछि। देहकेँ चंचल मलय बसात छूबि क’ चल गेल अछि। आन कोनो दिन हृदय कमल कहाँ प्रफुल्लित भेल? एहन सुषमाक पान दूनू आँखि कहाँ कहियो केलक? त’ ओ कोन तत्त्व थिक जे हुनका ओहि विशेष दिन एहन अनुभूति प्रदान केलकनि? लोक रहरहाँ प्राकृतिक दृश्य देखैत अछि। भोगैत अछि। मुदा ओ कोन बात अछि जे देखब आ भोगबकेँ हृदयस्पर्शी बना दैत अछि। संवेदनाक तारकेँ झंकृत क’ दैत अछि। की ई करुणा नहि थिक? प्रेम नहि थिक? जखन हम इच्छा रहित भ’ कय, प्रतिकार रहित भ’ कय प्रेमसँ प्रकृतिकेँ देखैत छी तँ प्रकृतिक सौन्दर्य हमरा स्वतन्त्र करैत अछि। वैह स्वतन्त्र दिन ओ विशेष दिन थिक जहिया हमर शरीर बदलि जाइत अछि। आँखि बदलि जाइत अछि। कोनो दृश्य, कोनो सौन्दर्य, कोनो दुख-सुख, कोनो यथार्थ हमरा लग एकदम नव रूपमे प्रकट होइत अछि। हमरा आलोड़ित-विलोड़ित क’ दैत अछि। हम किछु रच’ लगैत छी। रचयिता भ’ जाइत छी। कदाचित वैह स्थिति आ अनुभूति शैलेन्द्र बाबूकेँ ओहि विशेष दिनमे भेल छलनि जखन ओ स्थिर चित्तेँ विभोर भ’ गेल छला। प्रकृति सुन्दरीक रूप रहस्य हुनका अत्यन्त व्यापक लागल छलनि। एही व्यापकतासँ ओ सर्जक भेल छला।

दूर नदी केर पार ठाढ़ अछि पर्वत एक महान।
भय ध्यानस्थ जेना सुनइछ ओ जल केर कलकल गान।
आओर एक प्रस्तर पर बैसल स्थिर चित्त विभोर।
देखि रहल छी प्रकृति सुन्दरीक रूप रहस्य अथोड़।

व्यापक भ' कय स्वतन्त्र हेबाक अभिलाषा मनुक्खकेँ सभ दिनसँ रहलैक अछि। ई व्यापकता मनुक्खकेँ संवेदनक्षम बनबैत अछि। करुणासँ ओतप्रोत करैत अछि। प्रेमी बनबैत अछि। मनुक्ख बनवैत अछि। यैह प्रेम शैलेन्द्र बाबूकेँ नायिकाक मुक्त कुन्तल राशि देखि क' वरदान सन लगैत छनि।

आइ देखल तोहर आनन दिव्य
दूधसँ धोएल छली तोँ भव्य
चिर पिपासित हृदय पओलक, हे सखे वरदान
मुक्त कुन्तल राशिमे छविमान॥

'मुक्त कुन्तला' कवितामे कवि, जे प्रवासी छथि, नायिकासँ संवेदनाक स्तरपर जुड़ैत छथि। अहू कवितामे 'आइ देखल' शब्द ध्यान देबाक योग्य अछि। आनो दिन एहन सौन्दर्य, एहन रूप देखने छल होयता मुदा ओहि दिन विशेष बात भ' गेल। कदाचित प्रवास समाप्त भ' गेल आ कवि सद्यः स्नान केने नायिकाकेँ साक्षात देखि भरिपोख प्रफुल्लित भ' उठला। मुदा अहू प्रफुल्लित मोनक बीचसँ करुणाक स्रोत फुटैत अछि। कवि स्मृतिमे चल जाइत छथि आ नायिकाकेँ अलकापुरीक यक्षिणी सन परम उदास देखैत छथि। संयोगसँ वियोगक कल्पना कर' लागब आ पुनः संयोगपर घुरि आयब एहि कविताक अन्य विशिष्टता थिक।

विसर्जित कए अपन सभ उल्लास
अलकापुरी केर यक्षिणी सन तों परम उदास
सखि बितौलह दिन
मीन भेल जलहीन
एक पथ पर छल तोहर बस ध्यान
मुक्त कुन्तल राशिमे छविमान।

मुदा यक्षक प्रवास समाप्त भेलापर आइ आस जखन पूरल आ' चिर विरहिणिक पाहुन कन्त आयल तँ शुष्क विपिनक बीच सुभग वसंत आबि गेल। प्रवासी कन्त लेल नायिका चन्द्रमाक सोलहो कला ल' कए प्रकट भेली। कविकेँ ओ विद्यापतिक 'वरयौवति' सन लाग' लगलथिन। एहि प्रकारेँ प्राप्त सुखमे दुखक अस्तित्वकेँ मोन पाड़ैत कवि शैलेन्द्र बाबू अपन नायिकाकेँ अन्ततः विद्यापतिक नायिकाक संग तादात्म्य स्थापित क' दैत छथि। मैथिल नायिकाक पाँच सय बरखक परम्परासँ ओकरा जोड़ैत छथि।

विधिक निर्माण सखे! तिलोत्तमा
तों प्रकट भेलीह सखि! लए चन्द्र केर सोलहो कला

श्याम घनमे प्रस्फुटित अछि भेल की नव उत्पला
हे हमर चिर कल्पने, हे चिर युवति!
निश्चय तोंही छल हेबह विद्यापतिक बरयौवति
तेँ अमर अछि अमिट तोहर मुसकान
चिर पिआसल हृदय पओलक, हे सखे! वरदान
मुक्त कुन्तल राशिमे छविमान
हमर अछि अनुमान
छलीह तों कैने सद्यः स्नान॥

शैलेन्द्र बाबू अपन कवितामे अपनासँ, अपन लग पासक परिवेशसँ, धियापुतासँ आगू नहि गेल छथि। आब किएक नहि गेल छथि से विचारब एत' आवश्यक नहि। बहुत कम परिमाणमे ओ कविता रचने छथि जाहिमे एकटा लोरी सेहो अछि। लोरीमे जेना होइत अछि बच्चाकेँ नीन्नमे जेबाक लेल, सुन्दर-सुन्दर सपना देखबाक लेल कहल जाइत अछि। तकर वर्णन होइत अछि। मुदा शैलेन्द्र बाबूक लोरीक अन्तमे कहल गेल अछि जे नीन्नक कोरमे भाए-बहीनिक सुरति बिसरि जायत।

सपना के नगरीमे फुलबाक बगिया
तितलीक होइक सिंगार।
नव-नव संगी संगमे खेलाएत
हम्पर ई राजकुमार॥
निनियाकेर कोरमे भैया-बहिनियाक बिसरत सुरतिया रे।
सूति रहू सूति रहू राजा दुलरुआ आबि गेल रतिया रे॥

'सुरति' चेहरा सेहो भ' सकैये आ स्मृति सेहो। नीन्नमे गेलापर जागरणक कालक स्मृति लोक पूर्णतः बिसरि पबैत अछि कि नहि से मनोवैज्ञानिक प्रश्न अछि। मुदा मोटा-मोटी हमरा लगैत अछि जे शैलेन्द्र बाबू बच्चाकेँ नीन्नक रूपमे नव संसारमे प्रवेशक लेल कहैत छथि। जत' नव-नव संगी संग खेलयबाक लेल भेटि सकैत अछि। तेँ वास्तविक भाइ-बहीनिक सुरता छूटि जाय। चेहरा मोनसँ उतरि जाय से सम्भव। नीन्नमे बच्चा मुसकुराइत रहैत अछि। जेकरा साठि खेलाएब कहैत छैक। आब ओ ककरा देखि क' मुसकुराइत अछि से कहब कठिन। ओना कहल ई जाइत अछि जे सपनामे भगवान बच्चाकेँ खेलबैत छथिन। कदाचित एही कहबीकेँ दृष्टिमे राखि शैलेन्द्र बाबू बच्चाक सपनामे खेलेयबाक कल्पना केने होथि से सम्भव। मुदा हमर मोनक कोनो-कोनमे ईहो बात हुलकी मारि रहल अछि जे शैलेन्द्र बाबू बच्चाकेँ भाइ-बहिनिक 'सुरतिया' बिसरबाक लेल आ नव-नव संगी संग खेलेबाक लेल किये कहि रहल छथि। की ओ सम्बन्धक रंग धोखरैत अनुभव केने रहथि? अथवा बाबा विदेसरपर 'सुरति'

धरो तँ ने हुनकर मोनमे रहनि। जे से, सम्बन्धपर पड़ैत आघातकेँ सहैतो ई निश्चित जे सम्बन्धक जादूसँ बाहर होयब हुनका सक्कमे नहि छनि। तेँ अपन 'हे हमर चिरमित्र' कवितामे ओ कहैत छथि।

पार पायब तोहर नहि अछि सक्क
भनहि करअ अनिष्ट
किन्तु तोँ छह संग सदिखन
तैँ हमर चिर मित्र

हालाँकि जेना पूर्वहि कहल अछि, उपर्युक्त कविता हुनकर आन कवितासँ किछु भिन्न प्रकारक छनि। तथापि मूलतः एहि 'रमखोदैया'मे फँसिक' कविकेँ लगैये बहुत दुख भोग' पड़लनि अछि। एही ऊहापोहमे हुनकर जीवन यात्रा चलैत रहल अछि जेकरा बहुत झाँपिक' रखबाक कोशिश कइयो क' ओ झाँपि नहि पौलनि अछि। एही 'रमखोदैया'मे पड़िक' ओ संघषोकेँ स्थगित करबापर विर्त्त होइत छथि। एहि स्थगनमे अपनाकेँ बचाक' रखबाक लेल अज्ञातवासक गप्प करैत छथि। हुनकर शैलेन्द्र उपाध्यायक नामसँ वर्ष 1966मे 'मिथिला मिहिर'मे छपल 'पड़एबाक बाट नहि सुझतनि' शीर्षक कवितामे ई तथ्य स्पष्ट रूपसँ प्रकट भेल अछि।

परन्तु एतेक स्पष्ट अछि जे हम
हारि मानव नहि सीखल अछि
तेँ हमर धैर्य, हमर पराजय नहि थिक!
औखन प्रत्यक्ष छी ठाढ़,
कोनो अज्ञातवास नहि लेल अछि
आवश्यकता पड़लापर अस्त्र-शस्त्र उठएबामे
कत्ते काल लागत?
तखन शमी वृक्षपरक ओ मुर्दा पुनः जीबि उठत
फेर आतकक जे बाढ़ि आओत से–
देखत समस्त नगरक लोक
एवं गाए हाँकिक' पड़एनिहार
प्रतिपक्षी कौरव दलकेँ
पड़एबाक बाट नहि सुझतनि।

ओ अपन धैर्यकेँ पराजय नहि मानैत छथि। मुदा अज्ञातवासक उपरान्तो हुनका लड़बाक इच्छा नहि छनि से बात ओ अपन कवितामे कहि जाइत छथि। ओ केवल आतंकक बात करैत छथि जाहिसँ शत्रु डेरा जाय। ओकरा पड़यबाक बाट नहि सुझैक।

हुनका लग आबि क' हारि मानि लिअय। आत्मसमर्पण क' दिअय।

अन्तोधरि ओ शत्रुक मृत्युक कल्पना नहि क' पबैत छथि। शत्रुके नष्ट क' देबाक बात नहि सोचि पबैत छथि। एहि कविताक पाँतीमे ओ कहैत छथि–

जे बुझैत होथि जे हम जीवन-संघर्ष सँ
पलायन क' रहल छी,
तनिकर अज्ञानतापर हँसी लगैत अछि।
हम प्रतिपक्ष के अवसर देब' चाहैत छी
जे ओ विचारि सकय
जे अकारण द्वेषसँ लाभ की होयत?

मुदा की शत्रु सेहो एहने शिष्ट, शालीन आ नीक लोक अछि? जे शत्रुता छोड़ि ई विचारबाक लेल बैसि जायत जे अकारण द्वेषसँ लाभ की होयत? हमरा लगैये जे शैलेन्द मोहन बाबू संस्कार आ परिवेशसँ, शिक्षासँ आदर्शवादी लोक छला। हुनका मोनसे बहुत रास आदर्श वाक्य आ सूत्र, श्लोक सभ छलनि जे हुनका 'केहेन बनबाक चाही', 'कोना देखबाक चाही' से सिखौने छलनि। ओ अपन यात्रा एहने संस्कारसँ प्रारम्भ केने छला। ओ सौन्दर्यकेँ, भनहि अभिजात्य सौन्दर्यकेँ, देखि प्रफुल्लित होइत छला। व्यापक होइत छला। एहि सभ अवसर पर स्वतंत्र अनुभव करैत छला। एकटा प्रेमी सन संवेदनक्षम भ' कय ओ करुणा बाँट' चाहैत छला। मुदा एहि लेल अपना भीतरमे तकबाक प्रक्रिया ओ कदाचित प्रारम्भ नहि क' सकला। ओ वास्तवमे 'जे छला' तकरा बुझि नहि सकला। से यदि बुझि गेल रहितथि तँ अपनाकेँ आर व्यापक करितथि। विस्तारित होइतथि। आत्मविस्तारक अभावमे ओ प्रायः जीवन संघर्षोकेँ ठीकसँ बूझि नहि सकला। से जँ बूझि गेल रहितथि तँ संघर्ष हुनका संघर्ष नहि लगितनि। ओहिसँ दुख नहि होइतनि। झंझटक बोध नहि करितथि।

शैलेन्द मोहन झाक कविताकेँ पढ़ैत आ हुनकर संवेदना लग, अनुभूति लग अपनाकेँ थोड़ेक काल लेल ठाढ़ रखैत हम अनुभव करैत छी जे हुनकर दृष्टि बड़ कोमल छलनि। संसारक कमनीय कोमलताक दर्शनसँ ओ तृप्तिक अनुभव करैत छला। ओ एहिसँ प्रेम कर' चाहैत छला। मुदा ई सुअवसर हुनका कम भेटलनि। प्रकृति, स्त्री, बच्चामे हुनका विशेष रुचि छलनि। वास्तवमे ई सभ संसारक सुन्दर रचना थिक।

आरम्भ, मार्च 1999

क्रमशः कवि किसुनजीकेँ चिन्हैत

भाइ साहेब (राज मोहन झा) क समाद आयल। किसुनजीक कविता पर लिखबा लेल। हाथ-पैर सुन्न हुअ' लागल। सोचलहुँ चाकरीक झंझटि सभहक बहाना बना टारि देबनि। विद्यापति भवनमे भेँट भ' गेला। तगेदा केलनि। कविता संग्रह नहि हेबाक चर्च केलहुँ। कहुना बात टरि जाय। कहियो समीक्षा आदि नहि लिखने छी। किछु कविता-कथा केहनो लीखि लेनाइ एक बात, मुदा समीक्षा, आलोचना...बाप रे! भाइ साहेब दोसरे दिन किसुनजीक मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित कविता संग्रह पठा देलनि। ताहिपरसँ जबर्दस्त आदेश...। कोनो उपाय नहि रहल। पोथी उनटा-पुनटा क' देखलहुँ। किछु कविता सभ पढ़लहुँ। ओकर रचना-काल आदि देखलहुँ। स्व. कविक मृत्युक तिथिपर नजरि गेल। 'क्रमशः'मे संग्रहीत कविक कविता सभ पढ़ैत गेलहुँ। किसुनजीकेँ चिन्हैत गेलहुँ। अप्पन सन बुझाइत गेला।

'क्रमशः'मे पं. रामकृष्ण झा 'किसुन' क 1945 ई.सँ मई 1970 ई. धरिक कविता संग्रहीत अछि। किछु कविताक रचना-काल नहि देल अछि। परन्तु अधिकांश रचनाक रचना-काल अथवा प्रकाशन तिथि अथवा दुनू लिखल अछि। रचना-कालक हिसाबेँ देखलापर ई स्पष्ट होइत अछि जे 1960 ई.सँ पूर्वक मात्र चारि टा कविता 'क्रमशः'मे संग्रहीत अछि। मोटामोटी किसुनजी 1960 ई.सँ मई 1970 ई. धरि कविता लिखलनि। ताहूमे बेसी कविता 1965 ई. क बादहिक अछि। किसुनजीक देहवसान भेल 15 जून 1970 ई.केँ। रचनाकाल आ देहावसानक पृष्ठभूमिमे किसुनजीक काव्य-यात्राकेँ देखैत, कविताकेँ पढ़ैत आ कवि किसुनकेँ चिन्हैत मोन आ मस्तिष्क व्याकुल होइये। सोचबा-बिचारबाक लेल विवश करैत अछि।

पहिल कविता जे 'क्रमशः'मे भेटैत अछि ओ थिक 1945 ई. क लिखल कविता 'शिशु सँ'। किसुनजी ओहि कविता मे शिशुकेँ सम्बोधित करैत शिशुक मोहक मूर्त्तिक रचनामे विधिक व्यापारकेँ सुसफल भेल कहैत छथि। शिशुक माध्यमे प्रकृतिकेँ निहारैत छथि। शिशुकेँ सम्बोधन करैत कौतुकवश शिशु जकाँ आँखि पसारि सृष्टिकेँ देखैत छथि। 1950 ई.मे लिखल स्वातन्त्र्य गीतक माध्यमे स्वतंत्रता प्राप्तिक उल्लासमे भारतीय स्वातन्त्र्यक अभिनन्दन करैत छथि। हुनक मस्तिष्क उन्नत होइत छनि। मुदा 1957

ई.मे लिखल तेसर कवितामे सभटा उल्लास बिला जाइत छनि। नोकरी नहि भेटबाक कारणेँ पढ़ब-लिखब व्यर्थ बुझाइत छनि। माइक मोतियाबिन्दक इलाज लेल, पत्नी आ बच्चाक दबाइ लेल, अपन फाटल जूता बदलबाक लेल पाइक महत्ता बुझाइत छनि। कहैत छथि, 'पाइ थिक सभक पितामह...' ककरो भातिज, भागिन, सरबेटा नहि रहलाक कारणेँ नोकरियो नहि पबैत छथि। मुदा निराशाकेँ आशा मानैत जीवित रहबाक लेल प्रयत्न प्रारम्भ करैत छथि। 1958 ई.मे लिखल चारिम कवितामे देवता-दानवक प्रकृति आ' प्रवृत्ति पर गप्प करैत असमंजसमे पड़ि जाइत छथि। देवताक चरित्र-स्खलनक परिणाम सोचि चिन्तित होइत छथि। एवं प्रकारेँ साठि ईसवीसँ पूर्वक चारु कविताक माध्यमे किसुनजी शिशु जकाँ आँखि पसारि सृष्टिकेँ देखैत छथि। सद्यः प्राप्त स्वतंत्रताक गीत गबैत छथि। आर्थिक अभाव भोगैत,अनेक इन्टरभ्यू देलाक उपरान्तो नोकरी नहि पबैत, निराशाकेँ आशा मानैत जीवित रहबाक लेल प्रयत्न प्रारम्भ करैत छथि। मुदा नीक लोक (देवता) क चरित्र-स्खलनक परिणाम सोचि चिन्तित होयब सेहो प्रारम्भ करैत छथि। कहि सकैत छी जे कवि किसुन अपन यात्रा निजी आ सामूहिक चिन्ताक संग असमंजसमे प्रारम्भ करैत छथि। मुदा आशा हुनक शक्ति ओ सम्बल छनि।

उन्नैस सय साठि ईसवीसँ पैसठि धरिक कवितामे किसुनजी कतहु प्रवासी मनमे सहसा स्मृतिक संस्पर्श द्वारा प्रणय रहस्यक गीरह खोलैत छथि तँ कतहु क्षणजीवी दुखमय, मुदा चिरन्तन-सुखक अन्यतम साधन शाश्वत जीवनक गीत गबैत छथि। कखनहुँ कोनो अपरिचिताकेँ विश्वमे सभसँ वेशी परिचित मान' लगैत छथि तँ कखनहुँ कोनो क्षणक जीवन आ जीवनक क्षणकेँ आत्मोपलब्धि मानि आह्लादित होइत छथि। स्मृतिक दंशकेँ सहैत, वर्तमानकेँ भोगैत, प्रकृति आ प्रेयसीकेँ निहारैत कवि किसुन एहि कालमे युद्धक विभीषिका आ विज्ञानक आतंकक सेहो गप्प करैत छथि। जागरण गीत गबैत छथि। उद्‌घोष करैत छथि। आह्वान करैत छथि। देशक रक्षामे शत्रुक दर्पकेँ चूर्ण करैबला सपूतक आरती उतारैत छथि। कालघोष कय लोककेँ सावधान करैत छथि। सैनिकक पत्र सुनबैत छथि। ई बात स्वाभाविक रुपेँ होइये कारण एहि काल विशेषमे देश चीन आ पाकिस्तान संग युद्ध करैत अछि। कोनो देशभक्त आ संवेदनशील मनुक्ख जकाँ सृजनधर्मी किसुनजी अपन कविताक माध्यमे देश आ जनताकेँ सम्बोधित करैत छथि। मुदा एकर संगहि एहि काल विशेषक कवितामे ओ पैघ लोकक एक आधुनिक शब्द चित्र सेहो प्रस्तुत करैत छथि जाहिमे तथाकथित पैघ लोकक प्रति हुनक घृणा, क्षोभ आ वितृष्णा तीव्र व्यंगक संग प्रतिबिम्बित भेल अछि। ओ कहैत छथि :—

बूझयमे निस्सन छथि
बिनु बूझल फोँक छथि
खोल छन्हि मनुक्खक
आ प्रच्छन्न जोँक छथि।
(पैघ लोक)

एही काल विशेषमे 'दू टा नव कविता' क शीर्षकसँ रोजनामचा तथा रीतिकालीन आ प्रीतिकालीन प्रेम प्रस्तुत करैत छथि। रीतिकालीन आ प्रीतिकालीन प्रेममे कँचका आ पकलाहा कोइलाक गुण वर्णनक संग काँच उमेर आ परिपक्व बएसमे अन्तरकेँ स्वाभाविक मानल गेल अछि। रोजनामचामे अपन घरक चिरइ, भुल्ली बिलाड़ि, गृहश्वामिनी, नेनाक गप्प आ बगेड़ीक नोन हरदि मिला क' तरबाक वर्णनक संग शोणित पीबैत मोस (मच्छड़)केँ ठामहि थापड़ मारि पिस्ता क' देबाक तथा 'सरबेकेँ खूब छका देबाक' आत्मतुष्टि बखानल गेल अछि। एकरा नव कविता कहब विशेष रूपेँ द्रष्टव्य अछि। लगैए नव रीतिए कविता लिखैतो किसुनजी ओहि समय धरि नव कविता के सम्पूर्ण अर्थवत्ताक संग ग्राह्य नहि केने छला। इहो भ' सकैये नव कविताकेँ अपना लेल बोधगम्य मानितो पाठक लेल दुर्बोध मानैत छला। नव कविता लेल जे आस्था बादमे जगलनि से ओहि समयमे नहि रहनि। भ' सकैये एक मैथिल रहबाक कारणेँ बदलैत रीति रेवाज, मानसिकता, अतीतक प्रति मोह भंग, आधुनिकता (अंग्रेजिया चालि)केँ ओ नव मानैत छल होयता। ई सामान्य मैथिल (मैथिल ब्राह्मण) क प्रवृत्ति छल वा एखनो किछु अंशमे अछिये जे ओ सभ गड़बड़ीक लेल अंग्रेजिया चालि (आधुनिकता)केँ दोषी मानैये तँ ओकर खिधांश करैत अछि। कदाचित एही मानसिकताक कारणेँ आधुनिक अथवा नव कविताक सेहो खिधांश होइये। मुदा ई असमंजस किसुनजीकेँ लगले हटि गेलनि आ' ओ नवताक प्रखर पक्षधर भ' गेला।

एही काल विशेषक कवितामे दू टा कविता जे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ बेछप अछि से थिक—'कोशीक बाढ़ि' आ 'इज्जति कोन पदार्थ?' किसुनजी एहि दुनू कवितामे क्रमशः मिथिलाक शोक कोशीक बाढ़िसँ होइत पराभव आ मैथिल ब्राह्मणक छद्म इज्जति (प्रतिष्ठा)सँ होइत पराभव दिस इशारा केलनि अछि। एहि प्रकारेँ किसुनजी क्षेत्र विशेष (मिथिला) क आ जाति विशेष (मैथिल ब्राह्मण) क पराभवपर लोकक ध्यान आकृष्ट केलनि जे हुनक कविताक मूल प्रवृत्तिक बेछप तत्त्व थिक।

पैंसठिक बादक कवितामे जिनगी आ मनुक्ख प्रकृतिक संग किसुनजीक कविताक लक्ष्य बनल अछि। 'हम' सेहो हुलकी मार' लागल अछि। ई सभ हुनका विचलित ओ विकसित दुनू करैये। 'अयला नहि जीवन-सिङार' आ बरिसातक भोर, साँझ आ राति' देखैत-गबैत कवि 'जिनगी थिक टिकट ट्रामक' आ 'जिनगी थिक नव कविता कह' लगैत छथि। मुदा आस्था आश्चर्य-जनक रुपसँ बनल रहैत छनि। यैह आस्था यात्राक सार्थकता लेल मूल सम्बल अछि। कवि किसुन मानैत छथि जे मोनक अन्हारकेँ मरबाक छैक आ असफलताक प्रत्येक श्वासमे दीपित जीवन-आस्था अछि। मुदा जीवनमे मनुक्खसँ ततेक चोट पहुँचल छनि जे वास्तविक मनुक्खक खोजमे बौआए लगैत छथि :—

होइतहिँ ने अछि भरिसक
मनुक्ख कतहु आब

जँ कतहु भेटि जाय
बन्धु! अत्र-तत्र
तँ हमरा लीखि देब
जल्दीसँ पत्र?
(मनुक्खक खोज)

मुदा मनुक्खक प्रति आस्था तैयो खतम नहि होइत छनि। यैह प्रबल आस्था 'जिनगीक आगिमे मृत्यु जरि गेल, के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?' कहबापर विवश क' दैत छनि। आस्थाक सम्बल आ प्रेमक भरोस किसुनजीकेँ क्षणिक विचलनसँ सभ दिन दूर हटबैत रहलनि। अपन अस्मिता तककेँ ओ प्रेमहिँमे सन्निहित मानैत छला। प्रेमे हुनकर परिचिति छलनि। मुदा ई प्रेम कहियो हुनका मोहग्रस्त नहि हुअ' देलकनि। जँ क्षण भरि लेल कखनहुँ मोहग्रस्त होइतहुँ छथि तँ 'ज्ञान' हुनका तुरन्ते उबारि लैत छनि। तेँ प्रकृति, प्रेयसी, अतीत, पुरना चालि, मनुक्ख सभसँ प्रेम करैतो कवि किसुन कखनहुँ मोहग्रस्त नहि होइत छथि। बूझि जाइत छथि जे 'हमरा सभकेँ अतीत हरीमे ठोकने' अछि। बूझि जाइत छथि जे 'सेठ सुरुजमल करैत अछि व्यापार। करिक्का चादरिपर छिड़िया क' रेजकी गनैछ सगर राति।' क्रमशः क्षणिक मोहग्रस्ततो मोह भंगमे परिणत हुअ' लगैत छनि। मोह भंग भेलासँ आक्रोश उपजैत छनि। तखन हुनकर कविता विद्रोह करबापर उतारू भ' जाइत अछि। नव मूल्यक अनुसंधानक कर' लगैत अछि। नव, नवता, नवीन सभटा एक्कहि बेर हुनक लग उद्भासित, उद्घाटित भ' उठैत छनि। अर्थवान भ' जाइये। संगहि वृद्ध, जर्जर, क्लीव-युगक नपुंसक आक्रोशकेँ ओ नीक जकाँ चीन्हि जाइत छथि। हुनका 'शत्रु' देखार हुअ' लगैत छनि आ 'मित्र' चिन्हार भ' जाइत छनि :—

जत' अन्हारक आतंक
बैसल-बैसल मोछ पिजबैछ
आ इजोतक पातर-छितर
पियरायल किरण सभ
सोङर लगौल, भखरलहा घरक
चिनुआर पर
चुपचाप लड़ैत अछि देशक भविष्यसँ
अर्द्ध-गौर, अर्द्धश्याम, हम्मर ई गाम
नीक लगैछ हमरा ई कसबानुमागाम

मित्र-शत्रुक परिचयक संग किसुनजीकेँ अपन 'परिचय' स्पष्ट भ' जाइत छनि। इहो कहल जा सकैये जे पहिने अपन परिचय स्पष्ट भ' गेलापर मित्र-शत्रुक परिचय सेहो

स्पष्ट भ' जाइत छनि। सभ प्रकाशित भ' गेलापर, स्पष्ट भ' गेलापर प्रतिवादक स्वर उभरि अबैये। कोनो बनाबटी बात, बसात, बनावटी इजोतक प्रति आक्रोशसँ भरि उठैत छथि। ओ ईहो बूझि जाइत छथि जे 'शब्दक बोरामे अर्थक अल्हुआ भरबाक प्रक्रियासँ के मोहाविष्ट छी।' तेँ हुनकर स्वर आक्रामक भ' जाइये। आब ओ पुरनाकेँ माफ करबाक लेल तैयार नहि छथि। मुदा किसुनजी ई नहि बूझि पबैत छथि जे जाहि क्षण हुनक स्वर आक्रामक भ' उठल अछि, ओ 'नवता' क पूर्ण पक्षधर भ' गेल छथि, ओही क्षण 'ठरल' मृत्युक चांगुर हुनका गछारि लेबाक लेल पैर मारने बढ़ि रहलए। ई मैथिली कविताक दुर्भाग्य थिक जे जहिया अतीतजीवी संस्कारसँ पूर्णतया मुक्त भ' किसुनजी अपन सार्थक यात्राक बलपर सीना तानिकेँ अपन 'व्यक्ति'केँ ठाढ़ करैत छथि, तकर किछुए दिनक बाद हुनक मृत्यु भ' जाइत अछि। किसुनक कवितामे जे किछु 'नीक' अछि अर्थवान अछि, सार्थक ओ आक्रामक अछि से हुनक 'व्यक्ति' क अछि, मुदा एहि व्यक्ति'केँ पयबामे अफसोस जे किसुनजीकेँ समय लागि गेलनि। ई समय लगबाक कारण निश्चित रूपसँ हुनक अतीत छलनि, परिवेश छलनि, संस्कार छलनि। जहिया ओ एहिसँ मुक्त भेला, लगभग ताही समय जीवनमुक्त सेहो भ' गेला।

क्रमशः कवि किसुनजीकेँ चिन्हैत हमरा लगैये जे प्रतिवाद, आक्रोश ओ आक्रमणक संग प्रेम, आशा ओ आस्था आ अपन परिचय कतेक महत्त्वपूर्ण अछि, सार्थक अछि। एहि लेल थोड़ अथवा अधिक जीवन कोनो माने नहि रखैत अछि। एही सोच आ विचारक संग हमरा इहो लगैये जे कवि किसुनजीकेँ चीन्हब अपन पूर्वजकेँ चीन्हब थिक...।

आरम्भ, जून, 1995

स्वयंसँ लड़ैत धूमकेतु

'जीवनक निस्तार भीतर छैक जत' निरन्तर गहनतम संघर्ष चलैत रहैत छैक। मनुक्खक यैह संघर्षपूर्ण अन्तस-स्वयंसँ लड़बाक सनातन युद्ध क्षेत्र-हमर सृजनक भूमि थिक।'

—धूमकेतु

धूमकेतुक एहि वक्तव्य पर सोचैत हमर दृष्टि 'स्वयं' पर अँटकि जाइत अछि। धूमकेतुक 'स्वयं' की छलनि जकरासँ लड़बाक सफल वा विफल चेष्टा ओ करैत रहला? ओ अपनहि कहैत छथि, 'मनुक्ख सामाजिक पशु थिक। अतः किछु मूल (इद) आ किछु अर्जित (ईगो)सँ बनल अछि। ई द्वैत स्वरूप मनुक्खक नियति थिकैक। आ एहि दूनूक संघर्ष खिस्सा।' सभ गोटे मानैत छी जे 'मूल'सँ सम्पूर्णतः फराक होयब कठिन होइत छैक। खास क' क' एहेन लोक के जकर 'मूल' बहुत गहींर धरि धँसल होइ। मूल आ अर्जितक संघर्षमे अन्ततः विजय ककरो होउ, क्षत-विक्षत दूनू पक्ष होइत अछि। एहीठाम चेतना मनुक्खक काज अबैत छैक। परन्तु दिक्कत ई अछि जे मनुक्खक चेतना ओकर अस्तित्वके निर्धारित नहि करैत अछि अपितु मनुक्खक सामाजिक अस्तित्व ओकर चेतनाके निर्धारित करैत छैक। तेँ धूमकेतुक सृजनभूमि हुनकर सामाजिक अस्तित्वसँ निर्धारित होयब स्वाभाविक अछि। मुदा धूमकेतुक सामाजिक अस्तित्वकेँ हुनकर विशिष्टता-बोध सदैव प्रभावित करैत रहल। 'स्वयं' विशिष्ट बनल रहल। ओ समाजक व्यापकतासँ अपनाकेँ अभिन्न नहि क' सकला। सामान्य नहि भ' सकला। एही कारणें धूमकेतुक 'स्वयं' सीमित क्षेत्रमे अपन कारबार केलक। फलतः संघर्षोक सीमा बन्हा गेल। हुनक 'स्वयं'सँ संघर्ष व्यापक भूमि पर नहि पसरल। ओकर विस्तार क्षैतिज नहि, उर्ध्वाधर अछि। ओ चाहितो सैह छला। मुदा जे संघर्ष भेल से बहुत गहींर धरि गेल।

आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे 'घटनाक वर्णन करब आसान अछि, ओकरा संवेदनाक स्तर पर सम्प्रेषित करब कठिन। आजुक कथा यैह कठिन काज क' रहल अछि। एकर अर्थ ई भेल जे आजुक कथाक संवेदना-संसार व्यापके नहि

गहींर सेहो भेल अछि।' मुदा लगैत अछि जे ई काज कठिने नहि, खतरनाक सेहो अछि। खतरनाक एहि अर्थमे जे जँ वैचारिक ओझरा लेखकक मोनमे बनल रहल त' एहि तरहक सृजन समाज लेल उपयोगी नहि होयत। सार्थक नहि होयत। क्षणिक मनोरंजन भने करय। समाजक विकाससँ जुड़िये क' सृजन अपन सार्थकता सिद्ध क' सकैत अछि। तेँ सांस्कृतिक चेतनाक सामाजिक चेतनासँ जुड़ि जायब आवश्यक अछि। अन्यथा सांस्कतिक चेतना व्यक्तिवादी अखाड़ा पर ताल ठोकैत रहि जायत। ई ओझरा धूमकेतुक चेतनामे बनल रहलनि जकर अभिव्यक्ति हुनकर सृजनमे सेहो स्वाभाविक रूपसँ भेल अछि। वस्तुतः ई समस्या भोगल यथार्थ संग जुड़ल अछि। धूमकेतु मैथिलीमे भोगल यथार्थक अभिव्यक्ति कयनिहार प्रमुख रचनाकारमे मानल जाइत छथि। ओ अपने स्वभोगित खिस्साकेँ सभसँ प्रामाणिक मानैत छथि।

मिथिलामे 'भोग' हमरा एक अद्भुत शब्द लगैत रहल अछि। 'भोग' शब्दक प्रयोग कैक अर्थमे होइत अछि। 'भोग' के जीवनमे सुख-दुखक अनुभव मानल जाइये। भोगके अदृष्ट मानल जाइये। भोगके कर्तव्यक परिणाम मानल जाइये। भगवानक भोजनीके भोग कहल जाइत अछि। एहि सभ अर्थमे एकटा अन्तः सम्बन्ध अछि। भोगीन्द्र लोकक मिथिलामे कमी नहि अछि। स्वाभाविक रूपमे एहि 'भोग' क बेसी चलनसारि मिथिलाक ब्राह्मणे वर्ग धरि सीमित अछि। अभिजने समाजमे प्रचलित अछि। कदाचित भोग्य पदार्थक बिना भोगक कोनो कल्पने नहि भ' सकैत अछि। भोग लेल सम्पत्ति जरूरी। तेँ जिनका लग भोग्य पदार्थ उपलब्ध छनि से भोगक बेसी प्रयोग करैत छथि। एहि भोगक विस्तार देहसँ दिमाग धरि अछि। ई 'भोग' वस्तुतः अभिजन वर्गकेँ आन वर्गसँ खास क' श्रमिक वर्गसँ विलगबैत रहल अछि। सैह कारण थिक जे अपना वर्गमे मिलेबाक काल अथवा अपना वर्गक नजदीक अयबाक सुविधा दैत काल अभिजन वर्ग बजैत रहल अछि— 'ले भोग कर'।

पहिलुका ई भोगवाद आधुनिक कालमे उपभोगवादमे बदलि गेल अछि। उपभोगवाद आर जतेक गड़बड़ करैत हो, सभसँ बेसी गड़बड़ ई करैत अछि जे सम्पन्न आ विपन्नक दूनू वर्गके प्रवृत्तिक स्तरपर एक धरातल पर अनबाक प्रयास क' रहल अछि। बात आब खाली पाइ के रहि गेल अछि। जकरा लग पाइ छै से उपभोग क' सकैये। एहिमे ब्राह्मण कि शूद्रमे कोनो अन्तर नहि। जेँ कि समाजमे ध्रुवीकरण बदलि रहल छैक, तेँ वर्गक सीमांकन तीक्ष्ण भ' रहल अछि। जातीय संरचना टूटि रहल अछि। संगहि अर्थक वर्चस्व बढ़ि रहल अछि। तेँ भोग अपन नव कलेवरमे उपभोग बनि क' पसरि रहल अछि। आइ अर्थक वर्चस्व देखेबाक लेल उपभोग सभसँ बेसी उपयोगी भ' गेल अछि। मुदा भोग एकटा खास सामाजिक परिधिमे घुमैत रहल अछि। भोगसँ ब्राह्मणलोकनि अपन जातीय श्रेष्ठता प्रकट करैत रहला अछि। अपन वर्चस्व देखबैत रहला अछि। स्वाभाविक छल जे भगवानक भोजनीके सेहो भोग लगायब कहलनि। अर्थात् भोगमे देवत्वक आरोप केलनि। एतावता भोग सामंतवादक उपजा थिक त' उपभोग पूंजीवादक।

भोगवाद अभिजन समाजक प्रिय सिद्धान्त छल त' उपभोगवाद पूंजीपतिक प्रिय अस्त्र अछि।

एहि प्रकारें भोग जातीय आ उपभोग अर्थक वर्चस्व लेल उपयोगी अछि। मुदा दूनूक दुनू वर्चस्वे लेल उपयोगी अछि। मैथिली समाजमे जाति आ पाइ दुनूक महत्व रहल अछि। जातिसँ पाइ होइत रहल अछि। संगहि पाइसँ जाति सेहो कीनल जाइत रहल अछि। बिकौआ प्रथा एकर नीक उदाहरण थिक। पंजी व्यवस्था एकर मूलमे छल। पाइक बल पर जयबारसँ सोति बनबाक अभिलाषा पूर्ण हुअ' लागल। मुदा क्रमशः जाति महत्वहीन आ पाइ महत्वपूर्ण होइत गेल अछि। जकरा पाइ छै तकर सम्मान समाजमे बढ़ैत गेलैक अछि। जहिया जाति ल' कय सम्मान रहैक, पाइ पर जाति कीनल जाइत छल। कुलीन संग सम्बन्ध जोड़ल जाइत छल। आइ सामाजिक सम्मान लेल कुलीनताक आवश्यकता नहि छैक। खाली पाइक आवश्यकता छैक। तेँ अनाप-शनाप पाइक व्यवस्था कयल जा रहल अछि। पाइक आधार पर वर्चस्वक प्रदर्शन भ' रहल अछि। वस्तुतः समाजक मूल आधार अर्थ थिक। वर्ग दूइएटा अछि—सम्पन्न आ विपन्न । ई सभ-वर्ण जाति आदि—सम्पन्न वर्गक हितमे ठाढ़ व्यवस्था थिक। जाहिया भोगक आवश्यकता भेलैक, भोगवाद आनल गेल। आइ उपभोगक आवश्यकता छैक, उपभोगवाद आनल जा रहल अछि। तहिया पाप-पुण्यक टंटा गढ़ि कए शोषण करबाक छलैक। आइ वस्तु बना क' शोषण करबाक छैक। जे विपन्न अछि, शोषित अछि तकरा लेल भोग-उपभोग दूनू लोभेबाक लेल फेकल जाल थिक जाहिमे ओ फँसय आ सभ दिन शोषित होइत रहय। स्वाभाविक अछि जे शोषणमुक्त समाजमे भोग-उपभोग नहि अछि। ओहि व्यवस्थामे दूनू शब्दक तेँ कोनो प्रयोग नहि भेटैत अछि। भोग-उपभोगक सीमा पूंजीवादे धरि सीमित अछि।

पूंजीवादी समाज व्यक्तिवादी समाज थिक। एहिमे खाली व्यक्तिक विकासक व्यवस्था छैक। सम्पूर्ण समाजक समान विकासक कोनो अवधारणा पूंजीवाद लग नहि छैक। जें कि व्यक्ति समाजक एक अंग थिक, तेँ समाजमे व्यक्तिक असमान पृथक विकाससँ एक अन्तर्विरोधक जन्म होइत छैक। दू टा पृथक-पृथक वर्ग बनैत अछि। जे वर्ग संघर्ष दिस समाजकेँ ल' जाइत अछि। वर्ग संघर्षसँ सम्पूर्ण समाजक समान विकास सम्भव थिक। सामाजिक यथार्थक ई बोध आवश्यक अछि। ई बोध संवेदनाक स्तर धरि जायब आवश्यक अछि। स्वाभाविक अछि जे विचार जावत धरि संवेदनाक स्तर धरि नहि जायत तावत ओकर अभिव्यक्ति ने सार्थक होयत ने कलात्मके। किछु अलगल-अलगल सन भावनामे भासल लागत। व्यक्तिवादी मानसिकताकेँ सामूहिक सोचक अभिव्यक्तिसँ सुविधापूर्वक बचेबाक लेल भोगल यथार्थ बहुत काज दैत अछि। मुदा धूमकेतु अपन लेखककेँ 'भोगल यथार्थक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखि क' अपनेसँ अपन सीमा बान्हि लेलनि। कदाचित ई विचार तत्कालीन अखिल भारतीय प्रवृत्तिक कारणे आयल हो। मैथिलीमे ई धारा राजकमल चौधरीसँ प्रारम्भ भेल।

राजकमल एहि धाराक सामर्थ्यवान आ शीर्ष पुरुष छथि। मुदा स्वाभोगित खिस्साकेँ प्रामाणिक मानब लेखक धूमकेतु लेल एक मजगूत सिक्कड़ि बनि गेल। एहि सिक्कड़िके ओ नहि तोड़ि सकला। ओकर गछाड़सँ मुक्त नहि भ' सकला। पूंजीवादी समाजक भोगल यथार्थ धूमकेतु सर्जकके ठमका देलक। ठमकल धूमकेतु अपन वर्गसँ बाहर नहि आबि सकला। ओहि वर्गसँ जे व्यक्तिवाद लेल जानल जाइत अछि। मुदा धूमकेतु अपने गामक योगानन्द झासँ आगूक रचनाकार अवश्य छथि। 'आम खयबाक मुँह' सामंती भोगवादक उदाहरण थिक।

एहिठाम ई स्पष्ट भ' जायब आवश्यक जे व्यक्तिक अन्तर्जगत आ समाजक वाह्यजगतमे बहुत अन्तर छैक। अन्तर्जगत अन्तर्द्वन्द्वसँ भरल अछि त' वाह्यजगत अन्तर्विरोध सँ। मैथिलीक बहुतो लेखककेँ वाह्यजगतक अन्तर्विरोधसँ बेसी सुविधाजनक अन्तर्जगतक अन्तर्द्वन्द्व लगैत रहलनि अछि। आधुनिकताक नाम पर एक समयमे ई सहजें चकविदोर लागौलक। तैं एहिठाम किछु समय धरि मोनक खिस्सा बहुत कहल गेल। बहुत मनकथा भेल। मनोरंजनक अभ्यस्त पाठककेँ से रुचबो खूब केलनि। मुदा क्रमशः अन्तर्द्वन्द्वसँ मुक्त पबैत लेखक वाह्यजगतक अन्तर्विरोधके चीन्हब प्रारम्भ क' देलनि। ई मुक्ति जीविकोपार्जन लेल होइत श्रमक कारणें सम्भव भेल। जीवनमे बढ़ैत संघर्षसँ उपजल। जिनका जीवनमे संघर्ष नहि रहनि अथवा जे संघर्षसँ पड़ाइत रहला से अन्तर्दन्द्वमे फँसल रहला। मानसिक भोगक खिस्सा गढ़ैत रहला। भोगसँ क्रमशः सम्भोग दिस बढ़ल गेला। मुदा जे जीवन आ समाजमे परिस्थितिसँ भीड़ि गेला, संघर्षक ताप सहलनि, ओहि लेखकक रचनामे सामाजिक यथार्थक अभिव्यक्ति भेल। अभिजन मानसिकतासँ बाहर नहि निकलि सकबाक कारणे धूमकेतु अपने जीवनमे सम्पन्नता आ विपन्नता देखियो क' सुख-दुखक अनुभव अर्थात् भोगसँ मुक्त नहि भेला। आवरणहीन नारी देह हुनकर चित्तमे समुद्र मंथन करैत रहल।

एहि सभ बात के धूमकेतुक उपन्यास 'मोड़ पर'मे सेहो देखल जा सकैत अछि। भोग आ चेतनाक द्वन्द्वसँ भरल सुपुष्ट आ रंग-विरंगी छविक एहेन उपन्यास सम्भवतः मैथिलीमे नहि आयल छल। भारतक स्वतंत्रतासँ किछु पूर्वसँ प्रारम्भ होइत एकर कथा स्वतंत्रताक बाद धरि चलैत अछि। मोटामोटी एकर काल 1935-40सँ ल' कय 1970 क पूर्व धरिक कहल जा सकैत अछि। एहि उपन्यासमे धूमकेतुक अनेक प्रसिद्ध कथा समाहित अछि। मैथिल ब्राह्मणक कुलीन आ अभिजात संस्कारक कतोक चोर गलीके नांगट करैत धूमकेतु एहि उपन्यासक माध्यमसँ मिथिलामे स्वतंत्रता आन्दोलन आ वामपंथी आन्दोलनक किछु टुकड़ी सेहो देखबैत छथि। सभसँ महत्त्वपूर्ण बात एहि उपन्यासमे मैथिली समाजक बहुल संस्कृतिक वर्णन थिक। समाजक सर्व-धर्म-समभावक दिग्दर्शन थिक। जे तत्त्व प्रेमचन्दक बाद हिन्दिओ कथा-उपन्याससँ बिला जेबाक चर्च बहुधा देखैत रहैत छी। व्यक्ति संघर्ष के सामूहिक संघर्षसँ जोड़ि क' चलबाक चेतना सेहो एहि उपन्यासमे आयल अछि। मुदा ई सभ देखाइयो क' अपन वर्गसँ बाहर आयब

आ सामूहिक संघर्षक प्रत्यक्ष गाथा प्रस्तुत करब धूमकेतुसँ सम्भव नहि भेलनि अछि। वास्तवमे मानसिक अन्तर्द्वन्द्वसँ अन्तर्विरोध धरिक यात्रा मोड़सँ पहिनहि समाप्त भ' गेल अछि। वैचारिक एहि ओझरा के सोझराइये क' 'मोड़ पर' पहुँचल जा सकैत छल। मुदा मोड़सँ पहिनहि बाट काटल अछि।

धूमकेतुक सम्बन्धमे आलोचक कुलानन्द मिश्र कहने छथि जे, 'धूमकेतुक कविता आ कथा आन बहुतो समकालीनसँ पर्याप्त भिन्न आ परवर्त्ती पीढ़ीक रचना-धर्मिताक समगोत्री प्रतीत होइछ।' आइ कुलानन्द मिश्रो अपन एहि मन्तव्य पर पुनर्विचार कर' चाहता। भोगल यथार्थक लेखन आइयो भ' रहल अछि। मुदा से मैथिली कथाक मुख्य धारा नहि थिक। मैथिली कथाक मुख्यधारा सामाजिक यथार्थ थिक। व्यक्ति चेतनासँ सामाजिक चेतना दिस बढ़ैत रचना 'भोगल यथार्थ'केँ अनुपयोगी बनौने जा रहल अछि। मुदा तैयो धूमकेतुक महत्ता कम नहि होइत अछि। अपना समयक ओ धूमकेतु रहबे करता-भलेही 'स्वयं'सँ लड़ब हुनक नियति भ' गेलनि।

स्मृति सन्ध्या-3, मैथिली अकादमी, पटना

मैथिली कथालोचन आ कुलानन्द मिश्र

कुलानन्द मिश्रकेँ लोकधर्मी साहित्यालोचनक बेगरता एहि कारणे भेलनि जे साहित्य सृजन आ साहित्यालोचन दूनूमे परम्परा-प्रेमक विकृति असाध्य रोग जकाँ जड़िया गेल छल। परम्परा-प्रेमक रुग्ण मनोभाव रचनाक थाकल स्वर आ विवेचनक औँघाइत दृष्टि लेल उत्तरदायी रहय। स्थितिगत तथ्य पर विचार करैत ओ देखलनि जे मैथिली साहित्य लेखन कि साहित्य विवेचनक वितान पर ओ वर्ग पसरल पड़ल अछि जकरा अपन स्वार्थ एवं सुरक्षाक दृष्टिसँ ओहि विकृत परम्परा आ ताहिसँ उपजल रचना एवं विवेचनाक समर्थन करब अनिवार्य छैक। एहिसँ ओहि वर्गक हितसाधन होइत छैक। संस्कृत साहित्य आ काव्यशास्त्र तेँ ओहि वर्गक रसग्राही एवं सौन्दर्योपासक लोकनिकेँ प्रियगर आ रुचिगर छलनि। ओहि साहित्य-संसारमे रमैत ओहि वर्गक लोक ततेक आत्मतृप्त छल, अपनामे ततेक लीन छल जे बाहरक बदलैत सत्य संग कोनो सुरक्षित सम्बन्ध कि सार्थक सम्वाद स्थापित नहि क' सकल।[1]

मैथिलीमे आलोचकलोकनिक एहने मनोभाव संस्कृतक काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तक आधार पर मैथिलीक आधुनिक साहित्यक आलोचनामे सेहो लागल रहल। बादमे ई अनुभव कयल गेल जे एहिसँ काज चल' बला नहि अछि। कांची नाथ झा 'किरण' अपन निबन्ध 'आलोचना : एक दृष्टिकोण'मे लिखलनि जे आधुनिक भारतमे धीरोदात्त नायकक अस्तित्वक सम्बन्धमे कियो सोचि नहि सकैत अछि। यदि कियो आलोचक कोनो प्रसंगमे संस्कृतक सहायता लैत छथि त' ओकरा आधुनिक स्थितिक अनुसार रूपान्तरित क' सामंजस्य बैसाब' पड़तनि। एहिसँ ओ मानलनि जे सामान्य-बोधक आधार पर साहित्यालोचनक पाश्चात्य सिद्धान्त आधुनिक जीवन-स्थिति लेल बेसी उपयुक्त होयत।[2] रामकृष्ण झा 'किसुन' सेहो संस्कृत काव्य-शास्त्रक अप्रासंगिक मापदण्डकेँ अस्वीकारलनि आ मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्रक मूलकेँ पकड़बाक चेष्टा केलनि। 'मैथिली साहित्यमे नव कविता' शीर्षक निबन्धमे ओ स्पष्ट कहलनि जे मानव-चेतनाक विकासक संग-संग रसबोधक पद्धतियोमे परिवर्तन होइत गेल अछि। तेँ नवकविताक वैशिष्ट्य-परीक्षण पूर्व प्रचलित निकष वा प्राचीन रसवादक नियम-लक्षणक आधार पर नहि भ' सकैत अछि।[3]

साहित्य-विवेचनमे साहित्यक प्रति धारणा सेहो काज करैत अछि। साहित्यक धारणे साहित्य-विवेचनक दृष्टिक आधार बनैत अछि आ पद्धतिकेँ दिशा दैत अछि। साहित्य सम्बन्धी धारणाक परिवर्तन आ विकासमे सामाजिक विकास-प्रक्रियाक सेहो महत्त्वपूर्ण भूमिका होइत छैक। आधुनिक कालमे नव सामाजिक सन्दर्भसँ नव साहित्य उत्पन्न भेल त' साहित्यक नव धारणा सेहो समक्ष आयल। स्वाभाविक रूपसँ नव साहित्यक विकास भेल त' साहित्यक नव धारणा पर विचार करब जरुरी मानल गेल। मैथिलीमे किसुनजी साहित्यक प्रति अपन धारणा व्यक्त करैत कहलनि जे सामाजिक-यथार्थकेँ बूझब आ ओकरा प्रतिबिम्बित करब-यैह थिक कवि-कर्म। सामाजिक स्थिति अर्थात अर्थ व्यवस्था, प्रशासनक पद्धति, उद्योग-उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, जटिलता संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवन पर प्रभाव, ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत-बदलैत रहैत अछि, तहिना-तहिना सामाजिक यथार्थ मूलतः स्थिर रहितो रूपतः परिवर्तित होइत रहैत अछि, आ तेँ तकरा आत्मसात क' अभिव्यक्त करबाक शिल्प-शैली सेहो परिवर्तित होइत अछि।[4] मुदा मैथिलीक कतेको आलोचक आधुनिक साहित्यक नव धारणाकेँ पचा नहि सकला। साहित्यक प्रति पुरान धारणा हुनकर संस्कारमे बनले रहल। यदि पाश्यात्य समीक्षा शास्त्रक तकनीक आ पद्धतिसँ परिचितो भेला त' साहित्यक अवधारणात्मक अन्तर्द्वन्द्व बनले रहलनि। फलतः आलोचनाक लेल ने अपेक्षित गम्भीरता हुनकामे आयल ने ओ नव दृष्टिक संग अपन बाते राखि सकला। केवल भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रक तकनीकी शब्दावलीक पथार लगौलनि। बोधक स्तर पर अस्पष्टताक कारणे आलोचना-कर्म संग संलग्नताक अभावमे परिश्रमसँ सेहो ओलोकनि जी चोरबैत रहला। तैं आँखि मूनि क' अनकर कहल बातकेँ खाली दोहरबैत रहला। फलस्वरूप आलोचना साहित्यक सृजन संतोषजनक रूपेँ नहि भ' सकल। सुधांशु शेखर चौधरी 'समालोचना एवं मैथिलीमे समालोचनाक विकास' नामक निबन्धमे लिखलनि जे मैथिलीक शिक्षार्थीलोकनिकेँ उँच कोटिक आलोचना-साहित्यक अभावमे कोनहु प्राचीन अथवा आधुनिक कवि एवं साहित्यकारकेँ नीक जकाँ चिन्हबामे अत्यन्त कष्टक अनुभव भ' रहलनि अछि। तकर मुख्य कारण जे आलोचकलोकनि बहुधा गओले गीत गबैत रहि जाइत छथि। जाहि श्रमक अपेक्षा सफल आलोचकसँ रहैत छनि ताहिसँ ओलोकनि अपन जी चोरबैत छथि।[5]

रमानाथ झाकेँ मैथिली आलोचना साहित्यकेँ समृद्ध तथा ओकर दिशा निर्देश करबाक सर्वाधिक श्रेय देल जाइत अछि। उमानाथ झा मैथिली आलोचना साहित्य 'नामक निबन्धमे रमानाथ झाक आलोचनाकेँ सभ प्रकारक-मल्लिनाथी,सैद्धान्तिक, ऐतिहासिक, शोधमूलक एवं विवेचनात्मक मानलनि अछि।[6] एहि बातसँ लगैत अछि जे रमानाथ झा तात्कालिक आवश्यकताकेँ देखैत जत'-जे उचित बुझलनि ताहि पद्धतिक अनुसरण क' मैथिली आलोचनाक न्यो तैयार केलनि। मुदा मोहन भारद्वाज मानैत छथि जे रमानाथ झाक आलोचनाक सीमा छनि। ओ अंग्रेजीक विद्यार्थी भइयो

क' संस्कृत मानसिकताक लोक छला। साहित्यक प्रति हुनक धारणा संस्कृत काव्यशास्त्रक पृष्ठभूमिमे पल्लवित भेलनि। मैथिली साहित्यक ओ जे व्याख्या आ विश्लेषण कयलनि तकर मुख्य कसौटी छल संस्कृत-काव्यशास्त्र। यद्यपि हुनक समीक्षा पढ़ला पर लगैत अछि जे संस्कृत-काव्यशास्त्रक कसौटीकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक व्याख्याक लेल ओ पर्याप्त नहि मानैत छला। तथापि ओहि सीमासँ बाहर निकलबाक प्रयास ओ नहिये जकाँ केलनि अछि।[7] परन्तु ई सभ मानैत छथि जे रमानाथ झा संस्कृत मानसिकताक लोक भने रहथु ओ अपन काजक प्रति गम्भीर अवश्य छला। रमानाथ झासँ फराक मैथिली साहित्यकेँ बुझबाक आँखि देनिहारमे कांचीनाथ झा 'किरण' आ रामकृष्ण झा 'किसुन'क नाम उल्लेखनीय अछि। किरण जी जत' अपन वैचारिक निबन्ध सभक द्वारा मैथिली साहित्यक प्रगतिशील धाराकेँ फरीछ केलनि ओतहि किसुनजी नवकविता पर विचार करैत आलोचनाक भाषाकेँ शास्त्रीयताक दम्भ आ ज्ञानक बोझसँ मुक्त केलनि।[8]

रमानाथ झाक बाद कुलानन्द मिश्र नहि केवल प्रविधि अपितु नव दृष्टिक संग मैथिली आलोचनामे प्रवेश केलनि। हुनका लग साहित्य आ कलाक उद्देश्य स्पष्ट छलनि। आ जनैत छला जे समाजमे पाओल जाइत भिन्न-भिन्न उत्पादन-सम्बन्ध लोकक रुचि, आवश्यकता आ जीवन-शैलीकेँ वास्तवमे सम्पूर्णतः प्रभावित करैत छैक। ओ ईहो बूझैत छला जे साहित्य आ कलामे सोद्देश्यताक प्रश्न वास्तवमे कोना प्रारम्भ होइत छैक आ किएक आवश्यक होइत छैक।[9] समाजकेँ वर्गीय आ ऐतिहासिक यथार्थवादी दृष्टिसँ देखबाक कारणे कुलानन्द मिश्र साहित्यकेँ बृहत्तर लोक-चेतनासँ सम्पृक्त क' यथार्थक लग अनबाक बात करैत छथि। ओ मानैत छथि जे व्यक्तिगत चेतनाक मनोवैज्ञानिक आधार ल' क' रचल गेल साहित्य निश्चित रूपसँ सम्पन्नवर्गक मानसिक विलासिताक खोराकक ओरिआओन कयलक। तैं बृहत्तर लोक-चेतनासँ सम्पृक्त भ' यथार्थक लग आबि मनोभिलषित वस्तु धरि पहुँचबाक यात्रा आरम्भ भ' सकैत अछि। एहन यात्रा भिन्न-भिन्न भ' सकैत अछि तैयो भिन्न- भिन्न लेखकक सज्ञानताक छाप ओकर रचना पर पड़बे करतैक।[10] एहि प्रकारें सामाजिक यथार्थक बोध आ छोट लोकक पक्षधरताक ज्ञान कुलानन्द मिश्रकेँ जत' अभिजात्य सौन्दर्यबोधक आलोचनाक दृष्टि देलक ओतहि पाठक, लेखक आ आलोचककेँ एक सामान्य धरातल पर अनबाक विचारकेँ सेहो पुष्ट केलक।

मैथिलीमे आलोचक लेल रहरहाँ निष्पक्षताक गप्प कयल जाइत अछि। सुनबामे ई निष्पक्षता बहुत आकर्षक लगैत अछि। मुदा जखन विचार करैत छी त' अमूर्त आ निरर्थक लाग' लगैत अछि। वस्तुतः ई निष्पक्षताक बात आलोचककेँ साहित्यक सामूहिक प्रक्रियासँ फराक क' न्यायाधीशक ऊँच आसन पर बैसबैत अछि, जे साहित्य-शास्त्रक अनुसार कृतिक जाँच क' लेखककेँ दोषी वा निर्दोष घोषित करैत अछि। मुदा ई शास्त्रे जन सापेक्ष नहि अछि। समानताक बात एहिमे नहि भेटैत अछि। पारस्परिक सम्वादक एहिमे कोनो गुंजाइश नहि छैक। सार्थक सम्वाद धरि पहुँचबाक

त' बातो नहि सोचल जा सकैत अछि। एहिमे आलोचक लेल निष्पक्षता आ रचनाकार लेल सहनशीलताक निर्देश अछि। वस्तुतः ई सभटा साहित्यक ओहि धारणासँ उपजल अछि जे साहित्यमे सामाजिकता आ पक्षधरतासँ भड़कैत अछि। ओ मानैत अछि कि साहित्यमे सामाजिक यथार्थसँ आ ओकर समाजशास्त्रीय विश्लेषणसँ साहित्यक साहित्यिकता नष्ट भ' जाइत छैक। साहित्यक सम्बन्धमे ई तत्त्ववादी दृष्टि मानैत अछि जे साहित्यिकता किछु अपरिवर्तनशील तत्त्व धरि सीमित अछि। ओ ई नहि मानैत अछि जे साहित्य बदलैत अछि, ओकर विकास होइत छैक त' साहित्यक धारणा सेहो बदलैत छैक, ओकरो विकास होइत छैक।[11]

साहित्यक बदलैत धारणा आ साहित्यालोचनक परिवर्तित होइत दृष्टिसँ लैस भ' आठम दशकमे कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाज, जीवकान्त, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर आदि मैथिली आलोचनामे अपन यात्रा प्रारम्भ केलनि। कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे लेखनक क्षेत्रमे डेग धरैत काल समीक्षा आ आलोचनेक पथ प्रशस्त करबाक बात हुनकर मोनमे सभसँ अधिक जड़िआयल छल। हिनकालोकनिक लक्ष्य स्पष्ट छल। मुदा लक्ष्य स्पष्ट रहितो कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजकेँ छोड़ि आन कियो लगन ओ तत्परताक संग आलोचना-कर्मसँ सन्नद्ध नहि रहि सकला। जीवकान्त त' ओहि समूहसँ लगातार विचलित होइत गेला आ अन्ततः हुनक साहित्यक अवधारणे बदलि गेल। एहि समूहक अतिरिक्त आन किनकोसँ जँ ई तत्परता आ लगन सम्भव भेलनि त' से रामदेव झा, भीमनाथ झा आ रमानन्द झा 'रमण' छथि। मुदा एहि तीनूक साहित्यक प्रति धारणा आ आलोचना पद्धति मोहन भारद्वाज आ कुलानन्द मिश्रसँ फराक छनि। ओना हिनका सभ पर संस्कृत वा भारतीय साहित्य-शास्त्रक प्रभावकेँ नकारल नहि जा सकैये। मुदा पाश्चात्य आ आन-आन भारतीय भाषा-साहित्यक माध्यमे आयल नव-नव स्वरकेँ ई लोकनि अकानैत रहला अछि। ओहिसँ अपन दृष्टिकेँ मजैत आ विकसित करैत रहला अछि। मैथिली आलोचनामे अपन निजता स्थापित करैत रहला अछि। मैथिली आलोचनाकेँ बुझबाक लेल हिनकालोकनिक लेखनकेँ जानब आवश्यक अछि। ई लोकनि साहित्यक मार्क्सवादी धारणाकेँ नहि मानैत छथि। साहित्यक मार्क्सवादी धारणा मानैत अछि जे साहित्य ओ काल्पनिक सत्ता थिक जे युगक आर्थिक यथार्थसँ निर्मित होइत अछि आ ओकरे अनुवर्तन करैत अछि। यथार्थकेँ बिना बूझने कल्पना (साहित्य)केँ नहि बूझल जा सकैत अछि। मुदा रमानन्द झा 'रमण' साहित्यक उपयोगिताकेँ मात्र आर्थिक दृष्टिये आँकब नितान्त घातक मानैत छथि।[12] ओ मानैत छथि जे साहित्यसँ समाजमे उत्तरदायित्व बोध जगैत अछि। साहित्य समाजक नैतिक दायित्वसँ परिचित करबैत अछि। जहाँ धरि साहित्यकेँ आर्थिक दृष्टियें आँकबाक प्रश्न अछि, मार्क्सवादियो साहित्यक उपयोगिताकेँ आर्थिक दृष्टिये नहि अँकैत अछि। केवल आर्थिक दृष्टियेँ आँकलो नहि जा सकैत अछि। मार्क्सवादी पद्धति सामाजिक गुणक संग साहित्यक सम्बन्ध आ कृतिक अभिव्यक्तिक शक्ति द्वारा सामाजिक जीवन

पर पड़यबला प्रभावक निर्धारण करैत अछि। मोटामोटी रमणजीक धारणा साहित्यकेँ मूल्यपरक मानबाक धारणा आ ओकर व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। साहित्यक प्रभाववादी विचारक हेबाक कारणेँ रमानन्द झा 'रमण' साहित्यक शिल्प पक्ष पर सेहो ध्यान देलनि अछि। शब्दक प्रयोगमे सेहो हुनकर रुचि छनि। मैथिली कथाक शिल्पविधान आ मैथिली कथा पर पर-भाषिक प्रभाव नामक हुनक निबन्धकेँ एहि सन्दर्भमे देखल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे शिल्पक प्रयोग पर भीमानाथ झा सेहो काज केलनि अछि। साहित्यक पुरान ओ नव धारा पर हुनक ऐतिहासिक दृष्टिसँ कतेको विवेचन आयल अछि। ओ मानैत छथि जे कथामे भोगल यथार्थक उद्घाटनक एहि युगमे मैथिली कथाकारक विशाल वाहिनी मध्यमवर्गेक छाउनीसँ बहराइत अछि। स्वतंत्रतापूर्वक कथाकार होथु वा स्वतंत्रता बादक, पछिला सदीक उत्तरार्द्धक आदिसँ ल' क' नवीनतम पीढ़ीक प्रायः शतप्रतिशत कथाशिल्पी एही वर्गक छथि, हुनकालोकनिक कपारक रेखा एही वर्गक समस्याक तनावसँ उगल रहैत छनि।[13] रामदेव झाक आलोचनाक मुख्य प्रवृत्ति अनुसन्धानात्मक अछि। 'मैथिलीक आद्य कथा' नामक निबन्ध एहि दृष्टिसँ बहुत उपयोगी अछि। ओ आँखिसँ ओझल पुरान कृति सभकेँ सेहो समक्ष अनलनि अछि। एहि तरहक काज रमानन्द झा 'रमण' सेहो लगातार करैत रहला अछि। जहाँ तक साहित्यक सामाजिक दृष्टिक सम्बन्ध अछि हिनकालोकनिक साहित्यक धारणा दर्पणवादी धारणासँ आगू बढ़ल नहि लगैत अछि। मोहन भारद्वाजक धारणा यथार्थवादी छनि। ओ कृतिक समाजपरक विवेचन पर विशेष जोर दैत छथि। ओ मानैत छथि जे मार्क्सवादी विचारक साहित्यकेँ अपन सिद्धान्तक उदाहरण रूपमे रखबाक प्रयास करैत छथि। परिणामतः एहि प्रकारक आलोचनामे यांत्रिकता आबि जाइत अछि। मानव-यथार्थ आ ओकर काव्यात्मक प्रतिक्रियासँ सम्पर्क स्थापित नहि क' दलगत संकीर्णतामे ओझरायल शब्दाडम्बर ने त' साहित्य लेल उपयोगी अछि आ ने समाजक लेल मंगलकारी। जीवन तथ्यक वास्तविकतासँ आँखि मूनि क' सिद्धान्त-प्रतिवादनक प्रयास ओहिने काल-कवलित भ' जायत जेना संस्कृत अलंकारशास्त्रक अनेक सिद्धान्त भेल अछि। एहि प्रकारेँ लगैत अछि जे मैथिलीमे आलोचकलोकनिक एक वर्ग साहित्यकेँ समाजसँ सम्पृक्त मानियो क' ओकर स्वायत्तताक समर्थक छथि त' दोसर वर्ग साहित्यक स्वायत्तताके सामाजिक जीवनसँ बाहरक वस्तु नहि मानैत छथि।

कुलानन्द मिश्रक भीतर आलोचना-कर्मक सम्बन्धमे विचार ओ चिन्तन आरम्भेसँ चलैत रहल अछि। फलस्वरूप आलोचना-कर्मक एक सामाजिक उद्देश्य हुनका समक्ष स्पष्ट भेल। ओ रचनात्मक स्तर पर पाठक, लेखक ओ आलोचकक बीच आत्मीय सम्बन्ध बनेबाक दायित्वकेँ सेहो बुझलनि। ओ कहैत छथि जे आलोचना कोनो रचनाक ओहि सौन्दर्यबोध आ यथार्थोस्थापनकेँ विवेचित आ विश्लेषित करबा धरि सीमित रहि रचनाकार आ पाठकक बीच ओहि सम्वादकेँ आरम्भ करबाक आधार तैयार करैत अछि, जकर परिणति रचनाकार आ पाठकक बीच आत्मीय सम्बन्धक स्थापनामे होइत

अछि।[14] ई विचार मैथिली आलोचनाक समकालीन यथार्थ पर आधारित हुनक आलोचना-कर्मक विकसित उद्देश्यकेँ स्पष्ट करैत अछि। मुदा एहन बोध आ सामर्थ्य रखनिहार कुलानन्द मिश्र मैथिलीक खगताक हिसाबें आलोचना-कर्ममे निरन्तर अपन योगदान नहि द' सकला।

आलोचना-कर्मक सिद्धान्त विवेचनमे जतेक हुनक योगदान अछि से पाठालोचनमे नहि। ओना पाठालोचनोमे नव दृष्टिक संग आलोचना आरम्भ करबाक श्रेय हुनका देल जा सकैत अछि। एहि सन्दर्भ मे हरिमोहन झाक 'पाँच-पत्र' ओ कांचीनाथ झा 'किरण'क मधुमनि' कथाक समीक्षाकेँ देखल जा सकैत अछि। वस्तुतः कथा पाठक प्रक्रियासँ कथा-समीक्षाक विधि मैथिलीमे वैह अनलनि। मात्राक स्तर पर पाठालोचनमे हुनक कम योगदानक कारण जत' हुनकर जीवन शैली रहलनि ओतहि उँच आ कठोर मापदण्ड सेहो रहल। ओ पाठालोचन लेल कृतिक चयनमे उदार ओ व्यापक नहि रहला।

वर्तमानमे आलोचना-कर्मक सीमा लगातार टूटि रहल अछि। ओकर उद्देश्य दिनानुदिन विकसित होइत गेल अछि। वस्तुतः ऐतिहासिक परिस्थितिक अनुकूल आलोचना-कर्मकेँ नव सिरासँ परिभाषित कयल गेल अछि। एहि नव परिभाषाक अनुसार आलोचक आब मध्यस्थक भूमिकामे नहि रहला। ने ओ साहित्यिक एजेन्ट रहला ने कवि आ छात्रक बीचक भाष्यकार। आलोचक नामवर सिंह लिखलनि अछि जे प्रत्येक कृति एक सांस्कृतिक प्रक्रिया थिक आ कृतिकार, पाठक ओ आलोचक ओही प्रक्रियाक अनिवार्य कड़ी छथि। एहि प्रकारेँ आलोचक कवि अथवा पाठक लेल नहि लिखैत छथि अपितु कोनो कृति पर लिखब हुनक ऐतिहासिक दायित्व थिकनि। एहि दृष्टिसँ आलोचक मूलतः ओहि सांस्कृतिक प्रक्रिया अन्तर्गत अपन अनुभव, विचार आ सपनेकेँ सम्पुष्ट एवं व्यवस्थित करबाक लेल संघर्ष करैत छथि। आलोचकक आत्मसंघर्ष सेहो रचनाकारक समान महत्त्वपूर्ण अछि—वस्तुतः व्यवहारमे ओ आत्मसंघर्ष आर जटिल होइत अछि किएक त' ओ दोबर होइत अछि।[15] स्पष्ट अछि जे आलोचना-कर्मक एहि मान्यता धरि कुलानन्द मिश्रक आलोचना-सम्बन्धी चिन्तनकेँ अयबामे साहित्यक स्पष्ट अवधारणा आ समाजसँ ओकर सम्बन्धक फरीछ ज्ञान रहल अछि। एही संग हुनका मैथिली सन्दर्भमे तात्कालिक खगता सेहो नहि बिसरल छनि। ओ पारस्परिक सम्वादक आधार पर रचनाकार आ पाठकक आत्मिक सम्बन्धक बात एही परिप्रेक्ष्यमे करैत छथि। स्वाभाविक अछि जे आत्मिक सम्बन्ध लेल वैचारिक आ भावनात्मक स्तर पर एकता हेबाक चाही जे कोनो सामाजिक उद्देश्यसँ प्रेरित हो। एहीठाम पक्षधरता आवश्यक होइत छैक। एहि प्रकारेँ आलोचना-कर्मक सैद्धान्तिक आधार तैयार करबामे कुलानन्द मिश्रक योगदान महत्त्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि। तैं रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनामे हुनक अवदान उल्लेखनीय भ' जाइत अछि। आलोचना-कर्मक सिद्धान्त-विवेचन आ उद्देश्य निर्धारणसँ आगू चलबाक बाट ओ अवश्य बना देलनि अछि।

एहि बाट पर मैथिली कथालोचनक यात्रा तखनहिं सम्भव भ' सकल जखन

कुलानन्द मिश्र एहि क्षेत्रमे अयला। एकर कारण इहो भ' सकैत अछि जे मैथिली आलोचनाकेँ छठम आ सातमे दशकमे ओ कृति सभ भेटलैक जे एहि दृष्टिसँ आलोचना लेल सामग्री द' सकैत छल। मुदा कुलानन्द मिश्रमे एहि दृष्टिक चेतना उत्पन्न होयब फराकसँ हुनकर महत्त्वकेँ रेखांकित करैत अछि। ओना जखन ई दृष्टि आ पद्धति आयल त' ओ पछिला समयमे जा क' सेहो ओहि कृति सभकेँ ताकि अनलक जकर विकास छठम आ सातम दशकमे भेल रहय। जेँ कि मैथिलीमे कथा केन्द्रीय स्थानमे रहय तेँ कथालोचनेसँ मुख्यतः एहि पद्धतिक संग साहित्यालोचनक मार्ग प्रशस्त भेल। ओना आनो विधा विशेष क' कविताक आलोचना एहि पद्धतिक संग भेल अछि। मुदा कविता अपन विशिष्ट बिम्ब-विधान आ लयात्मकताक कारणे समाजशास्त्रीय पद्धतिकेँ सदतिकाल एक चुनौती प्रस्तुत केलक। एहि पद्धतिसँ कथालोचनक आरम्भ समीक्षा, प्रवृत्तिमूलक निबन्ध, प्रत्यालोचन आ पुनर्मूल्यांकनसँ भेल। एहिमे सन्निपात, फराक, अग्नि-पत्रक संग मिथिला-मिहिरोक योगदानकेँ रेखांकित कयल जा सकैत अछि। हालाँकि मांत्र सामाजिक सन्दर्भकेँ ध्यानमे रखैत चेतना समिति द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठीमे पढ़ल निबन्ध सभ सेहो कथालोचनकेँ गति देबामे योगदान केलक। कमसँ कम समकालीन कथा-साहित्यक स्वरकेँ अकानबाक ओहिमे चेष्टा कयल गेल। जीवकान्त मानलनि जे मैथिलीक समकालीन कथा-साहित्य संश्लिष्ट आ सौंस अछि। ओ बहुत रास छोट-छोट आ फराक-फराक खण्डकेँ जोड़ि क' बनाओल गेल 'कोलाज' थिक।[16] जखन कि आठम दशकसँ आरम्भ भेल आलोचनाक समाजपरक मार्क्सवादी दृष्टि आ पद्धति मैथिली कथाक बदलैत प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ आ ऐतिहासिकताक संग युगीन दृष्टिबोधसँ पाठककेँ परिचित करौलक अछि। मैथिलीक आधुनिक कथाक आरम्भिक काल मे सामाजिक कुरीति आ वैषम्य पर अधिक ध्यान देल गेल। सुधारक भाव लेखनक प्रमुख उद्देश्य बनल रहल। बादमे जखन सामाजिक वैषम्य आ मानवीय सम्बन्धमे व्याप्त दूरीक कारण सभक व्याख्या कयल गेल त' एहि सभ दुरव्यवस्थाक पाछाँ व्यवस्थाक सहस्र बाँहि पर लोकक नजरि पड़लैक। सामाजिक आ मानवीय संत्रास लेल व्यवस्थाक अव्यवस्थित व्यापार उत्तरदायी लगलैक। सामाजिक असंतोषमे वृद्धिकेँ देखैत व्यवस्था अपन नह आर तेज केलक। अपन विश्वस्त यंत्र सत्ताक माध्यमे सिकंजा आर कठोर बनौलक। मैथिलीक आधुनिक कथा व्यवस्थाक विद्रूप आकृति आ संवेदनहीन प्रकृतिसँ त' परिचित भेल अछि मुदा तकर भयंकरता आ हृदहीनताक प्रति ओकर दृष्टि फरीछ नहि भेलैक अछि। फरीछ भेले पर शंका आ छलनामे अन्तर करब साध्य होइत छैक।[17] एही संग विगत शताब्दीक अंतिम दू दशकक कथाकार अपन लेखनमे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेला अछि। ओ लोकनि लोकरंजनक संग-संग लोक-चिन्ताक प्रति एक संग सजगता देखौलनि अछि।[18] मोहन भारद्वाज स्वातन्त्र्योत्तर कथा प्रवृत्ति सभकेँ विस्तारसँ विश्लेषित करैत ई विचार रखलनि जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषामे लिखल

गेल अछि। प्रत्येक भाषामे अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक-समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे। एही संग ओ मैथिलीक आधुनिक कथाकेँ हास्यकथा, रोमांसकथा, देहकथा, सम्बन्ध कथा आ सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक समानान्तर चलैत कथाक रूपमे रखलनि अछि।[19] स्पष्ट अछि जे मैथिलीक आधुनिक कथामे प्रवृत्तिक आधार पर सामाजिक-राजनीतिक चेतनासँ सम्पन्न कथा कम लिखल गेल अछि। मुदा ओकर धारा शुरूसँ चलैत आबि रहल अछि। ओहिमे कैक तरहें विकासो भेल अछि। मोहन भारद्वाजसँ फराक रमानन्द झा 'रमण' छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रामे काम भावनाक अभिव्यक्तिकेँ एहि कालक कथाक एक विशेष प्रवृत्ति मानलनि अछि। एही संग ओ नारीके श्रमशील मानवीय रूपमे चित्रित करबाक प्रवृत्ति आ पति-पत्नीक बीच बदलैत सम्बन्धक अतिरिक्त लोकक क्षमता-बोध आ असहमतिसँ विद्रोह धरिक प्रवृत्ति मैथिली कथामे देखैत छथि।[20]

मैथिली कथालोचनमे कुलानन्द मिश्रक समीक्षा, निबन्ध आदि पत्र-पत्रिकेक माध्यमसँ आयल अछि। कोनो स्वतंत्र पोथी नहि आबि सकल। ओना मैथिली कथा-यात्रा नामक हुनक निबन्ध आकाशवाणीसँ दस कड़ीमे प्रसारित भेल। ओहि निबन्धमे नवम दशक धरिक कथाक प्रवृत्तिमूलक विवेचन अछि। एकर अतिरिक्त मेघन प्रसादक कथाकोश, वैदेहीक कथा मूल्यांकन अंक, मैथिली अकादमी पत्रिका आ सन्धानक कथा केन्द्रित अंक, मिथिला-मिहिक कथा-अंकक सम्पादकीय सभ एहि दिशामे विशेष रूपेँ काज केलक अछि। मुदा मैथिलीक एकमात्र कथापत्रिका कथा दिशा कथा लेखन लेल जत' महत्वपूर्ण रहल ओतहि कथालोचनमे कोनो योगदान नहि क' सकल। मेघन प्रसाद अपन कथा कोशमे कथालोचन सम्बन्धी दू सए नब्बे निबन्धक सूची देलनि अछि। जाहिमे उन्नैस सए सत्तरिसँ पूर्वक निबन्ध चालीससँ बेसी नहि अछि। ई विवरण सेहो सिद्ध करैत अछि जे सत्तरिक बाद मैथिली कथालोचनमे गति आयल। आठम दशक जहिना मैथिली कथालोचनमे गति अनलक तहिना कथालेखनमे सेहो प्रगति अनलक। संख्योक दृष्टिसँ सभसँ बेसी चौबीस सए उनहत्तरि नब कथा ओही दशकमे अर्थात् 1971सँ 1980 क अवधिमे प्रकाशित भेल।[21] एतेक तक जे ओहि दशक धरि अबैत-अबैत कथाक पुरना परिभाषा सेहो जेना बदलि गेल। कुलानन्द मिश्र आठम दशकक मैथिली कथा पर दृष्टिपात करैत कहैत छथि जे एतेक दूर अबैत-अबैत कथाक सभ पुरना परिभाषा अव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त प्रतीत हुअ' लगैत अछि। तखने एहि सत्यक अनुभूति होइत अछि जे कथाक इतिहासे कथाक एकमात्र संगत परिभाषा होइत अछि। अखुनक कथा त' एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भ' गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैत अछि। प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइत छैक। ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइत अछि।[22]

कथाक सम्बन्धमे सेहो आलोचकलोकनिक धारणा भिन्न-भिन्न रहल अछि। मैथिलीमे कियो एकरा 'गप्प' कहलनि त' कियो 'गल्प'। कथाकेँ पहिने अंग्रेजीक सौर्ट स्टोरीक अनुवाद 'लघुकथा' क रूपमे चिन्हल गेल जे अन्ततः कथाक रूपमे स्थापित भेल। लघुकथा' त आब फराक विधा मानल जाइत अछि। रमानाथ झा पहिने एकरा गप्प कहलनि आ बादमे लघुकथा। उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास क कथा-संग्रह 'विडम्बना' क भूमिका लिखैत ओ गप्प पर विस्तारसँ चर्चा केलनि अछि। व्यासजीकेँ गप्पकार कहलनि अछि। गप्पमे प्रभावशीलताक प्रयोजनकेँ स्पष्ट करैत ओ कहैत छथि जे गप्पक निर्माण एक गोट प्रसंग ल' कए होइत अछि। स्वाभाविक कथानकक तन्तु बीच ओहि कथाक लक्ष्य जेना लपेटल रहैत अछि। कथाक लक्ष्यकेँ स्पष्टतः प्रकट हेबाक लेल छोट रचनामे वर्णन ओ चित्रणक नैसर्गिक सामन्जस्य शिथिल व्यापार योजनासँ नहि भ' सकैत अछि। एहि हेतु चाही ध्वनिगर्भित पुष्ट ओ वेगमती शैली। कथानकक योजना तेहन हो जे कोनो भाव, विचार वा समस्या ध्वनित भ' उपस्थित भ' जाय, उपरसँ लादल नहि बोध हो। नाटके जकाँ कथोपकथन द्वारा मन्तव्यक प्रकाशन, परिस्थितिक चित्रण अथवा विषयक अभिव्यंजन कयलासँ गप्पमे प्रभावशीलता भ' सकैत अछि। मुदा राजकमल चौधरीक कथा-संग्रह 'ललका पाग' क भूमिकामे कथाकेँ ओ लघुकथा कहलनि अछि। कहलनि अछि जे 1950सँ मैथिली साहित्यमे जाहि विधाक सभसँ विशेष प्रगति भेल अछि से थिक लघुकथा। एहि पर चर्च करैत ओ कहैत छथि जे कथाक कोना अन्त होइत छैक अथवा कोना ससरैत छैक से जीवनक प्रति लेखकक केहन दृष्टिकोण छनि ताहिसँ नियमित रहत। अतएव कथाक कौशल कला थिक। नीक अधलाह कथा कहबाक शैली पर निर्भर अछि। कथानक प्रसंग रमानाथ झाक कहब छनि जे कथानकक मौलिक तत्त्व थिकैक संघर्ष, से संघर्ष बाहर हो अथवा भीतर हो। एम्हर आबि बाहरी संघर्षसँ विशेष महत्त्व भीतरी संघर्षकेँ देल जाय लागल अछि। यैह रीति बढ़ैत-बढ़ैत घटनाचक्रमे सेहो चल गेल। आजुक कथामे घटना सेहो मनहिमे घटैत अछि। ओ इहो कहैत छथि जे मानसिक व्यापार सभ कथामे भेटैत अछि परन्तु ओ कथा कौशलक अलंकार थिक। अलंकारेसँ कथाकेँ भरि देब ई नव प्रयोग थिक। एहिमे वैह कृत्रिमता भासित होइत अछि जे उत्तरकालीन संस्कृत काव्यमे लक्षित होइत अछि। राजकमल चौधरीक 'पनिडुब्बी' कथाकेँ ओ एहि प्रयोगक चरम दृष्टान्त कहलनि अछि। 'साँझक गाछ'मे सेहो यैह प्रयोग मानैत छथि। रमानाथ झा कहैत छथिजे राजकमल सभ प्रकारक प्रयोग कैलनि मुदा प्रयोग त' रीतिक नवीनता थिक। केवल रीति मात्रक उत्कर्षकेँ मुख्यता देब प्राचीन रीतिवादक नवीनीकरण कहाओत। रमानाथ झाक कथनसँ लगैत अछि जे ओ कथाक कौशल अर्थात लूरि के कला मानैत छथि आ नीक ओ अधलाह कथा लेल कहबाक शैलीकेँ महत्व दैत छथि। एहीकारणेँ ओ पहिने कथाकेँ गप्प कहलनि अछि। गप्प त' मात्र एक शैली भ' सकैत अछि। शैली काज करबाक रीति अथवा प्रणाली होइत अछि। एहि लूरि आ रीतिसँ एक रूप ठाढ़ कयल जा सकैत अछि। जेना मकान ईंटा पर ईंटा जोड़ि क' लूरिसँ बनाओल जाइत अछि। मुदा मकान घर ताबत धरि नहि होइत अछि जाबत ओहिमे मनुक्ख नहि रहैत अछि। मनुक्खे मकानमे रहि क' ओकरा घर बनबैत अछि। मुदा रमानाथ झा कथामे आयल मनुक्खक गप्प नहि केलनि। एहि बातकेँ दूनू कथा-संग्रहक भूमिका पढ़ि जानल जा सकैत अछि। एहि प्रकारेँ रमानाथ झा कलाक अनुभूति आ सौन्दर्यक रसास्वादनकेँ मात्र रूप पर निर्भर मानि लेलनि अछि। स्वाभाविक रूपमे हुनक भूमिकामे रचनाक विश्लेषण केवल रूपक रचाव या रचना कौशलक विश्लेषण धरि सीमित रहि गेल अछि। हुनक भूमिकामे कथाक ऐतिहासिक-सामाजिक आधार पर अभिप्रायक चिन्ता नहि अछि। मुदा रूप-तत्त्वक गहन विश्लेषण अवश्य भेल अछि। हुनक एहि कथनसँ असहमति नहि भ' सकैत अछि जे मानसिक व्यापारसँ कथाकेँ भरि देब ठीक नहि थिक। एहि प्रकारेँ रमानाथ झा रूपवादक सचेत आलोचक छथि से कहल जा सकैत अछि। रमानाथ झाक विपरीत कुलानन्द मिश्र साहित्य आ कलाकेँ सोद्‌देश्यताक संग जोड़ैत छथि। तैं ओ वास्तविकता, मनुष्यक जिज्ञासा, जिजीविषा, जीवन आ समाजमे व्याप्त अन्तर्विरोध, आंतरिक ओ बाह्य जटिलताक सांगोपांग विश्लेषण पर जोर दैत छथि। कथाक सोद्‌देश्यताक बात करैत ओ कथाक सम्बन्धमे अपन धारणा भारतीय साहित्यिकलोकनिक धारणासँ फराक भारतीय नैयायिकलोकनिक शास्त्र-विचार सम्बन्धी पद्धति-वाद, जल्प ओ वितण्डामेसँ वादसँ स्पष्ट करैत छथि। एहि मतक अनुसार कथा (वाद) एहन वाक्य संदर्भ थिक जाहिमे नाना वक्ता होइत छथि, पूर्व पक्षक उपस्थापन होइत अछि आ सिद्धान्त पक्षक प्रतिष्ठा होइत अछि। ओ कहैत छथि जे कथाक एहि परिभाषाक वृत्तमे कथाक सोद्‌देश्यताक बात कतौ आबि जाइत अछि।[23]

कथामे कथानकक प्रसंग रमानाथ झाक विचारकेँ खण्डित करैत सुधांशु शेखर चौधरी कहैत छथि जे पुरान परिभाषाक अनुसार कथानक, चरित्र आ चरमस्थिति कथाक आवश्यक आ अनिवार्य तत्त्व छल। परन्तु समसामयिक कथाकारक लेखेँ कथानक, चरित्र, चरमस्थिति आदि महत्त्वहीन भ' गेल अछि। तैं ई आवश्यक भ' गेल अछि जे आधुनिक कथाकेँ आधुनिक कथा-तत्त्वक आधार पर परिभाषित कयल जाय। ओ मैथिलीक आधुनिक कथाक मुख्य तत्त्वमे वातावरण,मनः स्थितिक विन्दु विशेष, कथ्य ओ प्रभावकेँ मानैत छथि। संगहि इहो कहैत छथि जे पुरान कथा जकाँ जीवनकेँ दूरसँ देखबाक प्रथा आधुनिक कथामे समाप्त भ' गेल अछि। ई जीवनकेँ मात्र छुबिये क' नहि उनटि-पुनटि क' देखैत अछि।[24] ओना वर्त्तमानमे मैथिली कथा सुधांशु शेखर चौधरीक मान्यता-कथामे जीवनक परीक्षण-निरीक्षणकेँ बदलि देबा पर बिर्त्त लगैत अछि। तारानन्द वियोगीक एहि प्रसंगमे कहब छनि जे मैथिली कथामे एकटा एहन परिदृश्य अभरि रहलैक अछि जाहिमे जीवनक स्पन्दन छैक आ जकर रचनाकार कथा लिखबाक लेल जीवनक बीच उतरब जरुरी बुझय लागल अछि।[25] वियोगीक मन्तव्यसँ स्पष्ट अछि जे नव कथाकार अपन कथामे एक जीवित-जागल मनुक्ख-एक नव

जीवन्त-अनुभवकेँ तराशि क' कहानीक रूप द' रहल छथि। वस्तुतः ई नव सर्जनक बात क' रहल छथि ओ। एहि नव सर्जनामे जीवन-दृष्टिक भेद और वैयक्तिक विशिष्टताक बावजूद लेखनक मूलमे एक समान बुनियादी संवेदनाक बात अछि। एही संग जहाँ धरि नीक अधलाह कथाक प्रश्न अछि रमानाथ झा ओकरा खाली कहबाक शैली पर निर्भर मानैत छथि। वस्तुतः अधलाह कथा नीक पाठकक तेज नजरिक समक्ष बेसी ठहरि सकबामे असमर्थ होइत अछि। लेकिन जे कथा कनियो नीक होइत अछि ओहिमे नीक पाठक 'सम्भावना' होइत अछि आ जे अहूसँ नीक होइत अछि से नीक जकाँ पढ़बाक लेल 'निमंत्रित' करैत अछि, परन्तु जे कथा बहुत नीक होइत अछि ओ नीक ढंगसँ पढ़बाक लेल 'बाध्य' करैत अछि। एहि प्रकारें सम्भावना, निमंत्रण आ बाध्यतामे सेहो एक निश्चित अनुक्रम अछि।[26]

साहित्यिक रचनामे रूपक दू प्रकार होइत अछि। एक रूप ओ थिक जे अन्तर्वस्तुक परिवर्तनक बाबजूद अपेक्षाकृत स्थायी होइत अछि। एकरा साहित्यमे विधा कहल जाइत अछि। रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप अन्तर्वस्तु संग प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। एहि कारणे ओ अन्तर्वस्तुक संग परिवर्तनशील और विकासशील होइत अछि। एहि दोसर प्रकारक रूपकेँ शिल्प-शैली कहल जा सकैत अछि। कथामे कथ्य मुख्य थिक त' ओकरा प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत करबाक लेल शिल्प-शैलीक सेहो महत्त्व अछि। कथाक सार्थकता ओ सफलता कथ्य ओ शिल्प दूनू पर निर्भर करैत अछि। कथालोचनमे कथ्य ओ शैली दूनूकेँ फराक-फराक महत्त्व द' विवेचन-विश्लेषणक पद्धति बहुत दिनसँ चलैत रहल अछि। मैथिलीमे एना फराक-फराक समानान्तर पाठालोचनक परम्परा विकसित नहि भेल। भले ही कोनो आलोचककेँ शैलीक महत्त्व कथ्यसँ बेसी बुझाइत होउन मुदा ओ विवेचन सामाजिक सन्दर्भमे कथ्यकेँ आधार बना क' कयलनि। एहि प्रकारें रमानाथ झाक रूपवादी पद्धतिक विकास मैथिलीमे नहि भ' सकल। बहुत कम आलोचक कथालोचनमे रमानाथ झाक अनुसरण केलनि। राजकमल चौधरीक कथा 'साँझक गाछ' जकरा रमानाथ झा मानसिक व्यापार अर्थात् कथा कौशलक अलंकारक नव प्रयोग कहलनि ताहि पर परवर्ती आलोचकक टिप्पणी देखी त' बात स्पष्ट होइत अछि। मोहन भारद्वाज 'साँझक गाछ' क प्रसंगमे कहैत छथि जे ई कथा शिल्प एवं कथ्य दूनूक आधार पर नहि केवल राजकमलेक मैथिली कथा-साहित्यमे अपितु सम्पूर्ण मैथिली कथा-साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखने अछि। ई कथा कहैत अछि जे राजकमल एकटा एहन स्त्रीकेँ तकैत छला, जकरामे स्वाभिमान होइक जकर संवेदना मरि नहि गेल होइक आ एहने स्त्रीकेँ तकबाक उपक्रममे ओ नारीक गत्र-गत्र केँ ओकर समस्त शारीरिक आ मानसिक तानी-भरनीकेँ मथैत छथि।[27] मुदा रमानाथ झासँ लग रहि जयधारी सिंह कहैत छथि जे राजकमलक 'साँझक गाछ- स्वानुभूत संवेदनाक चलैत-ससरैत चित्र अछि? गद्य-काव्याश्रित आत्मगीत अछि? समाज सुधारक कथा मात्र अछि? ई सभ प्रश्न जे समानान्तर उठैत अछि

सैह अछि एकर कला-पक्षक आत्म तत्त्व।[28] कथाक नायकक वर्गकेँ चिन्हैत आ ओहि पर टिप्पणी करैत भीमनाथ झा कहैत छथि जे राजकमलक 'साँझक गाछ' क नायक कथाकार स्वयं होथु वा क्यो आन, जे होथु, मुदा छथि ओ मध्यवर्गीय लोक। जैह नियति साँझक गाछक होइत छैक सूर्यास्तक बाद, सैह नियति एहि वर्गक लोकक सेहो होइत छैक। भनहि दिनमे ओकर जीवनमे कतबो रमन चमनक नाटक किएक नहि होइत होइक। स्वाँग रचब, मध्यमवर्गीय लोककेँ सेहो जीवन आ जीविका भ' गेल छैक-कथाक नायके जकाँ।[29] एहीठाम साँझक गाछ हो कि राजकमल चौधरीक अन्य कोनो कथा, ओहि पर पड़ल राजकमलक निजी जीवन-दृष्टिक गप्प करैत कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे राजकमलक कोनो अनुभव सामान्य अनुभवक कोटिमे नहि राखल जा सकैत अछि ओहि पर राजकमलक विशिष्ट जीवन-चक्र आ नितान्त अपन जीवन-दृष्टिक प्रभाव स्पष्ट रूपेँ देखा पड़त। राजकमल सामान्य दुनियाक दुःख भोगो अपना तरहेँ कयलनि आ ओहिसँअनुभवो अपना तरहेँ अर्जित कयल आ ओहि अनुभवक उपयोगो अपना तरहें कयल।[30] चारु आलोचकक टिप्पणीसँ स्पष्ट अछि जे जयधारी सिंहकेँ छोड़ि तीनू आलोचक कथाक अभिप्राय, यथार्थ ओ ओहि पर राजकमलक निजी जीवन-दृष्टिकेँ सामाजिक सन्दर्भमे उजागर करबाक चेष्टा केलनि अछि। 'साँझक गाछ' कथा मिथिला-मिहिरमे 1966मे सर्वप्रथम प्रकाशित भेल छल। कथा लेखनक ओ काल भोगल यथार्थक अभिव्यक्तिक विशेष काल रहय। एहि कथामे यथार्थ राजकमलक विशिष्ट अनुभवक संग मध्यमवर्गीय लोकक नियति बनि क' आयल अछि। संगहि कथाक अभिप्राय ओहि वर्गक स्त्रीक जीवन-स्थितिमे परिवर्तनक आकांक्षासँ ओत-प्रोत अछि। एहि प्रकारें ई अभिप्राय एहि कथाक सामाजिक पक्षकेँ उजागर करैत अछि। ई राजकमलक संतुलित शिल्पक खूबिये अछि जे आलापक कथा प्रलापमे नहि बदलि गेल।

मैथिली कथामे जखन यथार्थ आयल त' से बहुलांशमे भोगल यथार्थक रूपमे आयल। ई भोगल यथार्थ व्यक्तिवादक परिणाम छल। जकर सामाजिक आधार पूँजीवादमे निहित अछि। एहि प्रसंग कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे यथार्थवाद आ प्रकृतवाद एकदम्मे भिन्न वस्तु होइत अछि। आदर्शवाद नहि, आदर्शोन्मुख यथार्थवादो नहि, अपितु द्वन्द्वात्मक आ ऐतिहासिक यथार्थवादे कथा लेल सही खाद-पानि, ऊर्जा तथा ऊष्माक जोगाड़ करैत अछि। अनुभववाद आ तथाकथित भोगल यथार्थवाद एक तरहें पूँजीवादी व्यक्तिवादेक असंयत संतति थिक। कोनो कथा पाठक लेल मात्र शोभाक वस्तु नहि होइत अछि। ओ ओकर अस्तित्वक कथा सेहो होइत अछि। से यदि ओ नहि अछि त' ओकरा होयबाक चाही।[31] कुलानन्द मिश्र छठम दशकक अवधिमे रचनारत कथाकारसभमे भोगल आ भोगल सन यथार्थक चित्रणकेँ बहुत पैघ आसक्तिक रूपमे देखैत छथि। ओ कहैत छथि जे जकरा सातम-आठम दशकक रचनाकार लोकनि अपन नव रूपक प्रखर (यथार्थ) चेतनाक नजरिसँ रोमांटिक मानि नकारि देलनि। एहि

भोगल यथार्थ आ ओकर प्रामाणिकताक प्रश्नकेँ मैथिलीक आलोचक आठमे दशकसँ उठायब शुरू क' देलनि। रामानुग्रह झा एहि सन्दर्भमे कथाकारक भोगल यथार्थकेँ सामान्य अनुभवसँ मिला क' देखब जरुरी मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे जखन कथाकारक व्यक्तिगत अनुभव दोसराक अनुभवसँ फराक नहि हो, तखनहि ओहि अनुभवक प्रामाणिकता सिद्ध हैत।

ओना मैथिली कथामे भोगल यथार्थक चित्रणमे सेहो परिवर्तन होइत गेल अछि। पूर्ववर्ती कथाकारक भोगल यथार्थमे आ क्रमशः हुनक परवर्ती कथाकारमे पर्याप्त भिन्नता अबैत गेल। एहि सम्बन्धमे राजमोहन झाक कहब छनि जे पूर्ववर्ती कथाकार सुविधावादी हेबाक कारणेँ मोनक भीतर बहुत गहींर डुबबाक आवश्यकताकेँ नहि बूझैत छला। हुनक गलत नैतिक मूल्य तथा संस्कार सेहो हुनका मोनक गुह्य आ गोपनीय प्रदेशमे प्रवेश करबामे रोकैत छलनि। अनुभूतिक स्तर पर वर्जित प्रदेशमे जँ ओ पहुँचियो जाइत छला त' अभिव्यक्तिक साहसहीनता हुनकर अनुभूति आ अभिव्यक्तिक बीच एकटा खाधि बनौने रहैत छलनि। तै पाठककेँ हुनक भोगल यथार्थ यथार्थ नहि प्रतीत होइत छलैक।[33] भोगल यथार्थक सीमाकेँ खाली अभिव्यक्तिक साहसहीनता आ निजी अनुभव बनाम सामान्य अनुभवक विवादसँ नहि जानल जा सकैत अछि। ओकर सीमा व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिकतामे निहित अछि। व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिकतामे बहिरंग यथार्थकेँ हृदयंगम करबाक सभ सम्भावना नष्ट भ' जाइत अछि। बहिरंग यथार्थ एक भयंकर रहस्य लाग' लगैत अछि। जें कि व्यक्तिकेँ बहिरंग यथार्थक दबाब अनुभव होइत छैक तैं ओ चिन्तासँ अभिभूत भ' जाइत अछि। जाबत धरि व्यक्ति अंतरंग यथार्थक जालमे ओझरायल रहैत अछि तावत धरि जड़ता आ गतिरोधक डर बनल रहैत छैक। एहन स्थितिमे जेना लुकाच 'अमूर्त सम्भावना' आ 'मूर्त सम्भावना'मे भेद कयलनि अछि से भेद बढ़ि जाइत अछि। लुकाचक अनुसार मानव विकासक असंख्य सम्भावनाकेँ जँ जीवनक वास्तविक जटिलताक पर्याय मानि लेल जाय त' आधुनिक व्यक्तिवाद विषाद आ सम्मोहनक दू छोरक बीच झूल' लगैत अछि। एहि प्रकारें सम्भावनाक आधार पर मनुक्खक वास्तविक नियतिक उद्‌घाटनक त' गप्पो नहि, वैयक्तिकताक टेढ-टूढ़ रेखोकेँ उभारब मुश्किल अछि। सम्भावनाक अमूर्त्त स्वरूप एहि तथ्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ विकासक निर्धारण नहि क' सकैत अछि किएक त' व्यक्तिपरक मनस्थिति निर्णयात्मक नहि भ' सकैत अछि।[34] तैं लुकाच एहि युगमे मनुक्खक प्रति अपन विश्वास फेरसँ जगा क' यथार्थवादी कलाक सर्जना लेल कहैत छथि। सामाजिक परिवेशसँ व्यक्तिकेँ जुड़बाक बात कहैत छथि। परिवेशक वस्तुपरक यथार्थकेँ बुझबाक बात करैत छथि।

मैथिलीक आधुनिक कथामे वस्तुपरक यथार्थकेँ बुझबाक आ ओकरा कथामे चित्रित करबाक प्रवृत्ति आठम दशकसँ बढ़' लागल। ओना पारम्परिक सौन्दर्य-बोधक स्थान पर आधुनिक दृष्टिबोध एहिसँ पूर्वक दशकमे मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ

स्वरूपमे व्यापक परिवर्तन आनब शुरू क' देने छल। मुदा छठम दशकक कथामे वस्तुपरक यथार्थक चित्रण बहुत कमे कथामे भेटि सकैत अछि। एहि प्रकारें छठम सातम दशकक समय मैथिली कथामे भोगल यथार्थक चित्रणक अभिव्यक्तिक विशेष काल रहल अछि। मुदा विधा आ टेकनीक दूनू रूपमे आधुनिक मैथिली कथा, जकर न्यो पाँचम दशकमे पड़ि गेल, से अगिला दू दशकमे आधुनिक रूपें आधुनिक दृष्टिबोधक संग स्थापित भ' गेल। आठम दशकमे वस्तुपरक यथार्थक चित्रणक प्रवृत्ति बढ़ल त' तकरे संग कथा विधाक रूपमे परिवर्तन सेहो भेल। रिपोर्ताज, रेखाचित्र, डायरी, व्यक्तिचित्र, शब्दचित्र आदि उपरूप सभ कथाक रूपमे फराक-फराक अथवा एक्कहिमे समाहित होइत सेहो आब' लागल। क्रमशः मैथिली कथामे मनोगत व्यापारोकेँ वस्तुगत आधार प्रदान करबाक कोशिश शुरू भेल। मानसिकतोक कथा आयल त' से समाजक वर्गीय व्यवस्थासँ उपजल मानसिकताक यथार्थ छल। मैथिली कथाकारमे आठम दशकसँ क्रमशः अबैत ई चेतना जत' भोगल यथार्थक अस्वीकार छल, ओतहि समाजक वर्गीय व्यवस्थामे सामाजिक यथार्थक स्वीकार सेहो छल। मुदा जखन मैथिली कथामे सामाजिक यथार्थ घनघोर रूपमे आब' लागल त' प्रारम्भमे एकर स्वर बहुत आक्रामक रहय। मोहन भारद्वाज एकरा 'फौजदारीवला' कथा कहलनि अछि। जकर 'फौजदारीवला' रूप क्रमशः 'सिविल' रूपमे परिवर्तित होइत गेल। मैथिली कथाक एहि तरहक विकासमे सामान्य रूपसँ भारत आ विशेष रूपसँ मिथिलाक सामाजिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्यकेँ ध्यानमे राखब जरुरी अछि। मुदा कतेक कथाकार जकाँ आलोचको एहि दिशामे भेल प्रगतिकेँ स्वीकार करबाक मुद्रामे नहि लगैत छथि। हुनका दृष्टिमे अनेक कारणसँ छठम दशकक कथा मैथिली कथाक स्वर्णयुग बनले अछि। कथाक समकालीन स्वरूपमे शिल्पकेँ विशेष महत्त्व देनिहार एहन आलोचकलोकनि क्रमशः कथाक अर्न्तवस्तुक संग शिल्पोकेँ बदलैत देखि रहल छथि किन्तु तैयो प्रगतिकेँ अपेक्षाकृत कम मानैत छथि। तत्काल देवशंकर नवीनक विचार एहि सन्दर्भमे देखल जा सकैत अछि। ओ कहैत छथि जे पाँचम दशकमे मौलिक कथा लेखन नीक जकाँ अपन प्लेटफार्म तैयार नहि कयने छल, हरिमोहन झा पाठक वर्ग तैयार करबामे लागल छला कि छठम दशकमे त्रिपुण्डक कथामे मानवक अर्न्तमनक व्यथा, शिल्पक प्राधान्य, आब' लागल। मुदा तकर बाद कतोक समय बीति गेल अछि, किन्तु प्रगति अपेक्षाकृत कम अछि।[35] ई नहि कहल जा सकैत अछि जे नवीनकेँ मैथिली कथाक सामाजिक पक्ष नहि बूझल छनि। ईहो नहि अछि जे ओ बहिरंग यथार्थक सम्यक बोध नहि रखैत छथि। मुदा मैथिली कथा-यात्राकेँ ऐतिहासिक-द्वन्द्ववादी दृष्टिसँ नहि देखबाक कारणे हुनका लग मैथिली कथाक समाजपरक विकास-क्रम फरीछ नहि भ' सकलनि।

ओना मैथिली कथामे शिल्पोक विकास पर बहुत कम काज भेल अछि। मुदा प्रभास कुमार चौधरीक कथाक सम्बन्धमे विचार करैत रमाकान्त मिश्र आ शिवशंकर श्रीनिवास तथा राजमोहन झाक कथाक शिल्प पर सुभाष चन्द्र चादव किछु रोशनी

देलनि अछि। शिवशंकर श्रीनिवास प्रभासक कथा-प्रसंग कहैत छथि जे हिनक कथा कोनो सरल रेखा जकाँ नहि चलैत अछि, अपितु कथाक बीच वा कोनो भागसँ विषय उठा ई अपन कथाक आदि वा अन्त करैत छथि। कथाक बीचमे मूलबातकेँ पुष्ट करैत कतेको क्षण वा मनोविश्लेषणात्मक विस्तार भेटत। जकर खूबी एहिसँ नापल जा सकैत अछि जे ओकरासँ मूलबातकेँ कोनो मतलब नहि बुझाइतो अनावश्यक नहि जरुरी बुझायत। एही संग श्रीनिवास ईहो कहैत छथि जे हिनक कथा लेल समय-सीमा वा एक क्षणक महत्त्व नहि एक सूत्रात्मक होयबाक महत्त्व अछि जे अन्त तक अपन कथ्यकेँ नहि छिड़िआय दिअय। तैं ई कोनो घटना कहैत जीवनक कोनो क्षणमे जा अपन कथा पूर्ण करैत छथि, जे गुण आजुक पीढ़ीक कथाकारमे बेस विस्तार पौलक अछि।[36] रमाकान्त मिश्र शिल्पक दृष्टियें प्रभासकेँ मनमोहन झासँ बेसी समीप मानैत छथि उमानाथ झासँ नहि । ओ ललितसँ प्रभासक कथाक तुलना करैत कहैत छथि जे ललितक शिल्प पक्ष पर ओ बेसी ध्यान देने होथि से नहि लगैत अछि। ललित भावोद्‌देश्यक प्रसंग अपन कथामे बड़ सचेत छला, विषयान्तर हुनक कथामे विरले भेटत। एकर विपरीत प्रभासक कथामे अनेक विषयान्तर अछि जे कलात्मक रहितहुँ कथाक ढाठकेँ बोझिल बना दैत अछि।[37] तहिना राजमोहन झाक कथाक शिल्प सम्बन्धमे बात करैत सुभाष चन्द्र यादव कहैत छथि जे राजमोहन झाक शिल्प पर तर्कशील, चिंतनशील, मननशील आ आलोचनात्मक मेधाक स्पष्ट छाप अछि। हुनक शिल्प विश्लेषणसँ संश्लेषण दिस जयबाक प्रक्रियामे उद्‌भूत होइत अछि। राजकमल चौधरी आ राजमोहन झाक शिल्पक सम्बन्धमे सुभाषक कहब छनि जे राजमोहन झाक शिल्प राजकमल चौधरीक विपरीत अछि आ सर्वथा भिन्न त' अछिए। राजकमल चौधरी संश्लिष्ट संवेदना अर्थात् काव्यात्मक संवेदनाक कथाकार छथि। ओ परिस्थितिक 'डिटेल'मे नहि जाइत छथि आने ओकर विश्लेषण करैत छथि।[38] मैथिली कथालोचनमे कथाक बदलैत आ विकसित होइत शिल्पकेँ कथाक अन्तर्वस्तुमे आयल परिवर्तन आ विकासक संग विवेचनक जरूरति उपर्युक्त उदाहरणसँ जानल जा सकैत अछि।

भोगल यथार्थक समानान्तर सामाजिक यथार्थक कथा-प्रसंग मोहन भारद्वाजक कहब छनि जे मैथिली कथा साहित्यमे सामाजिक यथार्थ घनघोर रूपमे आयल अछि। मुदा सामाजिक यथार्थक कथा लिखब सामाजिक चेतनाक कथा लिखब नहि थिक। दूनूमे अन्तर अछि। जे कथाकार सामाजिक यथार्थक वर्णने करब पर्याप्त बुझैत छथि हुनका दिमागमे साहित्यक दर्पणवादी अवधारणा काज करैत रहैत छनि। तेँ ओ सामाजिक संरचनाक विभिन्न पक्षक दस्तावेज तैयार करबे धरि अपनाकेँ सीमित रखैत छथि। यैह कारण थिक जे सामाजिक सम्बन्ध, प्रवत्ति तथा संघर्षक प्रतिबिम्ब त' हुनक कथामे भेटैत अछि मुदा सामाजिक चेतना नहि भेटैत अछि।[39] ओ सामाजिक चेतनाक पहिल मैथिली कथाक रूपमे 'रमजानी'क उल्लेख करैत छथि। हुनक कहब छनि जे युगीन बोधसँ सम्पृक्त भइयो क' सामाजिक चेतनाक कथा लेखनक गति बड़ मन्थर

अछि। एही संग ओ मैथिली कथामे सामाजिक यथार्थक व्यक्तिवादी उपयोगक चर्च सेहो केलनि अछि। प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्तमे लोक-चिन्ता नहि व्यक्ति-चिन्ता प्रमुख मानलनि अछि।[40] कहबाक प्रयोजन नहि जे कथामे सामाजिक चेतनाक अभाव आ सामाजिक यथार्थक व्यक्तिवादी उपयोगक जड़िमे मैथिली कथाकारक सामाजिक-वर्गीय स्थिति अछि। ओना एहि सन्दर्भमे इहो ध्यान देबाक अछि जे सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ मैथिली कथाक विवेचना नहि भेल अछि। कथामे जे अनेक प्रकारक चेतनाक द्वन्द्व रहैत अछि तकरो विवेचन नहि आयल अछि। एहन रचनामे सामाजिक यथार्थक विविधताक संग चेतनाक अनेकता जुड़ल भेटि सकैत अछि। एकरे संग सामूहिक चेतना आ व्यक्ति चेतनाक बीच सम्बन्धकेँ बुझबाक लेल समाज मनोविज्ञानक मदति लेब आवश्यक भ' सकैत अछि। समाजक अध्ययन द्वारा आचारसँ विचार आ विचारसँ आचार धरिक यथार्थकेँ बूझल जा सकैत अछि। यदि आचार यथार्थसँ सम्बन्धित अछि त' विचारो यथार्थसँ सम्बन्धित अछि।

मैथिली कथालोचनक ई सीमा देखा पड़ि सकैत अछि जे एखन धरि कथ्य ओ शिल्प-शैलीक संग कथाक सामाजिक अर्थ जो अभिप्रायक विवेचन नहि भेल अछि। मैथिली कथालोचन कथाक प्रवृत्तिगत इतिहास, कलात्मकता ओ ओकर सामाजिक सन्दर्भकेँ फड़िछा क' नहि राखि सकल अछि। एहि प्रसंग आलोचनाक वर्तमान परिदृश्य पर टिप्पणी करैत कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनाक काज बहुत काल धरि गम्भीरता ओ आग्रहहीनताक संग सम्पादित नहि भेल। एही संग ओ ईहो कहैत छथि जे मैथिली आलोचनामे एखन जे हमरा देखबामे आबि रहल अछि ओहिमे सभसँ भयावह बात ई थिक जे आलोचना रचनाक नाम पर नहि, रचनाकारक नाम पर आग्रही भ' रहल अछि। परिणामस्वरूप जखन की वस्तुक स्वर आ स्वरूपकेँ ओहि रचना-चरित्रकेँ विश्लेषित करबाक चाहैत छलैक से नहि भ' सकल अछि।[41] एकर कारणमे हमरा वस्तु (कृति)सँ चेतना (कृतिकार) दिस बढ़बाक प्रयासमे वस्तु-चेतना निर्धारणक ओझरा लगैत अछि। जें कि चेतना लेखकक सामाजिक स्थिति पर निर्भर करैत अछि तेँ मैथिली कथाकारक सामाजिक स्थिति संग आलोचकोक सामाजिक स्थिति हुनकर दृष्टिकेँ वस्तुवादी हेबामे बाधा उत्पन्न करैत अछि। मैथिलीक आलोचकोलोकनि जाहि वर्गसँ अबैत छथि से वर्ग ऐतिहासिक रूपसँ व्यक्तिवादी रहल अछि तैं स्वाभाविक रूपसँ ओ बहुलांशमे व्यक्तिवादिये दृष्टिसँ वस्तु (कृति)केँ देखैत रहल छथि। मुदा जहिना मैथिली कथामे यथार्थवादी दृष्टिक क्रमिक विकास भेल अछि तहिना कथालोचनोमे व्यक्तिवादी दृष्टि वस्तुवादी भ' रहल अछि।

एहि सन्दर्भमे हम तारानन्द वियोगीक एहि विचारसँ सहमत लगैत छी जे कथा-समीक्षाक क्षेत्रमे मार्क्सवादी दृष्टिक अतिरिक्त कोनो दोसर दृष्टिये नहि जनम लेलकैक तखन द्वन्द्व ककरासँ आ विकास कोना?[42] एहिमे हम एतबे संशोधन कर' चाहब जे रूपवादी दृष्टिक जन्म त' पुर्वहि भेलैक मुदा ओकर विकास नहि भ' सकल

तैं आइ ओ द्वन्द्व लेल तत्पर ओ मोस्तैद नहि अछि। एहिसँ कथालोचनक विकास पर जरब नहि पड़तै से कोना अस्वीकारल जा सकैत अछि। मुदा हम वियोगीक एहि विचारसँ सहमत नहि छी जे कुलानन्द मिश्र अथवा मोहन भारद्वाजमेसँ कोनो एक्के गोटाकेँ जँ राखि लेल जाय त' दोसराक समाहार ओहीमे भ' जेतैक, दृष्टिगत तते एकरूपता छैक।[43] हमरा लगैए वियोगी द्वन्द्वात्मकताक बात कइयो क' ई बिसरि गेला अछि जे सही आलोचक अपन अनुभव आ विवेकक वैयक्तिकता जाग्रत रखैत अछि। द्वन्द्व त' मार्क्सवादी आलोचकोक बीच भ' सकैत अछि। से हेबाको चाहियैक। दृष्टि आ विचार त' कोनो जड़ वस्तु थिक नहि। ओ अपन गति बनौनहि रहत। ओकर विकास होइते रहतैक। जेना मैथिली कथाक संग कथालोचनोक विकास होइत रहतैक।

आरम्भ, अगस्त, 2002

सन्दर्भ संकेत

1. *कुलानन्द मिश्र, प्रस्तावना, अनवरत (मोहन भारद्वाज) पृष्ठ-IX-X*
2. *जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास (अंग्रेजी) पृष्ठ-259-260*
3. *मोहन भारद्वाज, अनवरत, पृष्ठ-39*
4. *वैह पृष्ठ—39-40*
5. *सुधांशु शेखर चौधरी, विवेचना, पृष्ठ-ज*
6. *उमानाथ झा, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, पृष्ठ-118*
7. *मोहन भारद्वाज-सन्धान—4, पृष्ठ-56*
8. *तारानन्द वियोगी, किसुनजीक आलोचना-दृष्टि, आरम्भ-7, पृष्ठ-57*
9. *कुलानन्द मिश्र, रचनामे सोद्देश्यताक बात, सन्निपात-4, पृष्ठ-39*
10. *कुलानन्द मिश्र, फराक-1, अन्त मे*
11. *मैनेज़र पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*
12. *रमानन्द झा 'रमण', मैथिली साहित्य ओ राजनीति, पृष्ठ-11*
13. *भीमनाथ झा, कथामे मध्यमवर्ग, साहित्यालाप, पृष्ठ-55*
14. *कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-182*
15. *नामवर सिंह, वाद विवाद संवाद, पृष्ठ-22*
16. *जीवकान्त, समकालीन कथा साहित्य : समाकालीन परिप्रेक्ष्य पृष्ठ-32*
17. *कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-163*
18. *वैह, पृष्ठ-169*
19. *मोहन भारद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर कथाक प्रवृति-एक विश्लेषण, मि. मिहिर 9 एवं 16 नवम्बर 1975*
20. *रमानन्द झा 'रमण', छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा, मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च-अगस्त 1989*
21. *मेघन प्रसाद, कथाकोश, पृष्ठ-XVII*
22. *कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-176*
23. *कुलानन्द मिश्र, रचनामे सोद्देश्याताक बात, सन्निपात-4, पृष्ठ-35*
24. *सुधांशुशेखर चौधरी, सम्पादकीय, मि. मिहिर, 8 सित. 1974*
25. *तारानन्द वियोगी, सन्धान-4, पृष्ठ-241*
26. *नामवर सिंह, कहानी नयी कहानी, पृष्ठ-138*
27. *मोहन भारद्वाज, अनवरत, पृष्ठ-65*
28. *जयधारी सिंह, सम्पादकीय, मैथिली कथा-संग्रह, पृष्ठ-9*
29. *भीमनाथ झा, साहित्यालाप, पृष्ठ-57*
30. *कुलानन्द मिश्र, कथा यात्राः सातम दशक धरि, मैथिली अका. पत्रिका मार्च-अगस्त 1989*
31. *कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-169*
32. *रामानुग्रह झा, मिथिला दर्शन, दिसम्बर 1973*
33. *राजमोहन झा, अग्निपत्र, 3-4, पृष्ठ-28*
34. *लुकाच का यथार्थ-दर्शन, पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त, पृष्ठ-18*
35. *देवशंकर नवीन, आधुनिक साहित्यक परिदृष्य, पृष्ठ-37*
36. *शिवशंकर श्रीनिवास, सन्धान-3, पृष्ठ-27*
37. *रमाकान्त मिश्र, मैथिली आलोचना, पृष्ठ-38*
38. *सुभाषचन्द्र यादव, अंतिका, जुलाई-सित. 2001*
39. *मोहन भारद्वाज, एकल पाठ, पृष्ठ-85-86*
40. *वैह*
41. *कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-181*
42. *तारानन्द वियोगी, सन्धान-4, पृष्ठ-256-257*
43. *वैह*

मनोरथक पारो

कहल जाइत अछि जे कोनो क्रांतिकारी विचारक तीक्ष्ण ढंगसँ हमरालोकनिक ध्यान आशा आ मनोरथक ओहि विफलता दिस आकृष्ट करैत छथि जे बचाओल जा सकैत छल। संगहि ओ ओहि अन्यायपूर्ण व्यवस्थाक संकेत सेहो करैत छथि जे ओहि कष्ट तथा विफलताक मूल कारण थिक। मैथिली उपन्यासमे यात्रीक *पारो* एहि बातकेँ जेना फड़िछा क' रखलक से ओहिसँ पूर्व सम्भव नहि भेल छल। कदाचित मैथिल ब्राह्मण-समाजमे अनमेल विवाहकेँ विषय बना लिखल गेल बादोक उपन्यासमे से सम्भव नहि भ' सकल अछि। एकर मूलमे हमरा जे कारण देखाइत अछि से ई थिक जे समस्त सदिच्छा, क्षोभ, सुधारक आकांक्षा रहितहुँ मैथिल उपन्यासकार ब्राह्मण मानसिकताक परिधिसँ बहराय नहि सकला अछि। व्यवस्थामे रहि व्यवस्थाक भीतर सुधारक आकांक्षा सभक दृष्टिमे झलकैत अछि। एहिमे जँ कोनो अन्तर आयल अछि त' से केवल चतुरानन मिश्रक कला मे।

मुदा *पारो* पहिल उपन्यास थिक जाहिमे अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर सांघातिक चोट कयल गेल। एक व्यक्तिक मनोरथ ओ आशाक विफलताक बात तीक्ष्ण ढंगे कहल गेल। ओ व्यक्ति छल पार्वती। हमरा जनैत कोनो मैथिली उपन्यासमे स्त्रीक व्यक्तित्वक संस्थापन सेहो पारोसँ प्रारम्भ भेल। जे विचार ओ अपना दिमागमे बनौने अछि से अन्तधरि नहि बदलैत छैक। भनहि ओकर सभसँ प्रिय बिरजू भैया बदलबाक लेल प्रेरित करैत होउक। एकर कारण ई अछि जे ओ विचार पारोक दिमागमे पोथी-पतरासँ नहि जनमल छैक बल्कि जीवन ओ जीवनक आशा ओ मनोरथ एकर मूलमे छैक। मैथिली उपन्यासमे एहिसँ पूर्व सामाजिक स्थितिक जे चित्रण भेल हो, मुदा एक सामाजिक प्राणी, ताहूमे एक स्त्रीक वैचारिक सघनता पारोमे प्रकट भेल अछि। वास्तवमे ताहीसँ पारोकेँ एक व्यक्तित्व भेटलैक अछि।

हमरालोकनि ई जनैत छी जे मैथिल स्त्रीक सख, मनोरथ, ओ विचारक कोनो मोजर कहियो नहि रहलैक अछि। संगहि व्यक्ति रूपमे सेहो स्त्रीक कोनो गणना नहि। दू चारिटा स्त्री यथा—गार्गी, मैत्रेयी, भारती, लखिमा आ विश्वासदेवीकेँ चिन्तनक

कोटिमे राखब हमर अभीष्ट नहि अछि। वर्ण-व्यवस्था, पुरुषक वर्चस्व आ हरिसिंह देवी सभ मिलि नारीकेँ व्यक्तिक दर्जा देब स्वीकार नहि क' सकल। तेँ स्वाभाविक रूपेँ मैथिल नारीकेँ व्यवस्थाक स्वीकारसँ नहि, बल्कि अस्वीकारसँ कोनो व्यक्तित्व भेटि सकैत अछि। मुदा, एहन केओ उपन्यासकार आगू नहि आबि सकला जे पारम्परिक रूपेँ जमल मानसिकताकेँ आंच देखा सकथि। तंत्रकेँ मानवीय उष्माक धाहसँ छहोछित क' कोनो समानान्तर चरित्र, व्यक्तित्वक सृजन क' सकथि। तेँ, पारोसँ पूर्व एहि तरहक मैथिल नारीक जन्म नहिये भ' सकल।

हरिमोहन झाक बुच्चीदाइ सेहो एकदम चुप्पे रहली आ बिना कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त कयने पुरुषक इशारा पर नाचय लगली। पारोसँ पूर्व नारी विवशता पर मार्च 1925मे प्रकाशित पुण्यानन्द झाक *मिथिला-दर्पण* उपन्यासक नायिका योगमाया अपन सखी-बहिनपाक संग प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि :

परन्तु छौड़ीकेँ बुढ़बा वर होयतैक, ई कोन न्याय थिक? हमरालोकनिक कोनो वश नहि चलैत अछि, तें ने?

हमरालोकनि के छी? बजार लगबे करतैक, मेढ़बा टेढ़सिंगा औताह। हमरा लोकनिक हाथ पकड़ि लेताह। बस भेल विवाह।

वास्तवमे *मिथिला दर्पण* उपन्यासमे आर कतेक बात अछि जे ओहि उपन्यासकेँ ओहिकालक उपन्यासमे विशिष्ट बनबैत अछि। *मिथिला दर्पणमे* स्त्री ओ शूद्रक प्रति ब्राह्मण-पुरुषक अत्याचार ओ शोषणक प्रखर चित्रण भेल अछि। संगहि विभिन्न चरित्र ओ व्यक्तित्वक मैथिल ब्राह्मण यथा—चण्डाल, उद्यमी ओ पण्डित रूपक सेहो चित्रण भेल अछि। विश्वाससँ बेसी तर्क पर आधारित चित्रण-वर्णनक कारणेँ *मिथिला-दर्पण* समाजक यथार्थकेँ नब कोणसँ देखैत बुझाइत अछि। *कन्यादान द्विरागमनक* सी. सी. मिश्रसँ फराक एहि उपन्यासक नायक योगानन्द झा अपन विवाहक प्रसंग सोचैत छथि :

'आइ काल्हि भारतक दशा हीन भए गेल अछि। जाति व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, रीति मानि सभ बिगड़ल अछि। एहि समय थोड़ेक-थोड़ेक नहि सहने हो कोना के? सर्वांग उन्नति एक दिनक कार्य नहि थिक। एखन तेँ क्रम-क्रम उद्योग कैने, तखन उन्नति होयत। विदुषी कन्या की कतहुसँ खसै छैक। बनौनहि बनै छैक। स्त्री-शिक्षाक प्रणाली एखन भारतमे आरम्भे भेल अछि। उचित थिक जे विवाह करी। एखन पढ़ैबहुक समय अछि।'

एहि प्रसंग ओना तथ्य ई थिक जे योगानन्द झाक पैर मिथिलामे जमल छनि आ सी. सी. मिश्रक जड़ि मिथिलासँ कटि चुकल छलनि।

यात्रीक *पारो* प्रकाशित भेल स्वतन्त्रतासँ पूर्व 1946 मे। एहिसँ पूर्व मैथिलीमे जे उपन्यास सभ आयल अछि से थिक जनार्दन झा 'जनसीदन' क *निर्दयी सासु* आ *पुनर्विवाह*, जीवछ मिश्रक रामेश्वर, कुमार गंगानन्द सिंहक मनुष्यक मोल, रास

बिहारीलाल दासक सुमति, पुण्यानन्द झाक मिथिला-दर्पण, कांचीनाथ झा 'किरण'क चन्द्रग्रहण आ हरिमोहन झाक कन्यादान-द्विरागमन, योगानन्द झाक भलमानुस आदि। पारोक संग वर्ष 1946मे दूटा उपन्यास आर आयल छल उपेन्द्र नाथ झा 'व्यासक' कुमार ओ शारदानन्द झाक जयवार। एहिमे मैथिल ब्राह्मण आ कायस्थक वैवाहिक समस्या पर लिखल उपन्यासमे *निर्दयी सासु, पुनर्विवाह, सुमति, मनुष्यक मोल, मिथिला दर्पण* आ *कन्यादान* प्रमुख अछि। पारोक पहिने आयल सुशीला आ *पारोक* बाद आयल चतुरानन मिश्रक कला, चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर' क *विदागरी* सेहो एही विषय पर अछि। एहि सभ उपन्यासमे वर्ण-व्यवस्थाक संग हरिसिंह देवी प्रथाक कारणेँ उत्पन्न बहु-विवाह, विकौआप्रथा, अनमेल विवाह, स्त्रीकेँ छागर-पाठी बुझबाक बात, स्त्री-शिक्षाक अभाव, स्त्रीक दुःस्थिति लेल स्त्रियोक उत्तरदायित्व आदि बात आधुनिक आँखि-पाँखिक संग प्रस्तुत कयल गेल। जाति-पाँजिक कारणें पहिने वरे नहि कन्यो बिकाइत छल। कन्याक बाप टाका गनबैत छला। तकर कुपरिणामक भीषण चित्रण कुमार गंगानन्द सिंहक *मनुष्यक मोलमे* भेल अछि। तँ स्त्री-शिक्षाक अभावक संग अंगरेजिया वरकेँ ठकि क' विवाहक दुष्परिणाम *कन्यादानक* बुच्चीदाइकेँ भोगय पड़ल। बृद्धक संग अल्पवयस्क कन्याक विवाहक कारणेँ वैधव्यक दुख आ कुलक्षणी, अलच्छीक उपाधिक संग नैहर-सासुरक अत्याचारसँ जतय सुशीला अपन देहमे आगि लगा क' मरि गेल ओतहि कला पड़ा क' काशी चलि गेल। ओतए दुष्टा आ कुटनी विधवासभसँ बाँचि एक प्रगतिशील डॉक्टर कलानन्दसँ विवाह क' विधवा सभक उद्धारमे लागल।

मुदा एहि सभ उपन्यासमे सामाजिक समस्यामेँ उत्पन्न लेखकक सदिच्छा, सुधारक आकांक्षा उपरे-उपर स्थितिक चित्रण धरि सीमित रहि गेल अछि अथवा जोशमे भाषणबाजी भ' गेल अछि। लगैत अछि जेना कुप्रथा पर केवल चोट करबे लेखकक अभिष्ट होनि। पात्र सभकेँ तँ जेना चाहलनि तेना उठ-बैस करओलनि अछि। घटनाक प्रधानताक कारणेँ चरित्र ने पुष्ट भ' सकल आ ने ओकर कोनो व्यक्तित्वे ठाढ़ भ' सकल। स्त्रीक प्रति संवेदना-सहानुभूतिक अछैतो स्त्रीक अपन कोनो व्यक्तित्व नहि बनि सकल अछि। सभ परिस्थितिक दास बनि क' रहि गेल अछि। व्यक्तित्वक अभाव स्त्रीएटामे नहि, बहुधा पुरुषोमे देखबामे अबैत अछि। *कुमार* सन अपन कालक प्रसिद्ध उपन्यासमे सेहो व्यासजी कुमारक कोनो औचित्य, सार्थकता नहि सिद्ध क' सकला अछि। क्षण-प्रतिक्षण भावनावश बदलैत विचारक कारणें कुमारक नायक कोनो परिचिति नहि बना पबैत अछि।

तत्कालीन उपन्यास सभमे परिचितिक इएह अभाव *पारोमे* आबि क' खतम भ' जाइत अछि। पार्वती अर्थात् पारोक वैचारिक दृढ़ताक चरित्रांकनक संग बिरजूक माध्यमसँ कथा कहबाक शिल्पक नव प्रयोग सेहो ई सम्भव कयलक अछि, से सहजे कहल जा सकैत अछि। ई स्वाभाविक जे बिना आन्तरिक वैचारिक दृढ़ताक यदि ढाँचा तैयार कयल जायत तँ 'व्यक्ति' मूर्तिमान नहि भ' सकत। बिना हड्डीक मनुक्ख केहन

होयत? एकरे संग *पारोमे* यात्री जेँ कि समाज-व्यवस्था आ अन्यायी कुप्रथाक प्रबल घेराबन्दीसँ आगू बढ़ि मानवीय चेतनाक संग चरित्र आ कथाक ढाँचा तैयार करैत छथि तेँ ओ पारोकेँ ओकर व्यक्तित्व देबामे सफल भ' सकला अछि।

पात्रकेँ पहिने मनुक्ख होयब आवश्यक अछि। हाड़-मांसक मनुक्ख। जकरा अपन सख-सेहन्ता, मनोरथ होइ। प्रेम-घृणा होइ। विचार होइ। जीवनक प्रति आकर्षण होइ। सौन्दर्य-बोध होइ। एहने मनुक्ख रूढ़ि-भजक भ' सकैत अछि। अहितकर परम्परा आ विश्वासकेँ नकारि सकैत अछि। अपन नैतिकताक परिभाषा स्वयं गढ़ि सकैत अछि। स्वाभाविक अछि जे एहन मनुक्खक क्रिया-कलाप नैतिकताक बनल-बनाओल लीक पर नहि चलत तेँ ओकर विरोध सेहो स्वाभाविक। उपन्यासमे आयल एहने आधुनिक मनुक्ख सभ भाषा-साहित्यमे हड़बिरड़ो मचौलक। रूढिवादीलोकनिक कोप भाजन बनल। मैथिलीमे सेहो *पारोक* विरोधक मूलमे इएह कारण छल, जकरा ममिऔत-पिसिऔत भाय-बहिनिक यौन आकर्षणक नाम पर चर्चित-चर्वित कयल गेल। ई ओहिकालक पोंगापंथी मानसिकताक द्योतक रहय। आइ जखन *पारो* पढ़ल जाइत अछि तँ ककरो ओहन प्रतिक्रिया नहि होइत छैक, जे तहिया भेल रहैक। एकरा मैथिल पाठकक मानसिक परिवर्तन सेहो मानल जा सकैत अछि।

प्रकृति अथवा देहक प्रति आकर्षण मनुक्खक स्वभावमे छैक। प्राकृतिक दृश्य ओ पुरुष-स्त्रीक देह मनुक्खकेँ आकर्षित करैत छैक। यदि से स्वाभाविक रूपेँ नहि करैत छैक तँ से कोनो विकृति भ' सकैये। विकृत मानसिकताक तँ गप्पे नहि हो। बिरजू अपन समस्त आचार-व्यवहार ओ संस्कारक संग जेँ कि मनुक्ख अछि, तेँ ओकरा पारोक आँखि आकर्षित करैत छैक। कारी आ दुब्बर पातर बगए बानिक पार्वतीक आँखिमे अजीब आकर्षण छैक। बिरजूकेँ होइ छै जे *आगाँ आन कोनो बात जँ नहिओ भेल रहितय तइयो आँखियेक खातिर पार्वती हमरा जिनगी भरि मोन रहैत, कहियो की बिसिरैत।* बिरजू पारोक आँखिमे नोर नहि सहि सकैये। *ओहि दिन ओकर डबडबैल आँखि हमरासँ किए नहि देखल गेल। ओकर लटकल मुह देखि हम पघीलि किए गेलहुँ।* बहीनि आ संगतुरियाक सम्बन्ध-अनुबन्धक अतिरिक्त ई प्रबल दैहिक आकर्षण दूनूकेँ लगाओक निस्सन डोरीमे बान्हि देलकैक। पार्वतीकेँ सेहो बिरजूक प्रति आकर्षण छैक। ओकर मनोरथ छैक जे बिरजूए भैया सन जँ ओकरा बर होइतैक। अपन मनोरथ ओ सेहन्ताक तापसँ ओ लोकाचारक प्रति सेहो विद्रोही भ' उठैये। *भाइये-बहीनमे जँ विवाह दान होइतैक तँ केहेन दिब होइतै। कत' कहाँदनक अनठिया के जे लोक उठा क' ल' अबैये, से कोन बुधियारी?'* पारो मोनसँ एकदम स्वाधीन अछि। इएह स्वाधीन मोन ओकरा मनुक्ख बनबैत छैक। एकटा व्यक्तित्व प्रदान करैत छैक। ओ अपन वर चौधरीकेँ कहियो स्वीकार नहि करैये। एहि रूपेँ ओ वैवाहिक कर्मकाण्डके सेहो नकारि दैत अछि। एहन स्वतंत्रचेता पारो बिरजू भैयाकेँ कहि उठैत अछि, 'जोर-जबर्दस्ती ककरो देहेटा पर क्यो क' सकैत छै मोन पर किन्हु नहि।

ओना तँ तोंही कह' जे पचास वर्षक सांइ केर बहु जाहि ठां पन्द्रह सालक होइ ताहि ठां कोना सौमनस्य हेतैक। बिरजू भैया द्वारा विवाहोत्तर स्थितिकेँ स्वीकार करबाक सुझाओ पर ओ कोनो ध्यान नहि दैत अछि। एतेक तक जे जाहि पुरुषसँ घोर घृणा छैक तकर सम्पर्कसँ अंकुरित सन्तानकेँ सेहो राक्षस-राक्षसी कहि सम्बोधन करैत अछि—'के छइ अइ कोखिमे, राक्षस आ कि राक्षसी? मै गे मै आ होहो! पारो अपन पसिन्नक पुरुष चाहैत अछि। अपन पसिन्नक पुरुषक सन्तान चाहैत अछि। पारोक ई स्वाभाविक मनोरथ समस्त परम्परा, प्रथा, रीति-रेवाज, कर्मकाण्ड पर प्रश्न-चिह्न ठाढ़ क' दैत अछि। ओहि पर निस्सन चोट करैत अछि। अपन पसिन्न ओ मनोरथक आगू ओ ककरोसँ, कथूसँ समझौता नहि करैत अछि। ओकरा अपन भविष्य बूझल छैक। बिरजूकेँ मोन पड़ैत छैक *आबय काल सराइमे जनउ-सुपारी दैत कहने रहय-लैह, कने नीक जकाँ गोड़ लाग' दैह। के कहए, ककरा कखन की हेतैक...मोनसँ आशीर्वाद देने जाह।* बन्धनसँ मुक्तिक अकुण्ठ आकांक्षा पारोमे भरि गेल छलैक। मुदा तँ ओ आत्महत्या नहि करैत अछि। कतहुसँ कमजोर नहि छल ओ। मैथिल ललनाक एहन स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व एहिसँ पूर्व मैथिली उपन्यासमे नहि आयल छल।

भले ही पार्वतीक आशा ओ मनोरथ विफल भ' गेल होइक, मुदा उपन्यास ओहि अन्यायी व्यवस्था दिस ठोस संकेत क' गेल जे व्यवस्था ओकर कष्ट आ विफलताक मूल कारण छल। एहीठाम यात्री अपन उपन्यासमे क्रांतिकारी विचारकक रूपमे उभरि क' हमरालोकनिक समक्ष अबैत छथि।

यात्री, चेतना समिति, 2000

मोड़सँ पहिनहि बाट काटल अछि

धूमकेतुक उपन्यास *मोड़* परक उत्स स्त्रीक हकक विचार ओ संघर्ष थिक। मुदा एहि विचार ओ संघर्षकेँ औपन्यासिक रूपमे प्रस्तुत करबाक लेल जाहि संक्रेन्दित कथा-वस्तु, सामूहिक दृष्टि ओ स्थापत्यक प्रयोजन छल से धूमकेतुसँ सम्भव नहि भ' सकल। कवि हरेकृष्ण झाक शब्दमे कही तँ धूमकेतु तकर जरबो नहि उठौलनि। जरब नहि उठेबाक संग एकटा कारण उपन्यासमे आयल मुख्य विन्दुक संग विभिन्न कथा-उपकथा कहबाक लेखकक मोह सेहो अछि। एहिसँ ओना समाजक बहुत रास दमगर बात-विचार ओ चहल-पहल चित्रित भेल। मुदा मूल बिन्दु जे अभीष्ट छल सघन रूपेँ नहि उभरि सकल। उपन्यासमे स्वतंत्रतासँ पूर्व ओ वादक सामंती मानसिकता, वर्गवाद, भोगवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकताक क्रमशः बढ़ैत ज्वारि, सत्ताक चरित्र आदि मारिते रस तथ्य देखार होइत अछि। मुदा एहि सभक फूट-फूट प्रभाव स्त्रीक फूट हकक विचार ओ संघर्षकेँ ने तँ सुपुष्ट क' पबैत अछि ने समन्वित रूपसँ कोनो दमगर पक्षधरते उत्पन्न क' पबैत अछि। वस्तुतः स्त्री समस्याक जड़ि वर्ण व्यवस्थाक प्रति लेखकक स्पष्ट ओ सुविचारित दृष्टिक अभाव एकर मूलमे अछि। वर्ण व्यवस्थासँ बाहर आबियेकेँ स्त्रीक फूट हकक समस्याक समाधान छैक। जकर आधार स्त्री आ पुरुषक समान अधिकारे भ' सकैत अछि। जेँ कि वर्ण व्यवस्थामे पुरुषक वर्चस्व रहैत आयल अछि, तेँ स्त्रीक फूट हकक लेल संघर्ष वर्ण व्यवस्था, पुरुष सत्ताक विरुद्ध संघर्ष थिक। एहि संघर्षमे नेतृत्व तँ स्त्रीकेँ करबाक छैक, समान सोचवला पुरुष खाली इमानदारीसँ ओकर संग द' सकैत अछि। मुदा जतय स्त्रीकेँ स्वयं एकर चेतना नहि उत्पन्न भेलैक अछि आ पुरुष सेहो स्त्रीकेँ रक्षणीया मानि क' हकक लेल लड़ाइ ठानैत अछि, ओतय एहि संघर्षक जे परिणति होएबाक चाही, से एहि उपन्यासमे भेल अछि। हँ, एहि लेल धूमकेतु अवश्य वधाइक पात्र छथि जे ओ अपन पठनीय उपन्यासमे एहि अन्तर्द्वन्द्वकेँ इमानदारीसँ उपस्थित कयलनि अछि। वहुतो विरोधाभासक अछैत, एहि मुद्दा पर चर्चा ओ विमर्शक अवसर ई उपन्यास दैत अछि।

धूमकेतुक संग समस्या भोगल यथार्थक कारणेँ छलनि। वस्तुतः स्वभोगित

खिस्साकेँ प्रामाणिक मानब लेखक धूमकेतु लेल एक मजबूत सिक्कड़ि बनि गेल रहनि। एहिसँ बाहर देखब हुनका काम्यो नहि छलनि। संगहि ओ इहो मानैत छला जे'जीवनक निस्तार भीतर छैक जतय गहनतम संघर्ष चलैत रहैत छैक। मनुक्खक यैह संघर्षपूर्ण अन्तस स्वयंसँ लड़बाक सनातन युद्धक्षेत्र हमर सृजनक भूमि थिक।' एहिसँ धूमकेतु अपन सीमा स्वयं बान्हि लेलनि जे एहि उपन्यासमे आर बेसी उभरि क' आयल अछि। ओ जेना अपन स्वयंसँ आजीवन लड़ैत रहला, तहिना हुनकर उपन्यासक नायक सदाशिव झा उर्फ सदा सेहो 'स्वयं'सँ लड़बामे अन्त धरि फँसल रहल। सदा संकोचसँ गड़ैत सोचने रहथि, 'नो, वन कैन्नॉट क्रॉश हिमसेल्फ।' परिणामस्वरूप हुनकर लड़ाइ कोनो निर्णायक मोड़ पर नहि पहुँचि सकल। जाहि अपन 'रक्षणीया' गुनाकेँ सम्पत्तिक अधिकार दियेबाक लेल ओ संघर्ष प्रारम्भ कएलनि से गुना अन्ततः आत्महत्या क' लैत छथि। संघर्षोक अन्त समझौताक दिस बढ़ि गेल। समझौताक शर्त्तसँ व्यक्तिगत आ सामूहिक संघर्षक विरोधाभास उभरि आयल। ई विरोधाभास गुनाक व्यक्तिगत खेत-पथार लेल संघर्षकेँ दलित वर्गक सिकमी जमीनक सामूहिक संघर्षसँ ओझरेबाक सधल चालिसँ उत्पन्न भेल। ई चालि जमींदार वर्ग द्वारा चलल गेल छल। सदाक वैचारिक ओझराहटि एहिसँ आर देखार भेल, जे स्वाभाविक छल।

व्यक्तिगत हित आ सामूहिक हित सम्बन्धी वैचारिक ओझराहटि सदाकेँ वास्तवमे शुरूहेसँ रहलनि। ओ भावनाक जाहि ज्वारिमे आबि क' अपन कर्त्तव्य निश्चित कयलनि से कर्त्तव्य स्वाभाविक रूपेँ कोनो सामूहिक संघर्षक संकल्पसँ नहि निर्धारित भेल रहय। ओ तँ अपन रक्षणीया गुनाकेँ हुनकर अधिकार दियेबाक दायित्व छल। जाहि लेल ओ दाइजी अर्थात् गुनाक मायकेँ वचन देने छलथिन। ई रक्षणीयाक अवधारणा स्वतः अपनामे ओहि परम्पराक देन छल जे स्त्रीकेँ सदिखन पुरुषक अधीन मानैत अछि। जे बिना सम्बन्धक किछु सोचि नहि पबैत अछि। पुरुष चाहे पति हो, पिता हो वा पुत्र, एही सम्बन्ध तर स्त्रीकेँ रहबाक छैक। मुदा सदा गुनाक एहिमेसँ किछु नहि छल। सम्बन्धे भाइ छल गुनाक माए दाइजी ओकर पिताक ममियौत बहीनि छलथिन। ओकर पिता मातृकेमे रहनिहार भगिनमान छला। मातृकक ड्योढ़ीमे भानस करथि। ओहिठामक खेत-पथार, आफद-आसमानी देखथि। सदाकेँ जखन आँखि भेलनि, ड्योढ़ी ढनमना रहल छल। दाइजी जिनकर स्वामी बाबाजी भ' गेल छलथिन, वर्षहुसँ लापता रहथिन। समाज हुनका विधवा बूझैत छल। मुदा ओ अपनाकेँ सधवा मानैत रहथि। मानसिक असंतुलनक अवस्थामे अपन कोठलीमे नाङट बैसल रहथि। दाइजीकें सदासँ स्नेह रहनि। सदाक माए मरि गेल रहथिन। हुनकर पिता अपन स्त्रीक मृत्यु लेल उत्तरदायी छला। लाठीसँ हुनका ततेक मारलथिन जे शोणितसँ लथपथ हुनकर प्राण छूटि गेल रहनि। तखन सदाक पिता तेसर वियाह कयने छला। जाहि वर्ण व्यवस्थाक अन्तर्गत सामंती मानसिकताक संग सदा आ गुनाक लालन-पालन भेल रहनि, से अपनामे बहुतो अन्तर्विरोधसँ भरल छल। स्पष्ट रहय जे जाहि पारंपरिक अवधारणाक

न्यो पर सदा अपन कर्त्तव्य निर्धारित कयने रहथि, से ओहि वर्गसँ बाहर कोनो सामूहिक सोचसँ प्रेरित नहि छल। सामूहिक संघर्ष दिस बढ़ियो नहि सकैत छल। सामूहिक संघर्ष सिकमी ओ बकास्त जमीन लेल पूर्व जमीन्दारक विरुद्ध करबाक रहैक। मुदा, गुनाक खेत-पथार लेल संघर्ष जमीन्दारीयेक एक हिस्सा रहय। स्वाभाविक रूपसँ सिकमी जमीनक सामूहिक संघर्षमे गुनाक पक्ष पूर्व जमीन्दार सभक संग होइत। सएह चालि भैयाजी आ गुनाक पित्ती ठाकुरजी गुनाक अधा-छिधा हक दैत चलबो कयला। तेँ स्वाभाविक रूपसँ सदाक संघर्ष एहू दृष्टियेँ विरोधाभाससँ भरल रहय। ई विरोधाभासे बोझ बनि गेल आ संघर्ष सम्बन्धक जंगलमे कतहु हेरा-भोतिया गेल।

मिथिलामे अदौसँ वर्णवादी व्यवस्था कायम छल। पुरुष-तंत्र एकदम जड़िआयल छल। ओतय स्त्रीक अधिकार ओ फूट हकक मादे सोचलो नहि जा सकैत रहय। सम्पूर्ण समाज एहि व्यवस्थातर पिसाइतो एकरा कायम रखबामे अपस्यांत छल। संस्कारक गछाड़ सामंती-ब्राह्मण समाजमे शेष समाजक अपेक्षा बेशी रहय। परम्पराक जड़ तत्त्व सभ तँ सभ दिन ओहि पर सवार छल। स्वतंत्रतासँ पूर्वक अंग्रेजक जमाना हो वा स्वतंत्रताक बादक कांग्रेस शासन व्यवस्था, राजनैतिक सत्ता परिवर्तनक कोनो असरि समाजक व्यवस्था पर नहि पड़ि सकल। कानून स्वतंत्रताक बाद बनाओल गेल। मुदा, ओहि कानूनकेँ सामाजिक स्वीकृति नहि भेटलैक। कानून बनाइयो क' सत्तामे बैसल वर्णवादी मानसिकताक राजनेता, समाजक मुहपुरुषलोकनिसँ मीलि क' भोटक कारणेँ कानूनक कार्यान्वियनमे वाधा उत्पन्न करैत रहला। किएक तँ समाजमे वर्चस्व एही मुहपुरुषलोकनिक रहनि। स्वाभाविक रूपसँ स्त्रीक समानता सम्बन्धी कानून संविधानक पन्नामे ओहिना अनामिते राखल रहि गेल। समाजमे स्त्रीक स्थिति पारम्परिके बनल रहल। परिवर्त्तनक लहरि शेष भारतक अपेक्षा मिथिलाकेँ सचेतन नहि क' सकल। समाज ओहिना बन्द छल। स्वतंत्रता संग्राममे समाजमे जे हिन्दूवादी सोच उत्पन्न भेल, स्वतंत्रताक बाद ई आर गहींर आ चौरगर होइत चल गेल। उपन्यासमे एक स्थल पर स्वतंत्रता दिवस दिन लाल बच्चा अपन भाषणमे कहि देने छलथिन,—'सदियों के बाद देश आजाद हुआ...।' आ मजीद सैहेब टोकने रहथिन,—'वाह भइ, वाह! अठारह सौ सत्तावन और उन्नीस सौ सैंतालिसके बीच सदियों गुजर गए?' स्पष्ट छल जे लाल बच्चा देशमे हिन्दूक अपन शासनक गप्प क' रहल छला। हिन्दूवादी--ई एकांगी दृष्टि वर्ण व्यवस्थाक पारम्परिक मानसिकताक भीत्ति पर ठाढ़ रहय। आइ तँ स्थिति आर विषम अछि। मुदा उपन्यासक अवधि तँ मोटामोटी 1935-40सँ 1970 क पूर्व धरि सीमित अछि। तेँ विचार-विमर्श सेहो ओही अवधिकेँ ध्यानमे राखि क' कयल जा सकैत अछि।

एहि वर्णवादी ओ सामन्ती व्यवस्थाक भीतर आधुनिक ओ वैज्ञानिक सोच कतहु आबि नहि सकैत छल। आधुनिक ओ वैज्ञानिक दृष्टि ओहि व्यवस्थाक जड़िकेँ हिला सकैत अछि तेँ ओकरा नम्बर एक दुश्मन घोषित कयल गेल। व्यवस्थाकेँ आर मजबूत

बनेबाक लेल अन्धविश्वासकेँ बढ़ेबाक प्रयोजन छल, एहि हेतु समाजमे झाड़-फूक, डाइन-जोगिन, ओझागुनीक चलनसारि प्रभावी होइत गेल रहय। उपन्यासमे एहि सभक बहुत मार्मिक वर्णन अछि। ई अन्धविश्वास लोकक सोच-विचारकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि। गुनाक माय दाइजीक मृत्यु एही झाड़-फूकक कारणें भेल छलनि। रोग हुनका निमोनिया रहनि मुदा हुनकर माथ पर नरमुंड बजारल गेलनि आ देह पर चिड़चिड़ीक झाड़सँ ताबड़तोर प्रहार कयल गेलनि। कतेको घैल छुतहरक पानि ढारल गेलनि। एहि प्रकारेँ, हुनका नारकीय यातनासँ मुक्ति देल गेल रहनि।

एहि सभ वातावरण ओ व्यवस्थाक निर्मम दंशसँ सदा व्याकुल होइत छला। मुदा ओहो एही व्यवस्थाक भीतर पोषित-पालित रहथि। एहिसँ आक्रोश ओ घृणा उपजनि मुदा ओहि आक्रोशसँ ओहेन ऊर्जा ओ वैचारिक सोच नहि उत्पन्न भेलनि जे ओहि व्यवस्थाकेँ भेदि कए सामाजिक अन्तर्विरोधकेँ देखि सकय। हुनकामे स्वाभाविक रूपसँ भावुकता रहय। उत्तेजना रहनि। ओ भावनावस निर्णय लेथि। सुरी भाइ जे स्वतंत्रतासँ पूर्व गरीब लोकक लेल संघर्ष करथि, हुनकर गुरु रहथिन। दुखरन जे गुनाक पति छला, सर्वहाराक बेशी नजदीक रहथि। हुनकर बात-विचारमे अन्तर्विरोध सेहो कम छल। मुदा हुनकर हत्या भ' गेल। सदा दुखरनसँ बेशी प्रभावित रहथि। सुरी भाइ बादमे कांग्रेसमे चल गेला आ मंत्री बनला। सत्ता हुनकर चरित्र बदलि देलक। सदा दुखरनक विधवा गुनाकेँ शहीदक विधवा बूझथि। ओकरा लेल हकक लड़ाइक निर्णय, जेलसँ छुटबाक पूर्वहि लेने रहथि। किशोरवास्थामे एक अभियानक तहत डकैतीमे शामिल होयबाक कारणें सदाकेँ जेल भेल रहनि। जखन छुटलाँ फूटि क' जबान भ' गेल रहथि। मोछक पम्ह गुलजार भ' गेल छलनि।

सदा चाहैत छला जे गुना अपन पयर पर ठाढ़ होअय। ओकर सम्पत्ति ओकरा भेटैक। ओ एक शहीदक विधवा भ' मर्यादाक संग जिनगी जीबय। मुदा सदाक ई सभ खाली सोचब छल। एहि सोचमे गुनो धरिकेँ ओ शामिल नहि क' सकला। एकर कारणमे एक दिस जतय सदाक अपन मानसिक अन्तर्द्वन्द्व छल, ओतहि गुनाक भीतर ओ वर्णवादी-पुरुषवादी सोच चकरी मारि कय बैसल रहय, जे पुरुषक बिना स्त्रीक फराक कोनो अस्तित्व नहि मानैत अछि। एहि विश्वासक कारणेँ परम्परा पोषित गुनाकेँ सदाक सोच-विचार किताबी-सिद्धान्त बुझेलनि आ हुनका मूढ़ तक कहि देलथिन। ओतहि गुनाक नाङट भय गेला पर सदा सोचलनि जे गुनाक माय दाइजीयोक रोग नङटे भ' जएबासँ शुरू भेल छलनि। एहि प्रकारेँ एक दिस गुना स्त्रीक मर्यादा लेल धन-सम्पत्तिक कोनो मोजर नहि देलनि तँ सदा परम्परासँ चल अबैत रक्षणीयाकेँ खाली सुरक्षित करबाक सेहन्ता ओ वचन पूरा करबामे लागल रहला।

उपन्यासमे गुना आ सदाक वार्त्तालाप ध्यान देबाक जोगर अछि। गुना मुस्कियाइते बजली—'तों ई नै बुझै छहक जे हम स्त्री छी, हमर कोनो नाम-गाम अछि, जे हम अपन भरोसे जीयब।'

—हम तोरा नाम गामक संग मर्यादित व्यक्ति बना क' जियाब' चाहै छिय।' आब गुनाक चेहरा विद्रूपसँ टेढ़ भय गेलनि 'स्त्रीक मर्यादा ककरा कहै छै, से तोँ बुझै छहक? मर्यादाक लेल धन-सम्पत्तिक काज होइ छै? हमर मान केनिहार के अछि जेकर हम मर्यादा रखबै? हम की करब अपन पयर पर ठाढ़ भ' क'।'

सदा बुझेबाक स्वरमे कहलथिन,—'जीवन सुखसँ जीब'।'

—'आ जीबै माने की होइ छै, से तों बुझितहक तँ अपन जीवन नै गमबित'। गुना असोरा पर चढ़ि गेली—'भरि जिनगी तँ तों जेलमे बन्द रहला। तोरा मनुखसँ भेट भेल'। जीवन माने की? किताबी सिद्धांत? तों मूढ़ छह।' गुना लग पहुँचि क' मचान पर बैसि गेलथिन। सदा कनेक कात घुसकि गेला तँ गुनाकेँ हँसी लगलनि—'तों तँ अपने कहै छला जे शोणितक सम्बन्ध वितंडा छी। जिनगी तँ हमर-तोहर संगे शुरु भेल, मुदा तोँ शुरूहो ने केल' आ हम खतमो केलौं।'

एहि सोच आ परम्पराक सामानान्तर स्त्रीक हकक संघर्षसँ जे अन्तर्द्वन्द्व उपजल, से गुनाक चित्तकेँ स्थिर नहि राखि सकल। ओ भहरि गेली। एहन दबाव ओ तनाव उत्पन्न भेलनि जे ओ अपनाकेँ खतम क' लेबाक निर्णय लेलनि। सदाकेँ सेहो लगलनि जे गुनाक मोन ओ नहि थाहय चाहलथिन अछि। भावनासँ जनमल कर्त्तव्य गुनाक भावनाकेँ क्षत-विक्षत क' देलकनि। ओ अपन स्वामीक देल 'अंतिम रक्षक' रिवाल्बरसँ अपन जान ल' लेलनि। रिवाल्वर दुखरनक देल छलनि ओ कहने रहथिन जे जखन हमरा लग आयब अनिवार्य बुझाय, तँ एकर प्रयोग करब।

ई उपन्यास ओना जमीन्दार-सामंती मैथिल ब्राह्मणक ढहैत आ चिर्रीचोंत होइत व्यवस्था आ ओकर अस्तित्वकेँ बदलैत परिस्थितियोमे बचेबाक लेल चतुर-चलाक चालि-ढालि अपनेबाक खिस्सा कहैत अछि। संगहि स्वतंत्रतासँ पूर्वक हिन्दू मुसलमानक बीच सौमन्यस्ताकेँ स्वतंत्रताक उपरान्त साम्प्रदायिक तनावमे परिणत होइत सेहो देखबैत अछि। स्वतंत्रतासँ पूर्वक समाज आ स्वतंत्रताक बादक समाजमे आयल परिवर्त्तनकेँ उपन्यास ठाम-ठाम पर उद्घाटितो कयलक अछि। मुदा एहि उद्घाटनक बीच हिन्दू-मुसलमानक सौमन्यस्ताक गप्प अतीतक राग सन बुझाइत अछि। तथापि समाजक सर्व-धर्म-समभावक दिग्दर्शन तँ उपन्यासमे होइते अछि। एकर आधारो वैह गांधीवादी दर्शन थिक जे उपन्यासक नायक सदाक माध्यमसँ परिवर्त्तनक सम्बन्धमे लेखकक दृष्टिकेँ स्पष्ट करैत अछि :

—'क्रान्ति व्यक्तिक चित्तमे घटित हेतै ने? जोहान्सवर्गकेँ प्लेटफार्म पर फेकल जाइत देह आ टूटैत दाँतसँ चित्त जखन मोड़ लैत अछि तँ क्रान्ति घटित होइत छैक। सदाकेँ लगैत छनि, आइ तक जतेक तथाकथित क्रान्ति देशे-देशे घटित भेल अछि ओहिसँ की परिवर्त्तन भेल? राजसत्ता बदलि गेल, तँ क्रान्ति कोना भ' गेल? क्रान्ति भेल मनुक्खमे आमूल परिवर्त्तन।'

स्पष्ट अछि जे धूमकेतु गांधीवादी आदर्शसँ आगू एहि उपन्यासोमे नहि बढ़ि

सकला अछि। एहि बातक कोनो भ्रम नहि होयबाक चाही जे धूमकेतुक दृष्टिमे सामाजिक विकास ओ सामाजिक अन्तर्विरोध फड़िछायल छलनि। हुनकर सीमा एकदम स्पष्ट अछि। स्वयंसँ लड़बाक सनातन युद्ध क्षेत्र, हुनकर सृजन भूमि, हुनकर सीमा बनि गेल रहनि। एहिसँ आगू सामूहिक सोच ओ संघर्ष दिस बढ़ब हुनकासँ सम्भव नहि भ' सकल। भलहिं उपन्यासमे व्यक्ति संघर्षकेँ सामूहिक संघर्षसँ जोड़ि क' देखबाक विचार ठाम-ठीम उभरल हो। मुदा अपन सीमासँ बाहर ओ नहि आबि सकला। ई सीमा हुनकर वर्गीय सीमा छलनि। तेँ गुनाक हक लेल संघर्ष एक व्यक्तिगत संघर्ष बनि क' रहि गेल अछि। मुदा एहू संघर्षमे विजय वर्णवादी व्यवस्था पुरुष तंत्रेक भेल अछि। एहि प्रकारें मिथिलाक समस्त स्त्रीक हकक संघर्ष दिस बढ़बासँ पूर्वहि बाट कटि गेल आछि। कोनो मोड़ पर पहुँचब एनामे सम्भव नहि रहय।

मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, चेतना समिति, 2003

सकीनाक हसीना मंजिल

'हसीना मंजिल' उषाकिरण खानक नवका उपन्यासक नाम थिक। ई उपन्यास प्रकाशन मंच, बन्दर बगीचा, पटनासँ छपल अछि। श्रीमती खानक अनुत्तरित एवं दुर्वाक्षत नामसँ उपन्यास पहिनहुँ मैथिलीमे निकलि चुकल अछि। चर्चित प्रशंसित भेल अछि। हिन्दी आ' मैथिलीक कतेको प्रसिद्ध कथाक रचनाक कारणे उषाकिरण खानक नाम आब बिहारमे जानल-बूझल अछि।

पहिल नजरिमे, कोनो किताबक दोकान पर राखल 'हसीना मंजिल' मैथिली उपन्यास नहि हिन्दीक किताब बुझाइत अछि। मुदा पोथी उनटबिते लगले बूझि जाइये लोक जे ई मैथिलीए उपन्यास थिक। उपन्यासक आवरण चित्र पद्मश्री उपेन्द्र महारथीक बनौल अछि। सुन्दर, मुस्लिम युवतीक चित्र। श्रीमती खान कहैत छथि जे ई कथा-नायिकाक चित्र थिक। उपन्यासोमे एकर वर्णन अछि।

उपन्यास हाथमे ल' पढ़बाक कोशिश कयला पर प्रारम्भमे भाषाक अटपटी कने स्वाद बिगाड़ैत छैक। मुदा लगले भाषाक ठाठ आ कथाक प्रवाह 'काकटेल' क आनन्द दिय' लगैत छैक। बड़का, छोटका हिन्दू आ मुसलमानी मैथिलीक मजा लिय' लगैत अछि पाठक। कोरो, बाती आ जौउरसँ बान्हल गेंठसन तीनू जाति-वर्गक मैथिलीक अपूर्व ठाठ ठाढ़ करैत छथि लेखिका।

हसीना मंजिल उपन्यास लहेरियासराय लग रहनिहार लहेरी जातिक मुसलमान परिवारक कथा थिक। लहठीक निर्माण आ विक्रय सैह हिनकालोकनिक मुख्य धन्धा छनि। राशि-राशिक लहठी बना ओकरा छिट्टामे ल' क' भौरी लगायब दस्तूर। काज-रोजगार। जीवन निर्वाहक साधन। उपन्यासक प्रारम्भेमे नायिका सकीनाक लहठी बनेबाक इलम सीखबाक वर्णन अछि संगहि मिथिलामे लहठीक महत्ता, उपयोगिताक संकेत सेहो। 'कनेके टासँ अब्बा संगे बैसिक' जे सीखलक सकीना सएह जीवनक आधार भ' गेलैक। लाह बरकएबामे कतेक आंचक जरूरति होइत छैक, कतेक लाह कतेक बालु आ कतेक कचरा फेंटल जाइत छैक तकर सही-सही अनुपातक ज्ञान जाहि लहेरीके भ' गेल से सभसँ सेसर। पन्नी कतरब, मौका पर चप्प द' साटब आ बेलना पर लहठी रोलब,

ई सभटा लूरि सकीना अब्बासँ सिखलक। मोट-मोट लहठी बनयबामे ओतेक इलिमके जरूरति नहि छैक। मिहिक्का तीसी फूल, कतरी आ सहाना बनयबामे असली कारीगरी देखल जाइत छैक। आ अइ सभक जोर लगनमे सउसे तिरहुतामे होइ छै। जहाँ तलुक नजरि जाइ छइ सकीनाकेँ तहाँ तलुक तिरहुता छइ। आ तिरहुतामे लगनमे लोक इहे कच्चा लहठी पहिरलक। ओइ बिनु ने वियाह होइ छै, ने दुरागमन। ने बच्चाके छठियार पुजाइ छैक, ने मुड़न जनेउ होइत छैक। छोटकासँ बड़का धरि लहठीक हाहि मारैत रहैत छैक।'

एही लहेरी परिवारक दुखदर्द, संयोग-वियोग, साहस पलायन, अवनति-उन्नति, आत्मनिर्भरता, कर्मठता तथा मिथिलाक अन्य जाति संग रचबाक-बसबाक कथा अछि हसीना मंजिलमे। सम्पूर्ण उपन्यासमे बूढ़ा उसमान पसरल अछि। सकीनाक त' सम्पूर्ण संघर्ष, दर्द, विछोह आ उपलब्धिक इतिहासे कहैये उपन्यास। सकीनाक माय हसीना। चौधरीजी क परिवार। अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण चरित्र हसमत, विक्को मियां, मदीना, कमरू आदि। बूढ़ा उसमान जे कहियो जवान छल। देकुलीसँ अइ नगर अपन बाबू संगे सीसाबला कंगना पहुँचाब' आबे। दुर्गापूजामे लहठी बहुत रास बिकाइ। ओहिठाम एक दिन ओकर लगनके गप्प भेलै। हसीना संग निकाह भ' गेलै बीस टाका दैन मोहरक करार पर। से हसीना छल गजबके सुन्नरि। श्रीमती खानक शब्द मे, 'उज्जर शेखिन सन सकल आ आँखि केहेन कारी-कारी जेना चेङा माछ तमचीनीक नबका कटोरीमे छटपटाइत होइ।' हसीना गौना भेलाक कइएक वर्षक बाद जखन गढ़ुआरि भेल तखनहि लहेरियासरायमे दंगा-फसादमे खून खच्चर भेल छलैक तकर आगि पझा गेल रहैक। मुदा किछु गोटेक हृदय क्षत-विक्षत भ' गेल छलैक। किछु नीक भविष्य आ' नवका सपनाक कारणें पड़ाय चाहैत छल। उसमान तकर प्रारम्भ केलक। नीक अवसर ताकि हसीनाके कहलक, 'हसीना, हम तोरासँ एकटा गप्प कहे छियह धियानसँ सुनह। हमरा संग पाकिस्तान चलह ओतय नब राजमे बड़ पूछि छैक। एतयके पूछत अपना आर के। बतीस दाँतक बीचमे आँकर पाथर जकाँ रहब।' मुदा हसीना नहि मानलकै। ओ मानैत छल जे, 'अइठाम की घर, खेत आ रोजगार नहि अछि ओतय दूर देसमे की गादी लागल छैक।' कतबो पोल्हौलक, तर्क देलक, आँखि देखौलक उसमान परन्तु हसीना किन्हुँ पाकिस्तान जाय लेल तैयार नहि भेल। अपन पति उसमान संग नहि गेल। 'सभटा गहनाक पोटरी लेलकै आ चलि देलकइ।' उसमान पाकिस्तानमे उद्योग-धंधा केलक। बियाह दान केलक। सुखसँ रह' लागल। एम्हर, 'उस्मानक बेरूखीसँ दुखी खाना-खोराक लेल तरसैत हसीना खुल्ला करा क' उसमानक छौ मास असरा देखलक। जखन ओ नहि आयल त' अपनहि बहिनोइ अहमद मियाँक घरनी भ' गेल।' एहिसँ पूर्व ओकरा एकटा बेटी भेलैक सकीना। अपन पूर्व पति उसमानक देल 'बेरूखी' के सहैत अपन पैर पर ठाढ़ हेबाक कोशिश केलक। श्रमशील नारीक

आत्मविश्वास हसीनामे भरल छैक। सैह गुण ओकर बेटी सकीनामे आर नीक जकाँ अयलैक। उसमान पूर्वी पाकिस्तानमे रहय। जखन बंगलादेश बनलैक त' ओकर संसारे उनटि-पुनटि गेलैक। उसमानक शब्द मे, 'सभटा बेचि बिकिनि जनूनमे आबि पाकिस्तान चल गेल छलहुँ। ई नहि कहबह जे औत्तय जाए उन्नति नहि कएलहुँ। से त' कएबे केलहुँ आ खूब धन-मान अरजलहुँ। परिवार बढ़एलहुँ। आन लोक जकाँ बंगाली सबसँ कहियो कोनो झगड़ा-झाँटी नहि केलहुँ, ककरो किछु ने बिगाड़लहुँ। तइयो राज बदलि गेलै तँ हमरा निकालि देल गेल। निकालत की सउसे परिवारके काटिकए फेकि देलक, हमहु ओहीमे रही बाँचि गेलहुँ। हमर ओइ मुलुकमे कोनो अपराध कएल नहि छल। हम बिनु अपराधे सजाय पओलहुँ। हँ, अइ मुलुकमे जरूर अपराध कएलहुँ, बूझि पड़ैत अछि ताही अपराधक ओहेन बड़का डंड भेटल।' पड़ा कए भारत आयल। घूमैत-फिरैत पुनः लहेरियासराय। सभ दिन पहिने ठेंग ठुक-ठुकबैत सकीनाक घर लग चल आबय। ने कोनो काज ने रोजगार। बादमे ओकरे ओहिठाम रह' लागल। सकीना के चीन्हि गेल जे ई ओकरे बेटी छियैक। बेटीजकाँ मानहु लागल ओकरा। अपन डाँड़मे राखल बाँचल सभ गहना-गुड़िया ओकरा द' देलक। मुदा अपन 'चिन्हाइन' नहिये कहलक। सकीनेसँ बुझलक जे ओकरा पति अरब गेल छैक कमाइ लेल। मुदा ओकरा ई देखि अजगुत लगलै जे 'अरब कमेनिहारक कमाइ जाहि घरमे अओतैक तकर कनियाँ एहन टूटल-फूटल मट्टिक घरमे रहतै? अइ गरम पसेनामे आगि फूकि लाह बरकौते आ' एहन जीर्ण-शीर्ण पियन लागल फूलदार पंजी नुआ पहिरतै। बिना टुम-टामके देह, टूटल गेह आ दुब्बर खदु सनक बौआइत बुतरूके देखिके कहतै जे अइ घरक स्वामी अरब कमाइ छै।' मुदा बूढ़ा उसमानके नहि बूझल रहैक जे, समद अपन गाँव हसनपुरमे जमीन कीनलक अछि आ हसनपुरक एकटा डॉक्टरक बेटीसँ अरबमे निकाह करा लेलकै अछि।' आब समद के 'सकीनाक देह पसीना जकाँ महकै'। ओ बड़का साहेब जकाँ रहय। मुदा अरब जाइत काल सकीनाक सभ गहना गुड़िया, टाका पैसा संग सौंसे मकान बन्हक ध' क' चल गेल छल। अरबसँ अयला पर ने घर गिरबी छोड़ेलकै ने सकीना के पर्याप्त टाका देलकै। सकीना सेहो अपन माय हसीना जकाँ लहठी बना छिट्टामे राखि भौरी लगाबय। अपन धिया-पूताक पालन-पोषण करय। बादमे बूढ़ा उसमान ओकर सहायता सेहो कर' लागल। ओकरा नवका सीसावला लहठी बनायब सिखा देलकै। जे लहठी 'मार्किट'मे हल्ला' मचा देलक। लहठीक नाम राखल गेलैक 'नगीना'। खूब बिकाय लगलै। सकीनाक व्यापार बढ़ैत गेलैक। आब ओ अपन दोकान खोललक अपन घर मे। नाम रखलक 'हसीना मंजिल'। सरकार पन्द्रह अगस्तके सकीनाके सम्मान केलकै ओकरा लोककला (लाहक चूड़ी) के विशिष्ट ज्ञान लेल कला अकादमीक माध्यम सँ। मैथिलबन्धु लोकनि सेहो सकीनाक सम्मान केलनि। ओकर नाम-यश भेलै। मुदा अंत धरि ओ अपन बाप लेल छटपटाइत रहल। बूढ़ा उसमान

अपन परिचय नहि देलकै। एक राति भूकम्प अयलै। उसमान मस्जिदमे चल गेल रहय। धरती डोल' लगलै। लहेरियासराय-दरभंगाक पुरना घर सभ भहरिके खसि पड़लै। मस्जिद आ मदरसा सेहो ओहि चपेटमे अयलै। मस्जिदसँ खटिया पर लादि क' उसमानक निस्पन्द शरीर आनल गेल। करेज टा धक-धक करैत छलै। विक्को मियां सकीनाक मौसा ठेंगा ठुकठुकबैत आंगन पहुँचलै। उसमान के चिन्हलकै ओ। सकीनाके कहलकै, 'ई तोर अब्बा उसमान छथून। हमर संगी। हमर सार उसमान।' 'सकीनाक विलापसँ भोर परहक, दाना टुनका पाबय लय आकास दिस उड़ैत पंक्षी हठात थमकि गेलै।' विक्को मियां हाथ आकाश दिस उठौने फातेहा पढ़य लगला...हसीना मंजिलमे उसमान अपन आखिरी साँस लेलक।

सम्पूर्ण उपन्यास पढ़ि तत्काल मोनमे बूढ़ा उसमानक नाटकीय अंत अपन प्रभाव छोड़ैत अछि। कचोट आ पीड़ा दैत छैक। सोचबा-विचारबाक लेल विवश करैत छैक। अपराधबोधसँ ग्रस्त उसमान अंत धरि बेटी लग रहियो क' अपन परिचय ओकरा नहि दैत अछि। कहि नहि पबैत अछि जे ओ ओकर पड़ायल बाप थिकैक। अपन पहिल पत्नी हसीनाक संग कयल व्यवहार ओकरा अपन दुर्दशाक कारण बुझाइत छैक। मुदा सकीनाक पति समदके से सभ किछु नहि होइत छैक। ओकरा कोनो कचोट वा अपराध वोध नहि छैक। ओकर पलायन आ सुख-समृद्धिक मृगतृष्णा घुरिके पाछू तकबाक लेल एखन धरि विवश नहि केलकैक अछि। अरबक जगमगी ओकरामे प्रदर्शनप्रियता आ अपन देस आ लोकवेदक प्रति हीनभावना भरैत अछि। मुस्लिम पुरुखक दू पीढ़ीक ई मानसिकता हसीना मंजिलमे जगजिआर होइत अछि। ओना ई मात्र मुस्लिम पुरुखटाक मानसिकता नहि थिक, नहि भ' सकैत अछि। कोनो जाति वा' धर्मक पुरूख एहि मानसिकतासँ ग्रस्त भ' सकैत अछि। उल्लेखनीय तथ्य एतबेटा भ' सकैत अछि जे अपना ओहिठामक अथवा भारतक अन्य क्षेत्रोक मुस्लिम पुरूखक स्वतंत्रतापूर्वक पीढ़ी अपन कामना आ स्वप्न पाकिस्तान संग आ बादक पीढ़ी अरब देश संग जोड़ब सुविधाजनक मानैत अछि। अन्य जाति वर्गक लोकके एहि तरहक कोनो सीमा नहि छैक। मुदा, उपन्यास लेखिकाके एहि बातके कहबासँ बेसी प्रताड़ित आ पुरूखक 'बेरूखी' क आघात सहनिहारि स्त्रीगणक संघर्षगाथा कहबामे रुचि छनि। उपन्यासक अंत एकटा दोसरो कोणसँ विचार करबाक लेल वाध्य करैत छैक। अकस्मात् मस्जिदमे भूकम्पक कारणे उसमानक जीवनक अंत किएक? उसमानक मृत्यु लेल प्राकृतिक आपदाक कोन प्रयोजन छलैक? की अपन पत्नी हसीना संग कयल अपराधक दण्ड आ प्रायश्चित भूकम्पेसँ आ मस्जिदेमे भ' सकैत छै? अथवा एहि देसमे बत्तीस दाँतक बीच आँकर-पाथर बनि नहि रहबाक आ' नवेस पाकिस्तानमे अपन भविष्य देखबाक अपराध एहन अपमृत्युक कारण अछि? धर्म आ मजहब पर आधारित द्विराष्ट्रवादक सिद्धान्तक एहन करुण प्रायश्चित्त मस्जिदेमे सम्भव छैक? अल्लाक घर

मे? ईश्वरक गोड़थारी मे? उपन्यासक आ बूढ़ा उसमानक अंत नाटकीय भइयो के अपन प्रभावमे एहि सभ प्रश्नके उठबैत अछि। जहिना एहि सभ प्रश्न ओ विचारक कोनो समाधान हठात् नहि देल जा सकैत अछि, देब सम्भव नहि लगैत अछि, तहिना लेखिका सेहो एहि चुनौतीके बूझि भरिसक एहन अंत सृजित केलनि अछि। एहि प्रकारें एहन नाटकीय अंत वैचारिक प्रश्न उठेबाक सामर्थसँ ओत-प्रोत रहबाक कारणें उपन्यासक कमजोरी नहि बनि पबैत अछि जखन कि प्रथम दृष्टिमे आन तरहक प्रभाव छोड़ितो कमजोरी लगैत छै।

उषाजीक आन उपन्यास एवं कथा सभक जकाँ एहू उपन्यासमे स्त्रीक कर्मठता, स्त्री संग कैल गेल अन्याय, स्त्रीक आर्थिक स्वावलम्बनसँ अर्जित सामाजिक प्रतिष्ठा क गप्प नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि। लहेरी परिवार आ चौधरी परिवारक निकटता, मोह-ममत्व, इज्जति देबाक कथासँ मिथिलामे साम्प्रदायिक सद्भावक उदाहरण सेहो प्रस्तुत कयल गेल अछि, जे नीक लगैत छै। अनेक छोट-छोट घटना आ वर्णनसँ उपन्यास लेखिका कथा-प्रवाहके पूर्णतया नियंत्रित केने छथि आ पाठकके एक बेर उपन्यास उठा लेला पर किछु कालक बाद छोड़बाक मोन नहि करैत छैक। उपन्यासक शैली विन्यस्त अछि।

मैथिली समाजक मुस्लिम परिवारक सुख-दुख, अभाव-अभियोग, समयक संग बदलैत मानसिकता, विकासक इच्छा, मिथिलाक प्रति प्रेम आदि विषय पर आधारित बहुतो कथा मैथिलीमे आयल अछि। मैथिलीक आधुनिक कथामे 'माइलस्टोन' मानल जाय बला ललितक कथा 'रमजानी' मुस्लिम परिवारोक कथा कहैये। राजकमल चौधरीसँ ल' क' रमेश धरि अनेक कथाकारक कथामे मुसलमान चरित्र आ मुस्लिम परिवारक इति-वृत्त खूबे आयल अछि। उपन्यासो सभमे आयल अछि। मुदा सम्पूर्णतः मिथिलाक अदौकालक बासिन्दा (डीही) लहेरी परिवारक कथा मैथिलीमे पहिल बेर एही उपन्यासक माध्यमसँ आयल। एहि अर्थमे उषा किरण खानक लिखल हसीना मंजिल एकदम नब आ पठनीय अछि। उपन्यासक एहि अकाल आ विकाल समयमे एहि उपन्यासक आगमन एक सुखद अनुभूति जगबैये तथा भविष्यक प्रति आश्वस्त करैये जे श्रीमती खानक संग आनो लेखकलोकनिक ध्यान एहि दिस जेतनि। मोटा-मोटी मैथिली उपन्यास अधिकांशतः मैथिल ब्राह्मण परिवारक कथा कहैये। मिथिला आ भारतक सार्वभौम समस्या सभके उठबैत अछि। मुदा 'हसीना मंजिल' उपेक्षित आ पिछड़ल लहेरी परिवारक सुख-दुखक कथा कहि मैथिली उपन्यास लेखनके नव क्षेत्रमे प्रवेश करौलक अछि। कथानकेक क्रममे आयल उपन्यासक किछु विन्दु-यथा मुसलिम दू पीढ़ीक मानसिकता, नव देस पलायनक महत्त्वाकांक्षा, कामना, अपन देस आ परिवारक प्रति हीनभावना आदि उपन्यासके सामयिक विचारोसँ लैस करबामे सहायक बनल अछि। एतावता उषाकिरण खानकेँ लहेरी परिवारक निकटता प्राप्त छनि, लहेरी जीवनके नजदीकसँ

देखने छथि, लहेरी स्त्रीगणक श्रमशील स्वभाव, संघर्षशीलता आ' दैहिक-मानसिक सौन्दर्य प्रभावित केने छनि। ई सभटा तथ्य उपन्यास पढ़ि जानल-बूझल जा सकैत अछि। तकर आनन्दो उठाओल जा सकैत अछि। उपन्यासक छपाइ साफ-सुथरा अछि। मुदा प्रूफक गलती अखर' वला अछि। एहन सुन्दर उपन्यासक प्रकाशनमे एहि प्रकारक लापरवाही नहि हेबाक चाहैत छलैक। भविष्यमे लेखिका एहि बातक ध्यान रखती से अपेक्षा सहजहिं हुनकासँ कयल जा सकैत अछि।

सन्धान-1, जनवरी 1997

भूमण्डलीकरणक आक्टोपससँ युद्ध लेल हमरा लोकनिकें विस्मृतिक अन्धकारसँ बाहर निकल' पड़त। मैथिली समाजक सामूहिक अस्मिताक तत्व सभकें अन्धकारसँ बाहर निकाल' पड़त। आवश्यकतानुसार ओकरा झाड़ि-पोछि क' चमकाब' पड़त। जाहिसँ हमर संघर्षक शक्ति आर मजगूत होअए। हमरा भीतर सुन्दर जीवनक यथार्थ उतरि जाए। मैथिली-समाजक ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक मूल परम्परा पैघ आ उदार रहल अछि। एहिमे मैथिली समाजक सभ जाति-धर्म-वर्गक योगदान रहल अछि। एहिमे श्रमजीवी लोकनिक पसेनाक सुगन्धि मिलल अछि। जे नित्य सभ विकार आ विकृतिकें धो देबाक क्षमता रखैत अछि। क्रियाशील जीवनक इएह सौन्दर्यबोध आ मनुक्खक शुद्ध जीजीविषा भूमण्डलीकरणक मुखौटा धारण कएने पुनः चल अबैत उपनिवेशवादीक कुत्सित षड्यन्त्रसँ संघर्ष क' सकत। ओकरा पछाड़ि सकत।

-एही पोथीस